

नाम	: राम लोचन ठाकुर
जन्म	: ग्रा० + पो० : बाबूपाली (पाली मोहन), खजौली, मधुबनी - ८४७२२८ (मिथिला)
तत्काल	: चिराग अपार्टमेण्ट, फेज - २, द्वितल ४, इटलगाचा रोड, कोलकाता - ७०००२८
मौलिक रचना	: इतिहासहंता (काव्य, १९७७) पुनर्मुद्रण (१९७८) बेताल कथा (हास्य-व्यंग्य, १९८१) मैथिली लोककथा (१९८३) द्वितीय संस्करण (२००६) माटि-पानिक गीत (काव्य, १९८५) देशक नाम छलै सोन चिड़ैया (काव्य, १९८६) अपूर्वा (काव्य, १९९६) लाख प्रश्न अनुत्तरित (काव्य, २००३) स्मृतिक धोखरल रंग (संस्मरण, २००४) आंखि मुनने : आंखि खोलने (संस्मरण, २००५)
अनुवाद	: प्रतिध्वनि (काव्य, १९८२) जादूगर (नाटक, १९८२) फांस (नाटक, १९९७) जा सकै छी, किन्तु किए जाउ (काव्य, १९९९) ('भाषा भारती सम्मान" सँ सम्मानित) रिहर्सल (नाटक, २००४) चारि पहर (नाटक, मंचित/अप्रकाशित) किसुनजी : विशुनजी (नाटक, मंचित/अप्रकाशित)
अनुवाद सहयोग	: मैथिली कविता (१९९९)
संपादन	: आजुक कविता (काव्य, १९८४)
संग-संपादन	: कविपति विद्यापति मतिमान (२०००)
पत्र - पत्रिका	: सुल्फा (हस्त लिखित पत्रिका) रंगमंच (नाट्य- मंच विषयक पत्रिका) अग्निपत्र (मैथिली युवालेखन संकलन) मैथिली दर्शन

मैथिली लोककथा



राम लोचन ठाकुर

मैथिली लोककथा



पुनर्सृजन

रामलोचन ठाकुर



अरुणोदय प्रकाशन

बाबूपाली / कोलकाता

चिराग अपार्टमेंट, फेज - 2, 2 एम, द्वितल,
4, इटलगाचा रोड,
कोलकाता-700 028

●

प्रथम प्रकाश : बिजया दशमी, 1390
द्वितीय संशोधित परिवर्धित संस्करण : 26 जनवरी, 2006

●

मूल्य : 125/- टाका

●

आवरण चित्र : रानी झा (सौजन्य - कर्णामृत)

●

मुद्रक :
शान्ती ग्राफिक्स,
32बी, वृन्दावन बैशाक स्ट्रीट,
कोलकाता 700 005

Maithili Lok Katha : *Ram Lochan Thakur*

समर्पण

मैथिली लोक साहित्यक
अनन्य उपासक
डा. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'
ओ राजेश्वर झाक स्मृतिक संग
डा. अणिमा सिंह कें

सन्दर्भ-कथा



बृहद्विष्णुपुराणक मिथिलाखण्डमे कहल गेलए—

गंगा हिमवतोर्मध्ये नदी पञ्च दशान्तरे ।
तैरभुक्तिरिति ख्यातो देशः परम पावनः ।।
कौशिकीन्तु समारभ्य, गण्डकीमधिगम्यवे ।
योजनानि चतुर्विंशत् व्यायामः परिकीर्तितः ।।

मिथिलाक कतेको नाम मे सं मिथिला आ तिरहुति (तीरभुक्ति) बेसी प्रचलित आ प्रसिद्ध अछि । विदित अछि जे गुरु वशिष्ठक अनुपस्थिति मे अन्य ब्राह्मण लोकनि द्वारा राजा निमि मोक्षार्थी-यज्ञ प्रारम्भ केलनि जाइ सं बशिष्ठ तमसा कें श्राप देलथिन आ निमि मृत्यु कें प्राप्त भेलाह । परञ्च जे हेतुञे निमि कें कोनो सखा-पात नहि छलनि—तें पश्चात् बशिष्ठ कें दया लगलनि जे निमिके निःसन्तान मरनाइ उचित नहि । अन्ततः याज्ञवल्क्य, गौतम, भृगु, बामदेब, अगस्त्य, भार्गव, भारद्वाज आदि ऋषिगण के एकत्र कए मन्थन द्वारा निमि कें जीवित कएल गेल । मन्थन द्वारा जीवित होएबाक कारणे हुनक नाम मिथि राखल गेल आ एहि नाम सं मिथिला नामक प्रादुर्भाव भेल । विदेह नामक प्रचलन सेहो एहिठाम सं होइत अछि ।

तिरहुति नाम (वा तिरहुत) तीरभुक्ति आओर त्रि-आहुति सं सम्पर्कित अछि । गंगा, कोशी आ गंडक नदीक तीर पर अवस्थित होएबाक कारणे तीरभुक्ति तथा ऋक, यजु आर साम वेद सं आहुति देनिहार ब्राह्मण लोकनिक निवास होएबाक कारणे त्रि-आहुति—एकर नाम पड़ल ।

मिथिला कें 'विख्याता भुवनत्रयम्' कहल गेलए तकर कारण जे प्राचीन कालहि सं ई विद्याक केन्द्र रहलए । भारतीय षड़दर्शन मे मीमांसा (पूर्व ओ उत्तर), न्याय, वैशेषिक आओर सांख्य दर्शनक जन्मस्थल मिथिले थिक । जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम, कपिल,

कणाद, वात्स्यायन, उदयन, मंडन, पक्षधर, गंगेश, चंडेश्वर, जैमिनी, शवर, कुमारिल भट्ट, मुरारि, शालिकनाथ, वाचस्पति सन-सन प्रकाण्ड विद्वानक जन्म आ कर्मभूमि मिथिले थिक । जैन धर्मक प्रवर्तक महावीरक जन्म सेहो एहीठाम भेल छल । भारतात्मा कवि कालिदास मैथिले छलाह ।

कपिल मुनिक मादे कहल गेलए 'सिद्धानां कपिलो मुनिः ।' स्कन्द पुराण मे गौतम मुनिक मादे कहल गेलए—

आसीद ब्रह्मपुरी नाम्ना मिथिलायां बिराजिता
तस्यां बसति धर्मात्मा गौतमो नाम तापसः

हुनक शास्त्रक संबंध कहल गेलए—

गौतमप्रथितं शास्त्रं
सर्व शास्त्रोपकारकम्

मंडन मिश्रक सम्बन्ध निम्न श्लोक आइयो वेश प्रचलित अछि—

स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं
कीरांगना यत्र गिरो गिरन्ति
शिष्योपशिष्यै उपगीय मानः
जानीहि तन्मण्डन मिश्र धामः

तहिना प्रचलित अछि उदयानाचार्यक निम्न पद—

वयमिह पदविद्यां तर्क मान्वीक्षि किंवा
यदि पथि विपथे वा वर्तयामः स पंथाः
उदयति दिशि यस्यां भानुमान सैवपूर्वा
नहि तरणिरुदिते दिक् पराधीन वृत्तिः

एहन गर्वोक्ति विश्व वाङमय मे विरल अछि । कहल जाइछ जे ई एक खेप पुरी गेल छलाह। जगन्नाथ दर्शनक हेतु । जखन मंदिर पहुंचला त फाटक स्वतः बन्द भ गेलै । ई दोसर फाटक पर पहुंचला त ओकरो तेहने हाल । ओतै ई जगन्नाथो के चेतेबा सं नहि चुकला—

ऐश्वर्य मदमत्तोसि
मामवज्ञाय वर्तसे
उपस्थितेषु वौद्धेषु
ममाधीना तव स्थितिः

अयाची शंकरक कथा मिथिला मे पढ़ले नहि, अपढ़ लोक सेहो जनैत अछि आ शंकरक निम्न श्लोक बच्चा के धोखाओल जाइत छैक—

बालोहं जगदानन्द
न मे बाला सरस्वती

अपूर्णे पंचमे वर्षे
वर्णयामि जगतत्रयम्

ई त भेल ऋषि-मुनि, विद्वान दार्शनिक लोकनिक कथा । परंच ई उएह भूमि थिक जाइठाम नृपतियो थोड़ विद्वान-बुद्धिमान नहि होइत छलाह । राजर्षि जनकक सम्बन्ध ई उक्ति—'मिथिलायां प्रदीप्तायां न मे दह्यति किंचन' साधारण बात नहि थिक । देवी भागवत मे कहल गेलए—

वंशेस्मिन् येऽपि राजानस्ते सर्वे जनकात्तथा
विख्याताः ज्ञानिनः सर्वे विदेहा परिकीर्तिताः

शिक्षा जे पुरुष वर्गहि धरि सीमित नहि छल, तकरो उदाहरणक अभाव नहि । 'येनाहं नामृता स्याम् किमहं तेन कुर्याम' कहनिहारि स्वयं याज्ञवल्क्य पत्नी मैत्रेयी थिकी । भामती, भारतीक कथा सेहो ककरो सं छपित नहिञे अछि ।

मात्र ब्राह्मणे नहि, अपर जातियो मे विद्याक प्रसार एहिठाम छल तकरा लेल महाभारतक 'धर्मव्याध कथा' प्रख्याते अछि । साधारणो लोक जे आध्यात्मिक चिन्तन-चेतना सं दीपित छल तकर प्रमाण थिक श्रीमद्‌भागवतक ई पद—

एते वै मैथिला राजन, आत्मविद्या विशारदाः ।
योगेश्वर प्रसादेन, द्वन्द्वैर्मुक्ता गृहेष्वपि ।

इएह थिक विदेह संस्कृतिक आधार ।

एतबा रहितहुं ई त मानहिटा पड़त जे कोनो काल मे सभ लोक विद्वाने नहि रहैत अछि । सभक विद्या-बुद्धि समान नहि होइत छैक । ई निर्विवाद जे मिथिला जे त्रिभुवन विख्यात भेल से विद्याएक बल पर परञ्च विद्याक विकासक निमित्त शान्त परिवेशक त प्रयोजन होइते छैक आ ताहि निमित्त आवश्यक जे देश-समाज सभ तरहे भरल-पुरल हो । कहबाक प्रयोजन नहि जे मिथिला मे धन आ बलक सेहो सदा प्राचुर्य रहलैक । एकर प्राकृतिक अवस्थानक कारणे एहिठामक माटि ततेक उर्बर अछि जे ककरो लेल इर्षाक विषय थिक । तहिना सदा सं एहिठामक लोक श्रमक महत्व के बुझैत रहलए । माथ पर राजमुकुट आ हाथ मे हरक लागनि—सीरध्वज जनकक उदाहरण विरले विश्वक इतिहास मे पाओल जाए । तें एहिठाम विद्याक विकास अपन चरम पर्याय धरि पहुंचि सकल । परञ्च जं ई मानि ली जे वेद-उपनिषदे आदि धरि ई सीमित रहल त हमरा जनतबे भूल होएत । एहि सभ लिखित साहित्यक संगहि आर एकटा साहित्य सरजित होइत रहल आ सर्वसाधारणक बीच प्रचार-प्रसार पबैत रहल । ई साहित्य लिखित नहि होइतहुं एक कंठ सं दोसर कंठ धरि प्रवहमान रहल आ सएह लोक-साहित्यक नामे विख्यात भेल । एहिठाम कहब अनुचित नहि होएत जे वेद सेहो प्रारम्भ मे लिखित नहि छल आ तें ओकर दोसर नाम श्रुति छैक ।

व्युत्पत्तिक आधार पर लोक शब्दक अर्थ जीव आ जगत होइत अछि, परञ्च, व्यवहार मे सर्वसाधारण लोक आ जगत। महाभारत सं ल कें मार्कण्डेय पुराण धरि एहि अर्थ मे एकर प्रयोग भेल-ए।

वेदाच्च वैदिकाः शब्दाः।
सिद्धा लोकाच्च लौकिकाः।।

स्पष्टतः लौकिक आ वेदिक विधिक पार्थक्य कें निरूपित करैत अछि। तहिना सत्यनारायणक कथाक—

एकदा मुनयः सर्वे
सर्व लोक हितेरता

आ—

इहलोके सुखं भुक्त्वा
चान्ते सत्य पुरंययौ

सं सेहो एकर पार्थक्य परिलक्षित होइछ।

मिथिला मे लोक शब्द ततेक प्रचिलित अछि जे एकर अर्थ बुझबा मे साधारणो लोक कें कनियों असुविधा नहि होइत छैक। लोक-वेद, लोक-परलोक, लौकिक-पारलौकिक, लोकाचार-वेदाचार आदि शब्दक प्रयोग रहरहां देखल-पाओल जाइत अछि। किन्तु हम जखन लोक साहित्यक बात करैत छी त एहिठाम लोकक एक विशेष अर्थ होइत अछि—साधारण लोक। जेना कि डा. सत्येन्द्र कहैत छथि— *'लोक मानव समाजक ओ वर्ग थिक जे अभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता तथा पांडित्य चेतना आ पांडित्यक अहंकार सं शून्य एक परंपराक प्रवाह मे जिवित रहैछ।'* डा. हजारी प्रसाद द्विवेदीक अनुसार— *'लोक शब्दक अर्थ ग्राम्य वा जनपदीय नहि अपितु गाम सं नगरधरि चतरल-पसरल ओ समस्त जनसमुदाय थिक जकर व्यावहारिक ज्ञानक आधार पोथी-पतरा नहि छैक। ई लोकनि सुशिक्षित, सुसंस्कृत नगरीय लोकक अपेक्षा बेसी सहज-सरल आ स्वाभाविक होइत छथि।'* आ लोक साहित्य वस्तुतः एही लोकक साहित्य थिक। एकरा आर बेकछा क कही त लोक साहित्य लोकक द्वारा, लोकक लेल, लोकक मादे, लोकक भाषा मे रचित साहित्य थिक।

लिखित साहित्यक समानहि लोक-साहित्य सेहो विभिन्न विधा मे पाओल जाइछ। एकर उत्पत्ति कहिया भेल से कहनाइ असंभव तखन एतबाधरि त कहले जा सकैछ जे मैथिलीक लिखित साहित्य सं ई बड़ बेसी प्राचीन अछि। लोक साहित्यक सृष्टिक मादे पाश्चात्य विद्वान सिजिविक कहै छथि— *'लोक साहित्यक सृष्टि साहित्यक सृष्टि सं, एतेधरि कि वर्णमालाक सृष्टि सं पहिलुक थिक, ई अनुश्रुतिक अंग थिक आ अपढ़ जनताक संपति थिक।* महान रूसी साहित्यकार गोर्कीक कथन छनि— *'शब्द कलाक आरंभ लोक साहित्य सं होइछ। एहि सं खाली इएह नहि बुझबाक थिक जे मौखिक साहित्य लिखित साहित्यक भूमिका थिक, अपितु ई लिखित साहित्य के सदा सर्वदा जीवन-रस दैत अछि। एकर भावक गंभीरता, कल्पनाक वैभव आ कलात्मक अभिव्यक्तिक विशेषता बहुतो लेखकक ध्यान आकर्षित कएने अछि।'* चर्यापद, वर्णरत्नाकर तथा विद्यापति पदावली क्रमशः मैथिलीक प्राचीनतम उपलब्ध पोथी अछि। डाक बचनामृतक काल एखनहुं धरि अनिर्णित अछि। एहि तरहें साहित्यिक भाषाक रूप मे मैथिलीक प्रयोग दशम शताब्दी सं पाओल जाइछ परञ्च लोक भाषा मैथिली निश्चिते ताइ सं बड़ बेसी प्राचीन थिक। स्वभावतः मैथिली लोक साहित्यक बरीयता प्रमाणित होइत अछि। हमरा जनतबे एहि मे किनको संदेह नहि होएबाक चाहियनि जे एहि लोक साहित्यक विशाल आ मजबूत दाबा (नीव) पर मैथिली साहित्यक विशाल भवन निर्मित भेल अछि। लोक साहित्यक महत्ता के कविशेषराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर आ कविपति विद्यापति नीक जकां बुझलनि फलतः मैथिली साहित्य अपन जन्मकालहिं सं फराक आ विशेष परिचय प्रस्तुत क पओलक आ समस्त पूर्वाञ्चलकै नेतृत्व द सकल। एहिठाम ई कहनाइ अन्यथा नहि होएत जे कविपतिक अधिकांश गीत लोकगीतक अन्तर्गत अछि।

लोककथा—लोक आर कथा एहि दू गोट शब्द सं बनल अछि जकर सोझ आ स्पष्ट अर्थ होइत छैक लोकक कथा, सर्व साधाररणक कथा आ से सर्वसाधारण लोक निश्चिते एहि जगतक थिक। साधारण लोकक जीवन संग्रामक सहयात्री-सहयोगी चिड़ै-चुनमुन्नी, जन्तु-जानवरक चर्च एहि कथा सभ मे तें बहुतायत मे पाओल जाइछ। प्रकृति-परिवेशक एहन सुन्दर चित्रण अन्यत्र भरिसके पाओल जाय। एकर ई अर्थ कथमनि नहि लेल जेबाक चाही जे एहि मे देब-पितर, राजा-महाराजाक स्थान नहि; से अबस्से अछि परञ्च से लोकोन्मुखी अछि।

लोककथाक सभ सं प्रमुख विशेषता थिक (जे सम्पूर्ण लोक साहित्यहिक विशेषता थिकै) जे ई अलिखित अछि आ आरम्भकाल सं आइ धरि एक कंठ सं दोसर कंठ मे प्रवाहित होइत आबि रहलए। एहि कारणे एकर बाहरी रूप मे परिवर्त्तन अबस्से भेलै-ए परञ्च आन्तरिक रूप मे कोनोटा परिवर्त्तन नहि भेलै-ए, एकर मौलिकता ओहिना छैक। ई परिवर्त्तन एहि चिरन्तन साहित्य कें आर जीवंतता प्रदान केलकैए। तें जखन एहि धरोहर कें लिखित रूप मे योगयबाक प्रश्न उठैछ त एकर मौलिकता-बाधित होएबाक चिन्ता स्वाभाविके नहि सत्यो छैक। परञ्च से मानितहुँ आइ दोसर उपाय परिलक्षित नहि होइछ। कृषि सभ्यता पर यांत्रेक सभ्यता तेना भ कें हावी भेल जा रहलै-ए जे दोसर कोनो उपायो नहि। आइ कालि गामो-घर मे नेना सभ कें नानी-दाइ सं खिस्सा सुनबाक इच्छा वा अवकाश नहि छैक। घूर तर वा चौपाड़ि पर परनिन्दाक बोलवाला छैक। दोसर दिस वैश्वीकरणक विषाक्त झंझावात समस्त लोकभाषाए कें समूल नष्ट करबाक लेल आफन

तोड़ने अछि । तेहन हालत मे ई विरल-विलक्षण ओ विशाल साहित्यिक भण्डार आलोपित भेल जा रहल-ए । एतबैक नहि, मैथिली साहित्यक आदिकालक शेषहि मे जे भूल धारणा तथाकथित विद्वान लोकनिक मन मे जन्म ग्रहण कएलक से हेमनियोधरि अक्षुण अछि । ई भूल धारणा थिक एहि लोक साहित्य कें अशिक्षित-अल्पशिक्षित,मुर्ख-गंवार आ छोटका लोकक साहित्य मानि लेनाइ जे सर्वथा निराधार आ अनर्गल थिक ।

x x x

अपन नानी, मा आ लालमामा सं सूनल अठारह गोट कथाक संग्रह १९८३ मे प्रकाशित कएने रही जे आब अनुपलब्ध अछि । एहि पोथी मे आर किछु कथाक समावेश कएल गेलए । मैथिली लोककथाक विशाल भंडार के देखैत एकरो संतोषप्रद त नहिञे कहल जा सकैछ, परंच अपन आर्थिक सीमा के देखैत संतोष त करहि पड़त ।

जेना कि पहिनहि कहि आयल छी लिखला सं एहि कथाक बाहरी रूप मे परिवर्त्तन होएबाक चिन्ता रहैत छैक, से एहू संकलन मे पाओल जा सकैछ । संगहि एकहि कथा विभिन्न अंचल मे विभिन्न तरहे पाओल सुनल-कहल जाइछ । एहिठाम इहो लिखब आवश्यके जे प्रथम संस्करणक अठारह कथाक अतिरिक्त जे कथा सभ अछि से टटके लिखल थिक आ तें शब्द-शिल्पक पार्थक्य परिलक्षित होएब अस्वाभाविक नहि । तें पाठक लोकनि एहि भूल-त्रुटिक मार्जना करथि—से निवेदन । हमर उद्देश्य त एहि अवलुप्त प्राय धरोहर कें संयोगि कें रखनाइटा अछि । मैथिलीक विशाल साहित्यक भंडार मे एकर की महत्व होएतैक से नहि जानि, परञ्च हमरा संतोष त अछिए जे यथाशक्ति किछु क पाओल । कहल जाइछ जे युधिष्ठिर जखन अश्वमेघ यज्ञ प्रारम्भ केलनि त हुनका किछु मुद्राक अभाव भ गेलनि । ओ मिथिलाक राजा जनकक ओइठाम लोक पठओलथिन । समदिया जखन मिथिला नगरी पहुँचल त देखलक जे राजा जनक खरिहान मे एक-एकटा कें जओ बीछि ढेरी मे राखि रहल छथि । ओकरा भारी छगुन्ता भेलै—जे लोक एक-एकटा जओ बीछि रहल-ए से मिथिला नरेश महाराज युधिष्ठिर कें मुद्रा सहयोग करत । ओ घुरि गेल आ युधिष्ठिर कें सभ बृत्तान्त कहलकनि । ओ बिहुँसि देलखिन आ बुझा-सुझा ओकरा फेर मिथिला पठओलनि। ओ जखन जनक लग समाद अनलक त जनक ओकरा खजाना देखा कहलथिन जे जे प्रयोजन हो ल लेल जाय । खजाना देखिते त ओकरा चकचोन्ही लागि गेलै । कहबाक तात्पर्य ई नहि जे हम जनके सन वैभवशाली छी, परञ्च मैथिली साहित्य निर्विवाद जनकक खजाना थिक आ हमर ई पोथी जं जओक समान हो तैयो हम अपन श्रम के सार्थक बुझब।

शक्ति पूजा, १३९०
१ जनवरी, २००६

—**राम लोचन ठाकुर**

कथा-क्रम

हिरामनि सुगा

□

एकटा मोसाफिर रहथि । हुनका संग मे पांचटा लाल रहनि जकरा बाट घाट मे चोर डाकूक डर सं ओ अपन जांघ चिड़ि के नुका रखने छलाह । बाट मे जखन राति भ गेलै त ओ एकटा धर्मशाला मे ठहरि गेला । बड़कीटा पांतर मे उएह एकटा धर्मशाला छलैक । धर्मशाला जेहने पैघ तेहने परिष्कार छलैक आ थाकल-ठेहियाल बटोही के रहबाक आ खेबा-पीबाक नीक व्यवस्था रहैक । धर्मशाला ओइ देशक राजाक बनबाओल रहैक आ ओकर देख-भाल करैक लेल स्वयं ओजीरक बेटी रहैत छलैक ।

ओजीरक बेटी जेहने सुन्दर तेहने बुधियारि छलै । ओकर विशेष गुण छलै जे ओ पशु पक्षीक भाषा सेहो बुझैत छलि । ओइ दिन जखन पहर राति बीतलै आ मोसाफिर भोजन-साजन क क विश्राम करै लए गेल त एगो कौआ बजलै । कौआ ओजीरक बेटी के कहलकै—हें ओजीरक बेटी ! आइ जे मोसाफिर आयलए तकरा संग मे पांचटा लाल छैक जे आन ककरो लग नहि छैक । तें जे कोनो प्रकारे हो ओकरा सं लाल ल लिअ ने त हम राजा के कहि देबनि त ओ अहां के जान सं मारि देताह ।

ओजीरक बेटी सोचलक जे काक भाषा झूठ भ नहि सकैछ आ जं सरिपहुं मोसाफिरक संग लाल छैक त ओ सहजहिं देबे किएक करत । ओ एगो तरूआरि लेलक आ मोसाफिरक घर मे पहुंचि गेलि । ओ मोसाफिरक छाती पर बैसि कहलकै—'हे मोसाफिर ! अहां लग जे पांचटा लाल अछि से हमरा द दिअ ने त हम अहां के दू खण्ड क काटि देब आ लाल ल लेब।'

मोसाफिर आंखि मुनबे केने छल ता एहन घटना सं ओ कने घबड़ा अबस्से गेल किन्तु सम्हरि कें बाजल—'हे ओजीरक बेटी ! हमरा जं अहां मारिए देमय चाही त मारि दिअ किन्तु बाद मे अहां के ओहने पश्चाताप होएत जेना राजा कें अपन पुतोहु के मारलाक बाद भेलनि ।'

ओजीरक बेटी कहलथिन—'से कोना ? फरिछा क कहू ।'

मोसाफिर कहलथिन—'पहिने अहां हमरा छाती पर सं उतरू तखन ने कहब। हम त खाली हाथ अहांक घर मे बन्न छी। हमरा सं डर कथिक ?'

ओजीरक बेटी हुनका छाती सं हेट भ कात मे बैसि गेलथिन। मोसाफिर खिस्सा आरम्भ केलनि :

एगो राजा रहथि। ओ जेहने प्रतापी तेहने प्रजावत्सल। चारूकात हुनक यशक पताका फहराइत छलनि। हुनका एकेटा बेटा रहनि जकर वियाह बड़ धूम-धाम सं करओलनि। पुतोहु सेहो तेहने सुन्नर आ बुद्धिमती भेलथिन। ओ पशु-पक्षीक भाषा जनैत रहथिन मुदा ई गप्प राजा के नहि बुझल छलनि।

जाहि दिन राजकुमार अपन कनियांक बिदागरी करा घुरैत रहथि त बाट मे राति भ गेलैक। एगो दिवड़ा भीड़ पर सामियाना खसाओल गेलैक जाइ मे एकदिस राजकुमार अपन स्त्रीक संग आ दोसर दिस बरियाती, नोकर-चाकर सभ आराम करैत छल। जखन पहर राति बितलै त भीड़ मे सं नाग देवता बजलाह—हे राजकुमारी ! अहां हमर भाषा बुझैत छी तें हम अहीं सं कहि रहल छी। ई भीड़ कहियो राजमहल छल आ तें एहिठाम मारिते रास सोना-रूपा गड़ल छैक जकर हम एते दिन सं पहरा करैत आयल छी। आब ई समस्त सम्पत्ति हम अहां के सोंपि देमय चाहैत छी। तें आइ सं तीन दिनुक भीतर अहां हमरा लेल सात घैल दूध आ सात चङेड़ा लाबा पठा देब आ एहि भीड़ कें कोड़बा सभ सम्पत्ति ल जाएब। दूध-लाबा हमरा भीड़क पुबारी कात देल जाय आ पश्चिम सं कोड़ब शुरू कएल जाए। सम्पत्ति सभ एकेठाम जमा छैक तें से भेटि गेलाक बाद बेसी नहि कोड़ल जेबाक चाही। मन राखू जं तीन दिनक बीच ई काज नहि भेल त अहूंक वंश मे जल देनहार केओ नहि रहत आ राजमहल एकदिन एहिना दिबड़ाभीड़ मे बदलि जाएत।

राजकुमारी सभ सुनि अपन पति कें कहलथिन। भोरे ओ लोकनि विदा भेलाह। राति-बीच कोनहुना महल मे काटि प्रातः दूध-लाबा आ किछु नोकर-चाकरक संग राजकुमार दिबड़ा भीड़क यात्रा केलनि। बाप के ई कथा त जनेबो ने केलथिन, माय कें पुछला पर कहलथिन जे एगो भगवती कें कबुला केने छियनि ततै जाइ छी, काल्हि सांझ तक फिरब।

ओहि दिन राति मे राजकुमारी सुतल छली। गाम निसबद्ध भ गेल छलै परञ्च हिनका निन्ने ने होइनि। सासुर मे ई दोसरे राति छलनि आ ताहू मे पति संग नहि छलथिन। प्रायः दोसर पहर राति बीतल छल होएतैक ता ओ सुनलनि जे दक्षिण दिस कोनो नदीक किनार सं एगो नढ़िया बाजि रहल छैक। ओ कहि रहल छलैक जे नदी मे एगो मुर्दा भासल जाइ छइ जकर पाछा ओ बहुत दूर सं करैत आबि रहलए। किंतु मुर्दा ने किनार लगैत छैक जे ओकरा खा क ओ अपन भूख शान्त करत। पांच दिन सं निराहार अछि तें जे केओ ओकर भाषा बुझैत होइ सेँ शिघ्र आबि मुर्दा के ऊपर क दौक अन्यथा ओ तथा ओकर सब

सं प्रिय व्यक्ति एहिना भूखे छटपटा क मरतैक। संगहि जे उपर करत तकरा इनाम मे पांच औंठी जाइ मे एकटा मणि छैक सेहो भेटतैक जे मुर्दाक आङुर मे छैक।

राजकुमारी धर्मसंकट मे पड़ि गेली। बाट-घाट देखल नहि छलनि आने पतिये लग मे छलथिन जे संग क लितथिन। आ जं अनठा दैत छथि त अभिशापक आशंका छलनि। अन्ततः ओ पएर दाबि घर सं बहार भेलीह। महल मे सभठाम पहरा छलैक किन्तु ओ सभक नजरि बंचा क जेमहर सं नढ़ेयाक आवाज आयल छलैक तेम्हरे विदा भेलीह। अन्ततः ओ नदीक कात मे पहुंचली आ देखलनि जे ठीके एगो मुर्दा भासल छैक आ किनार पर नढ़ेया प्रतीक्षारत छैक। ओ आग-पाछा ताकि अपन नुआ खोलि किनार मे रखलनि आ नदी मे पैसि गेलीह। भरिए डांड़ पानि मे मुर्दा छलैक। ओ खिचि के उपर केलनि आ ओकरा आङुर सं औंठी सहजहि बहार नहि भेलनि त दांत ल क टानि बहार केलनि आ फेर नुआ पहीर आपस भेलीह। कनिये दूर आयल छलीह ता लोकक हल्ला सुनाइ पड़लनि। ओ थकमका क घोघ तानि बैस रहलीह।

भेल छलैक एना जे राजकुमारी के बहराइत किछु पहरुआ देखि लेने छलनि आ हिनका नदी धरि पछोर धेने छलनि। जखन ओ मुर्दा बहार करैत छलीह ता बीच दू-एक गोटे जा कें राजा के खबरि केलकनि आ कहलकनि जे पुतोहु राक्षसी छथिन। मनुखक माउस खाइत छथिन। राजा अपन पुतोहु के नाङट अवस्था मे मुर्दा के खाइत देखलनि। राजकुमारी जे दांत सं औंठी टानैत रहथि से राति मे स्पष्ट नहि बुझि पड़बाक कारणे ओ खेनाइए मानि लेलनि। एहि बीच नढ़ेया मुर्दा के नोचि-नोचि थोड़ बहुत खेने रहैक आ तें जखन लग सं ई लोकनि मुर्दा के देखलनि त सन्देहक गुञ्जाइश नहि रहलनि। राजा ओहिठाम जल्लाद बजा क अपन पुतोहु कें दू टूक क काटि देबाक आदेश देलथिन। आदेश पबिते जल्लाद ओकर पालन केलक। राजकुमारी सं ने त किछु पुछल गेलनि आ ने ओ अपने किछु बजली। हुनका त तेहन ठकमूरी लगलनि जे बकारे बन्न।

प्रात होइतहि ई समाचार सौंसे नगर मे जंगलक आगि सन पसरि गेल। राजकुमार जखन घुरला त हुनका संग सोना रूपाक अमार देखि लोकक करमान लागि गेल। राजकुमार अबितहि महल मे सभ के त देखलनि मुदा अपन स्त्री के नहि देखि चिन्ता मे पड़ि गेला। ओ अपन घर दौड़लाह परञ्च ओहो खाली। ओ माय सं पुछलथिन त माय सभ कथा विस्तार पूर्वक कहलथिन। राजकुमार मुर्छित भ ओहिठाम खसि पड़लाह। होस भेला पर ओ अपन पिता कें अपन स्त्रीक विलक्षण बुद्धि तथा पशु-पक्षीक भाषा बुझबाक विशेष क्षमताक सम्बन्ध मे कहलथिन, जनिका दुआरे आइ हुनका महल मे सोना-रूपाक अमार लागल छनि। राजा कें जखन वास्तविकताक पता चललनि त हुनका ततेक दुख आ पश्चाताप भेलनि जे ओ आत्महत्या क लेलनि। तें हे राजकुमारी, बिना बिचारल काज कथपपि उचित नहि।'

ओजीरक बेटी कें मन मानि गेलनि। ओ मोसाफिर कें छोड़ि अपन सुतबाक

कोठली मे जा पलंग पर पड़ि रहली । प्रायः दोसर पहर राति बीति चुकल छलैक । हुनक आंखि लगले छलनि ता फेर कौआ ठाहि देलक—'हेओजीरक बेटी ! मोसाफिर अहां कें पिहानी कहि भुला देलक आ अहूं भुलि गेलहुं । तें हम पुनः चेता दैत छी । राति एखनहुं शेष छैक । जे कोनो प्रकारे हो अहां मोसाफिर सं लाल ल लिअ ने त हम प्रात भेने राजा कें कहि अहां के दू टूक क कटबा देब ।'

ओजीरक बेटी उठि कें बैसली । बड़ इतस्ततः करैत फेर तरुआरि हाथ मे लेलनि आ मोसाफिरक कोठली मे पहुँचली । मोसाफिर के निन्न किएक होइतैक । ओजीरक बेटी कें देखिते ओ फुरफुरा क उठल ।ओजीरक बेटी तरुआरि उठा बजली—'हे मोसाफिर, पहिल खेप त अहां हमरा खिस्सा-पिहानी मे ठकि लेलहुँ किन्तु एइ बेर हम नहि मानब । अहां शिघ्र अपन पांचो लाल हमरा द दिअ ने त हम काटि देब ।'

मोसाफिर पहिने सं सावधान होइत बाजल—'हे कुमारी ! जं अहांक सएह इच्छा हो त तकर पूर्ति कइए लिअ । किन्तु हम फेर कहैत छी जे बाद मे अहां के ओहने पश्चाताप होएत जेहन यार कें बाझ मारलाक पश्चाताप भेलनि ।'

ओजीरक बेटी थकमका गेली आ शान्त होइत पुलथिन—'हे मोसाफिर, जं गप सत्य थिक त सविस्तार कहि सुनाउ ।'

मोसाफिर खिस्सा आरम्भ केलनि । 'एगो राजाक बेटा रहथि आ एगो बाभनक बेटा। दुनू मे यारी लागल रहनि । से दुनू यार एके संग नहाथि, एके संग खाथि । जतय कतौ जइतथि संगहि । ओ लोकनि एगो बाझ पोसने रहथि । से बाझो जेहने देखबा मे सुन्दर तेहने स्वामिभक्त आ तेहने मनुक्ख जकां सभ गप बुझनिहार । एक बेर दुनू यार कें हरलनि ने फुरलनि बिदा भेलाह देशाटन मे । नव-नव देश, नव-नव लोक देखबाक निमित्त । दुनू यार अपन-अपन घोड़ा पर सवार भेलाह । दू यार दू घोड़ाक अतिरिक्त पांचम संगी छलनि बाझ ।

एक दिन जाइत-जाइत ओ लोकनि विशाल पांतर मे पड़ि गेलाह । बैसाखक टहाटही रौद । गाम-घरक कतौ पता नहि । संयोग सं ओहि पांतर मे एगो पाकड़िक गाछ छलैक । ओइठाम पहुँचि दुनू यार घोड़ा सं उतरि सुस्ताय लगलाह । एहने समय मे राजाक बेटा कें पियास लगलनि । ओ बाभनक बेटा सं कहलथिन—'यार ! पियासे हमर कंठ सुखा गेलए, मन मेछन्त भ रहल-ए । लगैए जे प्राणे छुटि जायत । जं कोनो व्यवस्था नहि करब त आगू बढ़नाइ हमरा सं पार नहि लागत ।'

बाभनक बेटा कहलथिन—'यार गाम-घरक पता नहि देखैत छिऐक, चौर-चांचर सभ सुखाएल छैक, खेत मे दराड़ि फाटल छैक । एहना हालत मे पानि भेटब त असम्भवे बुझाइछ ।'

एतबा कहि बाभनक बेटा अपन घोड़ा उड़ओलनि । एम्हर राजाक बेटा पियासे लहालोट भ रहल छलाह । अहर बीतल, पहर बीतल मुदा बाभनक बेटाक पता नहि । ओ

गाछक जड़ि मे ओङठि गेलाह । ता हुनका देह पर एक बुन्न पानि खसलनि । ओ फुरफुरा कें उठलाह ता दोसरो बुन्न खसलनि । ओ लक्ष्य केलनि जे पानि एकेठाम खसै छइ—गाछक कोनो धोधड़ि सं । ओ झट दय दूटा सुखाएल पात ल दोना बना ओइ सामने रखलनि । आस्ते-आस्ते पानि लगभग घोंट भरि जमा भेलनि त ओ मुंह सं लगा पीबाक प्रयास केलनि किन्तु मुंह सं लगबिते छथि ता बाज झपट्टा मारि पानि हेरा देलकनि । हुनका तामस त बड़ भेलनि मुदा बाझ के मानिते ततेक रहथिन जे छोड़ि देलथिन । जं दोसर केओ एना केने रहितनि त तकरा निश्चिते दू खंड क दीतथिन । ओ मन मसोसि फेर पानि जमा करय लगलाह । पानि जखने घोंट भरि भेलनि आ ओ पीबथि ता फेर बझबा झपट्टा मारि हेरा देलकनि । एहिना जखन तीन खेप बाझ पानि हेरा देलकनि त राजाक बेटा कें नहि रहि भेलनि । ओ तामसे माहुर भ गेलाह आ बाझ कें पकड़ि अपन तरुआरि सं ओहि ठाम दू खंड क काटि देलथिन । फेर ओ सोचलनि जे जते काल ओ पानि जमा करता किएक ने गाछ पर चढ़ि जाथि कारण जाइ ठाम सं ठोपे-ठोपे पानि खसैत छइताइठाम निश्चिते पानि जमा हेतै आ से पीबि ओअपन पियास मेटओता । ई सोचि ओ गाछ पर चढ़लाह किन्तु जखने ओइ धोधड़ि लग जा ओइ मे हुलकी मारि देखैत छथि त सौंसे देह मे थरथरी ध लेने छलनि । ता बाभनक बेटा सेहो पानि ल क पहुँचलाह । अपन यार के कपैत तथा बाझ कें काटल देखि पहिने त हुनका ठकमुरी लागि गेलनि परञ्च होश क के कहलनि—यार, पहिने त पानि पीबू आ तखन कहू जे हमरा लोकनिक प्राणों सं प्रिय एइ बाझक एहन अवस्था केना भेल ? हम नहिं छलहुँ - किन्तु अहांक सामने एकर ई अवस्था............

राजाक बेटा ओहिना कपैत बजलाह—यार, हमरा माफ क दिय, अहां हमरा माफ क दिय । ई त नहि माफ क सकत । यार हमरा सामने एकरा पर केओ आंखि उठबितै तकर घेंट हम देह सं फराक नहि क दितियैक, किन्तु हमही जखन........ई हमर प्राणक रक्षा केलक आ बदला मे हम एकरा जान सं मारि देलिऐक । एतबा कहि ओ अचेत भ खसि पड़लाह । बाभनक बेटा हुनका पानि पिया हवा करय लगलनि । कने कालक बाद होस भेलनि त फेर उएह प्रलाप । किन्तु आब उपाये की छलनि । टूटल हृदय लेने कनैत दुनू यार अपन देश फीरि अएलाह । तें हे कुमारी अहां नीक जकां विचारि लीय ।'

ओजीरक बेटी मन मारने अपन घर घुरि एलीह आ ओछाएन पर जा पड़ि रहलीह। ओ लाल, मोसाफिर आ ओकर कहल खिस्सा मे मग्न छलीह । तेसर पहर राति प्रायः बीति चुकल छलैक ता फेर कौआ टाहि मारलक—'है ओजीरक बेटी, एते बुधियारि होइतहुं अहां एगो साधारण मोसाफिरक फूसि-फटक खिस्सा मे बहि जाइ छी आ अपन काज बिसरि जाइ छी से नीक बात नहि । पहर भरि राति शेष छइ आ भोरे ओ पड़ा जायत । ओनहुना दिन-देखार ई काज संभव नहि कारण लोकक अबरजात रहिते छइ । तें हम फेर चेता दैत छी जे अहां शिघ्र ओकरा सं लाल लेबाक प्रयास करू । मन राखू जे लाल बहुतो

तरहक होइत छइ, ओ बहुतो राजा-महाराजा लग छइ, परञ्च एइ मोसाफिर लग जे पांचटा लाल छइ से अत्यन्त दुर्लभ । जं अहां फेर ओहिना घुरि एलहुं त बाध्य भ हमरा राजा के कहै पड़त आ परिणाम अहां सोचिए सकैत छी ।'

ओजीरक बेटी फेर मन मसोसि क उठलि आ तरूआरि ल बिदा भेल । एइखेप मोसाफिर ओहिना बैसल छल । ओ बाजल अहां फेर आबि गेलहुँ । मन नहि मानलक त अपन काज कइए लिअ । ओना हम फेर कहब जे बिनु बिचारने कोनो काज केनाइ सर्वथा अनुचित । अहां हमरा मारि दिअ मुदा जेना राजा कें हिरामनि सुगा मारलाक बाद पश्चाताप भेलनि अहूँ के तेहने पश्चाताप होएत ।

ओजीरक बेटी फेर तरुआरि राखि बैसि गेलीह आ बजलीह—हे मोसाफिर इहो कथा कहिए सुनाउ ।

मोसाफिर आरम्भ केलनि—एगो राजा रहथि । ओ जेहने एकबाली तेहने सौखीन। हुनका जहिना गाछ-वृक्षक सौख रहनि तहिना चिड़ै-चुनमुनीक । ओ अपना चिड़ियाखाना मे देश-विदेशक सभ तरहक चिड़ै मड़ा कें रखने रहथि ।

एक दिन कतौ सं एगो साधु घुरैत-फिरैत आयल आ बड़ ध्यान सं चिड़ियाखाना कें देखलक । जायकाल ओ बाजल—राजा सरिपहुँ सौखीन छथि, मुदा भेनहि की । पक्षीराज हीरामनि सुगा क बिना रंग-रंगक पक्षी रहितहुँ चिड़ियाखाना उदास लागि रहल छनि ।

साधु त चल गेल परञ्च ओकर बात केओ सुनि लेलक जे राजाक कान धरि पहुँचा देलकै । भोर होइतहिं राजा सगर नगर मे डिगडिगिया पिटबा देलनि जे जे केओ हिरामनि सुगा पकड़ि लाओत तकरा मुंह-माङल इनाम भेटतै । खास के चिड़ैमारा सभ सं त एतेधरि कहल गेलै जे एक सप्ताह मे जं सुगा नहि भेटल त ओकरा लोकनि कें बाले-बच्चे भाकसी झोंका देल जेतइ ।

डिगडिगिया की पड़लैक - सौंसे नग्र मे हरबिड़रो मचि गेल । सभ केओ बाले-बच्चे बन दिस बिदा भेल । जकरा भेटि जेतैक तकर त दिने सुदिन भ जेतैक - मुंह-माङल इनाम । सभ देवता-पितर कें गोहरबैत विदा भेल सीधा-सम्मर बान्हि क ।

ओहि नग्र मे एगो ढहलेलबा सेहो रहए । ओकरो हरलै ने फुरलै एगो टुटल भाङल पिजड़ा जोगार कए ओहो बिदा भेल आर किछु गोटेक संग । जखन जंगल मे गेल त सभ त सभ दिस अगुआ गेलैक ओ बेचारा लटपटाइत असगरे हिरामनि सुगा-हिरामनि सुगा रटैत बौआइत रहए । बौआइत-बौआइत ओ घनघोर जंगल मे चल गेल । सांझ परि गेलैक आ जखन अन्हार भ गेलैक त बेचारा भुखले पियासल एगो गाछ तर पड़ि रहल । रातियों ओ खाली हिरामनि सुगा-हिरामनि सुगा कहि बिसनाइत रहल । संयोग सं ओहि गाछ पर हिरामनि सुगाक खोता रहै । ओ एकर आकुलता बुझि गेलैक । प्रात भेने जखन ढहलेलबा उठल आ पिजड़ा सम्हारि बिदा होमय लागल त सुगा ऊपर सं पुछलक—कि भाइ, पिजड़ा ल के कथिक खोज मे बिदा भेल छह ?

ढहलेलबा बाजल—हिरामनि सुगा के तकै छियै......राजा मुंह माङल इनाम देतै ....

सुगा पुछलैक—की नाम छह तोहर ?

ढहलेलबा बाजल—नाम की जानए गेलिऐ । लोक सभ ढहलेलबा कहै छइ ।

'हिरामनि सुगा के चिन्हैत छहक ?' सुगा पुछलकै ।

ढहलेलबा बाजल—'हम की देखने छिऐ जे चिन्हबै ।'

हिरामनि सुगा कें हंसी लागि गेलै ओकर सोझमतिया पर । ओ कहलकै—अच्छा तों एहीठाम कनेकाल बिलमह, हम तोरा हिरामनि सुगा पकड़ा देबह ।

—सत्ते ! हमरा हिरामनि सुगा पकड़ा देब ? ढहलेलबा खुशी सं नाचय लागल ।

हिरामनि सुगा अपन टोल-पड़ोसक सभ चिड़ै के खबरि द एकट्ठा केलक आ सभके राजावाला बात कहि ढहलेलबाक संग जेबाक प्रस्ताव सुनओलकै । अपन राजा कें छोड़ै लेल कोनो चिड़ै चुनमुन्नी पहिने त तैयार नै होइ मुदा जखन ओ बहुत बुझओलकै आ कहलकै जे फलां राजाक ओइठाम हम रहब - समय पर अहां लोकनि जा क भेंट क सकैत छी हमहूं आबि सकैत छी - तखन सभ राजी भेलै । सभ कें राजी-खुशी क क हिरामनि सुगा ढहलेलबा के कहलकै—ढहलेल भाइ, हमही छी हिरामनि सुगा । अहां अपन पिजड़ा खोलू हम पैसि जाइ छी आ फेर राजाक ओइठाम ल चलू । अहां के निश्चिते मुंहमाङल इनाम भेटत ।

ढहलेलबा के मन खुशी सं नाचय लगलै । ओ तहिना केलक आ सुगा के लेने दौड़ल राजाक दरबार । जा दरबार मे पहरू सभ हां-हां करै ता ओ राजाक सामने पहुँचि गेल आ पिजड़ा रखैत बाजल—राजा साहेब हम हिरामनि सुगा अनलौहें, हमरा इनाम दिअ।

हिरामनि सुगाक सुन्दरता देखि किछु घड़ी राजा अपलक निहारिते रहि गेलाह । मने मन सोचलनि जे जे साधु ई गप बाजल छल से अन्यथा नहि । ढहलेलबा कें माङबा सं पहिने ओ अपने इच्छे अन्न-पानि, सोना-रूपा गाड़ी पर लदबा ओकरा ओतय पहुँचबा देलथिन । ओ तैखन मिस्त्री बजा कें एगो पैघ सोनाक पिजड़ा बनबा ओइ मे हिरामनि सुगा कें रखलनि । सरिपहुँ राजाक आनन्दक सीमा नहि रहल ।

एहिना जखन किछु दिन बीतलै त एकदिन मारितेरास चिड़ै सब राजाक चिड़ियाखाना मे पहुँचल । राजा के खबरि भेलनि जे हेंज क हेंज रंग-बिरंगक चिड़ै सभ चिड़ियाखाना मे भरि गेलए । राजा के देखि हिरामनि सुगा कहलकनि—हे राजा ई सभ चिड़ै हमर प्रजा थिक जे हमरा सं भेंट-घांट करै लेल कोसो दूर जंगल सं आयलए तें हमर निवेदन जे किछु घड़ीक लेल अपने हमरा मुक्त क दी जे हम एकरा लोकनिक संग गपशप करब । हम अहां के वचन दैत छी जे उड़ि कें पड़ा नहि जाएब ।

राजा के विश्वास भ गेलनि, ओ पिजड़ा के मुंह खोलि देलथिन । हिरामनि अपन प्रजावर्ग के संग एगो विशाल गाछपर बात-विचार केलक । फेर सभ चिड़ै उड़ि कें चल गेलैक आ ओ फिरि आयल । ओकरा संग एगो अपूर्व फल छलैक जे ओ राजा के दैत बाजल—'हे राजा ई श्रीफल थिक जे हमर प्रजावर्ग हमरा लेल अनने छल । ई सभठाम नहि भेटैत छैक से त अपने जनिते होएब । एकर गुण की कही बुढ़ खाएत त जबान भ जायत......तें ई अपने खाइ ।' राजा फल ल कें महल मे पहुँचला त मने मन विचारलनि—जं सरिपहुँ एहि फल मे एहन गुण छइ त किएक नै एकरा रोपि देल जाय जे गाछ हेतैक आ फेर अनेको फल हेतैक.......अनेको लोकक उपकार होएतैक । ओ तहिना केलनि । भोर होइतहि ओकरा फुलबारी मे रोपबा देलथिन आ ओकर देख-भाल लेल एगो फराक माली नियुक्त क देलथिन ।

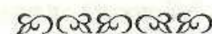
दिन जाइत देरी नहि लगैत छैक । देखिते-देखिते श्रीफल गाछ जनमल आ नान्हिटा सं समर्थ भेल । फेर फूलें-फले माति उठल । लगपासक वातावरण सुन्दर गन्ध सं भरि गेलै । राजाक आनन्दक सीमा नहि रहलनि । ओ फलक रक्षा लेल माली कें फेर सं चेता देलथिन । किछु दिनक बाद एकटा फल पिरौंछ भेलै आ राजाक उत्सुकता आर बढ़ि गेलनि । पाकल फलक अपूर्व गन्ध दूरे सं लोक के अपना दिस खिचि लैक । राजा विचारलनि जे कालि प्रातःकाल ओकरा तोड़ओताह आ श्रीफलक विशेषताक परीक्षा करताह । परञ्च संयोग एहन जे ओही राति ओकर सुगन्ध सं आकर्षित भय कोनो विषधर ओकरा हबकि लेलकै । ई बात लोक बुझबे केना करैत । दोसर दिन राजा माली कें फल तोड़ि आनय लेल कहलथिन । फल जखन आयल त समस्त दरबारीक समक्ष परीक्षा लेल एगो बकड़ी के खुआ देल गेलैक । फल खाइत देरी बकड़ीक मुंह सं गाजु चलय लगलैक आ ओ ओहि ठाम प्राण त्यागि देलक । दरबार मे हरबिड़रो मचि गेल । ओ श्रीफल नहि विषफल थिक आ हिरामनि सुगा राजा के मारबाक लेल ओ फल देने छलनि—सभक तेहने मन्तव्य रहैक । राजा कें सेहो एहि मे अन्यथा नहि बुझेलनि । ओ तुरत हिरामनि सुगा कें मारि देबाक आदेश देलथिन आ नगर मे डिगडिगिया पीटबा देल गेल जे राजा क फुलबारीक श्रीफल नामे विख्यात गाछ विषफल थिक तें लोक सावधान रहए ।

किछुए दिन बीतल छल होएतैक कि ओहि नग्रक एगो धोबी कें अपन पत्नीक संग झगड़ा भेलैक । बात एतेधरि बढ़ि गेलैक जे बुढ़बा धोबी अपन आत्महत्या लेल पोखरिक घाट पर पहुँचल । किन्तु ओइठाम जाइते ओकरा मन पड़लैक विषफलक बात । पोखरिक भीड़े पर फुलबारी रहैक । ओ सभक नजरि बचा क पैसि गेल आ एकटा फल तोड़ि परा आयल । पोखरिक घाट पर बैसि सौंसे फल खेलक त ओकरा बड़ स्वादिष्ट लगलैक । कते काल बैसल रहल मुदा ओकरा कोनो फर्क नहि बुझेलैक त विचारलक जे कने पानि पीबि के देखी । किन्तु जखने ओ पानि लग जा चुरुक मे पानि लेबाक लेल झुकैए त ओकरा

अचरजक ठेकान नहि रहलैक । अपने मुंह जेना अनचिन्हार लगैक । ओकरा मन पड़लैक आइ सं तीस पैंतीस बर्ख पहिनेक गप्प जखन ओ जवान रहै । ले बलैया ई की भ गेलैक । ओकर घोंकचल चाम, पाकल केश, धसल आंखि कतय बिला गेलै ? ओ त फेर जवान भ गेल । ओकरा देह मे जेना जवानीक शक्ति-स्फूर्ति आबि गेल होइक—देह रोमांचित भ गेलैक । ओ पानि पीब छोड़ि फेर फुलबारी मे दौड़ल गेल आ एगो फल तोड़ि लेलक आ आङन दिस दौड़ले गेल । धोबिन ओकरा देखि पहिने त चीन्हबे ने केलकै मुदा बाद मे अपन घरबाली के ओ फल दैत कहलकै जे जल्दी सं खा लौक । ओहो एहिना जबान भ जाएत । लोक झुठे ओकरा विषफल कहै छइ ।

ओ सभ खेरहा अपन घरबाली के कहलकै त ओहो खुशी सं नाचय लागलि । परात होइते ई खिस्सा सौंसे नगर पसरि गेलै । सभक मुंह सं एके बात बहराइ जे राजाक फुलबारीक विषफल खा क बुढ़बा-बुढ़िया त छौंड़ा-छौंड़ी भ गेलै । बात राजाक कान मे सेहो पड़लनि । ओ फेर दरबार लगओलनि आ माली सं एकटा फल मंगबा एगो बुढ़िया बकड़ी के खुआओल गेल । फल खाइते बकड़ी जवान भ गेलै आ जकरा उठै बैसय मे कष्ट होइत रहै से फुदकै लगलैक । राजा के आश्चर्यक ठेकान नहि । बुधियार लोकनि सभ सोचि बिचारि निष्कर्ष बहार केलनि जे हो ने हो पहिलुक फल कें कोनो विषधर हबकि लेने होइक कारण फल पाकल रहैक आ ओकर गन्ध सं आकर्षित भेनाइ विषधरक लेल अस्वाभाविक नहि । एतबा सुनिते राजा अपन माथ कपार पटकि कानय लगलाह । हुनका मुंह सं मात्र एकेटा शब्द बहराइन—हाय रे हिरामनि । तें हे ओजीरक बेटी जं अहां हमरा मारि दैत छी त अहूं के एहने पश्चाताप होएत ।

ओजीरक बेटी अपन तरूआरि ल घुरि एलीह । चारिम पहर राति शेषप्राय छलैक । फरिच्छ भ गेल छलैक । मोसाफिर उठलाह आ अपन झोड़ा-झंटा ल विदा भ गेलाह ।



अबकी बेर फतंग

□

कोनो गाम मे एगो गरीब ब्राह्मण रहथि । धीया-पुता रहनि नञि, जे किछु भीख-दुख माङि-चाङि क आनथि ताइ सं कोनहुना दुनू परानीक गुजर त चलिए जानि परञ्च बेचारे बाभन के कहियो पेट नहि भरनि । ओ एक गाम सं दोसरो गाम ठेकि जाथि बा मोटरियो पैघ आनथि किन्तु राति मे जखन भोजन पर बैसथि त सबिकहे हाल । उएह एकटा रोटी बेचारेक थारी मे । बेचारे के छगुन्ता त लगनि मुदा करता त की ? मन मारि खा लेथि आ भरि लोटा पानि पीबि बलो सं तृप्ति-ढेकार क लेथि ।

किछु दिनक बाद ओ आर बेसी घूमय लगलाह । स्वभावतः मोटरी सेहो आर पैघ होमय लगलनि । किन्तु भोजन मे उएह एकटा रोटी । हुनका संदेह होमय लगलनि । घर मे आर दोसर रहबे के करनि—ल द कें अपने आ स्त्री । तें सोचलनि जे हो न हो ब्राह्मणी अपने बेसी खाइ छथि आ हमरा एकेटा रोटी दैत छथि । परञ्च एकर निस्तुकी हो त केना।

हुनका मोन मे एगो बुधियारी सुझलनि । एक दिन ओ नित्य कृया सं निवृत भ ठीके समय पर झोड़ा-झपटा ल भीख माङय बिदा भेला । किछु दूर जा सभक नजरि सं चोरा क घुरि एलाह आ घरक पछुआर मे नुका क बैसि रहलाह । जखन ब्राह्मणी कांख तर नुआ आ हाथ मे लोटा लेने पोखरि नहाइ लेल विदा भेलथिन, ई चुपचाप घर पैसि कोठीक कोन मे नुका रहलाह । ब्राह्मणी नहा क एली, तुलसी चौड़ा मे पानि ढारि रोटी पकाबए लेल बैसली ! ओ चैन सं चिकस सानि सातटा गोली कटलनि आ सातोक रोटी पकओलनि । पांचटा रोटी सीक पर कोहा मे नुका रखलनि आ बांकी दूटा के सूप मे चालनि सं झांपि चिनमारे पर राखि लेलनि । बिना पति के खुअओने अपने खेबे केना करितथि—भरि टोल मे पतिबरता जे कहबै छली ।

किछु कालक बाद ओ ककरो अङना बुलै लेल गेली । ब्राह्मण एहि फांक मे घर सं बहरा गेला । सांझो ने पड़लै ता झोड़ा झुलबैत थाकल-ठेहिआएल सन लटुआएल बाट धेने

घुरलाह । आने दिन जकां दुरुक्खे लग सं पत्नी के शोर केलथिन । ओहो बेचारी आने दिन जकां भरि लोटा पानि नेने दौड़ली मुदा घरबलाक हाथक झोड़ा खाली देखि छगुन्ता मे पड़ि गेली । ब्राह्मण के बुझबा मे देर नहि भेलनि । घरबाली जा किछु पुछथिन ता अपनहि बजलाह—की पुछैत छी, देह जेना खण्ड खण्ड तोड़ने जाइए । गाम सं बहराएले छलहुँ कि माथ चक्कर देमय लागल । भेल जे खसि ने पड़ी । पीपरक गाछ तर पड़ि रहलहुँ । मन कने नीक भेल त फीरि एलहुँ । तें जे किछु कन-साग बनओने होइ दिअ दू कर खा पानि पीबि पड़ि रहब ।

ब्राह्मणी त तामसे माहुर भ गेली मुदा बजती की ? कहलथिन—नीके केलहुँ । हमरा लोकनि पर जखन विधाताए तमसाएल छथि त अनकर कोन दोष । पहिने जान तखन ने जहान । पएर-हाथ धोने आउ ता हम सचार लगबैत छी ।

सचार की कपार लगबितथि । आने दिन जकां सौंसे रोटी के दू टूक क क थारी मे परसि देलथिन आ कने नून आ एगो हरियर मिरचाइ ध देलथिन । ब्राह्मण नवेद देलनि आ भरि दिनुका भुखाएल रहबे करथि, चारिए कौर मे रोटी शेष भ गेलनि । बजला—हे ब्राह्मणी ! देखु सौंसे रोटी खा गेलहुँ किन्तु लगैया जेना किछु खेनहि ने होइ । कनेको जं आर दितहुँ ।

ब्राह्मणी कहलथिन—इएह त आर एकटा अइ - हमर हिस्सा । बरू आधा अही मे स ल लिअ ।

ओ आर आधा रोटी हुनका थारी मे ध देलथिन । बाभन ओहो गट-गट क गीड़ि गेला आ बजला—ओह, तैयो ओहिनाक ओहिना ।

बेचारी पतिबरता नारी ओहो आधा रोटी हुनका आगा मे द देलथिन । ब्राह्मण ओकरो निघटा क बजलाह—एहू सं मोजर नहि भेल । आर कतौ देखियौ ।

ब्राह्मणी तमसाइत कहलथिन—आर कत' देखियौ ? जे छल से सामनहि मे छल।

ब्राह्मण बजलाह—मुदा ताइ सं भेल कहां । हांडी बासन, कोठी-सीक—कतौ ने किछु रखने छी ? तकियौ ने कने ।

बेचारी मन मसोसि क सीक पर सं एगो रोटी बहार केलनि । रोटी बहार करैत तेना कें हाथ सं तौला हरहरा देलथिन जे आब आर किछु नहि अइ । ब्राह्मण ओहो रोटी खा लेलनि तखन फेर ओहिना मिनती करए लगलथिन । एहिना करैत-करैत ओ छ टा रोटी जखन खा लेलनि तखन भरि छाक पानि पीबि ढेकरैत उठि गेलाह । उठैत-उठैत कहलथिन—जाउ हे ब्राह्मणी ! आन दिन हम एकटा आ अहां छटा, आइ हमहीं छटा आ अहीं एकटा ।

ई गप्प सुनि ब्राह्मणी आर छगुन्ता मे पड़ि गेली । ओ सोचलनि—हो ने हो ब्राह्मण अगरजानी जनैत छथि ने त बुझबे केना केलनि । ओ एही गुनधुन मे रहथि ता एगो धोबी, जकर गदहा बौरि गेल रहै, पुछारी करैत पहुँचल । ब्राह्मणी झट द कहलथिन—हे हमर ब्राह्मण अगरजानी जनै छथिन । जाक' पुछियनु ने, अबस्से भेटि जाएत ।

ब्राह्मण ता ओछाओन पर पड़ले रहथि कि धोबी उपस्थित । ओ कल-जोड़ि मिनती करय लगलनि जे कोनहुना ओकर गदहाक पता कहि देथिन । ओकरा मात्र एकेटा गदहा छैक । ब्राह्मण ओकरा कतबो बुझबथिन जे ओ ई सब नहि जनै छथि, ओ किएक मानतनि। अन्त मे आजिज भ के ओ कहलथिन—जो, दछिनबारि बाध दिस देखही ग । ओम्हरे कतौ चरैत होएतौ । धोबि हहाएल-फुफुआएल दौड़ल । संयोग एहन जे सरिपहुँ गदहा भेटि गेल।

किछु दिनक बाद एगो एहने घटना घटलै । कोनो बनियांक घोड़ा हेरा गेलै । ओ तकैत तकैत जाइत छल कि ब्राह्मणी लेसि देलथिन । ओहो ब्राह्मण लग पहुँचि मिनती करय लागल । ब्राह्मण के बुझै मे देरी नहि लगलनि जे घरक भेदिया लंका डाह । करबे कि करितथि—बनियो मानैवला नहि । अन्दाजे झटहा फेकलनि—जो देखही ग, पोखरिक कात बांस-तांस मे ओझराएल हेतौ । बनियां तकलक त ठीके बंसबिट्टी मे घोड़ा ओझराएल छलैक । परात भेने ओ भरि आंजुर सुपारी ब्राह्मण के द गेलनि । ओमहर परोपट्टा मे ब्राह्मणक नाम पसरि गेल । एमहर ब्राह्मण सोचथि जे कोन दुरमतिया घेरलक जे छटा रोटी खेलहुँ । ऐना मे कोनो दिन अपटी खेत मे ने मारल जाइ ।

किछु दिनक बाद ओही परगनाक जमींदारक घर मे चोरि भ गेलै । मारिते रास गहना-गुड़िसा, टाका-पैसा ल गेलै । कत, कत, सं ने बाटी चलओनिहार, नाम उचारनिहार आएल मुदा असली चोरक पता केओ ने लगा सकल । अन्त मे मोसाहेब पहुँचल एइ ब्राह्मणक ओतए । बेचारे ब्राह्मण के त काटू त खून नहि......डरे सर्द । एइ बेर कोन उपाय करता । मोसाहेब कें काल्हि दरबार मे जेबाक बहन्ना बना कोनहुना पटा देलथिन परञ्च बेचारे कें राति भरि निन्न नहि भेलनि । एही गुन-धुन मे रहि गेलाह ।

भिनसरे स्नान पूजा सं निवृत भय ओ जमींदारक ओइठाम पहुँचलाह । सम्मानो कम नहि भेलनि । ब्राह्मण अपन भाभट पसारलनि—एते जओ, एते तील, एते घी........ फरमाइस क देलथिन । ओ तीन दिन धरि होम करता आ चारिम दिन चोरक नाम घोषणा करता ।

जमींदार सभ वस्तु पूरा क देलथिन । होम आरम्भ भेल । एक दिन, दू दिन, तेसरो दिन बीतल । ब्राह्मणक हृदयक धड़धड़ी आर बढ़ले जाइन । राति मे सूतल रहथि मुदा निन्न हो तखन ने । काल्हि चोरक नाम घोषित करए पड़तनि—अन्यथा कल्याण नहि । मुदा नाम कहबे केना करथिन, किछु जानथि तखन त । अन्ततः सभ भाग्य पर छोड़ि ओ निन्द्रा देवीक आराधना केलनि—आबह हे निनियाँ ।

एतबा कहिते ओ देखलनि झट द एगो स्त्रीगण हुनका सामने हाथ जोड़ि ठाढ़ छनि। फेर ओ हिनक पएर पकड़ि कलपि-कलपि कहय लगलनि—मालिक हमरा जी-जान बकसि दिओ । हमरा जेहिनती क़हब तेहिनती हम करबै । हे इएह हइ सभ गहना । ई कहि ओ सभ गहना-गुड़िया हिनका पएर पर राखि देलकनि ।

ओ जमींदारक खबासिनी छलि, नाम छलै नेनिञा । ब्राह्मण जखन निद्रादेवीक आराधना केलनि त ओकरा भेलै जे ओकरा बजा रहल छथिन । ब्राह्मण बुझि गेलथिन जे उएह चोरी केने अइ ।

ब्राह्मण ओकरा आश्वस्त करैत कहलथिन—एइ गहना सभ के पछुआरक भुस्साक ढेरी मे नीक जकां घुसिया दही । सावधान, केओ देखौने । तोरा कोनो डर नहि—हम तोहर नाम नहि कहबैक । चुपचाप अपन घर चलि जो ।

ब्राह्मण सूति रहलाह । भिनसरे उठि नित्यक्रिया सं निवृत भय दरबार मे पहुँचला । लोक मिस पड़ै छल । सभ चोरक नाम सुनै लेल, ओकरा देखै लेल उत्सुक छल । ब्राह्मण शान्त भावें घोषणा केलनि—घर पछुआरक भुस्सा ढेरीमे तकबाओल जाए । मुस ल गेलए।

तुरत्ते भुस्सा ढेरी के ढाहल गेल । सबटा गहना ठीके भेटि गेलै । जमींदार सेहो खुश भेल आ ब्राह्मण के मोट दान-दक्षिणा भेटलनि । ओ अपन घर घुमि एलाह आ तकर बाद हुनक दिन-दिवस आर नीक जकां चलय लगलनि ।

किछु दिनक बाद ओहि देशक राजा कें की ने की फुड़लनि, ओ पंडित-जोतखी कें आ विशेष कें गणतकार लोकनिक परीक्षा करैक लेल एगो अभिनव आयोजन केलनि । देश-विदेश सं गणतकार लोकनि के हकार द आनल गेल । राजा एगो विराट मंडप बनबओलनि आ ताइ मे सातटा सोनाक कलस बैसाओल गेल । सभ कलस सोनेक ढाकन सं झांपल छलैक । घोषणा कएल गेलै जे ओइ कलस सभ मे की अछि से जे किओ अपन विद्या-बुद्धिक बलें ठीक-ठीक कहि देताह राजा तकरा अपन आधा राजपाट त दैए देथिन, संगहि आनो सम्मान देल जेतनि । जं ओ लोकनि से कहबा मे असमर्थ भेलाह त बाले-बच्चे भाकसी झोका देल जेतनि ।

सभ पंडित-जोतखी लोकनि अपन-अपन हिसाब करए लगलाह परञ्च किनको मिलबे ने करनि । एमहर बेचारे ब्राह्मण त सहजहि किछु जनिते ने रहथि । सभक स्थिति तेहने जे जान बचय त लाखो पाबी, परञ्च तकरो आशा ने छलनि । सभ माथ निचा केने बैसल रहला । जं किछु गोटे बजबो केला त अन्टे-सन्ट । अन्त मे छलाह इएह ब्राह्मण—मृत्युक चिन्ता सं त्रस्त भेल । परञ्च सोझे नहि बुझि सकबाक बात नहि कहि ओ एना जवाब देलथिन—

थप्पा गनि-गनि रोटी पकओलनि
गदहा ढोभ चरन्त
घोड़ा बांस फसंत
निनिञा कहैत जे नेनिञा आएलि
घर-पछुआर मे भुस्सा
तइ मे ल गेल मुस्सा
अबकी बेर फतंग

सिंहासन पर बैसल राजा थपड़ी पीटय लगलाह त आनो-आन लोक सभ बिनु किछु बुझनहि थपड़ी पीटय लागल । एमहर बेचारे ब्राह्मण कें किछु बुझै जोग ने होइन । असल मे नहि बुझि पेबाक कारणे ओ अबकी बेर फतंग कहने छलथिन । ओमहर राजा जे कलस सभ मे एक-एकटा कें फनिगा मारि रखबा देने छलथिन तिनका मने ब्राह्मण असली बात बुझि गेलाह आ तें फतंग कहलनिहें । ब्राह्मणक गरदनि मे विजयमाला पहिरा देल गेल। अनेको सम्मानक संग हुनका आधा राजक अधिकारी घोषित क देल गेल । गद्‌गद्‌ भेल ब्राह्मण अपना घर आपस भेलाह ।



महाराजा विक्रमादित्य



एकटा रहथि राजा । हुनका चारि टा बेटी रहनि । चारू जेहने देखबा-सुनबा मे उपरा-उपरी रहए तेहने शीलो स्वभाव रहैक । चारू बहिनी रोज स्नान कय महादेबक मंदिर मे पूजा करैत आ अपन-अपन मनोकामना पूरा करबाक वरदान मङैत । एहू मे छोटकीक मनोकामना फराके रहैक । ओ रोज महादेव कें कहितनि—'हे महादेव बाबा ! जं हमर बियाह हो त राजा विक्रमादित्य संग हो ने त कुमारिए मरि जाइ से नीक, दोसरक संग बियाह नहि हो ।'

ओकर वर माङब सुनि-सुनि तीनू बहिनी भभा-भभा कें हंसै आ जखन-तखन मजाको क दैक । परञ्च छोटकी कोनो उत्तर नहि द चुपचाप सभ सुनिटा लैत छलि ।

दिन बितैत गेलै आ जं जं राजकुमारी सभ समर्थ होइति गेलि—वियाहो दान भ गेलै । बांकी छलि छोटकीटा । राजा ओकरो लेल राजकुमारक खोज मे लागल छलाह । ओमहर छोटकी राजकुमारीक बिक्रमादित्यक संग वियाह वाला वरदान माङबाक गप महाराजा बिक्रमादित्यक कान मे सेहो पड़लनि । ओ एक दिन कोढियाक भेष बना ओहि मंदिरक धुरखुर लग आबि कें पड़ि रहलाह । एमहर छोटकी राजकुमारीक बियाहक गप्प चलैत छलै तें ओकर जेठकी बहिन सभ सेहो नहिरे मे छलि । ओइ दिन फेर चारू बहिनी संगे नहाएल आ मंदिर मे पूजाक लेल पहुँचलि । मुदा मंदिर लग जाइते कोढ़िया के पड़ल देखि छोटकी कें छोड़ि सभ तामसे माहुर भ गेलि आ ओकरा मारिते अवाच कुवाच कहए लगलैक । कोढ़िया अनुनय करैत कहलकै जे ओकरा कएक दिन सं दू कर अन्न आ कि दू घोंट पानि नहि भेंटलैए आ तें दम नहि छैक जे घुसुकियो सकत । तें बेर्थे गारि-सराप नहि द बरू कोनो कात क ससारि देथुन आ ओ लोकनि मंदिर मे पूजा लेल जाथु । ओकर ई गप्प सुनिते त आर तीनू बहिनी कें तरबाक लहरि टिकासन चढ़ि गेलनि । जेठकी बजली—

बजरखसओनाक सखने देख । बाढ़नियें सं झंटियेबह ने कि हाथ पकड़ि क उठेबह । नहा सोना क लोक हिनका देह मे भीरत ।

बिक्रमादित्य कहलथिन—हे दाइ, आहां लोकनि की बाढ़नि मारब । हमरा त दैवे जखन मारने छथि त मनुक्खक कोन दोख । मुदा हमरा उठ-बैस करबाक सक अछिए ने त की करी ?

छोटकी कें दया लागि गेलनि । ओ अपन बहीन कें कहलथिन—गे दीदी, किएक गारि-सराप दैत छिही ? ओहिना त बेचारा के कोढ़ि फुटल छइ । तों सभ कात भ जो हम ओकरा उठा क एक कात मे बैसा दैत छिऐक ।

बड़की बहिन मुंह दूसि देलथिन मुदा तैयो छोटकी ओकर डेंग पकड़ि दोसर कात मे बैसा देलथिन आ फेर दौड़ि क पोखरि सं नहा एलीह । ता तीनू जेठिजनि पूजा क बिदा भ गेल छलीह । छोटकी पूजा केलनि आ फेर ओइ कोढ़िया लग जा क कहलथिन अहां एहीठाम रहू हम खेनाइ पठा देब । बिक्रमादित्य कृतज्ञता सं देखैत सहमति मे अपन घेंट हिला देलथिन ।

आङन जा सभ बहिनी खाय-पीबै मे लागि गेली किन्तु छोटकी एगो थारी मे भात, दालि, तरकारी सांठि अपने ल क विदा भेली । कोढ़िया लग जा कें कहलथिन—हे लिअ, खा लिअ ।

कोढ़िया अनुनयक स्वर मे बाजल—हे राजकुमारी ! अहां बेकारे एते मेहनति केलहुँ। हमरा ने त ओतेक शक्ति अइ आ ने हाथे अइ खेबा जोग । ओना भ त जायत छोट मुँह पैघ बात मुदा तैयो कहय पड़ैए—जं अपने हाथे खुआ दी त बड़ गुण मानितौं ।

राजकुमारी के दया लागि गेलनि । ओ ठामहि बैसि गेलीह आ अपने हाथे सानि क ओकरा मुंह क खुआवय लगली । तीन-चारि कओर खुअने हेथिन ता ओ कोढ़िया अपन गुदरी सं एक पुरिया सिन्दुर बहार क हुनका सिंउथ मे ध देलकनि । राजकुमारी सन्न रहि गेलीह । बड़ कष्ट सं कहलथिन—ई अहां की कएल ! हम अहांक नीक केलहुं आ अहां..... । फेर महादेव कें सम्बोधित करैत बजलीह—'हे महादेव, हमर मनोकामना कि इएह छल ? कि हमर पूजा मे त्रुटि छल ?' ओ कनैत ओहि ठाम बैसल रहली, आङन जेबाक साहस नहि होइन ।

एमहर अहर बीतलै, पहर बीतलै मुदा छोटकी राजकुमारीक कोनो पता नहि पाबि सभ चिन्तित छल । सभ सं बेसी चिन्तित छलथिन माय । अन्त मे जेठकीए राजकुमारी जे एकरा थारी मे भात लेने महल सं बहराइत देखने छलथिन टीपलथिन—दयाबती भरिसक कोढ़ियाक सेवा-टहल मे बाझल होयथुन । थारी-भरि भात लेने जाइत त देखने छलियनि।

महारानीक आदेश सं कतेको झी-चाकर मन्दिर दिस दौड़ि पड़ल । मंदिर मे जाइते ओकरो लोकनि कें ठकमुरी लागि गेलैक—कोढ़ियाक बगल मे कनैत बैसलि आ सिंउथ मे सिन्दुर कयल राजकुमारी कें देखि । ओइ मे सं केयो हकासल-पियासल महल दिस दौड़ल

आ महारानी कें सब खेड़हा कहलकनि । देखिते-देखिते महल मे ई बात पसरि गेल । महारानी कनैत-कनैत बताहि भेल त दोसर दिस राजा तामसे माहुर । जेठकी तीनू राजकुमारी मन्दिर दौड़ली । जाइते पहिने जेठजनि अपन बहिन सं कहलथिन—'त, मंहादेव सरिपहुँ तोहर अराधना सुनि गेलथुन । साक्षाते महाराज बिक्रमादित्य कें आनि सिनुरदान करबा देलथुन ।' एतबा कहि ओहो लोकनि घुरि गेलीह । छोटकी कनैत रहली । अन्त मे कोढ़िया बाजल—हे राजकुमारी, जे होएबाक छलै से त भइए गेलै, आब कनला सं लाभे की । मुदा राजकुमारी हिचुकैत रहली । ओमहर महल मे कनैत छली महारानी ।

राइत भ गेलै । पहर राति बीतल होएतैक त महारानी दू थारी भात-दालि संचार लगा खबासनी द्वारा पठबा देलथिन । राजकुमारी अपने की खएती—कोढ़िया के खुएबा लेल एक थारी ल क बैसली । मुदा कोढ़िया जिद्द ध लेलक जे जात ओ नहि खएतीह ता ओहो नहि खाएत । एतेकालक बाद राजकुमारीक बकार खुजलनि । बजलीह—आब अहां हमर पति छी, तें अहां के बिनु खुअओने हम खेबे केना करब ।

कोढ़िया बाजल—त ठीक छइ, हम अपने हाथे खाइत छी आ अहूं अपन थारी ल बैसू ।

राजकुमारी पुछलथिन—अहां के अपने हाथे खाएल हएत ?

कोढ़िया बाजल—एते दिन त खाइते छलहुँ आइयो प्रयास करब ।

दुनू गोटे खेनाइ आरंभ केलनि मुदा राजकुमारी के घोंटाइन तखन ने । कोनहुना दू चारि कओर खा पानि पीबि लेलनि । काते मे अपन आंचर सं जगह साफ क क पति के सुता देलथिन आ अपने देवाल सं ओङठि गेलीह । आंखि सं दहो-बहो नोर बहिते रहलनि।

बिक्रमादित्य कहलथिन—हे राजकुमारी जं अहां एहिना नोर बहबैत रहब त एकर पाप त हमरे पर पड़त कारण एकर कारण त हम छी । पता ने पूर्व जन्म मे ककर कतेक नोर बहओने छलिऐक जे ई अवस्था भेल आ फेर अगिला जन्म........ । राजकुमारी बीचहि मे हुनक मुंह झांपि देलथिन—भगवानक लेल एहन कथा जुनि बाजी । ई त हमर पूर्व जन्मक फल थिक । अहांक कोन दोख ।

कनेक काल दुनू चुप रहलाह । फेर बिक्रमादित्य पुछलथिन—एकटा बात कहू ?

—की ? राजकुमारी छोट सन उत्तर देलथिन ।

बिक्रमादित्य कहलथिन—हमर विचार अइ जे कालि प्रातःकाल अहां अपन बाबू लग जइतहुँ आ कहितियनि ओइ कात एकटा छोट-छीन खोपड़ी बनबा दितथि । पोखरिक भीड़ परक सुन्दर बसात आ महादेव बाबाक स्थान सन पवित्र जगह आर कतय भेटय ।

राजकुमारी बजली—हमर त विचार छल जे कतो दूर देश चलि जइतहुँ जे एइ नग्रक लोक सं भेंट नहि होइत । दोसर हमर बाबूजी तेहन तमसाह छथि खोपरी त दूर जाओ हमरा महल मे ओ पएरो ने देमय देताह ।

बिक्रमादित्य कहलथिन—त माय के कहियनु ने । माय-माइये होइत छैक । नेना लाखो अन्याय करौक ममता नहि कमैत छैक ।

राजकुमारी चुपे रहलीह । आस्ते-आस्ते महाराजक आंखि लागि गेलनि आ राजकुमारी सेहो औंघाय लगली ।

प्रातःकाल राजकुमारी महल लग पहुँचली आ अपन माय कें समाद देलथिन । कनैत-कनैत माइक आंखि लाल छलनि । ओ राति भरि सुतलो ने छलीह । कोनटा लग गेलीह त राजकुमारीए भरोस देलथिन—मां अहां किएक कनैत छी ? अहां त जन्म देलहुँ कर्म त हमर अपन अइ । भाग्य मे जे लिखल छल तकरा के टारत । अहां सं हमर एतबे प्रार्थना जे पोखरिक भीड़ पर मंदिरक कात मे एगो छोट छीन खोपड़ी बनबा दिअ...... ।

राजकुमारी घुरि एलीह । महारानी ई बात राजा कें कहलथिन त ओ बमकि उठला। रानी बड़ निहोरा पाती केलथिन तखन कोनहुना राजी भेलाह । प्रात भेने दू चारि बहिया जा कें एकटा खोपड़ी ठाढ़ क देलकै । राजकुमारीअपन पतिक संग ओइ मे गुजर करय लगली ।

किछु दिनक बाद एक दिन राजाक तीनू जमाय रंग-बिरंगक घोड़ा पर चढ़ल ओही बाटे शिकार खेलाय जाइत छलाह । राजकुमारी के देखिते ओ लोकनि नजरि फिरा लेलथिन। राजकुमारी कें बड़ कचोट भेलनि । ओ मन मारने घरक एक कोन मे बैसल रहथि । राजा बिक्रमादित्य कें राजकुमारीक मनस्थिति बुझबा मे भाङठ नहि छलनि । तैयो ओ अपन पत्नी सं पुछलथिन—फेर की भेल जे एना मुंह लटकओने बैसल छी । किछु कहबो त करब ।

राजकुमारी बजली—अहां सं कहिए क की ? अहां जं ताइ जोगरक रहितहुँ त हमर एहने दिन रहैत जे लोक हमरा देखि मुंह घुमा लित ।

बिक्रमादित्य कहलथिन—एना बुझौअलि नहि बुझा साफ-साफ कहू ने । एहनो त भ सकैछ जे हम ताइ जोगरक होइ ।

राजकुमारी कें मने मन तामसो भेलनि मुदा तकरा नुका ओ सभ बात अपना पति सं कहलथिन । सभ बात सुनि राजा बिक्रमादित्य कहलथिन—'बेस त, अहां अपन बाबूजी सं हुनकर कटहा घोड़ा माङि आनू । ओइ पर त केओ चढ़ितो ने छइ, बेकारे बैसल रहै छइ।'

एतबा सुनिते जेना राजकुमारीक मन खुशी सं नाचय लगलनि । ओ दौड़ले राजमहल पहुँचली आ पिता सं अपन याचना सुना देलथिन । राजा लोहछले जबाब देलथिन—ल जा ने घोड़सार सं खोलि क । काटि लेतह, मरि जेबह, तैयो त मन सान्त हएत । बुझबै जे मरि गेल छोटकी बेटी ।

राजकुमारी माथ झुकओने घोड़सार पहुँचली आ घोड़ा कें खोलि बिदा भ गेली । जे देखै तकरे अचरज लगै जे कटहा आइ एते शान्त केना भ गेल आ राजकुमारीक पाछा लागल सहजे बिदा भ गेल । राजकुमारी घोड़ा लेने अपन घर पहुँचली त बिक्रमादित्य पुछलथिन—अनलहुँ ? आब हमरा कने ओकरा पीठ पर बैसा दिअ ओरिया कें ।

राजकुमारी की बैसओथिन, बैसला त बिक्रमादित्य अपनहि मुदा बहाना लेल राजकुमारी धेने धरि रहथिन । हिनका पीठ पर बैसिते घोड़ा हिनहिनाइत चलि देलक । एमहर राजकुमारीक छाती धड़कय लगलनि जे कहीं खसि ने पड़थि । ओ महादेव बाबा कें गोहराबय लगली । ओमहर नगर सं बहराइते विक्रमादित्य अपन असली रूप पकड़लनि आ ओम्हरे घोड़ा दौड़ओलनि जेमहर साढ़ू सब गेल छलथिन । किछुए काल मे घोड़ा उड़बैत ई सभ सं आगू बढ़ि गेलाह । तीनू साढ़ू अपना सं आगू होइत घोड़ा आ गन्धर्व सन सुन्नर ओकर सवार के देखिते रहि गेलाह । सभ सोचथि जे हो ने हो ई निश्चिते कतौक राजा थिक—परञ्च कतक ? एही गुनधुन मे तीनू साढ़ू सगरो जंगल बौआइत रहला परञ्च ने त ओ घोड़सवारे कतौ देखाइ पड़नि आ ने कोनो शिकारे अभरलनि । अन्त मे हिनका लोकनि कें पियास लगलनि आ शिकारक आशा छोड़ि पानिक खोज करय लगला । जाइत-जाइत बहुत दूर पर एगो विशाल किन्तु सुन्नर पोखरि देखाइ पड़लनि । तीनू साढ़ू ओतय पहुँचला । पोखरि चारू कात सं घेरल छ्लैक आ पूब सं खूब पैघ घाट बनबाओल छलैक । तीनू साढ़ू अपन घोड़ा सं उतरि पानि पीबाक लेल घाट पर पहुँचला त देखैत छथि जे उएह घोड़सवार पहिने सं ओइठाम बैसल अइ । जखने दू-तीन सीढ़ी उतरल होएताह कि ओ घोड़सवार टोकलकनि—क्षमा करब, एइ पोखरिक उपयोग सर्वसाधारणक लेल मनाही छइ ।

तीनू साढ़ूक पएर ठमकि गेलनि । ओ लोकनि अपन पिता आ ससूरक परिचय दैत अनुनय करय लगलथिन जे कोनहुना एक घोंट पानि पीबाक अनुमति भेटनु ने त पियासे हुनका लोकनिक प्राण छुटि जेतनि ।

बिक्रमादित्य कहलथिन—अपने लोकनिक स्थिति देखि अनुमति देल जा सकैए परञ्च किछु मूल्य त देबहि पड़त ।

तीनू साढ़ू संगहि पुछलथिन—की मूल्य ?

बिक्रमादित्य कहलथिन—इएह देखैत छिऐ ने एइ बोरसी मे आगि छइ आ एइ मे तामक पाइ धीपि रहल छइ । एइ धीपल पाइ सं जांघ पर दागल जेबाक पश्चाते पानि पीबाक अनुमति भेटि सकैछ ।

तीनू साढ़ू एक दोसराक मुंह ताकय लगला । फेर तीनू कनफुसकी केलनि आ निर्णय लेलनि जे शर्त्त मानियो क पानि पीनाइ आवश्यक ने त बांचब कठिन । दोसर जांघ परक दाग देखबे के करत—ओ त वस्त्रक तर सदिखन झांपल रहत । ओ लोकनि अपन निर्णय सुना देलथिन । बिक्रमादित्य एकाएकी तीनू साढ़ू कें दगलनि आ पानि पीबाक अनुमति द देलथिन । पानि पीबि तीनू साढ़ू अपन घोड़ा पर चढ़ि आपस भेलाह । दागकाल त ओतेक कष्ट नहि बुझाएल छलनि मुदा बुझाइत छलनि आब ।

जखन ई लोकनि किछु दूर गेल होएताह तखन बिक्रमादित्य सेहो उठलाह आ अपन घोड़ा पर चढ़ि बिदा भेलाह । कनिये कालक बाद फेर तीनू साढ़ू सं ई आगू बढ़ि गेलाह

आ फेर तीनू साढ़ू हिनका आश्चर्य सं देखैत रहल ओ हिनका बारे मे सोचैत रहल । पहर दिन अछैते ई घुरि एलाह । नगरक लग अबिते फेर अपन कोढ़ियाक रूप बना लेलनि । राजकुमारी कोनटा धेने ठाढ़ छलथिन, हिनक हाथ पकड़ि घोड़ा सं उतरबा मे मदति केलथिन । बिक्रमादित्य हिनका घोड़ा आपस क देबाक लेल कहलथिन ।

राजकुमारी जखन घोड़ा आपस करै गेली त फेर लोक अचरज सं हिनका देखनि। अपन खोपड़ी मे घुरिते पति सं पुछलथिन जे शिकार मे की मारि कें अनलनिहे त एगो झोड़ा हिनका हाथ मे थम्हा देलथिन । राजकुमारी झोड़ा खोलिते माथ पीटय लगलीह—हे भगवान हिनका जेहने समाङ तेहने बुद्धियो । फेर अपन पति सं बजली—ई एक झोड़ा चिड़ैक लोल-ठोर जे नेने एलहुँए से एकरे तीमन हेतै ?

बिक्रमादित्य बिहुँसैत कहलथिन—रन्हबै तखन त आ कि पहिने माथ कपार पीटय लगलौं । एइ सं नीक माउस हुअए । जाउ नीक जकां पोखरि सं धो लाउ । बनाओल-सोनाओल त छैके ।

राजकुमारी चिन्तित होइत बजली मुदा रन्हबै कथी मे ? लोहियो त ने अइ ।

बिक्रमादित्य कहलथिन—हं यै, भन्ने त मन पाड़लहुँ । पछुअति मे छाउरक ढेरी पर देखियौ त । हमरा बुझबा मे आएल छल जे एकटा नवे लोहिया ओइपर राखल हो ।

राजकुमारी के विश्वास त नहि भेलनि तैयो की करती - गेली । मुदा देखैत छथि जे सरिपहुँ एगो छोटकी लोहिया राखल । सोचलनि जे हो ने हो—मां ककरो दिया रखबा गेल हो । ओ लोहिया आ माउस ल क पोखरि सं धो अनलनि आ रान्हय बैसली । झलफल भ गेल छलै तैखन तीनू साढ़ू घोड़ा सं खाली हाथ फीरल अबैत छलाह - जेना थाकल ठेहिआयल । बिक्रमादित्य पत्नी सं कहलथिन—अहींक बहिनोइ सभ छलाह भरि सक ।

राजकुमारी माउस रान्हय लगली त आर आश्चर्य लगलनि । लोल-ठोर सब फूलि-फूलि क चुनल-चुनल मांस खण्डसन भ गेलैक आ जखन खेलनि तखुनका आनन्दक वर्णने ने हो । एहन विलक्षण मांउस ओ पहिने खेनहुँ ने छली । खाइ काल मे स्वामी किन्तु टोकिए देलखिन—लोल ठोरक स्वाद त नहि कहलहुँ ? आ ओ सत्ते लजा गेल छली ।

एहिना किछु दिन बीति गेलै । राजा पोखरिक जाग ठीक कएलनि कारण ओ पोखरि कुमारिए छलैक । बड़ धूमधामक संग जाग आरम्भ भेलै । विशाल मंडप मे राजा रानीक संगहि हुनका लोकनिक तीनू बेटी जमाय सेहो नव-नव वस्त्राभूषण मे उपस्थित छलथिन । छोटकी राजकुमारी अपन कोनटा लग ठाढ़ देखैत रहथि आ हुनका आंखि सं दहो-बहो नोर बहल चल जाइत रहनि । राजा बिक्रमादित्य सभ देखि मने मन बिहुँसला आ उपर सं ओहिना उदास भेल अपन स्त्री सं पुछलेथिन—फेर आइ की भेल ? बाप पोखरिक जाग क रहल छथि आ अहां कनैत छी ? शुभ घड़ी मे केओ नोर बहाबए ।

राजकुमारी कहलथिन—हम नहि कानब त कानत के हमर मुदै ? शुभ घड़ी त ठीके छैक मुदा ककरा लेल ? तीनू बहिन ओझा लोकनि आनन्द-उत्सव मना रहल छथि

आ एकटा हम छी जकर खोजो पुछारि नहि । जरलाहा के ओतबो उपाय नहि जे एगो बसनी भरि कें ओइठाम राखि पबितौं ।

बिक्रमादित्य बिहुँसैत कहलथिन—दुर बताहि नहि तन - एही बात लेल लोक कनैए । घरक कोन मे जे एगो बसनी देखने छलौं से केहन छल ? हमरा त नबे बुझि पड़ल।

राजकुमारी आश्चर्य सं अपन पति दिस तकैत बजली—घरक कोन मे !

बिक्रमादित्य कहलथिन—त हम झूठ कहै छी । अहां के त कनबाक पाछा कथुक सोह नहि रहैए ।

राजकुमारी कहलथिन—मुदा बसनी आत कतय सं ?

बिक्रमादित्य ओहिना गंभीर भेल कहलथिन—भ सकैए एही काजक लेल माय पठबा देने होथि आ केओ चुप्पे आबि राखि चल गेल हो ।

राजकुमारीक मोन मानि गेलनि ओ दौड़ले घर गेली त देखै छथि जे सत्ते नबे बसनी कोनटा मे राखल । ओ बसनी ल कें दौड़ली पोखरि मे जा ओकरा नीक जकां धो-धा कें अछिंजल भरि मंडपक कात मे राखि देलथिन आ अपने एक कात मे माथ झुकओने ठाढ़ भ गेली ।

राजा हिनका बसनी रखैत देखलथिन आ देखिते माहूर भ गेलाह । एगो चाकर के तैखन हुकुम देलथिन ओ बसनी फोड़ि देबाक लेल आ चाकर संगहि आदेशक पालन केलक । मुदा ई की ! बसनीक सभ खपटा जे सोना जकां चमकै छइ । ओ चिचिया के राजा कें कहलकनि जे बड़ अजगुत भेल महाराज बसनीक सभ टुकड़ी सोन भ गेलैक । महाराज ओकरा दपटि देलथिन जे ओकर माथ खराप भ गेलैए । फेर दोसर देखलक आ सभा मे सोर मचि गेल जे राजाक छोटकी बेटीजे कलस भरि कें देने छलथिन आ राजा जकरा फोड़बा देलथिन से सोना भ गेलै । एहन अजगुत त केओ सुननो ने छल । राजा अपनो जाक' देखलनि त बात सत्ते । ओ पंडित लोकनि सं परामर्श केलनि त पंडित लोकनि कहलथिन जे हो ने हो ई सभ अपनेक छोटका जमायक करचश्मा थिक । ओ साधारण लोक नहि । सरिपहुँ कोनो महान पुरुष छथि । एतबा सुनिते राजा ओइ खोपड़ी दिस दौड़ि पड़लाह । पाछा-पाछा पंडित लोकनि आ प्रजावर्ग छल । नहि गेलाह त राजाक तीनू जमाय आ बेटी लोकनि । तीनू साढ़ू बतिआइत रहथि जे पंडितो लोकनिक बुद्धिये हेरा गेलनि । एकटा कोढ़िया कहांदन महान पुरुष थिक-अवतारी ।

ओमहर छोटकी राजकुमारी जखने अपन पिताक आदेश सं कलस फोड़ल जाइत देखलनि तखने पड़ा कें अपन घर आबि कानय लगली से कनिते छलीह । तकर बादक घटनाक भनकियो ने हुनका लगलनि, ध्यान तखन टुटलनि जखन अपन खोपड़ी लग हल्ला-गुल्ला सुनलनि । उठि धुरखुर लग आबि गेली । ता बाहर मे पड़ल बिक्रमादित्य मने मन बिहुँसि रहल छलाह जे आब शिघ्रे हुनक नाटकक यवनिकापात होयत । ता राजा आबि बिक्रमादित्यक दुनू पएर छानि अनुनय करैत कहलथिन—हमरा सं बहुत गलती भेल से

क्षमा कएल जाओ । संगहि अपने के छी से साफ-साफ कहू । आर कते दिन हमरा लोकनिक आंखि मे छाउर दय अपने एना अपन परिचय नुकओने रहब ?

बिक्रमादित्य अपन पयर खिचैत बजलाह—हां-हां-हां, अपने महाराज भ कें ई की क रहल छी । एक त अपने राजा थिकहुँ आ दोसर हमर पितातुल्य ससुर । अपने नहि मानी मुदा सम्बन्धे छैक आ हम तकरा केना बिसरि सकैत छी ।तें अपने के ई शोभा नहि दैत अछि ।रहल बात हमर परिचयक से त अपनेक सामने अछि ।

राजा कहलथिन—जे हमरा सामने अछि से असल नहि अछि, हमरा अपनेक असली परिचय चाही तैखन हम अपनेक पयर छोड़ब ।

लाख बुझओलो पर जखन राजा नहि मानलनि तखन बिक्रमादित्य कहलथिन—जखन नहिञे मानब त अपन तीनू जमाय के बजबियनु उएह लोकनि हमर परिचय देताह ।

एतबा सुनि राजा के आर छगुन्ता लगलनि । त कि हुनक जमाय हिनकर असली परिचय जनैत छथिन ? ओ तुरत्ते कहा पठओलथिन । ओमहर तीनू साढ़ू अपग्रह मे पड़ला —ई केहन झंझट बिसायल । परञ्च ससुरक आदेश टारलो ने जा सकैत छल । कोनहुना मूरी लटकओने पहुँचला । राजा प्रश्न केलथिन—अपने लोकनि एते दिन हिनक असली परिचय हमरा सं किएक नुकओने रहलौं ? आबो शिघ्र कहू जे अपने लोकनि हिनका चिन्हैत छियनि आ हिनक परिचय की छनि ?

तीनू साढ़ू एक दोसराक मुंह दिस ताकय लगलाह । राजा फेर पुछलथिन मुदा ई लोकनि चिन्हबा सं एकदम अस्वीकार केलथिन । तखन बिक्रमादित्य कहलथिन—महाराज, हिनका लोकनि कें लाज होइत छनि । अपने कें जं हमर बातक विश्वास नहि हो त तीनू साढ़ूक वस्त्र उठा देखल जाय ।दहिना जांघ पर एक-एक पाइभरि दाग छनि कि नहि ।

एतबा सुनिते त तीनू साढ़ू के थरथरी पकड़ि लेलकनि मुदा राजाक आदेश । देखल गेल त बास्तव मे तीनू साढ़ू के एके स्थान पर पाइ भरि दाग—दागलक चेन्ह । राजा अचरज मे पड़ि गेलाह आ तीनू राजकुमारीक संगहि तीनू साढ़ूक माथ लाजे झुकि गेलनि । ओमहर महारानी आ पंडित लोकनिक मुंह पर आनन्दक लहरि छल ।

राजा फेर अनुनय केलथिन—अपनेक बात त सर्वथा सत्य बहराएल परञ्च हमरा लोकनि त तैयो अन्हारे मे छी । कृपया शिघ्र हमरा लोकनिक अन्हरजाली तोड़ल जाओ।

राजा एतबा कहिते छथिन ता ओमहर महाराज बिक्रमादित्य अपन कोढ़िया रूप छोड़ि असली रूप पकड़ि लेलनि । पंडित लोकनि चिचिया उठलाह—महाराज बिक्रमादित्य ! महाराज बिक्रमादित्य !!

तीनू साढ़ू आ तीनू जेठ राजकुमारी के छोड़ि सभक मन खुशी सं नाचय लगलैक मुदा सभ सं बेसी खुशी भेली महारानी स्वयं । छोटकी राजकुमारीक त बाते ने हो । महाराज बिक्रमादित्य किन्तु सभ सं नजरि चोरा कें एक बेर अपन पत्नी दिस ताकिए देलथिन आ ओ बेचारी आनन्द मिश्रित लज्जा सं बिहुंसि घोघ तानि घरक भीतर पड़ा गेलीह ।

गदहा खेने कोनो ने दोष

□

कोनो एक गाम मे एगो पंडिजी रहथि । गाम त छलै बरबरना मुदा बाभन एके घर—पंडिजीक । पंडीजी केंबहुतो दिन धरि सखा-पात नहि होइन तखन मारिते देबाइ धर्माइ केला सं एगो बेटा भेलनि । नाम रखलनि संतोष ।

नेना जखन कने छेटगर भेल त पंडीजी नीक दिन ताकि ओकरा भट्ठा धरओलनि। परञ्च सन्तोष जंजं नमहर होअए, पढ़नाइ-लिखनाइ कम आ खेल-कूद बढ़ल जाइ । भरिदिन ओ भतही-दलिही, चिक्का-कबडी खेलाइत रहै छल । सांझखन कोनहुना पंडीजी ओककरा पढ़ए लेल बैसाबथि किन्तु भरि दिनुका थाकल-ठेहिएल ओ पढ़त की कप्पार । पोथी पसारले रहै आ ओ झुकि-झुकि खसय लागए । हारि कें बेचारे पंडीजी छोड़ि देथिन। जखन संन्तोष आर कने छेटगर भेल त बीड़ी-तमाकू सेहो सुआद लागल आ कनिञे दिनक बाद ओहू मे पारंगत भ गेल । पंडीजी सभ जनितो चुपे रहथि । बेटाक किरदानी बजबे केना करितथि आ ताहू मे एकटा बेटा ।

संतोषक एकटा गुट रहै । मङनू मलाह, ठकना केओट आ फेकना धानुक एइ गुटक सदस्य छल । सरदार किन्तु संतोषे झा छलाह । एक दिन चारू गोटे घसबाहि करै लए विदा भेल त कोनो गाछी मे बैसि गाजाक दम लगबै छल । ओहिठाम एगो गदहा घास चरै छलै । संतोष झा बजला—भाइ सभ, रंग-बिरंगक माउस हम सभ खेने छी, मुदा गदहाक माउस त नहि खेने छी जे केहन होइ छइ । त की ई सेहन्ता हमरा सभ के संगे जाएत ?

एतबा सुनिते फानल मङनुआ—लगे दाढ़ी पड़ोसे छूरा—एखने इहो सेहन्ता पुराइए ली । की यार सभ, की बिचार ?

सओनमा सं भदबा कोन दुबर ? कहबियो कहै छइ जे लंका मे जे सभ सं छोट से उनचास हाथ । दम लगले छलै । चारू फानल । बेचारा गदहा कि जानए गेल जे ओकरे

कपार पर टिटही मरड़ाइ छइ । सभ ओकरा घेरि लेलक । हांसू-खुरपी छलैहे—खूब नीक-नीक कुटिया बनओलक ओ आगि मे झड़का क खाए लागल । खाएत की कप्पार—मुंह मे दैते देरी सभ उए-उए करय लागल । कतबो मुंह धोलक, जीबिया केलक मुदा मन पचपचाइते रहलै । फेकनाक रद्द त बन्ने ने होइ । ओकरा उठा-पुठा क सभ आङन द एलै। ओकरा आङन मे त कन्ना-रोहटि होमय लगलै । सभ कहै जे उफांट लागि गेलैए । माय बिखिया-बिखिया क पुछलकै तखन फेकना सत्त बात कहि देलकै । आब त दोसरे काण्ड उठल । रद त बन्न भेलै किन्तु गदहा खेबाक गप्प सुनिते माय-बाप माथ-कपार पीटय लगलै । बाप दौड़ल पंडीजी ओतय । पतिया-पराछुत नञि केने सभ जाति सं बारि देत ।

पंडीजी सभ बात शान्त सं सुनलनि आ पतरा उनटाबए लगला । गदहा खेबाक पतिया पतरा मे रहै तखन ने । मुदा पंडीजी कम चलाक रहथि तखन ने । जागल रोजी के केना छोड़ि दितथि । ओ बजला—फेकना के गंगा नहाए पड़तै । ओइठाम केस-दाढ़ी कटाबए पड़तै आ नहेलाक बाद एक छटाक गाइक गोबर खाए पड़तै, एक छटाक गोंत पीबए पड़तै आ तीन मुट्ठी बालु फांकए पड़तै । ओइठाम सं घुरलाक बाद भगवानक पूजा करए पड़तै आ पांच टा बाभन के भोजन करा सबा टका क भोजन दक्षिणा देबय पड़तै । तखने जा क ओ पाप सं मुक्त भ सकत ।

फेकनाक बाप मुंह लटकओने घुरए लागल । पंडीजी मोछ पर ताव देमय लगला । सोचलनि जे जं एहिना मास मे एकाधटा जोगार धरैत तखन ने । फेकना संगे कि आर केयो नहि छल ?

ओ फेकनाक बाप के शोर केलथिन आ पुछलथिन—रओ, तोहर फेकना कि असगरे छलौ ने आरो किओ छलै ओकरा संगे ?

फेकनाक बाप बाजल—असगर कतौ एहन काज करए । चारि गोटे छल ।

पंडीजी मनसुबेला । तखन त कर्मे जागि गेलनि । पुछलथिन—आर के सभ छल ?

फेकनाक बाप कहलकनि—आर छलै मङरू, ठकना आ अहांक संतोष ।

पंडीजीक कपार पर जेना हरहरी बज्र खसि पड़ल होनि । मुदा अपन मनक व्यथा के नुकबैत बजला—कने बैस त, फेर स देखय दे । बुझि पड़ैए जेना कतौ भूल भ गेल हो।

ओ फेर पतरा उनटाबए लगला । नीक जकां उनटा-पुनटा क हिसाब बैसओलनि आ कहलथि—सुन,

तीन राड़, एक संतोष
गदहा खेने कोनो ने दोष ।

एकटा चिनमा खेलिऐ रओ भइया

कोनो पहाड़क कात मे एकटा खेत मे चीन छलै । चीन धरती फाटि क उपजल छलै । किछु मुनियां सभ दिन ओइ खेत सं चीनक बालि खोंटि क ल जाय । किछु दिनक बाद खेतबला खेत देखय गेल त देखलक जे एक हेंज मुनिया चीन पर लुबधल अइ । ओ तामसे माहुर भ गेल । दोसर दिन ओ खेत मे जाल लगा देलक । जाल छोट रहै तें भरि खेत त नञि भेलै—एक कोन मे रहै । बेचारी मुनिया सभ की जानय गेल । ओ सभ अपन टेम सं फेर पहुँचल । संयोग सं एगो मुनिया ओइ जाल मे फंसि गेल । खेतबला ओकरा पकड़ि आपस भ गेल । मुनिया नेहरा-मिनती बड़ केलकै मुदा खेतबला तते ने तमसाएल छल जे किए छोड़तै । जखन बाट मे चल अबैत रहए त एकटा लोक बरद हंकने चल जाइत छल । मुनियां ओकरा देखि पैरबी करैत कहलकै—

बरदबला भाइ !
परबत पहाड़ पर खोंता रे खोंता
भुखे मरै छै बच्चा
एकटा चिनमा खेलिऐ रओ भैया
तइलए पकड़ने जाइए ।

बरदबला कें दया लागि गेलै । ओ खेतबला कें बुझबैत कहलकै जे मुनियां के छोड़ि दहक । मुदा ओ किएक सुनतै । ओ त एकेठाम जिद धेने छल जे मुनियां के मारि मसुआइ बना कें खाएत । अन्त मे बरदबला अपन बरदो नेब गछलकै तैयो ओ नञि मानलकै आ आगू बढ़ि गेल ।

किछु दूर गेलाक बाद एगो घोड़हिया अबैत रहए । मुनियां ओकरो मिनती केलक—
घोड़ाबला भाइ !
परबत पहाड़ पर खोंता रे खोंता

भुखे मरै छै बच्चा
एकटा चिनमा खेलिऐ रओ भैया
तइलए पकड़ने जाइए ।

घोड़हियो कें मुनियांक अवस्था पर दया लागि गेलै । ओहो खेतबला कें बुझबए लागल । जखन ओ कनियो टस स मस नञि भेलै त बदला मे अपन घोड़ा द देनाइ गछि लेलकै मुदा खेतबला किएक टेरितै । ओ आगू बढ़ि गेल ।

जं आर थोड़ेक दूर गेल त एगो हाथीबला चल अबैत रहए । मुनियां फेर अपन अरजी केलक—

हाथीबला भाइ !
परबत पहाड़ पर खोंता रे खोंता
भुखे मरै छै बच्चा
एकटा चिनमा खेलिऐ रओ भैया
तइलए पकड़ने जाइए ।

हाथीबला अपन हाथी रोकलक आ खेतबला सं निहोरा-मिनती केलकै जे ओ मुनियां के छोड़ि दै । छोट-छीन मुनियां ओकर कते चीन खेने हेतै—बदला मे ओ हाथीयो द सकै छइ । मुदा खेतबला ओकरो ने गुदानलकै आ आगू बढ़ि गेल ।

ता अकलबेरा भ गेल रहै । खेतबला के भुखे-पियासे मन मेछन्त भ गेल छलै । बाट मे एगो गाछ तर कोनो बटोही बैसल खुद्दी फांकि रहल छल । खेतबला भुखाएल छलहे, मुंह सं पानि खसए लगलै । मुनियां बटोही के देखि फेर मिनती केलक—

खुद्दीबला भाइ !
परबत पहाड़ पर खोंता रे खोंता
भुखे मरै छै बच्चा
एकटा चिनमा खेलिऐ रओ भैया
तइलए पकड़ने जाइए ।

खुद्दीबला कें सेहो मुनियां पर दया लागि गेलै । ओ खेतबला के कहलकै—हओ भाइ साहेब दया नञि लगै छ ? एकर बाल-बच्चा औनाइत हेतै । इहो बेचारी कते कलपैए। जं बिदति कइए देलक त से त आब घुरि नञि अओतह । छोड़ि दहक एकरा । तोरो त भूख पियास लगले हेतह । बरू लएह हमर खुद्दी फांकह आ पानि पीबह जे मन शान्त हेतह ।

बेचारा खेतबला कें भुख त लगले छलै । ओ खुद्दीक बदला मे मुनियां कें छोड़ि देलकै आ खुद्दी फांकय़ लागल । मुनियां उड़ि क अपन खोंता गेल ।

ഇരുഇരുഇ

काजरि

□

कोनो एक गाम मे एक आदमी के सातटा बेटा आ एकटा बेटी रहै । बेटी कोरपच्छू रहै, तें माइए-बापक नञि, भाइयो सभक दुलारु रहै । नाम छलै ओकर काजरि । काजरि जेहने देखबा-सुनबा मे सुन्नरि छली तहिना नान्हिएटा सं शीलो-स्वभाव बड़ नीक । सात भाइ हेबाक कारणे लोक सभ कहै सतभैयाक बहीन ।

किछु दिनक बाद बुढ़बा-बुढ़िया मरि गेल । बेटा सभ त समर्थ-सकर्थ भ गेल छलै, बहुतोक बियाहो-दान भ गेल छलै किन्तु बेटी छोटे छलै । असल विपत्ति ओकरे कपार पर पड़लै । माइ-बाप के मुइला किछुए दिन भेलै कि भौजी सभ दुख देनाइ शुरू क देलकै । ई किछु पुछबो करितै त आंखि-मुंह चमका लितै । नीक जकां खेनाइ-पीनाइक कोन कथा दिन-राति टहले करैत-करैत बेचारीक प्राण अवग्रह मे रहै छलै । भाइयो सभक सिनेह पहिने सन नहि रहलै । ओना तैयो भाइ सभ डांट-डपट त नहिञे कहियो करै बरन एकर तकलीफ देखि कहियो काल अपने लोकनिक संग एकरो खेबा लेल बैसा लै ।

एहिना बहुतो दिन बितलै । सभ भाइक बियाह भ गेलै—भाउज सभ घर आबि गेलै । मुदा भाउजक संख्या जहिना-जहिना बढ़ैत गेलै तहिना एकर दुर्गति सेहो बढ़ैत गेलै। किछु दिनक बाद सातो भाइ नोकरी-चाकरी करै लए विदेश चलि गेल । एमहर सभ त आर फूजल ऊक भ गेल । काजरि के तकलीफ देबा मे जेना ओकरा लोकनि के आनन्द भेटै। तें सदिखन बिना काजोक काज अढ़बैत रहितै । जे काज असंभव छलै तेहने-तेहने काज एकरा करै लए कहितै । कखनो कहितै जे फल्लां अङना सं आगि नेने आउ, किन्तु चिपरी किंबा गोड़हा नहि दितै । मुंह चमका क कहितै जे कने आगि त हाथो मे लोक आनि लेत । एह फुलकुम्मरि के हाथ झरकि जेतनि । बेचारी करबे की करैत । हाथ मे कोनहुना लोकैत आगि लेने अबैत । मुदा कतबो सावधानी सं किए ने लाबओ—हाथ त पकबे करतै । सौंसे तरहत्थी फोंके-फोंका भ गेलै । पहिने त जकरा आङन जाइ—केओ आगिए ने देबए चाहै परञ्च जखन लोक कें पता लगलै जे आगि नञि ल गेने ओकरा आर गारि-गंजन सहय पड़ै छइ, मारि खाय पड़ै छइ—तखन मन मसोसि क द देमय लगलै । कखनो कोनो भाउज

एगो चालनि धरा दितै आ कहितै जे इनार सं पानि नेने आउ । बेचारी दौड़ैत इनार पर । किन्तु चालनि मे कतौ पानि रहै । कने दूर अबैत कि सभ बहि जइतै । फेर पानि भरैत आ फेर उएह हाल । आ पानि नहि अनने मारि-गारि त अवधारिते छलै । बेचारी हबोढेकार भ कें कनैत आ ओमहर भाउज सभ ठहक्का मारि क हंसितै ।

ओना छोटकी भाउज कने नीक छलै । ओकरा ई सभ अनसोहांत लगै मुदा कइए की सकै छलि । छबो दियादिनीक बीच त अपने डरें हरकम्प करैत छलि जेना बत्तीस दांतक बीच जीह्र रहैए ।

एक दिन एकटा भाउज एगो करिया कम्बल दैत कहलकै—एकरा पोखरि सं खीचि आनू । उज्जर दप-दप हेबाक चाही ।

बेचारी काजरि हाथ मे कम्बल ल बिदा भेलि पोखरि क । एतय हाथ ओहिना खलोदार छलै आ ताइ पर सं कम्बल साफ केनाइ । ओ जनै छल जे करिया कम्बल उज्जर नञि हेतै मुदा ताइ सं की । भौजी सब कोनो भेदिया लगाए देने हेतै—जं खीचैत नहि देखलकै आ से बात भौजी सभ के जा कहलकै त मारैत-मारैत त कोनो ठेकान नहि रखतै। तैं बेचारी खीचय लागल । आंखि सं दहो-बहो नोर बहै छलै आ कानि-कानि गबै छलि—सातो भाइ बिदेस चलि गेल, काजरि के दुख देने गेल ।

दिन बितलै, सांझ पड़लै आ फेर राति भ गेलै । चारू दिस अन्हार पसरि गेलै मुदा काजरि लेखे धन-सन । ने कम्बल उज्जर होइ छइ आ ने ओकर खीचनाइ बन्न होइ छइ। अपना धुनि मे खीचैए आ कनैए । आंखि सं दहो-बहो नोर बहल जाइ आ मुंह सं—

सातो भाइ विदेस चलि गेल
काजरि के दुख देने गेल ।

संयोग एहन ले तइखन ओकर सातो भाइ विदेश सं कमा क घुरल अबैत रहै । जखने ओ सभ पोखरिक भीड़ पर पहुँचल त कपड़ा पटकनाइ आ काजरिक कननाइ सुनाइ पड़लै । कनिञे अकानि कें सुनलक त अपन बहिनीक आवाज चीन्हि गेल । सभ दौड़ल पोखरिक घाट पर । देखैए त ठीके काजरि थिक । माइ-बापक कोरपछुआ बेटी, सात भाइ मे एकटा बहीन, सभक दुलारू बहीन । जे सदिखन खंजनि जकां फुदकैत रहै छलि तकर ई हाल । देह मे हड्डीटा बांचल । सभक आंखि सं नोर बहय लगलै । अपन भाइ सभ के देखि काजरि आर भोकारि पाड़ि क कानय लागल ।

भाइ सभ कें बुझै मे देरी नहि लगलै जे ओकर सहोदरक एहन दुर्गति के केलकैए। ओ सभ काजरि के बोल-भरोस दैत आङन आयल । भाइ सभक संग काजरि कें देखिते त भाउज सभ के तरबाक लहरि टिकासन चढ़ि गेलै । सभ झांउ-झांउ क उठलि आ फुसिये के मारिते रास कलंक ओकरा पर मढ़य लगलै किन्तु छोटकी भाउज जे एते दिन दम साधने छलि—नहि रहल गेलै । ओहो लाज संकोच छोड़ि घर सं बहराएलि आ काजरिक संग भेलअन्यायक भण्डाफोड़ करए लागलि । छबो दियादिनी छोटकी पर झपटलै मुदा सभ भाइ अपन-अपन स्त्री कें मारय-पीटय लागल । मारि-पीटि कें छबो दियादिनी के घर स बैला देलक । छोटकी भाउज आ सातो भाइक संग काजरि चैन सं रहय लागलि ।

सदबा-बदबा

□

कोनो एक गाम मे सदबा-बदबा नामक दू भाइ छल । छल त दुनू जौंआ किन्तु स्वभाव दुनूक दू रंग । जेना कि नाम छलै—सदबा सद आ मुंहदुबर छल त बदबा बीछल बदमास । माय-बाप नेनहि मे मरि गेल छलै तें पालन-पोसन नानीए केलकै । किछु दिनक बाद नानी सेहो सरगबासी भ गेलै । असल मे माय-बापक मरनाइ त ओकरा दुनू कें मनो नञि छलै, किन्तु नानी कें मरि गेने सरिपहुँ अनाथ भ गेल । नानी के मुइना किछुए दिन भेल होएतै कि मात्रिक मे दुनू भांइ के तकलीफ होमय लगलैक । मामा सब त अनुचित-उचित नहिञे किछु कहै किन्तु मामी सब जखन-तखन आंखि-मुंह चमकबै आ आने-माने चढ़ाक अनुचित-उचित कहै । सदबा के त नञि किन्तु बदबा के बड़ आनि लगै । एक दिन ओ फूट मे सदबा के कहलकै—रओ भैया ! हमरा त आब बर्दास्त नञि होइ छौ । जे सक लगैए से काज त हम सब करिते छी किन्तु मामी सब आने-माने चढ़ा के सदिखन अनुचित-उचित कहैत रहैए । एक गिलास पानियो मङबै त आंखि-मुंह चमकाइए क देत । एइ स नीक जे बरू भुखले-दुखले अपना गाम मे अपना घराड़ी पर रही ।

सदबा कहलकै—बात त ठीके कहै छें, किन्तु एक-दू दिन ने भुखलो काटि लेब—भरि जीनगी त नञि ।

बदबा ढाढ़स दैत कहलकै —दुर-दुर । भुखले किए रहब ? ओ त बातक बात कहलियौ ए एतौ घास-भुस्सा करिते छी, गाय महीस चरबिते छी । अपने गाम मे कोनो बाबू भैयाक ओइठाम चरबाहियो करब तैयो पेट चलत । पेटक चिन्ता कथिक ? अपन पेट त कुकूरो कौआ पोसैए ।

सदबा कें मन मानि गेलै । चोटहि दुनू भांइ बिदा भ गेल । किछु दूर जखन आयल त फेर बदबे कहलकै—एकटा बात करबें भैया ?

सदबा पुछलकै—कोन बात ?

बदबा—एना किएक ने करी जे हम एक भांइ गाम पर रही आ एक भांइ कोनो शहर मे जा क नोकरी-चाकरी करी ।

सदबा खुशी होइत कहलकै—नीक बिचार छौ । हम जेठ छी तें हमरा रहैत तों किए परदेस जेबें । तों गामे पर रह आ हम परदेस जाइ छी । जं कतौ काज लागि गेल त मासे-मासे तोरा लेल पाइ पठा देल करबौ ।

दुनू भांइ एकमत छल । सदबा ओहीठाम सं शहर दिस बिदा भेल आबदबा अपन गाम दिस ।

बौआइत-बौआइत सदबा एगो राजदरबार मे पहुँचल । बहुत उचिती-मिनती केलाक बाद दरमान छोड़ि देलकै । ओ राजा लग जा क अपन सब खेरहा कहलकै । सब बात सुनि राजा कहलकै—नोकरी त हम देबौ किन्तु अखन पेटे पर रहए पड़तौ । नीक जकां काज केने बाद मे महिना भेटि सकै छौ । दोसर तोरा दुनू टेम एक पात भात खाइ ले भेटतौ । तेसर जं तों नोकरी छोड़ि देबें त तोहर नाक-कान काटि लेल जेतौ अथबा जं हम छोड़ा देबौ त हमर नाक-कान तों काटि लिहें । जं ई शर्त मंजूर होउ त नोकरी क सकै छें ।

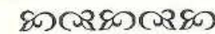
सदबा कि जानए गेल जे नोकरी लोक केना करैए । ओकरा भेलै जे सब नोकरी मे भरिसक एहिना शर्त होइत होएतैक । तें ओ शर्त मानि लेलक आ नोकरी करए लागल ।

ओकरा काज भेटलै गायक चरबाही केनाइ आ संगहि एक पथिया भिनसर, एक पथिया बेर मे घास अननाइ । पहिले दिन ओ खूब मन लगाकए गाय चरओलक आ बड़की ढाकी सं एक ढाकी घास छीलि अनलक ! किन्तु जखन खाय लेल गेल त कटहरक पात पर भाते कते भेटितै । परसन मड़बाक बाते ने छलै कारण ओकरा सं शर्त करा लेल गेल छलै जे एक पात भात भेटतै । बेचारा मन मसोसि क उठि गेल । सोचलक एना कतौ खएक देल जाइ । भ सकैए केराक पात नहि छल होएतैक । राति सं निश्चिते बेसी भात भेटतै । तें बेरियो मे जैयो ने पार लगै तैयो आर बेसी क घास छीललक आ गाय के सेहो नीक जकां चरओलक, किन्तु आहिरेबा ! रातियो मे उएह बात । मुदा उपाय की छलै । ओ दिन-दिन दुबराए लागल । किछु दिनक बाद त देह मे हाड़ेटा रहि गेलै । जेना फूकि देने खसि पड़त। जखन नहि रहि भेलै त सोचलक जे कोनहुना पड़ा जाइ । परञ्च तेहन पहरा छलै जे बेचारा पकड़ा गेल । राजा के ओ सत्त-सत्त सभ बात कहि देलकै । परञ्च राजा के कनियो दरेग किएक रहतैक—ओ त छलहे कसाइ । सदबाक नाक-कान काटि छुट्टी द देलकै । ओहो बेचारा अपन देसकोसक बाट धेलक ।

ओमहर अपन जेठ भाइक खबरि नहि पाबि बदबा चिन्ता मे छल । एक दिन हरलै ने फुरलै—ओहो शहरक बाट धेलक । संयोग एहन जे बाटे मे दुनू भांइक भेंट भ गेलै । अपन जेठ भाइक दुर्गति देखि आ ओकरा मुंहे सब बात सुनि बदबा कें त तरबाक लहरि टिकासन ठेकि गेलै । ओ तुरत्ते सप्पत खेलक जे जाधरि ओ एकर बदला नहि लेत ता धरि चेन नहि लेत । भाइ के बुझा-सुझा क गाम पठा देलकै आ अपने शहर दिस बिदा भेल ।

जाइत-जाइत बदबा सेहो ओइ राजाक ओइठाम पहुँचल । राजा एकरो ओहिना शर्त करा लेलकै । बदबा नोकरी मे लागि गेल । पहिले दिन ई जखन गाय चरबै गेल त चराओत की कप्पार, उनटे करची सं दू दालि क फोड़ि देलकै । खलपट्ट भेल गाय सभ के आनि खुटेसि देलक । घासो तहिना । दु मुट्ठी घास फुलका क छिट्टा मे नेने आएल । अपने पोखरि सं नहेने आ करजान सं खूब पैघ अगहरी पात कटने आएल आ पात ओछा खाए लेल बैसि गेल । भनसिया की करैत—भरि पात भात आ तीमन-तरकारी देलकै । ओ राइ-छित्ती क क खेलक आ जे नञि निघटलै से फेकि देलक । राजा कें जखन सभ बात पता चललै त ओकरो माथ ठनकलै । ओ एकरा दोसर काज देलकै मुदा बदबा त बदबे छल । एकर सब काज अन्टे-सन्ट । राजा तंग आबि गेल । एक दिन एहन भेलै जे रानी अपने भानस करैत छलीह । जारनि घटि गेलनि त बदबा के आनि देबा लेल कहलथिन । ई एक बोझ चेरा माथ पर नेने हाजिर । रानी सं पुछलकनि—कत' राखू ? रानी एक त भानस करै छली तें मन मेछन्त छलनि आ ताइपर सं एहन अनटोटल प्रश्न सुनि आर लोहछि उठली । तमसा क कहलथिन—हमरा कप्पार पर राखै । सुनैत देरी बदबा अपन माथक बोझ रानीक कप्पार पर पटकि देलक । सौंसे महल मे हल्ला भ गेल जे बदबा रानीक कप्पार पर जारनिक बोझ पटकि देलकै, रानी मरि गेली । राजा त ओहिना एकरा सं आजिज छलाह, जखन ई बात सुनलनि त तुरत्ते एकरा जबाब भेटि गेलै । बदबा त इएह तकिते छल । राजा कें अपन शर्तक बात मोन पाड़ि देलकनि । राजाक लेल दोसर उपायो ने छल । बदबा राजाक नाक-कान काटि गामक बाट धेलक । जाइत-जाइत बाजल—हमरा सदबा भैयाक जे नाक-कान कटने रहिऐ तकरे बदला चुकलौंहें । एतबा कहि फूर्र द पड़ाएल ।

गाम पहुँचि सब बिरतान्त सदबा के कहलकै । सदबा अपन भाइक बुधियारी पर अपन सब दुख-बेकल बिसरि खुसी सं नाचय लागल । भरि गाम मे बदबाक बुधियारीक सोरहा भ गेलै । दुनू भांइ गामहि रहि कमाए-खाए लागल ।



एकटा बुढ़िया रहए

□

एकटा बुढ़िया रहए । ओ रहए त बड़ गरीब आ ने केंओ अपन-परार छलैक, मुदा ओकरा देश-विदेश घुमबाक बड़ सओख । एक बेर ओ एहिना कतौ जेबाक नेयार कएलक। ओकरा कतौ सं एकटा बदामक दाना भेटि गेलैक आ तकरे सातु पीसि बटखरचा ल जाएब निश्चित कएलक । ओ बदाम ल जांत मे देलकै आ पीसए लागल । एकटा दालि त सतबी भ गेलैक मुदा दोसर फांक जांतक खुट्टी (कील) मे फाट रहैक ताइ मे सन्हिया गेलैक । ओ अपना भरि लाख प्रयास केलक, खुट्टी के कतबो अनुनय-बिनय केलकैक मुदा दालि नहि बहार भेलैक । अन्त मे हारि कें बुढ़िया बरही लग पहुँचलि आ ओकरा कहलकै—बरही, बरही, बरही, खुट्टी चिड़ू खुट्टी । खुट्टी ने दालि दिअए दालि । की खाउ, की पीबू, की ल परदेश जाउ ।

बरही सभ बात सुनि के बुढ़िया के कहलकै—गए बुढ़िया, तोहर एकटा दालि लेल हम अपन हाल-रोजगार छोड़ि देब से नहि भ सकैछ । घुरि जो ।

बुढ़िया तेहन जिद्दी छलि जे ओ घुरत की सोझे राज दरबार पहुँचि गेल । सोझे राजाक सामने जा कहलकनि—राजा-राजा-राजा । बरही डांरू बरही/बरही ने खुट्टी चीरय खुट्टी/खुट्टी ने दालि दिअए दालि । की खाउ, की पीबू, की ल परदेश जाउ ।

राजा के हंसी लागि गेलनि ओ बुढ़िया कें किछु दालि दिआ देबाक बात कहलथिन। मुदा बुढ़िया मङनीक दालि लेनाइ नहि गछलक आ अपने दालि पेबाक आग्रह देखओलक । अन्त मे राजा सेहो अपन असमर्थता देखओलनि ।

बुढ़िया मानैबाली रहए तखन ने । ओ सोझे अन्दर महल पहुँचि रानी सं आवेदन केलक—रानी-रानी-रानी । राजा बुझाउ, राजा/राजा ने बरही डांरथि बरही/बरही ने खुट्टी चीड़ए खुट्टी/खुट्टी ने दालि दिअए दालि । की खाउ, की पीबू, की ल परदेश जाउ ।

रानी के सेहो हंसी लागि गेलनि । ओ बुढ़िया कें बुझबैत कहलथि जे बेकारे एक

दाना दालि लेल फिरीशान होइए, ओ बरू सेर भरि बीछल बदाम ओकरा देथिन । किन्तु बुढ़िया हुनकर प्रस्ताब अस्वीकार कए अगिन देबता लग पहुँचलि आ निवेदन केलकनि—अगिन-अगिन-अगिन । रानी डेराउ, रानी/रानी ने राजा बुझाबथि राजा/राजा ने बरही डांरथि, बरही/बरही ने खुट्टी चीड़ए, खुट्टी/खुट्टी ने दालि दिअए दालि । की खाउ, की पीबू, की ल परदेश जाउ ।

अगिन देबता सेहो कोनो कान बात नहि देलथिन । बुढ़िया उठि बिदा भेल आ सोझे समुद्र लग पहुँचि गेलि । ओ समुद्र सं आवेदन कएलक—समुद्र-समुद्र-समुद्र । अगिन मिझाउ अगिन / अगिन ने रानी डेराबए रानी / रानी ने राजा बुझाबथि राजा / राजा ने बरही डांरथि बरही / बरही ने खुट्टी चीड़ए खुट्टी / खुट्टी ने दालि दिअए दालि । की खाउ, की पीबू, की ल परदेश जाउ ।

समुद्र के सेहो हंसी लागि गेलनि । ओ बाजल गे बुढ़िया, तों बाजने कते हीरा जमाहरात लेबें । हम तोरा मुंह माङल धन रत्न देबौ । कि बेर्थे एकदाना दालिक चक्कर मे पड़ल छैं ।

बुढ़िया ओहिना शान्त भावें जबाब देलकै—हे समुद्र, ई त सभ जनैए जे अहांक गर्भ मे बड़ रत्न अइ आ तें अहां जते नितराइ सभ छजत । मुदा हम त अहां लग भीख माङय नहि आयल छी । हमरा अपन एक दाना दालि चाही आर किछु नहि । तें अहां जं मदति क सकी त से कहू ने त जबाब दिअ, हम दोसर दुआरि देखब ।

समुद्र कें बुढ़ियाक गप्प सुनि तरबाक लहरि टिकासन चढ़ि गेलैक । मनेमन सोचलक जे बुढ़ियाक ठेसी त देखू, भागो किछु छैक नहि तखन त एते ठेसी छैक आ जं किछु रहितैक तखन । ओ बुढ़ियाक कोनो तरहक सहायता करबा सं साफ नठि गेल । बुढ़िया आपस बिदा भेलि । कनियें दूर गेल होएत कि एगो मकुनीहाथी झूमैत चलि अबैत रहए । बुढ़िया ओकर लग अपन आवेदन रखलक—हाथी-हाथी-हाथी । समुद्र सोखू, समुद्र / समुद्र ने अगिन मिझावय अगिन / अगिन ने रानी डेराबय, रानी / रानी ने राजा बुझाबथि राजा / राजा ने बरही डांरथि, बरही / बरही ने खुट्टी चीड़ए, खुट्टी / खुट्टी ने दालि दिअए दालि / की खाउ, की पीबू, की ल परदेश जाउ ।

हाथी जेना बुढ़ियाक बात सुनितो नञि सुनलक आ रस्ताकातक गाछ सभक डारि तोड़ि-तोड़ि खाय लागल । बुढ़िया निराश भए गुन-धुन करैत विदा भेल । कनिञे दूर गेल त एगो चुट्टीक धारी चल जाइत रहै जे ओ नञि देखलक आ ओइपर पैर पड़ि गेलै । कैकटा चुट्टी ओकरा काटि लेलकै । ओ लोहछि गेल । लोहछिते बाजल—तोरो सभके हमही भेटलिअ । कहबी कोनो बेजाय छइ—अबल-दुबल पर सितुआ चोख।

एगो चुट्टी कहलकै—देख बुढ़िया मैञा, एहि मे हमरा सभक कोन दोख ? तोरो त बाट देखि चलक चाही ने । तों हमरा सभ के पीचि देलें । अपन जान त सभ कें प्रिय होइ छइ ने । मुदा लगैए जे तों आइ कने बेसिए तमसैल छैं, दुखी छैं । की बात छइ ?

बात की रहतै । कमजोरहा के सभ सतबै छइ । ओ जकरे लग अर्जी ल क जाइए, सैह दुरदुरा दैत छइ—बुढ़िया बाजलि ।

आखिर बात की छइ ? कहबें तखन ने बुझबौ । हमरा सभ सं कोनो काज हेतौ—चुट्टी पुछलकै ।

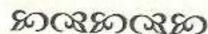
बुढ़िया सभटा खेरहा कहलकै । एगो चुट्टी हंसैत बाजल—ई कोन तेहन काज भेलै । तों खाली पैघे लोक लग दौड़ैत रहलें तें ने । चल त हमरा संगे । देखी जे हाथी केना ने तोहर बात सुनै छौ ।

एतबा कहि आगू-आगू चुट्टी आ ओकरा पाछू बुढ़िया विदा भेल । बुढ़िया के चुट्टीक पाछू-पाछू अबैत देखिए क त जेना हाथीक पथरी चमकि गेलै । ओ बाजल—'हमरा काटओ-उटओ मति कोइ, हम त समुद्र सोखब गोइ ।' आ एतबा कहैत ओ दुलकल समुद्र दिस विदा भेल । जखन समुद्रक कात पहुँचल त समुद्र कें बुझै जोग भ गेलै । ओ बाजल—हमरा सोखओ-उखओ मति कोइ, हम त अगिन मिझाएब गोइ ।

एतबा कहैत समुद्र हहाइत बिदा भेल । जखने अगिन कें ई बात पता लगलैक कि ओहो बाजल—हमरा मिझाबओ-ओझाबओ मति कोइ, हम त रानी डेराएब गोइ । रानी कें जखन पता लगलनि त ओ बजली—हमरा डेराबओ-ओराबओ मति कोइ, हम त राजा बुझाएब गोइ ।

राजा कें जखन पता लगलनि त ओ बजला—हमरा बुझाबओ-ओझाबओ मति कोइ, हम त बरही डांरब गोइ ।

एतबा सुनिते बरही बाजल—हमरा डांरओ-ओरओ मति कोइ, हम त खुट्टी चीरब गोइ । आ ओ रुखान बसिला ल क बिदा भेल । जखन जांत लग जाइए कि खुट्टी कहलकै—हमरा चीरओ-ओरओ मति कोइ, हम त दालि देबै गोइ । दालि देखिते बुढ़ियाक मन विजयक उल्लास सं भरि गेलैक ।



एकटा गरीब बाभन रहथि

□

एकटा गरीब बाभन रहथि । जथा-जालक नाम पर दू-धुर घराड़ी आ ताइ पर एकटा छोट-छीन खोपड़ी नार-पात सं छारल । परिबारक नाम पर अपने आ घरबाली । सखा-सन्तान भेबेनहि केलनि।

बेचारे बाभन भीख-दुख मांङि-चाङि क लाबथि आ घरबाली कुटि-पीसिक भोजन तैयार करितथिन आ जे कन-साग रहितनि से दुनू बेगती बांटि-चुटि खा दिन कटने जाथि । ओना अभाव त रहबे करनि किन्तु रहबो करथि दुनू परानी बड़ कंजूस । जे किछु लबथि से पेट मे देने जाथि मुदा घर मे एगो दीपो ने रहनि आ कहियो सांझो ने पड़नि । सांझे खा-पीबि सूति रहितथि । ने कतौ गेनाइ ने एनाइ । टोलो-पड़ोस मे ककरो सं सम्पर्क नहिञे रहनि ।

बाभन कें सराप रहनि जे एक गाम माङथि तैयो भरि तामा आ पांच गाम माङथि तैयो भरि तामा । किन्तु तैयो ओ एक गाम माङि कें कहियो ने घुरितथि । भोर जे घर सं बहार होइतथिसे मुनहारिसांझखन घर घुरितथि । स्नान, ध्यान, पूजा-पाठ ककरा कहैत छइ ।

एक दिन मङैत-मङैत्त ओ बेसी दूर चल गेलाह आ तें फिरबा मे बड़ बिलम्ब भेलनि । अन्हरिया राति । झटकारने चल अबैत रहथि । बाट मे एकटा पुरनी गाछी पड़ैत रहै । पास-पड़ोस मे भुतही गाछी नामे ई विख्यात छल आ से बाभनो महाराज कें बुझल छलनि । तें गाछी लग अबिते बेचारेक प्राण सुखा गेलनि मुदा उपाये की । बाट त गाछीक बीचे द छलैक । ओ मूड़ी गोंतने, पएर जतने झटकारलनि । जहां कने दूर जाइत छथि कि ककरो आवाज सुनाइ पड़लनि—आरे-आरे ओझा तोरा नामी-नामी डेगा । घरैतिन के कहिह सरैतिन के भेलनिहें बेटा ।। बाभन त डरें सर्द भ गेलाह । काटू त शोणित नहि । जे कहियो देबता-पितरक नामो ने लैत छलाह से मने-मन छप्पनो कोटि देबता कें सुमिरैत पड़ेलाह ।

बाट मे खसैत-पड़ैत कोनहुना घर पहुँचला त कोनटे लग पत्नी ठाढ़ रहथिन । गुज्ज अन्हार मे बेचारे देखि त नहिञे पओलथिन परञ्च पत्नीञे टोकलथिन तखन कतौं सं जान मे जान एलनि । पत्नी सेहो हिनक अवस्था देखि चिन्ता मे पड़ि गेलथिन । हिनका पकड़ि कें घर ल गेलथिन ओ ओछाएन पर बैसा बियनि हौंकैत पुछलथिन जे मन त ने खराप छनि। बेचारे बाभन कें त बकारे ने फुजलनि । बड़ी कालक बाद स्थिर भेलाह त पत्नी सं भोजनक संचार लगबै लेल कहलथिन । पत्नी संचार लगा देलथिन । बेचारे भोजन कए ओछाएन पर पड़ि रहलाह । पत्नी से भोजन कए जखन सूतै लेल गेलथिन त फेर पूछि देलथिन—आखिर एना की भ गेल छल ? बाट मे किछु देखलिऐ-तेखलिऐ त नहि ?

बाभन ता धरि होशगर भ गेल छलाह । ओ सभ बिरतान्त पत्नी सं कहय लगलथिन जे केना-केना भुतही गाछी मे केओ कहलकनि—आरे-आरे ओझा, तोरा नामी-नामी डेगा । घरैतिन कें कहिह, सरैतिन कें भेलनिहें बेटा ।

एतबा कहिते घरक बरेड़ी पर सं जेना केओ बाजि उठल—कहमा रे कहमा, छठि-छठिहार हमे करबै रे उहमा । एतबा कहैत जेना फुर्र द घर के दोमैत किछु बहरा जाइक । बाभन दुनू परानी घेंघिआय लगलाह । डरे मुंह सं बकार बहरेबे ने करनि । हिनका लोकनिक घेंघिएनाइ सुनि सौंसे टोलक लोक जुटि गेल आ आङन-घर मे थहाथही करए लागल । लोक कें देखि बेचारे के जान मे जान एलनि । लोक सभ डरक कारण पुछलकनि त सभ बिरतान्त कहलथिन । सभटा सुनि लोक दूरछींया, दूरछीया करय लगलनि । सभ एतबे कहनि जे अन्हार घर परेतक बास होइ छइ से नहि बुझल अइ । एक सांझ सहियो क लोक घर-आङन मे सांझ दैए । मुदा अहां लोकनि कें त पेटबे कि लोटबे । जे हेबाक छल से त भइए गेल आब कालि सकाले दीप कीनि लाउ आ नितहुं सांझ लेसल करू । एगो धीया-पुता अपना आङन सं दीप नेने एलनि आ घर मे राखि बाजल—आइ भरि राति दीप जरै दियौ जे घरैतिन फेर घूरि के नहि आबए । ओकर गप्प पर सभ भभा कें हँसि देलक आ अपना-अपना आङन दिस बिदा भ गेल ।

ꙮ

नारद मुनि आ सांप

एगो बन मे एकटा अजगर सांप रहैत छल । ओ तेना ढेङ जकां पड़ल रहैत छल जे लोक के ओकर पताओ नहि चलैत छलै आ भूलो स ओकरा लग चलि गेने ओ अपन सोंसा सं ओकरा खीचि गीड़ि जाइत छल । किछु दिनक बाद परोपट्टा मे सोरहा भ गेलै । लोक भुलियो कें ओमहर नहि जाय । एक दिन नारद मुनि केम्हरो सं चल जाइत रहथि । ओ जखन सांपक लगीच पहुँचला त हुनका ओ अपन सोंसा मे टनलक । जखन गीड़य लगलनि त नारद मुनि कहलथिन—हे अजगर ! एक जनम केलह से अजगर भ जनमल छह एहू जनम मे एतेक पाप करैत छह से कतए रखबह ?

अजगर बक द हुनका छोड़ि देलकनि आ कहलकनि—हे मुनिवर, हम त सरिपहुँ मायाजाल मे ओझरायल छलहुँ । आइ अपनेक दर्शन सं हम ओइ जाल सं छुटकारा पओलहुँ। आब अपनहि हमर गुरु भेलहुँ तें कहल जाओ जे हम की करी ।

नारद मुनि ओकरा कहलथिन जे ओ पड़ल-पड़ल राम नामक जाप करए आ ककरो अहित जुनि करै । सांप मानि गेल आ तहिना आचरण करय लागल ।

किछु दिनक बाद किछु घसबाह सभ घास करैत छल ता ओहि बन द एगो बटोही के अबैत देखलकै । सभ कें छगुन्ता लगलै जे ई बटोही जीविते केना आबि गेल । ओ सभ अजगर द बटोही कें पुछलकै मुदा बेचारा बटोही त चुप्प । सभ बिचारलक जे हो ने हो अजगर भरिसक मरि गेल । दू-एक टा ढीठ छौंड़ा एकर निस्तुकी करय लेल आगू बढ़ल । जाइ अजगरक फोंपकार दूरहिं सं सुनाइ पड़ैत छलै से लगो गेला सं नहि सुनि पओने ई सभ आर आगू बढ़ल । देखैए त सांप निसबद्द पड़ल अइ । केओ अगत्ती छौंड़ा एकटा ढेपो फेकलकै किन्तु तैयो सांप सगबगेबो ने केलै । अन्ततः ई सभ ओकरा लग पहुंचल आ केओ-केओ ओकरा देह पर चढ़ि कुदबो केलक मुदा सांप तैयो टस मस नहि भेलै । ओना

सांप मुइल नहि छलै से ककरो बुझै मे भाङठ नहि रहलै । सभ घुरि आयल । किछुए दिन मे सगरो शोर भ गेलै जे अजगर आब ककरो किछु ने कहै छइ । चरबहबा सब बन दिस महीस बहटाबए लागल । बकरिहारा सभ बन मे बकरी छोड़ि अजगरक देह पर कुदल करै। कखनो काल ढेपिआ दैक । एहिना लात-ढेप खाइत-खाइत बेचारा अजगर मरनासन्न भ गेल । एक दिन घसबाह सभ त अपने इच्छे खुरपी सं कचरि देलकै । मुदा अजगर मुइल-मुरदा सन ओहिना पड़ल छल ।

संयोग सं ओही दिन नारद मुनि अपन यात्रा समाप्त क घुमैत छलाह । विचारलनि जे ओही द क जाइ आ अपन शिष्यक हाल-चाल बुझैत जाइ । किन्तु जखन अजगर लग पहुँचला त ओकरा शोणित मे भीजल कुहरैत देखि छगुन्ता लगलनि । ओ अपन शिष्य के एहन स्थितिक कारण पुछलथिन । अजगर बाजल—महाराज ई अपनहिक उपदेशक फल थिक ।

सभ बात सुनि नारद मुनि कहलथिन—हे मुर्ख, हम तोरा लोक के गीड़नाइ बारन केने छलियह । हत्या सं परहेज रहै लेल कहने छलियह । तकर अर्थ त ई नहि जे अपन रक्षार्थ तों फोंपकारो केनाइ छोड़ि दएह ।

एतबा कहि नारद मुनि चल गेलाह । सांप फेर पहिने सन फोंपकार करय लागल । फेर किएक ककरो साहस हेतै जे ओमहर टपत ।

लालबुझक्कर

कोनो एक गाम मे एगो बड़ चतुर लोक छलाह । कोनो गुढ़ सं गुढ़ विषय के अलगट्टे बुझि गेनाइ हुनक विशेषता छल आ एही कारणे हुनक नामे लालबुझक्कर भ गेल ।

एक बेर एहन भेलै जे निसभेर राति मे जखन कि गाम निसबद्ध भ गेल, कोनो हाथी ओइ द क गेलै । लोक कें एहि बातक पता चलबे केना करितै । भिनसरखन जखन लोक सभ जागल आ बहराएल त बाट पर ओकर पएरक छाप ओहिना स्पष्ट छलैक । सभ के सभ अचरज मे पड़ि गेल जे एते पैघ पएर कोन जानवरक भ सकैए ! आ जकर पएर एतेटा छइ ओ जानवर केहन विशाल होएत । सभ केओ अपना हिसाबे अटकर लगाबए पर‌ञ्च निस्तुकी भइए ने पबै । अन्त मे निर्णय भेल जे लालबुझक्कर के बजाओल जाय कारण हुनका छोड़ि दोसराक सकक ई बात नहि थिक ।

लालबुझक्कर कें बजाओल गेल । ओ आबि लोकक मुंहे नाना तरहक कथा सुनलनि आ फेर ओइ छापक निरीक्षण केलनि । किछु काल गुम रहि ओ बजलाह—हुँ,

लालबुझक्कर बुझ्झ गिया कि आर न बुझा कोइ ।
पएर मे उखड़ि बान्हि कें हरिन चरक्का होइ ।।

किछु दिनक बाद एगो दोसरे घटना घटल । कोनो नेना कें चाउर फंकबाक इच्छा भेलै । मां आङन मे कोनो काज करैत रहथिन, ओ चुपे घर पैसि चाउरक कोठी फोड़ि हाथ घुसिया देलक । कोठीक मुंह छोट होइतहुँ हाथ पैसि त गेलै पर‌ञ्च जखन ओ भरि मुट्ठी चाउर ल हाथ बहार करय लागल त मुट्ठी बान्हल रहबाक कारणे हाथ बहरेबे ने करै । बेसी जोर लगा खिचबाक प्रयास केने आर हाथ सकसका गेलै । अबोध नेना किजाने गेल जे हाथ किएक ने बहराइत छइ । भय आ हाथ चंछा जेबाक कष्ट सं ओ चिचिआए लागल । मा दौड़लथिन । ओहो हाथ पकड़ि खिचबाक चेष्टा केलथिन पर‌ञ्च जं जं खिचए लगथिन कि नेना आर जोर सं चिचिआए लागए । अपनो बेचारी कानय लगलीह जे ई की भ गेलै ।

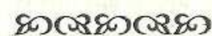
मां-बेटाक चिचिआएब सुनि टोल-पड़ोसक लोक अङना मे थहाथही करय लागल परञ्च ककरो माथ मे ई बुद्धि नहि अबैक जे नेनाक हाथ केना बहार हेतैक । अन्ततः केओ छौंड़ा दौड़ि लालबुझक्कर के बजा अनलक । लालबुझक्कर सभ कें सान्त्वना दैत घर गेला आ स्थितिक अवलोकन केलनि । किछु काल गुम रहि बजलाह—हुँ,

लालबुझक्कर बुझ्झ गिया कि आर ने बुझा कोइ ।
पहुँचे लुग सं काइट दो कि अपने बाहिर होइ ।।

एक बेर संयोग सं लालबुझक्करक गाम द एकटा हाथी चल जाइत छल—कोनो बरियाती मे । गामक लोक सभ एहि सं पहिने हाथी देखने छल नहि तें सभ छगुन्ता मे पड़ि गेल जे आखिर ई कोन जानवर थिक । परञ्च बरियाती सं पुछबे केना करितैक । गामक नाहंसीक सवाल छलै । बरियाती सभ जे बुझि जइतै जे एइ गामक लोक आइ धरि हाथी नहि देखने अइ । तें ओइ मे स एक आदमी चुपे जा लालबुझक्कर के बजा अनलक।

लालबुझक्कर हाथी देखिते बिचारय लगला जे ओ त पहिनो एकबेर एइ जानवर कें देखने छथि । बात भेलै ई जे ओही साल ओ तीर्थ करै लेल काशी गेल छलाह ।बाट मे कतौ एहिना बरियाती मे एहि जानवर के देखने छलथिन । नामो पुछने छलथिन । कहीं बिसरि ने जाथि तें अपन डायरी मे नाम नोट क लेने छलाह । ओ चट द अपन जेबी सं डायरी बहार केलनि आ ताकय लगलाह त एके पन्ना मे दू टा नाम लिखल भेटलनि—पहिल त हाथी आ दोसर अमरूद । असल मे काशीए मे बड़का-बड़का पीयर-पीयर लताम देखि हुनका भेल छलनि जे ई कोनो एहन फल थिक जे हुनका देश मे नहि पाओल जाइछ । अपना ओइठामक लताम सन ओ छलैको नहि । नामो पुछला पर कहलकनि—अमरूद । से तकरो ओ नोट क लेने रहथि । तें दू टा नाम पाबि ओ बिचारलनि—हो ने हो, दुनू मे सं एक त अबस्से होएत । तें कहलथिन—

लालबुझक्कर देखितहि बूझ
कि हो हाथी कि अमरूद ।



जामुन अन्त न पावेउ



राजा विक्रमादित्य अपने जेहन विद्वान छलह तहिना विद्वानक सम्मानो करै छलथिन। हुनका दरबार मे नवरत्न रहै छल । नव कवि सभ के प्रोत्साहित करै लए ओ एलान क देने छलथिन जे जे केओ एकोटा नव श्लोक बना क सुनओतनि तकरा प्रचुर इनाम भेटतै । तकर बाद सं प्रायः कवि सभ दरबार मे पहुंचैत आ अपन श्लोक सुना क इनाम पबैत । एइ बातक सोरहा सगरो भ गेलै ।

कोनो गाम मे चारिटा महिसबार छल । चारू मे दोस्ती लागल छलै । ओहो सभ ई बात सुनलक । रहए त निरच्छर भट्टाचार्य मुदा हिम्मत नजि कम रहै । चारू नियारलक जे किए ने अेहो सभ श्लोके बना राजा के सुनाबए । मानो सम्मान भेटतै आ पाइयो । भरिजीनगी कि महीसे चरबैत रहत ।

चारू दोस्त महीस के अनेरे छोड़ि देलक अ विदा भेल राज दरबार क । श्लोकक चिंताए की छलै । बाटे मे कतौ भेटि जेतै ।

चरु दोस्त जाइत-जाइत एकटा जामुनक गाछतर पहुंचल । कारी-कारी जामुनक पथार लागल रहै । कतो रहल होइ—सभ बीछि-बीछि खाए लागल । कतबो खाए मुदा जामुन सठबे ने करै । एकटा दोस बाजल—दोस, हमरा श्लोक भेटि गेलौ ।

सभ पुछलकै—की भेटलौ कने सुना ने ।

ओ बाजल—जामुन अन्त न पाबेउ ।

सभ कहलकै— वाह वाह । सत्ते बड़ नीक शलोक छौ । देखी हमरा सभ के कतए भेटैए।

फेर सभ गोटे विदा भेल । जाइत-जाइत एकटा पीपरक गाछ तर गेल त एगो पनिभरनी कांखतर घैल लेने चलि अबैत रहए । ओकरा देखिते दोसरो गोटे बाजल—हमरो भेटि गेलौ ।

फेर सभ पुछलकै—की ?

ओ कहलकै—पीपर आनेउ नार ।

फेर सभ गोटे वाह-वाह करैत आगू बढ़ल । किछु दूर जखन गेल त बाटक काते मे लोक एगो गुलरिक गाछ कटैत रहै । तेसर कुदैत बाजल—हमरो भेटि गेलौ, हमरो भेटि गेलौं ।

फेर सभ गोटे पुछलकै—की ?

ओ कहलकै—मर कअन्ती जानि क ।

सभ फेर वाह-वाह करैत आगू आएल । चारिम दोस्त, जकरा नहि भेटल रहै, बिधुएल सन पाछू-पाछू जा रहल छल । जखन किछु आगू गेल त एकटा बरक गाछ तर अखाढ़ा रहै । ओइ ठाम सरोइयां सभ कुस्ती खेलाइत रहए । चारिम नचैत बाजल—हमरो भेटि गेलौ । वर तर ठानेउ राड़ ।

चारू दोस्त खुशी सं नचैत-कुदैत राज-दरबार मे पहुँचल । दरबार लागल रहै । ई सभ अपन अरजी पेस केलक । विद्वान सभ त एकरा लोकनिक बगए-बानि देखिए क हंसि देलथिन, मुदा राजाक आदेश भेलै जे श्लोक सुनल जाए । एगो दोस्त ठाढ़ होइत बाजल—महाराज, हम चारू दोस्त एके संग शलोक सुनाएब । हम चारू गोटे मिलि क बनओने छी ।

राजा कहलथिन—बेस, तहिना सुनाबह ।

चारू दोस्त उठि क ठाढ़ भेल ।

पहिल कहलकै—जामुन अन्त न पाबेउ

दोसर कहलकै—पीपर आनेउ नार

तेसर कहलकै—उमर कटन्ती जानि क

चारिम कहलकै—वर तर ठानेउ राड़

कवि लोकनि त गुम्म पड़ि गेलाह । इहो कोनो श्लोक भेलै । राजाओक तेहने हाल। कालिदास सेहो दरबार मे बैसल छलाह । कोनो दोग द बहरा चारू दोस्त लग पहुँचला आ एक गोटाक कान मे कहलथिन—तोरा लोकनिक श्लोक फालतू छौ—एकर कोनो अर्थ नहि होइ छइ । राजा तोरा सभ गोटे के जहल मे बन्न क देथुन । ने त एकटा बात करै । जे इनाम भेटतौ तकर आधा जं हमरा द देबें त हम एगो अर्थ बना क राजा के बुझा देबनि ।

बेचारा महिसबार सभ त जहलक नाम सुनिते सर्द छल । जान बचए त लाखो पाबी । आधा किए पूरो द देब गछि लेलकनि । कालिदास फेर ससरि अपन आसन पकड़ि लेलनि ।

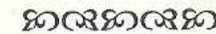
राजा कवि लोकनि सं पुछलथिन—की अओ कवि लोकनि, केहन लागल नव श्लोक ?

कवि लोकनि एके संग बजलाह—महाराज ! ई श्लोक की रहत कपार । ई त श्लोकक सर्वनास थिक ।

महाराज कालिदास दिस तकलनि । कालिदास के बुझै जोग भ गेलनि । ओ कहलथिन—महाराज ! अचरजक बात जे कवि लोकनि एहन सुन्नर श्लोकक अर्थ नहि बुझि सकला आतें एकरा श्लोकक सर्वनास धरि कहि देलनि ।

महाराजक संगहि सभ कवि लोकनि आश्चर्य सं कालिदासक मुंह ताकय लगला । कालिदास आगा बढ़ला—ई श्लोक राम-कथाक संदर्भ मे अइ । एकर अर्थ स्पष्ट छइ । मंदोदरि रावण कें बुझा रहल छथिन जे हे पतिदेव जिनक अन्त मुनियो लोकनि नहि पबैत छथि —तेहन जे पुरुष राम तनिक स्त्री के अहां हरण क क ल आनलए । स्पष्ट अइ जे अहांक बयस क्षीण भेल जा रहल ए, कटि रहल ए, तें ने अपना सं बरिया सं राड़ ठानल-ए।

विद्वान कवि लोकनिक माथ झुकि गेलनि । महाराज कें बुझबा मे विलम्ब नहि भेलनि जे ई अर्थ ओइ श्लोकक नहि, कालिदासक बुधियारीक थिक, ओ तुरत्ते चारू गोटे कें बजा इनाम देलथिन । कालिदास फेर कोनो बहन्ना बना ससरि गेलाह आ अपन आधा हिस्सा ल चारू महाकवि कें विदा केलनि ।



राभणो नतु रावण



एक बेर राजा बिक्रमादित्यक संग कालिदास के खटपट भ गेलनि । राजा खिसिया क हुनका अपन राज सं बाहर चल जेबा लेल कहलथिन । कालिदास सन स्वाभिमानी लोक, तैखन बिदा भ गेलाह ।

कालिदास कें चल गेलाक बाद राजा कें बड़ पश्चाताप भेलनि जे ओ ई की केलनि। कालिदास सन कवि कें ओ अपमान केलनि । ओ सतत खिन्न रहए लगलाह । दरबार सेहो कालिदासक बिना निरस आ उदास लागए लागल । मुदा कालिदासक कोनो पता-ठेकाना हो तखन ने हुनका बजाओल जाय । अन्त मे राजा कें एकटा उपाय सुझलनि । ओ दरबार मे एगो शास्त्रार्थक आयोजन केलनि । एहि मे जितनिहार कें पुरस्कार सम्मान त देले जेतनि, संगहि कालिदासक स्थान पर बहाल कएल जेतनि । राजा बिचारलनि जे कालिदास जत'-कतौ होथि ने किएक, ई खबरि भेटने ओ एबेटा करता ।

भेबो तहिना केलै । कालिदासक कान मे ई खबरि पहुँचलनि । ओ राजदरबारक यात्रा केलनि । बाट मे अबैत रहथि त एकटा गोआर बिस्ठी पहिरने आ धोती कें मुरेठा बन्हने, देह मे कादो माटि लागल महीस चरबैत रहए । कालिदास कें एगो चलाकी सुझलनि। ओ ओकरा बजा क कहलथिन—राउत, महीस के छोड़ि ने दियौ अनेर चरै लए । चलू हमरा संगे । हम अहां के राजा बिक्रमादित्यक दरबार मे ल जाएब । सांझखन छोड़ि देब आ संगहि टाका-पैसा सेहो देब ।

राउत त पड़ले पओलक । राजदरबार कतौ नञि जाय चाहय । तुरत्ते मुरेठा खोलि धोती पहिरय लागल मुदा कालिदास मना केलथिन—एहिना बड़ दिव लगैए ।

बाट मे कालिदास ओकरा बुझा देलथिन—हे, दरबार मे पैघ-पैघ विद्वान कवि सभ रहतै । तें अहां बाजब नहि किछु । हम अहांक चेला बनि जाएब आ जे बाजैक हेतै से हमहीं बाजब । हम कहि देबै जे हमर गुरू बारह बर्खक लेल मओन धारण केने छथि ।

राउत मानि गेलाह । कालिदास जखन दरबार लग पहुँचलाह त पता लगलनि जे मुंह पर दरबान निमंत्रण पत्र देखै छइ । बिनु निमंत्रण पत्र कें ककरो प्रवेश नञि करए दैत छइ । कालिदास राउत सं आगू लपकि क दरमान कें कान मे कहलथिन—हे ई हमर गुरू छथि मओनी बाबा । सभा मेहक कतेको विद्वान हिनक चेले छथिन । ई त सभ दिन बने-जंगल मे रहै छथि । हिनकर पता ककरो रहिते ने छनि जे निमंत्रण पत्र देथिन । ई त महाराजक सौभाग्य जे ई पहुँचि गेलाह । तें हिनका जुनि टोकबनि ।

दरमानक मोन मानि गेलै । कालिदास अपन गुरूक संग दरबार मे प्रवेश क गेलाह। सभा विद्वान कवि लोकनि सं भरल छल मुदा महाराज नहि पहुँचल छलथिन तें कार्यवाही आरंभ नहि भेल छलै । मंच पर दू गोट भव्य आसन छलै, एगो राजाक निमित्त आ दोसर शास्त्रार्थ मे जीतनिहारक निमित्त । कालिदास दोसर आसन पर राउत के बैसा अपने कात मे नीचा मे बैसि गेलाह । राउतक भयंकर चेहरा आ ताइ मे बिजेताक आसन पर बैसल देखि विद्वान लोकनिक बीच धोल-फचक्का होमय लागल । कालिदासक दाढ़ी-केश सेहो बढ़ल आ अस्त-व्यस्त छलनि । अर्थाभाव मे शरीर दुबराएल आ कपड़ो-लत्ता फाटल तें हुनको कियो चिन्हि नहि सकल । एहि धोल-फचक्का मे पंडित लोकनिक बीच केओ रावणक चर्च केलकै । राउत कें जोश नहि थम्हलनि । बाजि देलथिन—हं हओ, ठीके बात । लंका मे रहै ने राभन ।

एतबा सुनिते विद्वान लोकनि—गलती बजै छथि, गलती बजै छथि कहि चिचिआय लगलाह । जखन हल्ला खूब होमय होमय लगलै त कालिदास ठाढ़ भेलाह आ कहलथिन—एकदम शुद्ध बजलाहए ।

पंडित लोकनि कहलथिन—केना शुद्ध बजलाहए, प्रमाणित करू ।

ता राजा सेहो सभागार मे पहुँचि गेल रहथि किन्तु ओ मंच पर नहि जा निचे मे चुपचाप ठाढ़ भ गेलाह । हल्ला-गुल्ला मे ककरो नजरि हुनका पर नञि पड़लनि । कालिदास शान्त भावें कहलथिन—

खड़दूषणे षकारोऽस्ति
विभीषणें तथैवच
कुंभकर्णे भकारोऽस्ति
राभणो नतु रावणः

महाराज के बुझबा मे भाङठ नहि रहलनि जे एहन व्याख्या कालिदास छोड़ि दोसर नहि क सकैए । हुनकर मोन खुशी सं गद्गद् भ गेलनि । झट द मंच पर जा भरिपांज क कालिदास के पकड़ि लेलनि । अपन भूलक लेल माफी मङैत राज दरबार नहि छोड़बाक अनुनय-विनय करए लगलाह । कालिदास हुनका भरोस दिऔलथिन आ पहिने जकां रहए लगलाह ।

मीतारे

□

एगो राजाक बेटा आ एगो बाभनक बेटा मे मीतारे लागल छल । जतय कतौ जाथि, जे किछु करथि, दुनू मीत संगहि । किछु दिनक बाद राजाक बेटाक बियाह ठीक भेलनि । देखिते-देखिते से दिन लगचिया गेलै आ तीन दिन पहिने विशाल बरियाती गाजा-बाजाक संग बिदा भेल । आगा-आगा राजाक बेटा आ बाभनक बेटा घोड़ा फनबैत बिदा भेलाह ।

जाइत-जाइत जखन कतेक दूर गेल बरियाती सभ त एगो पांतर मे सांझ पड़ि गेलैक । लगे मे एगो सुन्नर परती छलैक आ ताहिठाम एगो बड़कीटा पोखरि । पोखरिक पुबरिया भीड़ पर एगो विशाल पीपरक गाछ छलैक । स्थान नीक देखि ओहिठाम राति बीच ठहरबाक सभक बिचार भेलै । परती पर तम्बू खसल बरियाती सभक लेल आ पीपरक गाछ तर राजाक बेटा आ बाभनक बेटाक लेल फराक तम्बू खसाओल गेल । भोजन-साजन क कें सभ विश्राम करए लागल । थाकल-ठेहियाल रहबाक कारणे निन्नो आबए मे देरी नहिञे लगलैक । एमहर राजाक बेटा सेहो फोंफ काटए लगलाह, परञ्च बाभनक बेटा कें निन्ने ने होइक । ओ एइ कर सं ओइ कर, ओइ कर सं एइ कर करैत छल । तइखन ओकरा गाछ पर कोनो चिड़ैक बाजब सुनाइ पड़लैक । ओ कान पाति सुनए लागल ।

बात भेलै ई जे बिध-बिधाता सेहो केम्हरो सं चल जाइत रहथि आ सांझ पड़ि जेबाक कारणे राति-बीच ओहि गाछ पर विश्राम करैत रहथि । बात आरम्भ केलनि बिधाता—इएह थिक मनुक्खक जिनगी ! आइ कते धूम-धाम सं राजाक बेटा बियाह करए जा रहल-ए । काल्हि एकर बियाह हेतै आ परसू मारल जाएत ।......

बिध पुछलथिन—से किएक ?

बिधाता कहलथिन—लिखलाहा के के टारि सकैछ । एकर मृत्यु परसू हेबेटा करतैक आ सेहो एहीठाम—एही गाछ तर । आइ जाइ गाछ तर ओ आराम क रहल-ए परसू सएह गाछ ओकर मृत्युक कारण बनतैक ।

बिध पुछलथिन—गाछ मृत्युक कारण बनतैक से बात नहि बुझल ?

बिधाता कहलथिन—अहां सभ बात देरी सं बुझैत छी । परसू ओकर मृत्यु लिखल छैक त तकर कारण तं किछु ने किछु हेबेक चाही । जखनबिदागरी करओने ओ घुरत आ एही गाछ तर सं जाइत रहत त ई गाछ अड़रा क ओकरा देह पर खसि पड़तैक आ ओही तर ओकर मृत्यु होएतैक ।

त एहि सं बंचबाक कि कोनो उपाय नहि छैक ? बिध पुछलथिन ।

बिधाता कहलथिन—उपाय एकेटा छैक जं घुरतीकाल ओ घोड़ा फनाबए जे गाछक पहुँच सं उपर होइक । परञ्च तैयो ओ एइठाम बंचि जायत, किन्तु तकर बाद ।

बिध—तकर बाद की ? कि दोसरो ग्रह छैक ?

बिधाता—तीन टा ग्रह सं उबरलाक बादे ओ बंचि सकैए । ई त पहिल ग्रह छैक, दोसर छैक ओकर कटहा घोड़ा—जकरा ओ बड़ बेसी स्नेह करैछ । जैखन ओ गाम पर पहुँचत त घोड़ा हिंहिंएतै आ ई जा कें ओकरा दुलार करतैक । ठीक ताही समय ओ घोड़ा एकरा हबकि लेतै आ एकर मृत्यु हेतैक । जं एहिठाम सं उबरियो गेल त आङन मे पएर दैते छहरदेवाली हहरि कें ओकरा देह पर खसतैक आ ओ मारल जाएत ।

बिध व्यग्रताक संग फेर पुछलथिन—त एहि दुनूठाम सं उबरबाक उपाय की छैक ?

बिधाता—पहिने त कटहा घोड़ा कें मरबा देबय पड़तैक आ तकराबाद आङनक छहरदेबाली तोड़ि देमय पड़तैक । परञ्च ई दुनू वस्तु राजकुमार कें ततेक प्रिय छैक जे ककरो साहसे नहि हेतैक ।

बिध—उपाय त सभक अहां कहलहुँ परञ्च से करतै के ? ककरो पता होइक तखन ने ।

बिधाता—नीचा देखैत छिऐक, राजाक बेटा निन्न गाबि रहल-ए मुदा बाभनक बेटा कछमछ करैछ, ओकरा निन्न नहि भ रहलै-ए । हमरा लोकनिक सभ बात ओ सुनि रहल-ए ।

एकमात्र उएह ई काज क सकैए । किन्तु ई बात ओकरा अपनहिधरि राखय पड़तैक। जं ओ ककरो कहलैक त स्वयं पाथर भ जाएत ।

बिध—हाय रे बिधाता ! केहन विचित्र अहांक बिधान । परोपकारक केहन नीक पुरस्कार अहां राखल-ए । सरिपहुँ ई अहीं सक हो ।

बिधाता बिहुँसैत कहलथिन—परोपकार केनिहार कखनो पुरस्कारक आशा नहि करैछ, अन्यथा ओ परोपकार कहले ने जा सकैछ ।

बिध—परञ्च नीक काजक फल जं नीक नहि हेतैक त लोक नीक काज करबे किएक करत ?

बिधाता कहलथिन—नीक काजक फल नीक होइतहिंटा छैक, भनहि देर हो वा सबेर । तहिना इहो सत्य छैक जे नीक काज कएनिहार नीक काज करबे टा करत—ओ फलक चिन्ता नहि करत ।

बिध फेर प्रश्न केलथिन—बाभनक बेटा कें पाथर बना देनाइ कि नीक काजक नीक फल भेलैक ।

बिधाता कहलथिन—बाभनक बेटा कें पाथर बनि गेनाइ याचना भेल जे नीक काज मे होइत छैक । जे हेतु आब बाभनक बेटा निश्चिन्त भ सूति रहल-ए आ राजाक बेटा जागल अछि तें अगो सुनि लिअ । राजकुमार कें जे पहिल संतान होएतैक से बेटा होएतैक। जं राजकुमार ओकरा अपनहि हाथे एक छओ मे दू टूक काटि ओकर रक्त सं पाथर भेल बाभन बेटा कें स्नान करा देत त तैखन राम-राम कहैत ओ पुनः अपन वास्तविक अवस्था मे आबि जाएत ।

बिध निसास छोड़ैत कहलथिन—किन्तु ओइ अबोध बालकक कोन दोष ?

बिधाता—एहिठाम ओ अबोध बालक निमित्त मात्र थिक । असल मे परीक्षाा छैक राजकुमारक त्यागक—ओकर साहसक ।

जे बन्धु ओकरा मृत्युक मुंह सं बचओलकै तकरा लेल कि ओ छोटसन त्याग नहि क सकैए ? खैर छोड़ू.........फरिच्छ भेलै । आब हमरा लोकनि डेरा तोड़ी ।

बिध-बिधाता ओइठाम सं अपन यात्रा केलनि । एमहर राजकुमारक सेहो निन्न टुटलैक परञ्च बाभनक बेटा फोंफ कटिते छल । ओ झिकझोरि के ओकरा उठओलक । बरियाती सभ पहिने उठि पर पैखाना सं निबृत भ चुकल छल । ई दुनू मीत जाबत निबृत हो ताबत ओ सभ सभ वस्तु ओरिया यात्रा लेल तैयार छल । ओकरा दुनू कें अबिते बरियाती विदा भेल । गाजा-बाजा सं चारु दिस गनगना उठल ।

वियाहक बाद जखन बर-कनियांक संग बरियाती घुरैत छल आ ओइ गाछक लग आएल त बाभनक बेटा राजाक बेटा सं कहलकै—मीत, हमर एगो विचार करब ?

राजाक बेटा बाजल—अहूं मीत हद करै छी । एहू मे पुछबाक कोन बात भेलै। कि बुझै छी जे बियाहक बाद हमरा पर अहांक अधिकार कम भ गेलए ?

बाभनक बेटा बिहुँसैत बाजल—असल मे से बात नहि मीत । बियाहक बाद अहां के हलदिली त ने पैसल अइ, हम तकर परीक्षा लेबए चाहै छी ।

राजाक बेटा ओहिना बिहुँसैत कहलकै—शावास ! मिलाउ हाथ । कहू हमरा की करए पड़त ?

बाभनक बेटा कहलकै—बरियाती सभ कें आगू बढ़य कहियौक आ हम दुनू गोटे पाछू रहब तकर बाद..............

राजकुमार बरियाती सभ के अगुआए कहलकै आ अपने दुनू मीत पाछू रहल । जं थोड़े दूर बरियाती सभ गेलै त बाभनक बेटा कहलकै—ई पीपरक गाछ देखै छिऐ—कते उंच हेतै ?

राजकुमार बाजल—जते विशाल छैक तते उंच त नहिञे छैक परञ्च ताइ सं कोन काज ?

बाभनक बेटा बाजल—काज अइ तें ने पुछलौं । कि हमरा लोकनि एकरा उपर द घोड़ा फना सकैत छी ।

राजकुमार टहाका लगबैत कहलकै—बस ! अहां ठाढ़ रहू, हम अपन घोड़ा उड़बैत छी ।

बाभनक बेटा कहलकै—से केना हैत ? पहिने हम फनाएब तखन अहां ।

किछु काल दुनू मे घोलमालि होइत रहलैक जे पहिने के फनाओत । अन्ततः निर्णय भेल जे दुनू संगहि घोड़ा फनाओत आ तहिना भेवो केलैक । जहिना दुनू मीत गाछक बीचो-बीच पहुँचल कि गाछ अड़रा कें खसि पड़लैक । राजाक बेटा अचरज सं कहलकै—मीत भाग भेल जे हमरा लोकनि घोड़ा फनाओल ने त कोन ठीक एही गाछ तर राम-नाम सत्त भ जाइत । बाभनक बेटा बिहुंसि देलकै ।

जखन बरियाती गामक सीमान लग पहुँचल त बाभनक बेटा राजाक बेटा सं कहलकै—मीत, अहां बरियातीक संग आस्ते-आस्ते आउ आ हम ता अगुआ गाम-घरक सुधि नेने अबैत छी । जाधरि हम घुरि कें नहि आबी ताधरि किन्तु बरियाती गाम मे नहि प्रवेश करय से धरि मन राखी । अपन मीतक एहि छोट-छीन आग्रह के राजकुमार खुशी भ मानि लेलक । बाभनक बेटा घोड़ा फनबैत बहरा गेल ।

थोड़ेक कालक उपरान्त ओ घुरि आयल । ओकरा मुंहपर एक अद्‌भुत आनन्दक छाप छलैक जे देखिते राजकुमार बुझि गेल जे सभ किछु ठीक छैक ।

बरियाती जखन हबेली लग पहुंचल त बाटक काते मे घोड़सार छलैक जकरा मुंहे पर कटहा घोड़ा बान्हल छलैक । राजकुमार कें देखियो क हिंहिंएलै नै तकर कम आश्चर्य नहि लगलैक ओकरा । तैयो ओ जा कें घोड़ाक माथ-कपार पोछि देलकै आ जैखन घुड़ै लागल कि ओकरा देहे पर घोड़ा खसलै । कनिए लेल ओ आहत हेबा सं बंचि गेल । राजकुमारक पएर थकमका गेलै किन्तु बगले मे मीत छलैक बांहि पकड़ि आगू बढ़ि गेलै । जखन आङनक मुंहथरि लग गेल त छहरदिवाली के ढहल आ तकर स्थान पर कपड़ा टाङल देखि एक दिस जं छगुन्ता लगलै त दोसर दिस तामसो कम नहि भेलै । ओमहर जे कपड़ा टाङल छलैक से टूटि राजकुमारक देह पर खसलनि । जा ओ किछु बाजत ता बाभनक बेटा ओकरा चुमाओनक घड़ी बीति जेतै कहि घीचि आङन ल गेलै । चुमाओन भ गेलाक बाद कनियां घर गेलै परञ्च राजकुमारक मन तामसे माहूर भेल रहै । ओ सामने मे बाभनक बेटा कें देखि ओकरे पर गरजि उठल—कि एही लेल अहां बरिआती कें गामक बाहर रोकि अपने आगू आएल छलहुँ । ओ जा आर किछु बजैत ता बाभनक बेटा दीर्घ निसास छोड़ैत आ हंसैत कहलकै—हं मीत, अहांक अनुमान ठीक अछि । कटहा घोड़ा के हमही मरबाओल आ छहरदिवाली सेहो हमरे आदेश पर ढाहल गेल ।

राजकुमार बमकि उठल—परञ्च किएक ?

बाभनक बेटा शान्त स्वर मे कहलकै—से बात अपने नहि जानी सएह नीक । तखन एतेधरि अबस्से जे हम जे कएल-ए अहींक नीक सोचि ।

राजाक बेटा ओहिना जोर सं कहलकै—कोनो चीजक सीमा होइत छैक । अहां हमर दोस्त भ सकैत छी परञ्च जुनि बिसरी जे हम राजकुमार छी—भावी राजा आ अहां एगो अदना लोक ।

बाभनक बेटा कहलकै—अहां राजकुमार छी आ राजा होएब—ई हमरा लेल कोनो अर्थ नहि रखैछ । हमरा लेल सभ सं पैघ बात अइ जे अहां हमर दोस्त छी आ तें एक दोस्तक लेल हमरा जे करबाक चाही—हम सएह कएल । परञ्च अहां क्रोध मे आबि साधारणो ज्ञान गमा चुकल छी । बेस त सुनू जे हम ई सभ किएक कएल ।

बाभनक बेटा सभ वृतांत राजकुमार कें कहि सुनओलकै आ कहिते देरी पाथर भ गेल । सगरो राजदरबार मे हल्ला मचि गेलै । राजकुमार अपन भूल बुझि कपार पीटय लागल । गप्प दरबार सं नग्र धरि पसरि गेलै आ सभक मुंह पर बाभनक बेटाक परोपकारक चर्चा छलैक । दोसर दिस राजकुमारक सभ निन्दा करए ।

राजकुमार पाथर भेल अपन मीत कें उठा कें अपन सुतबाक घर मे ल गेल आ एक अलग पलंग पर सुता कें उज्जर चदरि सं झांपि देलकै । राति मे जखन राजकुमार अपन पत्नी संग सूतल छल त ओकरा बेर-बेर अपन मीतक याद पड़ि रहल छलैक । भिनसरबा राति मे कने भक लगलै त जेना ओ सपना देखैत हो............ओकरा पीपर गाछ पर सं कोनो चिड़ैक आवाज ओहिना सुनाइ पड़लै—राजाक बेटा कें जे पहिल सन्तान हेतैक तकरा अपने हाथे एक छओ मे दू टूक काटि ओकर रक्त सं पाथर भेल बाभनक बेटा के स्नान करा देत त तैखन राम-राम कहैत ओ पुनः अपन वास्तविक अवस्था मे आबि जायत । ओ सोचलक हो ने हो ई हमरे लेल कहल गेल हो जे जानि क मीत नहि कहलनि। ओकर बेचैनी जेना आर बढ़ि गेलै ।

एहिना दिन बीतैत गेलै परञ्च राजकुमारक मन मे अपन बन्धुक प्रति कर्तव्यबोध आर जगजियार होइत गेलनि । अन्ततः हुनका सन्तान भेलनि आ से सरिपहुँ बेटा भेलनि। छटिहारक प्रातहिं राजकुमार अपन स्त्री कें सभ बात कहलथिन । स्त्री अपन सहमति दैत कहलथिन—कोनो मांक हृदय त एकरा स्वीकार नहिञे क सकैछ, किन्तु हम अहांक पत्नी पहिने छी—मां तखन । स्त्रीक लेल पतिये सर्वोपरि थिक ।

राजकुमार तैखन तरुआरि उठा अपन पुत्र कें एके छओ मे दू टूक क देलनि आ ओकर शोणित पाथर भेल अपन बन्धुक शरीर पर छिटि देलथिन । बाभनक बेटा राम-राम कहैत उठि बैसला । कहलथिन—आह, केहन गाढ़ निन्न छल ।

राजकुमार कें त हर्षक सीमे नहि छलनि । बजलाह—एहन निन्न अहांक मुद्दैओ जुनि सुतओ ।

तैखन बाभनक बेटाक नजरि दू टूक भेल जनमौटी बच्चा पर पड़लनि । ओ दुनू खण्ड के उठा धर सं गरदनि के सटैत बजलाह—आह कतेक सुन्नर अइ ई !

राजकुमार आ हुनक पत्नी के अचरजक ठेकान नहि रहलनि जखन देखलनि जे बच्चा हाथ-पएर फेकैत किलकारी मारैछ ।

ठठपाल



कोनो गाम मे एगो गरीब बाभन रहथि । ओ जेहने देखबा-सुनबा मे सुन्नर, तेहने मेधावी आ तेहने पढ़बा-लिखबा मे चन्सगर । नाम रहनि ठठपाल।

ठठपाल बहुत दिन धरि परदेश मे रहि पढ़लनि । ओ बड़का विद्वान भेलाह । चारूभर हुनक विद्या-बुद्धिक चर्चा होमय लागल । पाइयो-कौड़ीक नीक आमदनी होमय लगलनि । तखन हिनका अपन गाम, गामक माटि-पानिक सोह भेलनि आ ओ गाम चलि एलाह ।

गाम पहुँचला पर ठठपालक खूब स्वागत भेलनि । सर-समाज मे कोनो काज-उदेम होए त हिनका अरबधि के बजाओल जाइन आ बिचार पूछल जाइन । परञ्च सभ होइतहुँ कखनो काल हिनका मन मे एकटा बातक बड़ दुःख होइन । से बात ई जे लोक हिनका ठठपालहिक नामे बजबनि । ई सोचलनि जे एते पढ़ला-लिखलाक बादो हम ठठपाले रहि गेलहुँ । एहनो कतौ नाम भेलै-ए ? मुदा उपाइए की । गामक लोक जन्महि सं जाइ नामे जनै-ए तकरा बदललो केना जाय ? हं, एगो उपाय छैक जं गाम छोड़ि दूर देश चलि जाइ। ओतय कोनो नीक नाम राखि लेब । आ इएह सोचि ओ एक दिन अपन गाम छोड़ि विदा भ गेलाह ।

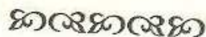
जाइत-जाइत जखन ओ बड़ी दूर गेलाह त थाकिसन गेलाह आ तें एगो गाछक जड़ि मे बैसि सुस्ताय लगलाह । ओहि गाछ तर आर एगो लोक बैसल छल । ओकर पहिरन रत्ती-रत्ती भेल छलैक आ बगै-बानि सं एकदम भीखारि बुझा रहल छल । ठठपाल के ओकरा पर दया आबि गेलनि । किछु जिज्ञासाक क्रम मे नाम पुछलथिन त ओ कहलकनि—धनपति । हिनका मनहिमन बड़ हंसी लगलनि मुदा हंसने धनपति अन्यथा ने सोचय से विचारि ओकरा जांति उठि विदा भ गेलाह । कने दूर आगा एगो टोल पर गेलाह त पियास

लगलनि । सामने मे एगो लोक पर नजरि पड़लनि, जे पोआर ढोइत रहए । लग बजा के एक लोटा पाइन देबाक आग्रह केलथिन । ओ भद्र लोक अपन दरबजा पर पोआर राखि लोटा माजि एक लोटा टटका पानि हिनका देलकनि । पाइन पीबि ई तृप्त भेलाह त ओकर नाम पुछलथिन । ओ कहलकनि असर्फी । ठठपाल आगा बढ़लाह । गाम सं बहराएले रहथि कि एगो अर्थी पर नजरि पड़लनि । आगा-आगा अर्थी आ तकर पाछा कटिहारीक विशाल पांति । मने-मने सोचलनि—निर्विवाद कोनो पैघ लोक मुइल-ए ने त एते कटिहारी कतय पाबी । मृत लोकक परिचय जनबाक बड़ इच्छा भेलनि । अन्त मे एक आदमी सं पुछिए देलथिन— कोन महाजन संसार त्याग केलनिहे ? अमर साहु, ओ व्यक्ति जवाब देलकनि।

ठठपालक पएर ठमकि गेलनि । हिनका मन मे जेना बड़का बिहाड़ि उठि गेल होइन। अमर साहु मरि गेलाह । असर्फी पोआर ढोइ छलाह आ धनपतिक देह पर गुदरियो नदारद । इएह त थिक नामक महत्व । आ तकरे फेर मे पड़ि हम अपन गाम-घर, सर-समाज, अपन-पराए तेजि पड़ाएल जाइत छी । हमरा सन मुर्ख के हएत ? हमव्यर्थे विद्वान हेबाक दंभ पोसने छी.........। एहि तरहे सोचैत-विचारैत ओ गाम घुरि एलाह ।

परात भेने संगी-साथी सभ, जकरा सभ कें हिनक गाम छोड़बाक विषय बुझल रहैक भेंट होइतहि घुरि एबाक कारण पुछनि । ठठपाल सभ कें एके जवाब देथिन । ओ जवाब छलनि—

धनपति देह पर लता-फता नहि
अशर्फी ढोथि पुआर
अमर साहु के मरिते देखल
भनहि नाम ठठपाल ।



एकटा रहथि राजा



एकटा रहथि राजा । ओ जेहने पराक्रमी रहथि, तेहने प्रजा वत्सल । राजाक नाम-यश अपन राज सं बाहरो पसरल छल । परञ्च सभ रहितहुँ राजाकें मानसिक शान्ति नहि छलनि । कारण तेसरपन बीति रहल छलनि मुदा कोनो सखा-सन्तान नहि छलनि । एकरे चिन्ता मे राजा-रानी दुनू बेकती सतत खिन्न रहैत रहथि ।

एहिना एक दिन दुनू गोटे उदास बैसल रहथि ता एगो बाबाजी जुमलाह । राजा खबरि पबितहि बाहर जा बाबाजीक नीक जकां स्वागत कएलनि आ इच्छित दान देबाक घोषणा केलनि । बाबाजी रानीक हाथें एक मुट्ठी चाउर टा लेबक इच्छा प्रकट केलनि ।

जखन रानी सूप सं एक मुट्ठी चाउर बाबाजीक झोड़ी मे दैत छलथिन त बाबाजीक नजरि रानीक उपर एकटक लागल रहल, परञ्च राजा-रानी धार्मिक प्रवृतिक हेबाक कारणे एकरा अन्यथा लेबे किएक करितथि । बाबाजी चाउर कें अपन झोड़ी मे रखैत राजा सं बजलाह—हे राजा ! हम आहां लोकनिक मनक व्यथा बुझैत छी । तें हम जेना कहैत छी तेना करू । अहां लोकनि कें निश्चित सन्तान लाभ होएत । परञ्च स्मरण राखू जे ई बात तीनू आदमी छोड़ि चारिम नहि जानि सकय । अगिला मंगल दिन बेरखन अहां अपन गाछी जाएब आ सिनुरिया गाछ सं एगो आम तोड़ि लायब । मन रहय जे आम माटि पर नहि खसय। दहिना हाथें झटहा फेकब आ बाम हाथे आम लोकब आ ओहिना नेने आङन चलि आयब । बाट मे कतबो केओ टोकय त बाजी नहि । रानी मा ओ आम अपन खोंइछ मे ल ओ फेर सिलौट-लोढ़ा सं ओकरा कुच्चा बना खा लेती । आर एगो बात—पूर समय भेनहि जे प्रसव करतीह ताइ मे प्रथम त बालक जन्म लेत, किन्तु दोसर एगो शंख होएत । ओइ शंख के अहां धो-पोछि पवित्र जगह पर राखि देबैक आ रोज सांझखन ओकरा धूप-दीप देखा देल करिऐक । अपन यात्राक शेष मे हम जखन घुरब त ओ हमरा द दी । हमर कहल मे

मिसियो भरि अन्यथा नहि हो—ने त भयंकर अनिष्टक संभावना । एतबा कहि बाबाजी विदा भ गेलाह ।

सन्तान सुखक कल्पना मात्रे सं राजा-रानीक आनन्दक सीमा नहि रहल । अगिला मंगल कें जेना-जेना बाबाजी कहने रहथिन राजा केलनि आ रानी गर्भवती भेलथिन जे थोड़ें दिनक बाद स्पष्ट परिलक्षित भेल । समय पुरला पर रानीक गर्भ सं एगो दिव्य राजकुमार आ दोसर शंख जन्म लेलक । नगर उत्सव सं दलमलित भ उठल । फेर नेना दिनानुदिन पैघ होइत गेल । एहि तरहें दिन केना बीतैत गेल से हुनका लोकनि कें ख्यालो ने रहनि ।

किछु दिनक बाद जखन नेना छेटगर भेलैक आ अन्न खाए लगलैक त एगो अजगुत भेल । राजा-रानीक संचार लागि सभ दिन हुनक सुतबाक घर मे राखल रहनि । एक दिन जखन कने बिलम्ब सं ओ लोकनि घुरथि त देखै छथि जे रानीक थारीक भात छिटल रहनि—जेना कोनो नेना छिटि-छिटि क खेने हो । दुनू गोटे छगुन्ता मे रहथि परञ्च निस्तुकी हेबे ने करनि । एकर बाद सं ई क्रम प्राय: चलैत रहल । अचरजक बात ई जे दिन पर दिन भात बेसी खलिआय लगलैक । परञ्च ई बात ओ लोकनि बजबो ने करथि ।

किछु दिनक बाद राजा कतौ बाहर गेल छलाह । एक राति रानी पलंग पर पड़ल रहथि आ खबासनी संचार लगा गेलनि । हुनकर आंखि कने लागि सन गेल छलनि ता देखलनि जे एगो नेना पीढ़ी पर बैसि क खा रहल अइ । खेलाक बाद गिलास सं कने पानि पीबि आ हाथ धो ओ शंख मे घुसिया गेल । रानी कें भेलनि जे ओ भरिसक सपना देखलनिहें मुदा उठला पर संचार देखि सपनाक वास्तविकता पता चललनि । परञ्च फेर ओ चुप्पे रहलीह । आनदिन त दुनू बेकती एके थारी मे खा लैत छलीह से आइ एके थारी हेबाक कारणे हुनका भुखले रहय पड़लनि ।

दोसर दिन जखन राजा घुरलाह त रानी सभ बृतान्त कहलथिन । दुनू बेकती मीलि योजना बनओलनि आ ओइ राति घरे मे नुकाएल रहलाह । फेर जखन खबासिन संचार लगा क केबार बन्न क चल गेल त थोड़ेक कालक बाद देखै छथि जे ओहि शंख सं एक दिव्य नेना बाहर भेल आ आसन पर बैसि भोजन क रहल-ए । जखन ओकरा थोड़ेक खायल भ गेलै त राजा दोग सं बहरा लपकि कें नेना कें पकड़लनि । ओ पुछलथिन—अहां के छी बाउ ? एना चोरा कें रोज किएक संचार अंइठा दैत छी ।

नेना बाजल—हम आन केओ नहि—अहीं लोकनिक छोट संतान थिकौं—जे शंखक रूप मे जन्मल रही । रहल बात संचार अंइठेबाक—से सन्तानक अंइठ मा कें त नहि लगबाक चाही । तैं हम सभ दिन माइएक थाड़ी मे खाइत छी । आ चोरा क त हमरा खाइए पड़त—शंखक लेल कतौ संचार लगलैए ? माइक दूधो त हम राति मे चोराइए क पीबैत रहलहुँ आ मां ओकरा सपना बुझैत रहलीह ।

—किन्तु आब त हम अहां कें शंख मे नहि जाय देब । रानी बजलीह ।

—से तइखन हैत जे शंख कें नुका क कोनो पेटी-बकसा मे बन्न क दियौक । ओना महात्माजी त तैयो बुझिए जेताह—तखन ?

तकर भार हमरा पर अइ—राजा बजलाह ।

ओइ दिन सं बालक बाहरे रहय लागल परञ्च बात फैलि नहि जाय तें राजा दुनू बालक के महलक भीतरे खेल-धूप, पढ़ब-लिखब कें व्यवस्था केलनि । जं जं दिन बीतैक एक दिस सं राजा-रानी कें बड़का सं छोटका नेनाक संस्कार आ तेजस्विता पर प्रसन्नता होनि तहिना महात्माजीक आगमन सं सम्भावित अनिष्टक बात सोचि चिन्ता सेहो । आखिर एक दिन महात्माजी आबिए गेलथिन आ अपन धरोहरक याचना केलथिन । राजा-रानी दुनू बेकती हुनका पूर्ण श्रद्धा संग प्रणाम केलनि आ शंख आनि हाथ मे देलथिन । महात्माजी शंख हाथ मे लितहि बुझि गेलाह आ आंखि लाल करैत बजलाह—राजा ! बात त एहन नहि छल । शंख ,खाली अइ' तें एहि शंख सं जे बहराएल हो तकरा शिघ्र हमरा सोझा उपस्थित करू ने त हम शाप देब ।

बेचारे राजा कें त काटू त शोणित नहि । झट द दुनू नेना कें उपस्थित करैत बजनाह—हे महात्मा, इएह दुनू सन्तान थिक—अपने कें जे इच्छा हो चूनि लिअ ।

महात्मा छोटकाक हाथ पकड़लनि आ उठि बिदा भेलाह । राजा-रानी उदास मने घर जा पड़ि रहलनि ।

ओमहर महात्माजी ओइ बालकक संग गाम-घर सं बहराइत एगो छोट सन पांतर मे पहुँचलाह, जाइठाम सं बाट दू दिस जाइत रहैक । महात्माजी बालक कें पुछलथिन—बाउ, एहिठाम सं ई दुनू बाट हमर कुटी धरि जाइए । एगो ६ मासक आ दोसर बर्ख दिनक बाट छैक । छ मासक बाट मे पर्वत-पहाड़, नदी-नाला त छैके संगहि बाघ-सांपक से हो भय छइ, जखन कि बर्ख दिनक बाट निष्कन्टक छैक । आब अहीं कहू जे कोन बाटे जाइ ?

महात्मा जी छ मासक बाट चलू ने । बाघो-सांप देखबाक अवसर भेटत आ जल्दी पहुँचियो जायब—बालक बाजल ।

महात्माजी आश्चर्यित होइत बालक दिस देखलनि आ बजलाह—चलू, हमरा लोकनि आपस चली । बालक चतुर छल आ ओकर दाव लहि गेलैक । महात्माजी ओकरा संग फेर राजाक ओइठाम पहुँचलाह आ छोट नेना कें राखि जेठ जनक माङ केलथिन । शापक डरे भीतु राजा बिना कोनो आनाकानी केनही महात्माजीक प्रस्ताव स्वीकार कए जेठजन कें संग क देलथिन । महात्माजी ओकरा ल विदा भ गेलाह ।

फेर जखन ओइ पांतर मे पहुँचलाह त महात्माजी ओकरो सं उएह प्रश्न केलथिन। जेठका राजकुमार कने डरपोक स्वभावक छल तें बर्ख दिनक बाट जेबाक स्वीकारलक । महात्माजी प्रसन्न भ विदा भेलाह ।

महात्माजीक आश्रम एगो घनघोर जंगलक बीच विशाल महल छल ।

एगो सुन्दर कमरा मे राजकुमार के ओ राखि देलथिन आ आदेश देलथिन जे ओ

असगर महलक बाहर नहि जाए—जं जेबो करय त सभ दिस जाए मुदा दक्षिण दिस नहि जाए ।

महात्माजी सभ दिन प्रातःकाल स्नान-पूजा क क बहरा जाथि आ फेर दोसर-तेसर सांझ क आपस आबथि । एहि बीच राजकुमार सभ दिस घूमय परञ्च आदेशानुसार दक्षिण दिस नहि जाय । एक दिन ओकरा हठात कि फुरलैक, ओ दक्षिण दिस चल गेल । दक्षिण दिस एगो विराट बड़क गाछ रहैक आ ताइठाम एगो पैघ इनार । इनार मे हुलकी दैते ओकर अंचरजक ठेकान नहि रहलैक । इनार मे पानि नहि रहैक—खाली लोकक माथ भरल रहैक । राजकुमार कें देखिते मुंड सभ ठहाका मारि हंसय लागल ।

हंसबाक कारण जिज्ञासा केला पर मुंड सभ कहलकै—बाउ, दू दिन बाद तोरो इएह गति हेतह । तें हमरा लोकनि कें हंसी लागि गेल ए । जे महात्मा तोरा अनलकहे, से असल मे कसाइ थिक । आ अहिना गाम-घर सं लोक कें बझा क अनैछ आ महाकाली समक्ष बलिप्रदान करैछ । मुंड के एहि इनार मे ध दैछ आ देह कें माउस रान्हि देवी कें भोग लगबैछ आ अपनो खाइछ ।

—मुदा एहि सं बचबाक उपाय । राजकुमार आकुलताक संग पुछलकैक ।

मुंड सभ बाजल—बंचबाक उपाय छैक अबस्से, जं तोरा सं पार लागओ तखन। परसू शनि छैक आ महात्मा भरि दिन ब्रत राखत आ पूजा-पाठ करत । सांझखन ओ तोरा बजओतह—स्नानादि करा नव वस्त्र पहिराकें । पूजा जखन भ जेतै त देवी प्रतिमाक दहिनाकात बड़का कराह मे तेल टहकैत रहतैक । ओ तोरा देख लेल कहत जे बाउ देखहक त तेल गर्म भेल वा नहि । तों जैखन मुड़ी झुका कराह मे देखबह तैखन देवीक पयर लग मे तरुआरि राखल छैक ताइ सं तोहर माथ छोपि लेतह । तें तोरा जखन ओ तेल देखय लेल कहत, त तों कहियहक जे केना देखल जाय से कने बुझा देथुन । ओ तोरा देखबैक लेल अपन पूरा गरदनि झुकाक' कराह मे ताकत आ तों फुर्ती सं तरुआरि ल क ओकर गरदनि पर प्रहार करिह । मन राखी जे एके छओ मे ओकर माथ देह सं कात भ जाइ आ माथ कें बाम हाथे लोकि लिह आ कालीक पयर पर राखि दियहुन । फेर ओकर शरीर कें कराह मे द टुकड़ी-टुकड्डी काटि खूब नीक जकां भुजि देवी के बड़का थाड़ी मे भोग लगा दियहुन । सभ काज विधिवत भेने देवी प्रसन्न भ वरदान माङै लेल जं कहथुन त पहिल वरदान हमरा लोकनि कें जीवित करबाक मङिह, दोसर देवी कें एहि अभिशप्त जगह छोड़ि आनठाम चलि जाइक, आ तेसर अपने जे मन होअ । तीन सं बेसी नहि हेबाक चाही । संगहि मन राखी जे महात्मा बड़ पहुँचल छथि । तोहर भाव-भंगिमा सं ओ बुझि ने जाथुन । आब तों जाह । हमरा लोकनिक शुभकामना तोरा संग अइ—नीके ना रहने परसू रानि मे भेंट होएत !

राजकुमार अपन कमरा मे घुरि आयल । ओइ राति ओकरा निन्न नहि भेलैक । ओ बड़ व्यग्रता सं शनि दिनक बाट जोहय लागल । परञ्च ओ तते सतर्क छल जे महात्माजी कें एहि सभक भनको नहि लगलनि ।

अन्ततः शनि दिन एलै । महात्माजी भरि दिन पूजा परबैसल रहलाह । राजकुमार कें सेहो उपास कराओल गेलैक । आ ठीक जखन सांझ पड़लैक—महात्माजी स्नान कय गेरुआ वस्त्र धारण केलनि आ राजकुमार के सेहो स्नान करबा नव वस्त्र पहिरबा देलथिन । ओ फेर पूजा पर बैसलाह त राजकुमार कें सहो अपन बगल मे बैसा लेलनि । लगभग पहर भरि पश्चात महात्मा राजकुमार दिस देखैत बजलाह—बाउ देखियौक त जे कराहक तेल गर्म भेल वा नहि । राजकुमार के त जेना वाण मारि देलकैक । किन्तु ओ अपना कें एहि स्थिति सं मुकाबला करैक हेतु तैयार केनहि छल । झट द बाजल—त, भ गेलैक । महात्मा जी ओहिना शान्त भावें कहलथिन—कने उठि कें देखियौक ने ।

राजकुमार उठ़ि कें दूरहि सं देखि बाजल—खौलैत छैक ।

एहिना लोक देखैत छैक—महात्माजीक शिकायत भेलनि ।

राजकुमार वेश गम्भीरताक संग बाजल—क्षमा करब, हमरा नहि बुझल अइ । एक खेप जं अपने देखा दी त फेर भूल नहि होएत ।

महात्माजी तरुआरि सं आंखि हटा राजकुमार के देखैत आस्ते सं उठलाह आ कराहक लग जा पूरा गरदनि नमरा कराह मे तकैत बजलाह—हे एना.........

एहि बीच राजकुमार तरूआरि ल हुनक माथ देह सं फराक क देलक । ओ अपन बात पुराओ ने क सकलाह । आ जेना मुंड सब कहने छलैक बाम हाथे माथ लोकि देवीक पयर पर राखि देलकै । भरि दिन सहल रहला के बादो जानि ने कतय सं ओकरा ओतेक फुर्ति आ जोर आबि गेलैक । ओ महात्माजीक छटपट करैत देह कें उठा कराह मे ध देलक आ ओहि मे तरूआरि सं छोट-छोट टुकड़ी काटि नीक जकां भूजि थाड़ी मे ल भगवतीक सामने परसि देलक आ कलजोड़ि बाजल—माँ भगवती जं कोनो गलती भेल हो त नेना जानि क्षमा करब अहां के प्रसाद परसल अइ—भोग लगाउ ।

एतबा कहिते एक अद्भुत शब्द सं मंदिर गनगना गेलैक आ सभ दीप मिझा गेलैक। राजकुमा डरे त्रस्त—जाइठाम छल ताहिठाम कल जोड़ने ठाढ़ भेल रहल । कनेके कालक बाद जेना भगवतीक शब्द ओकरा सुनाइ पड़लैक—आइ सरिपहुँ तों स्वादिष्ट मांस भोग लगओलें । बहुत दिनक पश्चात् आइ मन तृप्त भेल ।आइ तोरा जे बरदान लेबाक छौक माङि ले ।

राजकुमार बाजल—माँ ! जं सरिपहुँ एहि अबोध पर प्रसन्न छी त हमरा तीन गोट बरदान दिअ । पहिल त ई जे महात्माजी द्वारा जतेक लोक कें काटि अहांक भोग लगाओल गेल-ए आ जकरा लोकनिक मुंड दक्षिणबरिया इनार मे पड़ल छैक ओकरा सभ कें जिया दियौक । दोसर अहां एहि अभिशप्त मंदिर कें छोड़ि आनठाम चल जाउ आ तेसर जे जखन हमरा कोनो गाढ़ विपत्ति पड़य आ अहां के स्मरण करी त अहां उपस्थित होइ ।

भगवती कहलथिन—तहिना हैत । आ फेर एकटा विचित्र सन शब्द भेलैक—दीप सभ अपनहि जरि गेलैक आ चारूभर ततेक इजोतसन भ गेलैक जेना दिन होइक ।

राजकुमार ओहिना मन्दिर सं बाहर इनार लग गेल त सभ ओकर स्वागत केलकैक आ बाहर करक लेल डोरीक व्यवस्था करबाक आग्रह केलकैक । राजकुमार फेर मंदिर मे गेल आ कतेक ताकलाक बाद एगो मोटगर रस्सी भेटलैक—जाइ ल क सभ के ऊपर केलक। सभ ओकरा घेरि लेलकैक आ जेना एगो अभिनव उत्सवक रूप ल लेलकैक । देखैत-देखैत राति बीति गेलैक आ पूबकात मे सुरुज भगवान उगि गेलथिन । तखन राजकुमार के भूखक अनुभव भेलैक । सभ केओ मिलि मंदिर मे आयल—भोजन बना बनभोज केलक। सभक संग परिचय-पात भेलैक—तखन राजकुमार जनलक जे ओ सभ कोनो ने कोनो देशक राजकुमार छलैक । सभ जाइकाल एकरा अपना ओइठाम जेबाक नोत देलकैक । लगे मे घोड़शाला छलैक जाइ मे महात्माजी नीक घोड़ा संग्रह केने छलाह । सर्वप्रथम राजकुमार कें मनोनुकूल घोड़ा चूनै लेल कहल गेलै आ फेर सभ एक-एक टा घोड़ा पर चढ़ि अपन-अपन देश बिदा भेल । राजकुमार सभ के बिदा क सोचलक—घर त जेबे करब, किएक ने आर कने दिन दुनियां देखल जाय । ई सोचि ओ घोड़ा पर चढ़ि बिदा भेल—जेम्हरे घोड़ा ल जाय ।

जाइत-जाइत जखन ओ कतेको दूर गेल त बाट मे दू गो बाघक बच्चा खेलाइत भेटलैक । जेठका राजकुमार सं कहलकै—हे राजकुमार, हमरो संग नेने ने चलू ।

राजकुमार बाजल—तों छैं त बाघ, के जानय कहीं हमरे पर ने चोट करै।

बाघ कहलकै—हे राजकुमार, हम बाघक बच्चा अबस्से छी मुदा विश्वासघात नहि करब । बेर विपत्ति मे मदतिए करब ।

राजकुमार के मन मानि गेलैक । ओकराघोड़ा पर बैसा लेलक आ बिदा भेल । छोटका बाघ उदास भेल देखैत रहल । ओ सभ आर जखन किछु दूर गेल त एगो गाछक डारि पर दू गो बाझक बच्चा खेलाइत छल । फेर जेठका बाजल—हे राजकुमार हमरो अपना संग नेने चलू ने । छी त हम बाझ चिड़ै, तैयो कहियो काज मे लागि सकैत छी ।

राजकुमार ओकरा दिस देखलनि आ कहलथिन—चल आ बैस एही घोड़ा पर आ ओकरो बैसा लेलनि । छोटका फेर खिन्न मोन हिनका लोकनिक दिस तकैत रहल ।

जाइत-जाइत जखन सांझ परि गेलैक त राति-बीच विश्राम करै लेल राजकुमार एगो गाम मे पहुँचलाह । गामक कात मे एगो धोबीक घर रहैक । धुड़खुड़ लग एगो बुढ़िया के ठाढ़ देखि ओ कहलथिन—गे मौसी, राति बीच हमरा रहय देबै । भोरे फेर चलिए जायब ।

बुढ़िया बाजल—रहए किएक ने देब । अहां कि हमर घर उठा क ल जाएब । बड़ भाग सं ककरो ओइठाम केओ अभ्यागत अबै छइ । रहू ने ।

बुढ़िया एगो पटिया आनि आङन मे ओछा देलकनि आ एक लोटा पानि आनि देलकनि । राजकुमार गोठुल्ला घरक ओसारा मे घोड़ा के बान्हि हाथ-पएर धो पटिया पर बैसि गेलाह । कात मे बाघक आ बाझक बच्चा परि रहलनि । बुढ़िया भानस-भात मे लागि गेल । मुदा ओ जते बेर घर जाय त कानय लागय आ आङन आबय त हंसय लागय ।

राजकुमार कें ई देखि बड़ छगुन्ता लगलनि । अन्ततः ओ पुछिए देलथिन—मौसी एगो बात पुछियौक ?

—किएक ने पुछब ? बुढ़िया बाजलि । राजकुमार पुछलथिन—जते बेर घर जाइ छें त कानय लगै छें आ आङन एने हंसय लगै छें—एकर की कारण ?

बुढ़िया बाजलि—बाउ, अहां एक दिनक पाहुन छी, ई सभ बुझि क की करबैक ।

राजकुमार कें बड़ हठ केला पर बुढ़िया कहलकनि—बाउ, हमरा एके गो बेटा अइ, जेकर काल्हि गौना छइ - आइ बरियाती गेलै ए । तें ओही खुशी मे हम जखन आङन अबै छी त हंसै छी । मुदा परसू हमर बेटा दैत्यक पेट मे चलि जाएत सैह सोचि क कनैत छी—जखन घर जाइत छी ।

राजकुमार आश्चर्य प्रकट करैत पुछलथिन—दैत्यक पेट मे ! ई दैत्य की भेलैक ?

बुढ़िया बाजलि—से अहां केना बुझबै । बुझैत छैक एहि नगरक लोक, जकर सैं-बेटा ओकरा पेट मे पड़ि चुकल छैक । राजाक कानून छैक—बेरा-बेरी सभक घर सं एक गोटे क सभ दिन दैत्यक पेट मे जेतैक । से नहि भेने त दैतबा एके दिन मे कतेको के खा जाइ छलै ।

राजकुमार कहलकै—ठीक छै—परसू तोरा बेटाक बदला मे हम जाएब, मुदा ई बात तों कतौ बाजै नहि, आ ने अखन सं कनबे कर ।

बुढ़िया कनैत बाजलि—से कोना हेतै बेटा—अहूँ त ककरो बेटे हेबै ने । हम अपन बेटा खातिर अहां कें कोना मरबा देब ?

—आइ सं हमरा तों अपने बेटा बुझै । हम तोरा मां कहबौक । मुदा ई गप्प दोसर केओ ने बुझै ।

बुढ़िया मानि त गेल मुदा ओकरा मन मे कचोट रहबे करैक । ओमहर राजकुमार एक बेर फेर व्यग्रताक संग परसूक बाट जोहय लगलाह । बुढ़िया जखन चैन सं घर मे भानस करय लागलि त राजकुमार बाघ सं पुछलनि—बाउ, आब कहै—दैत्य सं केना सामना करबिही ?

बाघ बाजल—हम लपकि क ओकर डांड़ ध लेबै आ टस स मस नहि होमय देबै।

बिनु पुछनहि बाझ कहलकनि—हम त फट द दुनू आंखिए फोड़ि देबैक ।

राजकुमार बजलाह—तखन हमरे तरुआरि सं ओकर घेंट कटैत कते देरी लागत। मुदा सभ केओ सावधान भ जाइ जो ।

राति मे भोजन-भात क सभ सूतल आ भोर मे राजकुमार घूमि फिरि नगर दर्शन केलक आ फेर राति मे बुढ़ियाक आङन जा विश्राम । भिनसरे डिगडिगिया पड़लैक जे आइ जकर पारी छैक से पुबरिया पोखरिक भीड़ पर दैत्यराज लग ठीक समय पर चल जाय ने त राजा ओकरा बाले-बच्चे भाकसी झोंका देथिन ।

राजकुमार तैयार भेल । घोड़ा पर बाघ आ बाझ के पहिने सवार क बुढ़िया सं

आशीर्वाद लेलनि । बुढ़िया कनैत बाजलि—बेटा हमरो अरुदा ल क तों जीबै—मुदा मन कहैत छलै ओ घुरत नहि । राजकुमार विदा भेल—पुबरिया पोखरि दिस ।

राजकुमार जखने पोखरिक समीप पहुँचल त ओकरा भयंकर गर्जन सुनाइ पड़लैक जकरा ओ दैत्यक गर्जन मानि आर सतर्क भ गेल । जखने भीड़ पर पहुँचल त ओ विशालकाय विकराल दैत्य मुंह बाबि छुटलैक । बघवा लपकल । उड़ल बाझ । आ चमकि उठलैक राजकुमारक तरुआरि । दक्षिण मे दिवरा भीड़ सन दैत्यक लहास ढेर भ गेलैक आ शोणितक बोमकार छूटय लगलैक । राजकुमार अपन संगीक संग दोसर दिस बिदा भ गेल ।

राजकुमार फिरलो ने छल मुदा नगर मे दैत्यक मरबाक खबरि पसाही जकां पसरि गेलैक आ कतेको लोक दैत्य कें मारनिहारक रूप मे अपना कें प्रचारित करैत राजदरबार मे हाजिर भेल । एकर कारण ई छलै जे राजा दैत्य के मारनिहार के आधा राजक संग अपन बेटी बियाहि देबाक प्रतिज्ञा केने छलाह । मुदा दाबीदारक संख्या बेसी देखि हुनका सन्देह भेलनि आ तें आइ ककर पार छलैक तकर पता लगबैत धोबिनियांक ओहिठाम सिपाही पठाओल गेल । धोबिनियां कें पकड़ि दरबार मे उपस्थित केलक । राजा पुछलथिन—आइ तोहर बेटाक पार छलौक, ओ गेल छलौक कि नहि ?

धोबिनिया बाजलि—महाराज, हमर बेटा काल्हि गौना कराक आएल-ए तें हमर बहिनपुत ओकरा नहि जाय देलकैक आ ओकरा बदला मे अपने चल गेल ।

राजा पुछलथिन—ओ छौक कहां ।

दैतबाक पेट मे हेतै, आर कतय । एतबा कहि ओ हवोढकार भ कानय लागलि ।

राजा ओकरा सांत्वना दैत कहलथिन—आइ दैत मारल गेल-ए मुदा के मारलक तकर निस्तुकी नहि भ पबैछ । तें तोहर बहिनपुतक जरुरति ।तों जो, मुदा जाधरि ओ नहि अबैछ तोरा घर पर सिपाहीक पहरा रहतौक आ ओकरा अबिते एतय पठा दही ।

धोबिनियां के नेने सिपाही सभ ओकरा घर पहुँचल ता राजकुमार सेहो जुमि गेल । ओ अबिते हंसैत बाजल मौसी मधुर खुआ । आइ तोहर दैतबा के यमपुर पठा देलिऐक । आइ सं ककरो सैं-बेटा ओकरा पेट मे नहि जेतैक ।

सिपाही सभ आश्चर्य सं ओइ विचित्र राजकुमार के देखलक जकरा घोड़ा पर बाघ आ बाझ शोभायमान रहैक तथा तरुआरि एखनो शोणित मे रंगल रहैक । धोबिनिया खुशी सं राजकुमार के पजिया ओकरा चुम्मा लैत राजाक आदेश सुना देलकै । राजकुमार सिपाही सभक संग राजदरबार बिदा भेल ।

राजकुमार कें दरबार पहुँचिते झुट्ठा दावीदार सभ सहटि गेल । राजकुमार सं गप्प केलाक बाद राजा विश्वस्त भ गेलाह जे दैत्यक मारनहार ई युवक धोबिनियाक बहिनपुत हो वा नहि कोनो देशक राजकुमार थिक । ओ अपना वचनक अनुसार राजकुमार क संग अपन बेटी के बियाहि आधा राज दय देलथिन आ झुट्ठा दावीदार सभ कें पकड़ि फांसी देबाक आदेश सुना देलथिन । राजकुमार स्त्री आ राज पाबि चैन सं रहय लगलाह ।

एहिना मास ६ मास बीति गेल । आब राजकुमार जेना घर-आङनक वातावरण सं उबि गेलाह । एक दिन ओ राजाक समक्ष शिकार खेलाय जेबाक प्रस्ताव रखलनि । राजा एहि प्रस्ताव कें स्वीकार करैत सुझाव देलथिन ओ सभ दिस शिकार खेलथि, मुदा दक्षिण दिस भुलियो कें ने जाथि । राजकुमार सुझावक पालन करैक बात गछि तैयारी मे लागि गेलाह । राजा हुनका संग आर किछु चतुर शिकारी कें तैयार कए विदा केलक । संग मे गाजा-बाजा सेहो रहैक ।

राजकुमार भरिदिन घोड़ा दौड़बैत रहलाह परञ्च एकोटा शिकार हाथ नहि लगलनि अचरजक बात त ई जे जते जे शिकार उठैक से दक्षिण जंगल दिस पड़ा जाइ—आ ई अपन सन मुंह लेने घुरि आबथि । दिन लगचिआयल जाइत छलै । अन्ततः ई निर्णय लेलनि जे आब जे कोनो शिकार भेटतनि—से जतय किएक ने जाओ ई पछोर करताह आ बिनु मारने नहि फिरताह । संयोग सं एगो हरिण हिनका देखेलनि आ ओ पाछा धेलनि । हरिण सोझे दक्षिण दिस पड़ाएल आ इहो पछोर धेने पाछा गेलाह । आन सभ शिकारी कतय छुटि गेल से पतो ने लगलनि । ओमहर सूर्य लुकझुक करैत रहै आ तइखन हरिण हिनक आंखि सं अढ़ भगेलनि । एमहर पियासे कंठ सुखा रहल छलनि । किछु दूर पर एगो पोखरि सन बुझना गेलनि आ ई ओम्हरे घोड़ा दौड़लनि । ठीके एगो विशाल पोखरि रहैक मुदा चारू कात सं घेरल—मात्र एक टा घाट—जल तक जेबाक सीढ़ी । राजकुमार घोड़ा सं फनलाह आ खट-खट सिढ़ी उतरि जइखन आंजुर मे जल लेबय लगलाह तइखन दोसरकात बैसल एक रूपसी कुमारि कन्या पर नजरि पड़लनि जे हिनका हाथक इशारा सं जल नहि पीबाक लेल कहि रहल छलनि । राजकुमार कातर दृष्टिऐ ओकरा दिस तकैत अनुनय केलथिन—हे देवी ! पियासे हमर कंठ सुखा रहल-ए आ मन व्याकुल भेल अइ । जं शिघ्रे जल नहि पीबि सकलौं त प्राणे छुटि जायत । एहना अवस्था मे अहांक निषेध कि उचित भेल ?

युवती बाजलि—हे आगन्तुक, हम अहांक स्थिति बुझि रहल छी, परञ्च हमरा संग बाध्यता अइ ।

—जं कुनू असुविधा नहि हो त कि हम ओहि बाध्यताक सम्बन्ध जानि सकैत छी ? राजकुमार पुछलथिन ।

युवती बाजलि—जं अहां जानए चाहैत छी त सुनू । अहां देख रहल छी जे हम कुमारि छी आ हमर एकमात्र सम्बल ई पोखरि थिक । हम प्रण केने छी जे एहि पोखरिक उपयोग उएह व्यक्ति करताह जे हमरा संग विवाह करबाक लेल राजी होथि । आ हमर विवाह हुनके संग होएत जे हमरा पाशा खेलाय मे हरा देथि । कि अपने एहि लेल तैयार छी ?

राजकुमार प्यासें व्याकुल छलाह । ओ पाशा खेलै लेल तैयार भ गेलाह । युवती कहलकनि—आ जं अपने हारि जाइ तखन ?

तखन की ? हुनक प्रश्न भेलनि ।

तखन हम अहां कें, अहांक घोड़ा, बाघ आ बाझक संग पाथर बना एहि भीड़ पर

स्थापित क देब । बाजू तैयार छी ?—युवतीक प्रश्न छलैक ।

राजकुमार स्वीकृति दय पाशा खेलाय लेल बैसि गेलाह । पाशा तीन बेर चलल परञ्च तीनू खेप राजकुमार हारि गेलाह । युवती हुनका सभ कें पाथर बना देलकनि ।

ओमहर जं जं राति बीतै राजा-रानीक संगहि राजकुमारक पत्नी चिन्ता सं व्याकुल रहथि । महल मे कन्ना-रोहटि आरम्भ भ गेल आ भोर होइत-होइत सगरो हल्ला भ गेलैक जे राजाक जमाय जे काल्हि शिकार खेलाय गेलथिन से नहि फिरलथिन । भरिसक दक्षिण भर चल गेलथिन आ तैं फिरबाक आशाओ नहि ।

ओमहर जे मुंड सभ नवजीवन प्राप्त क कें अपन-अपन देश फिरल छल अपन-अपन जीबाक खिस्सा लोक के कहैक । ई बात पसरैत-पसरैत राजकुमारक माय-बापक कान तक गेलैक । ओकर छोटका भाइ के जखन ई रहस्यमय घटनाक पता चललैक त ओ माय-बाबू सं प्रस्ताव केलक—भाइ कें खोज मे जेबाक । पहिने त राजा-रानी आनाकानी केलथिन परञ्च शेष मे अनुमति देलथिन । छोट राजकुमार घोड़ा कसलक आ विदा भेल। एहि खेप ओ बर्ख दिनक बाट धेलक कारण ओकरा मन छलैक जे छ मासक बाट जेबाक गप्प कहलाक बादे महात्माजी ओकरा आपस द बदला मे जेठ भाइ कें ल गेलथिन । परञ्च बर्ख दिनक बाट ओकर सरैसा घोड़ा मात्र एक मास मे चलि गेलैक । मंदिर धरि जेबा मे असुविधा नहि भेलैक कारण ओ रास्ता मंदिरे तक जाइत रहैक । मुदा मंदिर ओकरा एकदम सुन्न-मशान बुझेलैक जेना कतेको बर्ख सं एहिठाम लोक नहि आयल हो । आ चारूकात घूरि-फिरि देखि लेलक आ जाइ बाटे आयल छल से बाट छोड़ि जे एकटा दोसर बाट रहैक ताइ बाटे घोड़ा हंकलक । जाइत-जाइत जं किछु दूर गेल तं जंगल सं एगो बाघक गर्जन सुनेलै । ओ सावधान भ तरुआरि धेलक ता बाघ बहुत लग आबि गेल रहैक। बाघ कहलकै—हे तेजस्वी युवक, हमरा लेल तरुआरिक प्रयोजन नहि । असल मे आइ सं कतेको दिन पहिने अहींसन एगो राजकुमार एहिना घोड़ा पर चढ़ल जाइत रहथि । हमर जेठ भाइ हुनका अपना संग ल जेबाक आग्रह केलकनि आ ओ लेने गेलथिन । तहिया सं हम असगरे एहिठाम ओकर फिरबाक प्रतीक्षा करैत छी से जं अहां उएह व्यक्ति छी त हमर भाइ कहां अइ ?

राजकुमार कहलथिन—हे वनराज हम त ओ व्यक्ति नहि छी—तखन भ सकैछ जे ओ हमर भाइ रहल होथि, जिनका खोज मे हम बहराएल छी । देखबा-सुनबा मे हम दुनू भाइ एके रंग छी । जौंआ हेबाक कारणे नामे लेल ओ जेठ आ हम छोट छी ।

बाघ बाजल—तखन हमर निवेदन जे हमरो अपना संग नेने चली । बेर विपत्ति मे हम अहांक मदतिए करब ।

राजकुमार कें मन मानि गेलनि आ ओकरा अपना संग ल लेलथिन । किछु दूर गेला पर एहिना एगो गाछक डारि सं बाझ झपट मारि आएल आ बाघे जकां पूर्ण बृतान्त कहि संग ल जेबाक आग्रह केलकनि । राजकुमार ओकरो संग ल बिदा भेलाह ।

एहिना घुमैत-फिरैत एक दिन राजकुमार ओही राजाक नगर मे पहुँचलाह जाइठाम

हुनक भाइक विवाह भेल रहनि । नगरक काते मे धोबिनियाक घर रहैक । दूरे सं देखि धोबिनिया हिनका चीन्हि गेल—माने जेठ राजकुमारक रूप मे । आङन मे पटिया ओछा हिनका सं हाल-समाचार आ निपत्ता हेबाक मादे पुछय लगलनि । ओमहर ओ अपन बेटा कें राजाक ओइठाम पठा देलक—शुभ समाचार देबाक लेल ।

धोबिनियाक मुंहे दैत्य मरबाक कथा आ राजाक बेटी सं विवाहक कथा तथा शिकार पर जेबाक कथा सभ जेना राजकुमारक लेल बुझोअलि होइन, मुदा एते त निस्तुकी भइए गेलनि जे हुनक भाइ एहि ठाम तक आयल छलथिन आ उएह राज कन्या सं विवाह केने रहथिन । परञ्च भाइ कें खोजबाक समस्या रहिए गेलनि । एही गुनधुन मे रहथि ता राजाक सिपाही सभ जुमि गेल आ हिनका ल गेलनि । राजा-रानी कनैत-कनैत बताह सन भेल । ई कतबो कहथिन जे हम नहि छी, ओ हमर भाइ छल हेताह—केओ माननिहारे नहि । एहिना भोजन-भात भेल आ हिनका सुतबाक व्यवस्था घरे मे भेलनि । राजकुमारी अबिते कानि-कानि नाना उलहन-उपराग देबय लगलथिन आ लाख बुझओलो पर नहि बुझलनि जे ई हुनक स्वामी नहि छनि । आकार-प्रकारक एहन सामन्जस्य दुनू भाइ मे रहनि जे हिनक बात पर ककरो विश्वास ने होइक । अन्ततः शरीर खरापक बहन्ना बना कते सप्पत द क राजकुमारी कें एक रातिक खातिर फराक सुतबाक आग्रह केलथिन जे वाध्य भ हुनका मानै पड़लनि ।

भोरे उठि राजकुमार शिकार पर जेबाक आज्ञा राजा सं मङलथिन । राजा कहलथिन जे एक खेप शिकार खेलाइ लेल गेलाह से त एते दिनक बाद फिरला ओ फेर आइए शिकार मे केना जेताह । मुदा राजकुमार तते ने हठ केलथिन जे वाध्य भ राजा कें आज्ञा देमय पड़लनि । जाइत-जाइत राजा कहलथिन—सभ दिस जइहथि मुदा दक्षिण दिस कोनो हालत मे नहि जाइथ । संगहि किछु चतुर शिकारी कें संग ल जाथि । मुदा राजकुमार असगरे जेबाक बात कहलथिन आ घोड़ा हकलनि ।

जंगल मे प्रवेश करैत ओ सोझे दक्षिण दिस घोड़ा दौड़लनि । ओ घोड़ा दौड़ने जाइथ मुदा जंगल के कोनो ओरे-छोड़ ने भेटलनि । आखिर हुनका पियास लगलनि आ से तते जोर सं जे मन मेछन्त भ गेलनि । ओ चारू भर जलकरक तलास मे नजरि खिड़ौलनि त किछु दूर पर एगो पोखरि देखाइ पड़लनि । घोड़ा के आर जोर सं हांकि पोखरि पर पहुँचलाह आ भीड़ पर घोड़ा लगा घाट पर उतरिते फेर ओही कुमारि कन्या पर नजरि पड़लनि । जल पीबाक शर्त ओ युवती ओहिना हिनको लग रखलनि आ इहो राजी होइत पाशा खेलाय लगलाह । तीन खेप युवती हारि गेल आ शर्तक अनुसार ई युवती कें पत्नी बना लेलथिन । युवती अपने हाथे हिनका पानि पियौलनि । त युवती सं कहलथिन—हे रूपसी ओना त हम अहांक सम्बन्ध मे किछु नहि जनैत छी परञ्च जखन पत्नी बनाइए लेल तखन जनबाक प्रयोजनो नहि । चलू आब हमरालोकनि एहिठाम सं चली । दुनू गोटे विदा भेलाह त युवतीक नजरि ओइ चारू पाथरक ढेरी पर अंटकि गेलैक । राजकुमार लक्ष्य करैत कहलथिन किछु ताकि रहल छी की ?

युवती बाजलि—हे पतिदेव अहां सं लाथ की ? किछु दिन पहिने एनमेन अहीं सन एगो लोक एहिठाम आयल छल—जहिना अहां पियासे तंबघल रही तहिना ओहो छल। अहींसन घोड़ा पर सवार आ ओकरो संग एगो बाघ आ एगो बाझ रहैक। जं सत्त पूछी त अहां के देखिते हम पहिने त भ्रम मे पड़ि गेल रही। त से कहैत छी जे बेचारा तीन खेप पाशा हारि गेल आ शर्तानुसार हम ओकरा लोकनि कें पाथर बना देलिऐक। ई जे देखैत छी से उएह चारू पाथर थिक।

एतबा सुनिते त राजकुमार सन्न रहि गेल। ओ मने मन बिचारलक जे हो ने हो ओ ओकर जेठ भाइ छल होएतैक जकरा खोज मे ओ घर सं बहार भेल अइ आ ताकि क संग ल जेबाक बचन मां-बाबू कें देने छैक। राजकुमार कें एना चिन्तामग्न देखि युवती टोकलकैक—हठात् लगैछ जेना अहां कोनो चिन्ता मे डूबि गेल होइ। कि हम नहि जानि सकैत छी ?

राजकुमार बाजल—जखन अहां हमर स्त्री छी त निश्चिते अहां कें सभ जनबाक अधिकार अइ आ हमरो कर्त्तव्य जे किछु नुकाबी नहि किन्तु अहां कें जनने कि समस्याक समाधान भ सकैछ ?

युवती बाजलि—बिनु बुझने हम कहबे की करी तखन एतेधरि अबस्ये जे हमरा जे जानो देने अहांक समस्याक समाधान होएत त हम हंसैत-हंसैत द देब। एक नारी लेल एहि सं गर्वक बात की होएतैक जे ओ अपन स्वामीक लेल अपन जान अर्पित क देलक।

राजकुमार बाजल—हे प्रिये जं अहांक कथा सत्य त एहि चारू पाथर कें अहां पुनः जीवित बना दियौक कारण हमरा पूरा विश्वास भ रहलए जे ई हमरे जेठ भाइ छथि।

युवती बाजलि—एहि छोट सन बात लेल अहां एते चिन्तित छलौं। हे लिअ हम एइखन हिनका लोकनि कें जीवित क दैत छी।

एतबा कहि ओ पोखरि सं चुरुक मे पानि ल मंत्र पढ़ि पाथर पर छीटि देलकैक आ चारू जीवित भ गेल। दुनू भाइ सोझा-सोझी होइतहि चिन्हबा मे विलम्ब नहि भेलैक। एक दोसर कें भरि पांज क धेलनि एमहर पुनः बाघ आ दुनू बाझ सेहो धड़ा-पकड़ी करय लागल।

जेठजन छोटजन सं गाम-घरक समाचारक संगहि एहिठाम तक केना पहुँचल से जिज्ञासा केलकैक आ ओहो संक्षेप मे सभ कहि सुनलकै। अन्त मे ओ इहो कहलकै जे केना ओ एइ नगर मे पयर दैते राजाक जमाय बनि गेल आ लाख बुझओलो पर लोक विश्वास नहि केलकैक। आन त आन राजा-रानी धरि ओकरा अपन जमाय बुझलथिन आ बलजोरी ओकरा अन्दर महल मे सुताओल गेलैक राजकन्याक संग.........

अन्दर महल मे सुतबाक बात सुनिते जेठजन के संदेह भेलनि जे हो ने हो ई हमरा पत्नीक संग अनुचित व्यवहार केने होएत। ओ बिनु किछु पुछने तरुआरि खीचि छोटका कें दू टूक करैत ओकरा स्त्री, घोड़ा, बाघ आ बाझ सभ कें काटि देलनि आ अपने घोड़ा पर सवार भय विदा भेलाह। ओ जखन राजमहल पहुँचलाह त सांझ पड़ि गेल छलैक। अबिते

राजा कहलथिन हम त फेर चिन्ता मे छलहुं जे सांझ पड़ल जाइत छइ आ अहां फिरलहुँ नहि।

भोजन-भात भेलाक बाद राजकुमार अपन सुतबाक घर मे पहुँचलाह। पत्नी कने देरी सं एलथिन आ जात केबार बन्द करथिन तात ई पाछा सं जा हुनका भरिपांज क ध लेलथिन। पत्नी व्यंग्य करैत कहलथिन कालि राति जड़ैया धेने छल। हमरा त होइत छल जे बौक भ गेलहुँ—एको बेर हंओ हुं त लोक बजै छइ कि ने। एते दिन पर फिरलौं आ अहां के हमर मुंहो देखबाक इच्छा नहि भेल परञ्च हमरो त अहां अपन मुंह देखय दितौं। एहन कठोर केना बनि गेल रहिए।

राजकुमार पत्नी कें छोड़ि धम्म सं पलंग पर पड़ि रहलाह। हुनका आंखि सं नोर बहय लगलनि आ ओ हिचुक-हिचुक कानय लगलाह। हठात हुनकर परिवर्तन देखि पत्नी आर घबड़ा गेलथिन। ओ अनुनय करय लगलथिन जे आखिर हुनका सं कोन एहन गलती भ गेलनि आ जं भेवे केलनि तं स्वामी कें अधिकार छनि पत्नी कें दंड देबाक मुदा हुनक ई स्थिति ओ नहि देखि सकैत छथि।

राजकुमार बजलाह अहांक कोनो दोष नहि प्रिय दोष हमर कपारक थिक। आइ एक युगक बाद अपन सहोदर भेटल—ओ सहोदर जे हमरा लेल रने-बने बौआइत एहिठाम आएल, अपन जानक बाजी लगा कें हमर जान बचओलक .... तकरा हम ....

पत्नी कें किछु बुझे मे ने अबनि व्याकुलताक संग पुछलथिन—ई की सभ बाजि रहल छी अहां ? कहां छथि अहांक भाइ........ की भेलनि हुनका ....।

राजकुमार आर जोर सं कानय लगलाह—आब ओ एहि दुनिया मे नहि अइ, हम अपना हाथें ओकर हत्या केने छी .... ओकर उपकारक बदला, सरिपहु हम केहन नीच छी जे अपना सहोदरो कें विश्वास नहि क सकलहुँ।

पत्नी हुनक पएर पकड़ैत कहलथिन—दोहाइ अहांक, हमरा किछु ने बुझाइ पड़ि रहल ए। हमरा साफ-साफ कहू ने त हम बताहि भ जाएब।

राजकुमार ओहिना हिचुकैत बजलाह—काल्हि हम नहि रही प्रिये........ कालि जे आयल छल से छल हमर छोट भाइ। हम त जाइ दिन शिकार पर गेलौं बाबूजीक मना केलाक पश्चातो दक्षिण दिस चल गेलौं आ तें आइ धरि पाथर बनल पोखरिक कात मे पड़ल छलौं। जखन छोट भाइ पहुँचल त हमरा पुनः जीवित कएलक मुदा ताइ भाइ पर अविश्वास कए हम ओकर हत्या कएल..........

राजकुमार जखन सविस्तार सभ कथा पत्नी कें कहलथिन त पत्नी सेहो हुनक छोट मन होएबाक आलोचना केलथिन। पश्चात् उएह मन पाड़ैत कहलथिन—अहां कहने रही ने जे भगवती बरदान देने छथि जे कोनो गाढ़ विपत्ति मे स्मरण केने ओ उपस्थित होएतीह। तखन चिन्ता कथिक ? राति प्रायः शेष छैक। घोड़ा तैयार करू—सूर्योदय सं पहिने हमरा लोकनि पोखरि पर पहुँचि जाइ।

सजकुमार धरफरा कें उठलाह । घोड़ा कसलनि आ संग लेलनि बाघ आ बाझ कें। राजकुमारी सेहो अपन घोड़ा कसलनि आ सभ सं नजर बचा राजमहल सं बहार भ गेलाह। पोखरि पर पहुँचैत छथि त पूब मे ललिमा द देने रहैक । लहास ओहिना राखल रहैक । घोड़ा सं उतरि राजकुमार ध्यानस्थ भेलाह आ प्रार्थना केलनि—हे भगवती आइ हम विपत्ति मे छी, अहां छोड़ि दोसर के उबाड़त । शिघ्र दर्शन दिअ आ अपन वचनक पालन करू।

एगो अद्‌भुत शब्द भेलैक आ चारुकात अन्हार सघन भ गेलैक । राजकुमार सुनलक जे भगवती कहि रहल छथिन—कह हमरा की कहैत छैं ?

राजकुमार कल जोड़ि बाजल मां, अहां त सभ जनिते छी तखन फेर पुछैत छी । हमर भाइ, भावहु, ओकर घोड़ा, बाघ, बाझ सभ कें जीवन दान द दियौक । एखन एहि सं बेसी किछु ने चाही ।

जेहन तोहर इच्छा—एतबा शब्दक संगहि दूर एगो भयंकर शब्द भेलैक आ भगवती अन्तर्ध्यान भ गेलीह । इजोत पसरि गेलैक आ छोट राजकुमार राम-राम करैत उठि बैसल। घोड़ा, बाघ आ बाझ सेहो उठि कें ठाढ़ भ गेलैक ।

जेठजन छोटजन के भरि पांज पकड़ि कानैत बाजल—भाइ हमरा क्षमा क दे—हम जे तोरा पर विश्वास नहि कए महान पाप कएल से त क्षमा योग्य नहि किन्तु तों हमर सहोदर छैं.........

छोटका बिहुंसैत बाजल भाइ बताह भेलौंहें । गलती त लोक सं होइते छैक । देखू ने, हमही केना भरि राति भौजिक कोठली मे............की भौजी हमरा माफ नहि करती ?

राजकुमारी बिहुँसैत आ लजाइत सन कहलथिन—भरि राइत भौजीक कोठली मे नहि रहने एहन उद्‌वेग लित जे पराते जोड़ी ताकए पड़ल । भौजी कें त एकटा गीतो गेबाक सेहन्ता रहिए गेलनि । बाद मे ने पता चलत । एखन बिदा त होइ जाउ । कते दिन चढ़लै मां-बाबू चिन्ता मे हेथिन ।

सभ अपन-अपन घोड़ा कसलनि—दुनू दियादिनी एक घोड़ा पर बैसि विदा भेली। एमहर नगर मे शोर भ गेलैक जे राजाक बेटी-जमाय राति निपत्ता भ गेलैक । परञ्च हिनका लोकनि कें पहुँचिते आ अपन बेटीक मुंहें सब बात सुनिते राजा उत्सवक तैयारी मे लागि गेलाह । राजकुमारक गामपर समदिया पठाओल गेलैक । ओहो राजा बरियाती साजि एलाह आ दुनू बेटा-पुतोहु आनन्दमग्न भए अपन राज फिरलाह ।

ꕥꕥꕥ

एकटा गरीब बाभन रहथि

एकटा गाम मे एगो गरीब बाभन रहथि । जथा-जालक नाम पर मात्र कट्ठा भरि जमीन रहनि जकरा जोति-कोड़ि जे उपजाबारी होइन—ताही सं स्त्री आ बेटाक संग कोनहुना गुजर करथि । घरो एकेटा रहनि—नाड़-पात सं छाड़ल । ओही मे पाछा सं एकचारी बहार केने रहथि, आधा मे एगो खाट रहनि आ आधा कें घेरि क बाछी बान्हथि ।

बाभन गरीब त रहथि मुदा रहथि बड़ स्वाभिमानी आ तेहने धार्मिक स्वभावक । ओ एक सांझ सहि भनहि जाथि किन्तु ककरो आगा हाथ नहि पसारितथि । तहिना ओ दिन-राति अपन खेती-बारी किंवा पूजा-पाठ मे लागल रहितथि । बिनु बजओने कतहु गेनाइ-एनाइ वा ककरो अदखोइ-बदखोइ केनाइ हुनका एकोरत्ती पसिन्न नहि छलनि ।

एक खेप एहन भेलै जे विष्णु आ महादेव मे झगड़ा बाझि गेल । विष्णु कहथिन जे हमर भक्त पैघ त महादेव कहथिन जे हमर । अन्त मे निर्णय भेल जे एकर तसफिया कइए लेल जाय । दुनू गोटाक भक्त कें परीक्षा ल कें देखि लेल जाय ।

विष्णु आ महादेव दुनू गोटे बूढ़ बाभनक रूप धारण कए विदा भ गेलाह । लगभग दोसर सांझक समय दुनू गोटे एगो गाम मे पहुँचलाह । काते मे एगो बड़ धनी-मानी लोकक घर छलै । कोठे-कोठामय । दरबज्जा पर बखाड़ी पतियानी लागल । एक कात मे विशाल बरदघरा । दरबज्जे पर इनार आ पोखरि । पोखरिक भीड़ पर विशाल महादेवक मंदिर । लग जाइते महादेव कहलथिन—ई निश्चिते हमर भक्तक घर थिक । चलू परीक्षा भइए जाय । विष्णु अपन स्वीकृति देलथिन । आगा महादेव पाछा विष्णु चललाह । दलानक ओलती लग जइखन जाथि—दरबज्जा पर बैसल एगो मोट-डांट त्रिपुंडधारी लोक टोकलकनि—के थिकहुँ अपने लोकनि ।

जवाब देलथिन विष्णु—हमरा लोकनि बटोही छी । राति-बीच एतय विश्राम कए भोरे चल जायब ।

—किन्तु एहिठाम तं असुविधा छैक । कोनो दोसर जगह देखल जाओ । घरबैया कहलथिन ।

विष्णु बजलाह—हमरा लोकनि भोजन नहि करब । चूरा चिन्नी संगहि अछि सएह खा लेब । मात्र राति-बीच विश्राम करबाक अछि, ताइ निमित्त एइ सं विलक्षण स्थान आर कतय भेढ्त ?

घरबैया तमसाइत कहलथिन—एक बेर कहल ने जे एहिठाम असुविधा छैक, दोसर जगह देखल जाओ ।

विष्णु महादेव दिस ताकि कने बिहुँसैत दलान पर सं उठबाक क्रम केलनि । घरबैया चिकरि उठलाह—हमर कथा कान धरि नहि पहुँचल की ? फेर ओ खबास कें शोर पारलनि—खबास ! हिनका लोकनि कें धक्का दय बहार कर त । पता ने के कहां सं चोर-बदमास जुमि जाइत अछि ।

एहि खेप महादेव बजलाह—श्रीमान, हमरा लोकनि चोर-बदमाश नहि छी । बटोही छी । राति-बीच विश्रामक याचना कएल । से जं अपने सन श्रीसम्पन्न लोक सं पार नहि लागत त हमरा लोकनि अपनहि जा रहल छी, खबासक प्रयोजन नहि ।

एतबा कहि दुनू आदमी घुरि गेलाह ।

गामक बीचोबाच एगो रस्ता छलैक । दुनू आदमी ओही रास्ता धय बिदा भेलाह । एहि बेर आगा-आगा विष्णु आ पाछा महादेव । गामक अन्त मे ओही गरीब बाभनक घर छलनि । विष्णु ठमकलाह । महादेव सं कहलथिन—भाइ, बुझि पड़ैया जे ई हमरहि भक्तक घर हो । एहिठाम रहबा मे कोनो असुविधा ?

महादेव कहलथिन—सुविधा-असुविधा त बादक गप्प भेल । पहिने घरबैए रहए देथि तखन ने ?

—चलू अजमाइए लेल जाय । ई कहि विष्णु आगू बढ़ि हाक देलथिन—घरबैया छी यो !! यो घरबैया !!

आङन सं एक लोटा जल हाथ मे नेने बाभन बहार भेलाह । हिनका लोकनि कें देखिते जेना हुनक आत्मा प्रसन्न भ गेल होनि । बजलाह—एतेकाल अपने लोकनि ठाढ़ छी ! आउ-आउ, बैसू नहि, पहिने पएर धो लेल जाओ ।

महादेव चुप्पे छलाह । विष्णु पुछलथिन—हमरा लोकनि के छी कतय एलहुँ से सभ बिनु जननहि.........

अपने लोकनि अतिथि छी आ अतिथि भगवानक प्रतिरूप होइ छथि । आइ हमर अहो भाग्य जे एइ टुटली मड़ैया मे अपने लोकनिक पदार्पण भेल । एहि सं बेसी जनबाक प्रयोजने की ? एतबा कहि ओ अपनहि हाथें दुनू गोटेक पएर धो खाट पर बैसा देलथिन आ अपने कल जोड़ने सोझा मे ठाढ़ भ गेलाह ।

विष्णु कहलथिन—हमरा लोकनि बटोही छी, राति-बीच आराम करब आ भोरे चल जायब । भोजनक सामग्री चूरा चिन्नी सेहो संगहि अछि—तें ओकर आयोजन अपने नहि करी ।

बाभन बजलाह—से कोना हेतैक । गरीबक घर मे आर किछु नहि त कन-साग त भेटबे करत । एक सांझ तकलिफो सहि हमर घर-आङन के पवित्र त करहि पड़त ।

एहि तरहें बड़ हठ केला पर ओ लोकनि भोजन केनाइ गछलथिन । बाभन ओरियान भेलै की नहि से देखबाक लेल आङन गेलाह ता बाछी धरफरा क खसलनि । विष्णु हाक देलथिन—अओ घरबैया ! भरिसक बाछी ओझरा गेल । बाभन दौड़ि कें जुमलाह त देखैत छथि जे बाछी ठीके ओझरा क खसल आ जीह बहार केने । ओ झट द मुन्हीं छिटका देलथिन आ तैखन बाछी सेहो आंखि उनटा देलक । माथ झुकओने घर सं बहार भेलाह त विष्णु पुछलथिन—की भेलैक ?

किछु नहि जौड़ी मे पएर बझि गेल छलैक तें तरमराएल छलैक । ठीक भ गेलै । ई कहि ओ फेर आङन गेलाह । पत्नी ठांओ-पीढ़ी केने बैसल छलथिन । पुछला पर पता लगलनि बच्चा कखन ने बारी सं केराक पात आनै गेलाह से नहि घुरलाह-ए । बाभन लपकि क बारी पहुँचलाह त देखैत छथि जे हांसू हाथहि, बेटा बेहोश भेल पड़ल छनि ओ मुंह सं लेड़-पोटा बहि रहल छइ । कोनो अजोध विषधर ध लेने छलै—से कहैत ओ आंखि उनटा देलक । बेचारे बाभनक करेज कांपि गेलनि अपन एकमात्र सन्तानक अकाल मृत्यु अपना आंखिक सोझा देखैत । किन्तु ओ तैयो साहस केलनि । ओकरा हाथ सं हांसू लय दू टा अगहरी काटि आङन एलाह । ई सम्बाद सुनैत पत्नीक अवस्था त एहन जे काटू त शोणित नहि । ओ बफारि काटय लगलीह ता झट दय बेचारे हुनक मुंह जंतैत कहलथिन—केहन बताहि छी । दुआरि पर दूटा अभ्यागत छथि, जं बुझि जेताह त भोजनो ने करताह । जकरा जेबाक छलै से त चलिए गेल । ओ जं हमरा लोकनिक बेटा रहैत त रहबे ने करैत । ई सभ जांच छिऐ—से नञि बुझैत छिऐ ? कहबीयो छइ जे धर्म करैत जे होअए हानि, तैयो ने छोड़ी धर्मक बानि । धर्म मे जाचना होइते छइ । होउ, जल्दी संचार लगाउ, राति बड़ भेलै । ओहो लोकनि विश्राम करता । हम बजओने अबैत छियनि । ई कहि ओ आङन सं बहार भ गेलाह ।

अतिथि लोकनि कें बजा भोजन करा हाथ धोआ कें खाट पर बैसा देलथिन आ अपने सुपारी लेल आङन गेलाह । एक त ओहिना पएर तलमलाइत छलनि, मुदा घर ढुकलापर देखैत छथि पत्नी हाथ मे सरओता-सुपारी लेने निर्विकार बैसल छथिन—कोठी मे ओङठल त तामसो भेलनि । —कि सुपारी भाङल नहि भेल-ए ?

पत्नी कें तैयो चुप देखि—अहीं के कहैत छी—कहैत देह छुबिते छथिन कि ओ टगि गेलथिन । बेचारे के बुझबा मे भाङठ नहि रहलनि जे जांचक पहरा थिक । ओ पत्नीक

हाथ सं सरओता सुपारी ल भाङि क अतिथि के देलथिन आ मन मारि ओहिठाम बैसि रहलाह । अभ्यागत लोकनि बेर-बेर कहथिन जे आब अहुं जा क भोजन क लिअ त ओ कहथिन जे अपने लोकनि विश्राम करियौ—तखन हम भोजन करब । बड़ हठ केला पर बेचारे ओहिठाम सं उठि कोनटा मे आबि बैसि कानय लगलाह । राति शेष प्रायः भ गेलैक आ फरीछ सन होइतहि अभ्यागत लोकनि बिदा भेलाह—पाछा लागल बाभन सेहो । किछु दूर गेला पर अभ्यागत लोकनि हिनका घुरय लेल कहलथिन त ई कने आर अरिआति देबाक बात कहि संग धेने रहलाह । एवम् प्रकारे अभ्यागत लोकनि बेर-बेर घुरबा लेल कहैत रहलथिन आ ई आर कने दूर, आर कने दूर कहैत रहलथिन । बाद मे ओ लोकनि तमसाइयो गेलथिन आ उचित-अनुचित सेहो कहलथिन—मुदा बाभन पछोड़ धेनहि चल गेलाह ।

जाइत-जाइत बेचारे बाभन कें पतो ने लगलनि जे ओ कोन बाटे एलाह आ कतय पहुँचि गेलाह । हुनकर भक्क तखन टुटलनि जखन ओ एकटा भव्य महल मे अपना कें ठाढ़ पओलनि । सामने एक पलंग पर स्त्री आ दोसर पर बेटा बैसल रहथिन—हिनका देखिते उठि कें ठाढ़ भ गेलथिन । बेटा दौड़ि कें लग आबि कहलथिन—बाबूजी ! अहां के एत्ते देरी कतय भेल ? हम सभ कतेकाल स ने बाटा-बाटी तकैत छी । ता कतौ सं होकरैत बाछी दौड़ल एलनि आ सिनेह सं ढाही लेमय लगलनि । बेचारे बाभन कें आखि सं नोर बहए लगलनि, ओना से आनन्दक नोर छलनि ।

स्वर्गक दोसर महल मे बैसल महादेव आ विष्णु । महादेव कहैत छलथिन—सरिपहुँ विष्णु, अहीं जितलहुँ—हमहीं हारलहुँ । अहांक भक्त सरिपहुँ महान अइ ।



महाकाली



लंका विजयक उपरांत अपन वनबासक अवधि शेष कए राम जानकी आ लक्ष्मणक संग अयोध्या फिरलाह । कतेको दिन तक हुनका लोकनिक सकुशल फिरबाक आनन्दमे उत्सव चलैत रहल । जखन ई क्रम शेष भेलैक त किछु दरबारी सभ प्रस्ताव केलनि जे रावण सन पराक्रमी के जय करबाक उपलक्ष्य मे महाराज रामक बांहिक पूजा हेबाक चाही। विरोधक प्रश्ने ने उठि सकैत छलै । पूजनोत्सवक तैयारी बड़ जोर सोर सं चलय लागल । सीता कें सेहो एकर भनकी लगलनि । ओ एकदिन राम सं पुछि देलथिन जे फेर कोन उत्सवक आयोजन भ रहल छइ ?

महाराज राम अचरज सं प्रतिप्रश्न केलथिन—अहां कें नञि पता ?

सीता व्यंग्य सं बिहुँसैत बजली—जखन केओ कहबे ने केलनि त पता रहत कोना ? असल मे तकर प्रयोजने अहां लोकनि नञि बुझैत छी । स्त्री त मात्र आदेश पालनक निमित्त होइत अइ । ओकरो जे आत्मा होइ छइ, ह्रदय होइ छइ, से सोचबाक पलखतिए अहां लोकनि के कहां अइ ।

राम बजलाह—हमरा खेद अइ जे अहां सं विचार नञि लेल । प्रजागणक विचार छनि जे महापराक्रमी राजा रावण के जय करबाक उपलक्ष्य मे हमर बांहिक पूजा हो । प्रजाक विचार मे हम तेना भ कें बहि गेलहुँ जे जनिका द्वारा पूजा होएत तिनको मत लेनाइ बिसरि गेलहुँ । परञ्च आब जाधरि अहां अपन स्वीकृति नञि देब—ई पूजा नञि होएत ।

सीता कहलथिन—हम स्वीकृति नञि देब से अहां किएक सोचि लेलहुँ ? काजो बहुत अगुआ गेल-ए ।

राम—से जते किएक ने अगुआ जाओ तकर चिंता हमरा नञि ।

सीता—अहां हमर विचार पुछै छी अथवा स्वीकृति चाहै छी ?

राम—निश्चिते विचार पुछै छी । जं अहांक विचारें ई काज उचित हो तैखन स्वीकृति दिय ।

सीता गंभीर स्वर मे कहलथिन—अहां के पता अइ जे रावणो सं पैघ पराक्रमी आर एगो रावण अइ । जाइ देशक महिलागण कौतुकवश रावण के पकड़ि ओकरा दशो माथ पर दीप जरओने छलि आ बड़ अनुनय-विनय केलाक बादे ओकरा मुक्ति भेटल छलैक । ताही पताल लोकक राजा सहस्त्रबाहु रावण अखनो जीबैए । राम गंभीर भ गेलाह आ घर सं चुप्पे बहरा गेलाह । प्रात भेने भरि नगर मे डिगडिगिया पीटबा देल गेलै जे जाधरि महाराज राम सहस्त्रबाहु रावण पर विजय नञि पओताह ता धरि ई उत्सव स्थगित रहत ।

जखन लक्ष्मण कें ई बात पता चललनि त ओ फनकि कें राम लग पहुँचला आ अर्जी केलथिन—भाइ हमरा आज्ञा देल जाओ हम आइए सांझधरि ओकरा परास्त कए बन्दी बना आपस आबि जायब । उत्सवक आयोजन स्थगित नञि हेबाक चाही ।

महाराज राम बिहुँसैत कहलथिन—लखन ई अहांक शक्ति सं बाहरक बात थिक। हमरो शक्ति सं बाहरक । एहि निमित्त हमरा दुनू भाइक संग बैदेहीक रहनाइ परमावश्यक अइ । जाउ हनुमान कें कहियनु रथ तैयार करथि आ बैदेही कें सेहो तैयार हेबाक निवेदन करबनि । हमरा लोकनि आर देरी नञि कय शिघ्रे विदा होइ ।

लक्ष्मण रामक मुंह तकैत चुपचाप विदा भेलाह । कनिञे कालक बाद रथ तैयार भेल । राम बाम दिस जानकी आ दहिना मे लक्ष्मण बैसला । सारथी हनुमान ।

जखन रथ सहस्त्रबांहु रावणक राज्यक सीमा मे पहुँचलै त गुप्तचर द्वारा ओकरा खबरि लगलैक । ओ ओहिठाम सं तीर छोड़लक आ समदिया द्वारा समाद लेलक त पता चललैक जे सारथी बानर निपत्ता भ गेलैक । रावणक बाण सं हनुमान सात समुद्र पार फेका गेलाह । ओ दोसर वाण छोड़लक त लक्ष्मण के सएह गति । तेसर मे राम मुर्छित भय रथ पर टगि गेलाह । तकर बाद ओ कतेको वाण छोड़लक परञ्च सभ व्यर्थ गेलैक । सीता विकारशून्य जकां रथ पर बैसल छलीह । रावण के जखन सभ पता चललैक त ओ ध्यानस्थ भेल । ओकरा बुझबा मे देरी नहि लगलैक ले रथ पर बैसलि महिला दोसर केओ नञि आदि शक्ति थिकीह । शक्ति उपासक हेबाक कारणे ओ मनेमन हुनका नमस्कार केलक आ अपन भूलक लेल क्षमा याचना केलक ।

एमहर देवलोक मे खलबली मचि गेल आ सब देवाधिदेव महादेवक ओतय पहुँचलाह जे कोनो द्वारा धराउ ने त अनर्थ भ जायत । देवगणक आकुलता देखि महादेव प्रस्थान केलनि । ओ सीताक समीप अपन रूप बदलि पहुँचलाह आ हुनका खिसिएबाक हेतु नाना

तरहक व्यंग्य बाण छोड़य लगलाह—धन्य छी हे देवी, स्वामी मुइल पड़ल, लक्ष्मण सन देयोर मरल, हनूमान सन सेवक मरल जकरा अहां अजर-अमर हेबाक वरदान देने छलियनि तैयो अहां लेखे धन सन । ई त अहीं सक हो । मानव रूप मे आबि मानव के कलंकित किएक करैत छी ।

एवं प्रकारे बहुत कहलाक बाद सीताक ध्यान भंग भेलनि । क्रोध मे अबिते हुनक शरीर कारी भ गेलनि ओ खोपा बान्हल केश खुजि फहराय लगलनि । ओ रथ सं उतरि सोझे बिदा भेली आ जे सामने मे पड़नि ताहि मे बहुतो त हुनक भयंकर रूप देखि आतंके सं प्राण त्यागि देलक । एक राक्षस हुनका पर प्रहार केलकनि ओ तकर हाथ पकड़ि कत्ता छीन लेलथिन आ पैर स मरदि आगा बढ़ि गेलीह । ओ कत्ता सं सभक माथ छोपैत अगुआइत रहली आ जखन सहस्त्रबांहु रावणक नगर शून्य भ गेल त दोसर दिस घुरली । सीताक रणचंडी रूप सं देवगण घबरेला । ओ सोचलनि एना मे त धरती लोक विहीन भ जाएत । ओ सभ फेर महादेव लग पहुँचि अनुनय-विनय केलनि । अढरन-ढरन महादेव एहिबेर आबि बाट मे पड़ि रहलाह । उर्द्धमुखी कालीक नजरि नञि पड़लनि आ हुनक पएर महादेवक छाती पर पड़लनि । ओ कत्ता सबधानि नीचा तकलनि त महादेव कें चीन्हि लाजे जी कूचि लेलनि आ पुनः अपन पूर्वक रूप मे आबि गेलीह ।

सीताक इएह रूप महाकालीक रूप मे सर्वत्र पूजित होइ-ए । सीता आपस रथ पर एलीह आ अपन कनगुरिया आंगुर चीरि अमृतपान करा राम कें चेतन अवस्था मे अनलनि। फेर लक्ष्मण आ हनुमान के खोजि जीवित केलनि आ सभ अयोध्या फिरलाह । रामक बांहिपूजाक बदला सीताक बांहिपूजाक प्रस्ताव उठल परञ्च मैथिली तकरा अस्वीकार केलनि । ताहि दिन सं सीताराम माने राम सं पहिने सीताक नामक परिपाटी चलय लागल।

ꣻꣻꣻ

पतिबरता



कोनो एक नग्र मे एगो राजा रहथि । ओ जेहने एकबाली तेहने अत्याचारी रहथि । राजाक खजाना मे त सोना-रूपाक अमार लागल छल मुदा प्रजाक जिनगी मे अभावे-अभाव । लोक दिन मे खाए त रातिक चिन्ता आ राति खेनाइ भेटि जाइ त फेर परातक चिन्ता । तैयो कतौ केओ किछु बजैत नहि । के जानि राजाक कानधरि बात चल जाइ आ से भेने बाले-बच्चे भाकसी । राजाबाली बात । ओ सभ त ओहुना अंशी होइत अछि ।

राजा सेहो अपन प्रजाक अवस्था सं परिचित छला । मुदा अपन सुरक्षा आ राज मे शान्ति लेल दमन-शोषणे के असल हथियार मानैत छला । भेष बदलि-बदलि क ओ नगर मे घुरैत चर-चित लैत रहैत छलाह जाइ सं कतौ कोनो तरहक विद्रोह नहि हो । एहिना एक दिन घुरैत काल नगरक कात मे एगो खोपरी लग ओ ठमकि गेला । हुनका जेना टकटकी लागि गेल होइन । असल मे ओइ खोपरीक कात मे करचीक टाट पर पसारल नुआ समटैत फाटल-चिटल वस्त्र मे अर्द्धनग्न सन ओहि मौगी पर जेना हिनक नजरि अंटकि गेल होइन। मौगी छलहो अपूर्व सुन्नरि । जेना इनरक परी हो । मौगी राजा पर नजरि पड़िते लजाएल नुआ सम्हारैत पड़ाएल ।

राजा राजमहल पहुंचिते अपन दू गोट सिपाही के बजओलनि आ ओंकरा सभ के ओइ मौगी कें पकरि आनैक आदेश देलथिन । हुकुम तामिल करै लेल दुनू सिपाही बेतहास दौड़ल ।

राजाक सिपाही के देखिते ओइ मौगी के त जेना थरथरी ध लेलकै । तैयो ओ अपना के सम्हारैत बाजलि—की बात भैया ? एखन अहां लोकनि एहि ठाम !

मौगीक मुंह सं भैया सुनि दुनू सिपाही कने नरम भेल । मुदा छल त सिपाहिए । राजाक हुकुम त तामिल करबेक छलै, ने त अपने जानक खतरा । पहिल सिपाही मौगी के

राजाक हुकुम सुना देलकै आ कहलकै जे ओ कलबल ओकरा दुनूक संग महल चलै ताही मे नीक ।

मौगी कहलकै—भैया, जेबा लेल त हमरा जाइए पड़त, मुदा कने सोचू त । की एहि मे राजा साहेबक बदनामी नहि होएतनि । ताइ सं त दिन-देखार ओ पालकी अथवा महफे पठा दितथि आ हम चल जइतौं । लोको नहि जनैत आ राजा साहेबक इच्छोक पूर्ति भ जइतनि । तें हमर प्रार्थना जे अहां लोकनि जा क राजा साहेब के ई बात कहियनु । नहि मानता तखन त हमरा जाइए पड़त । हम त कतौ पड़ैल नहि जाइत छी ।

सिपाही सब के मन मानि गेलै आ ओ सब राजमहल घुरि राजा साहेब के सब बात कहलकनि । एकरा सबहक संग मौगी के नहि देखि तामसे लाल भेल राजा कें ई बात बेजाय नहि लगलनि । ओ राति भरि करोट फेरैत भोरक बाट ताकय लगला ।

भोर होइते राजा साहेब अपन बुढ़ आ बुद्धिमान मंत्री के पालकी ल ओइ मौगी के आनै लेल कहलथिन । ओ इहो कहलथिन जे ओइ मौगीक संग कोनो तरहक अन्याय नहि हेतै । ओकरा ओ अपन पटरानी बना क रखता ।

मंत्री जी पालकीक संग ओइ मौगीक खोपरी लग जुमला । ओ एहि लेल जेना तैयारे छल । आ हंसैत मंत्रीजीक स्वागत केलक आ मंत्रीजी सं राजाक बात सुनलाक बाद बाजलि—मंत्रीजी अपने हमर पिताक समान छी । अपनेक बुद्धि आ धर्म-कर्मक प्रशंसा सगरो होइत अछि । तें अपने सं हमर निवेदन जे हमर बात ध्यान सं सुनल जाय आ फेर उचित निर्णय लेल जाय । अपने के बुझल होएत जें हम बिबाहिता छी आ हमर पति दुखित छथि । हमर जीवनक व्रत अछि जे भोरे नहा-सोना के भगवानक पूजा करी, हुनका भोग लगाबी आ हुनक प्रसाद लेलाक बादे घर सं बहराइ । से एते दिनक ब्रत एक दिन लेल तोड़ि लेब की उचित होएत ? दोसर अपने कहलए जे राजा साहेब हमरा पटरानी बना क रखता। राजा साहेब फूसि त नहि कहने होएता । किन्तु आन रानी सब की हमरा मानती ? हुनका लोकनि कें राजा साहेब स्वयं बियाहि अनने छथिन आ हम अपनेक संग जाएब, अपन पिताक संग ।

एतबा सुनिते मंत्री महोदय पालकी कहार छोड़ि घुरि गेला । ओ राजा साहेब के नीक जकां सब बात कहलथिन, कने अपनो दिस सं बना सोना क । राजा सोचलनि जे सत्ते त, ओ मौगी रूपे नहि बुद्धियो सं सुन्नर अछि । ओ तुरत्ते घोड़ा दौड़लनि आ ओइठाम जुमि गेला । मौगी हिनका देखिते हाथ जोड़ि स्वागत केलकनि आ एगो टिनही फुच्ची मे पानि आनि पैर धोआ एगो टुटलाहा गोनरि पर बैसैक आग्रह केलकनि । नान्हिटा खोपरी आ ताइ मे एक कोन मे गोनरि पर पड़ल ओकर कोढ़िया पति । ओ एगो माटिक कराही मे पानि ल तौनी भिजा अपन कोढ़िया पतिक देह-हाथ, घाव-घोंस साफ केलक आ फेर एगो टुटल भाङल टिनही थारी मे कने खुद्दीक भात आ बथुआक सागक झोर ओकरा खाए लेल

देलकै । कोढ़िया आधा भात-तीमन खा ओहीठाम एगो मटकूरी मे हाथ धो फेर पड़ि रहल। मौगी ओही लोटा के धो पानि आनि राजा साहेब लग रखलक आ फेर अपन पतिक अंइठ थारी हुनका सामने राखि बाजलि—महाराज, प्रसाद ग्रहण करियौ । राजा साहेब त एके बेर फानि उठला जेना पोन मे बीछ काटि नेने होइन । गरजैत बजला—हमर एहन अपमान ! एहि कोढ़ीक अंइठ हम खैब ?

मौगी हाथ जोड़ि बाजलि—छमा करी महाराज । कोनो स्त्रीक लेल त ओकर पतिए परमेसर होइत छइ से ओ भने कोढ़ि हो वा अथबल । तें हिनक अंइठ त हमरा लेल प्रसादे ने थिक । रहल अपनेक अपमानक बात से जानि-सुमानि हम त तेहन कोनो आचरन नहि कएल । हम त अपनहिक आदेशक पालन करैक प्रयास कैलए ।

राजा बमकि उठला—तकर माने ? हम एहि कोढ़ियाक अंइठ खेबाक बात कखन कहलियौ ?

ओ बाजलि—कने ठंढा मन सं सोचल जाय महाराज । की अपने हमरा अपन पटरानी बनेबाक इच्छा नहि प्रकट कैलए ?

राजा साहेब के त जेना काटू त खून नहि । ओ चोट्टे बहरेला आ अपना घोड़ा पर चढ़ि महल आपस आबि मंत्री आ अमला लोकनि कें बजओलनि । राजा के एकसर अबैत देखि ओकरा लोकनि के जेना थरथरी ध लेने छलै । आस्ते-आस्ते कल जोड़ने कपैत सब हाजिर भेल । राजा वेश शान्त भावें मंत्री कें कहलथिन जे जाइ स्थान पर ओ खोपरी छैक ओइपर एगो पैघ मन्दिर बनाओल जाय । मन्दिर एहन हो जेहन परोपट्टा मे नहि अछि आ ई काज चुप-चाप ओही राति भ जेबाक चाही । ओ मौगी आ ओकर कोढ़िया पति के सेहो एकर भनक नहि लगै ।

राजाक बात बेबहार सं मंत्री आ अमला सब जेना अचरज मे पड़ि गेल छल, परंच तइ मादे सोचबाक पलखति तखन नहि छलै । सब दुगुन्ना उत्साह सं काज मे लागि गेल ।

प्रात भेने जे ओमहर जाय से खोपरीक स्थान पर विशाल सुन्नर मंदिर देखि छगुन्ता मे पड़ि जाय । आस्ते-आस्ते ई बात सगरो पसरि गेलै आ मंदिर लग लोकक करमान लागि गेलै । जकरा आखर-बोध रहैक से मंदिरक प्रवेश द्वारक उपर उज्जर दप-दप संगमरमर पर मोट-मोट आखर मे लिखल नाम पढ़लक—पतिबरता । एक व्यक्तिक मुंह सं ई नाम बहराइते जेना बेरा-बेरी सभक मुह सं बहराय लगलै—पतिबरता.......पतिबरता.......।

ꢸꢸꢸ

एगो रहथि राजा

बहुत दिन पहिने कोनो एक नग्र मे एगो राजा रहथि । ओ ओ बड़ परतापी छलाह । हुनक धर्म-कर्म, दान-पुण्यक कथा परोपट्टा मे विख्यात छल । देश-विदेश सं ज्ञानी-गुणी लोक सभ हुनका ओइठाम अबैत छल आ ओ तकर बड़ सम्मान-यत्न करैत छलाह । राज्य मे सभतरि शान्ति छल आ प्रजा सभ प्रसन्न ।

एक बेरक बात छइ । बड़का अकाल पड़ि गेलै । सगरो अन्न-पानिक लेल हाहाकार। परञ्च अचरजक गप जे हिनका राज मे अकाल नहि पड़ल । पर्याप्त बरखा भेलै आ उपजा-बारी त बुझू जे आनो साल सं नीक । आन-आन राज सं लोक सभ आबि हिनक राज मे आश्रय लिए । राजा सभक खोज-पुछारि लेथि आ ककरो कोनो बातक तकलीफ नहि होइ ताइ लेल मंत्री-अमला लोकनि कें आदेश देलथिन ।

एक दिनक बात छइ । राजा साँझ मे नगर-भ्रमण सं फिरला त अपन कक्ष मे असगरे बैसल रहथि । हुनका मन मे हठात् प्रश्न उठलनि जे की कारण थिक जे चारूभर अकाल पड़लै मुदा हमर राज ओहि सं बांचल रहि गेल । हो ने हो ई निश्चिते हमर पूर्वजन्मक कोनो नीक काजक फल थिक । मुदा से कोन काज आ कोन जन्मक । एही चिन्ता मे ओ रातिभरि सुतियो नहि सकला ।

प्रात भेने दरबार लागल । सकल मंत्री आ अमला उपस्थित । राजा अपन प्रधान मंत्री के बजा एक दोसर कक्ष मे ल गेलाह । मंत्री जेहने शान्त-शिष्ट तेहने धार्मिक स्वभावक छलाह । अपन बुद्धिमत्ताक लेल वेश विख्यात । राजा हिनका अपनचिन्ताक बात कहैत एकर कारण पता लगेबाक आग्रह केलथिन । मंत्री महोदय राजा सं सात दिनक समय ल चिन्तामग्न भेल अपन घर घुरि एलाह ।

मंत्री बड़ चिन्तित छलाह । राजाक प्रश्नक कोनो उचित उत्तर हुनका भेटिए ने

रहल छलनि । एमहर छठम दिन बीतल जा रहल छल । मंत्रीक संगहि हुनक घरबाली सेहो चिन्तित । आङन-घर मे जेना उदासी पसरल । एहने समय मे कपड़ा-लत्ताक मोटरी लेने पहुँचल धोबिन । बुधियारि धोबिन के बात बुझबा जोग त भइए गेलै, तैयो ओ मंत्रीक घरबाली सं उदासीक कारण जानय चाहलक । मंत्रीक घरबाली सभटा खेरहा कहलथिन। धोबिन बाजलि—'एही लेल अहां सभ चिन्तित छी । राजाक प्रश्नक उत्तर त हमरा बुझले अछि । कहां छथि मालिक ।' घर मे बैसल मंत्री सभ बात सुनिते छलाह, धड़फड़ैल आङन बहरेलाह । धोबिन कहलकनि जे अपने राजा सं निवेदन करियनु जे ओ हमरा सं पुछथि । हम हुनकर प्रश्नक उचित उत्तर द देबनि ।

प्रात भेने मंत्री समय सं कने पहिनहि राजदरबार पहुँचि गेलाह आ राजा कें पुछबा सं पहिनहिं सभ विरतान्त कहि सुनौलथिन । राजा के आश्चर्य लगलनि जे जे बात ओ अपने नहि जनैत छथि, मंत्री महोदय नहि कहि सकैत छथि, से बात धोबिन कहत ! तैयो ओ लोक पठा धोबिन के बजओलनि आ एकान्त मे ओकरा सभ बात कहलथिन ।

धोबिन कहलकनि—महाराज, एहिठाम सं ठीक एक सए योजन उत्तर एक पांतर मे एगो विसाल कदमक गाछ छैक जे बारहोमास छतीसो दिन फरल-फुलैल रहैछइ । ओइठाम प्रत्येक दिन पहर राति बितला पर देबलोक सं एगो पुष्पक विमान उतरैत अछि जाइ मे सं एगो अपूर्व सुन्दरी परी अपन सखी-बहिनपाक संग बहराइत छथि । किछु घड़ी ओ लोकनि हंसी-चौल मे बिता अपना संग आनल छप्पन परकारक भोजन परी लेल संचार लगबैत छथि आ फेर सभ केओ भोजन करैत छथि । भोजन समाप्त कए फेर सभ गोटे ओही विमान सं आपस चलि जाइत छथि । से महाराज अपनेक प्रश्नक उत्तर उएह परी देती । अपने ओहिठाम गेल जाओ । एतेधरि मोन राखी जे ओ लोकनि जखन भोजन करैत रहथि तखनहि प्रगट होइ आ प्रश्न करियनि । ओहि सं पूर्व वा पश्चात् नहि । संगहि ओहिठाम अपने असगरे जाइ, ककरो संग ल के नहि ।

धोबिन चल गेल आ राजा अपन यात्राक योजना बनबए लगलाह । फेर राति मे निन्न नहिञे भेलनि । भोरे उठि नित्य-क्रिया सं निवृत भए घोड़ा कसलनि आ बिना ककरो किछु कहने विदा भेलाह उत्तर मुहें । सांझ पड़ैत-पड़ैत ओ कदमक गाछ लग पहुँचि गेलाह। सभ किछु ओहिना भेटलनि जेना धोबिन कहने छलनि । ओ कने दूर मे जा क घोड़ा के बान्हि देलनि आ अपने लगहि मे नुका बैसि रहलाह ।

ठीक पहर राति बितला पर विमान उतरलै त राजाक मनक धुकधुकी बढ़ि गेलनि। किछु क्षण हंसी-चौलक बाद जखन संचार लगलैक आ सभ केओ भोजन करय लगली त राजा दोग सं बहरेला आ वेश विनम्रताक संग परी स अपन समस्या आ एबाक बात कहलथिन। ओ इहो कहलथिन जे एहिठाम एबाक बात हुनका अपन राजक धोबिन कहलकनिहें ।

सभ गप सुनि परी बिहुँसि देलथिन । ओ कहलथिन जे अपने जं एहिठाम धरि आबिए गेलौं त एहिठाम सं सए योजन उत्तर गेल जाओ । ओहिठाम एक विशाल पीपरक

गाछ तर ध्यानमग्न भेल एगो महात्मा भेटताह । अपने अपन समस्या हुनके निवेदन करबनि। उएह समाधान क सकैत छथि । ओना भरिदिनक भूखल-पियासल हेबे करब तें हमरा लोकनिक संग किछु भोजन क ली से आग्रह ।

राजा के भूख त लागले रहनि आ ताइपर एहन दिव्य भोजन आ सिनेह भरल आग्रह । भोजन क जल पीबि हुनका लोकनि सं विदा ल विदा भेलाह । ओहो लोकनि अपन विमान पर चढ़ि विदा भ गेलीह । भरिराति घोड़ा दौड़ओलाक कारणें दोसर दिन सबेर-सकाल राजा ओइ पीपरक गाछ लग पहुँचि गेलाह जकर संधान परी देने छलनि । घोड़ा सं उतरि ठाढ़ भेलाह । पलघड़ीक बाद महात्माजीक ध्यान टुटलनि त हिनका पर नजरि पड़लनि । ओ बजलाह—आबि गेलौं । मुदा अपनेक यात्रा एखनो शेष नहि भेलए । एहिठाम सं सए योजन उत्तर मे एक बड़ विलक्षण नगर छैक । ओहिठामक राजा अपनहि सन पुण्यवान छथि मुदा निःसन्तान होएबाक कारणे सदा दुखी रहैत छथि । अपने ओइठाम गेल जाओ । ओ वेश आदर-सत्कार करता । अपन परिचय अबस्से दिअनि । गप-शपक क्रम मे जखन ओ अपन व्यथाक बात कहता त अपने कहबनि जे अपनहिक सहयोग सं हुनका पुत्र प्राप्त होएतनि । हम कने विभूति दैत छी । संभोग सं पूर्व राजा आ रानी एकरा अपन माथ आ हृदय मे लगा लेथि । हँ, एहि सं पहिने हुनका सं गछा लेब जे पुत्रक छठिहारक पश्चात पलघड़ीक लेल ओकरा अपने के सुपुर्द क देथि । अपने ओइ बालक के एकान्त मे ल जा कान मे अपन प्रश्न कहबैक आ उएह बालक अपनेक प्रश्नक सही उत्तर देत ।

राजा दू दिनक यात्रा मे वेश थाकि गेल छलाह । समाधान सेहो लग नहि बुझि पड़ैत छलनि, परंच घुरि जेबाक इच्छा सेहो नहि होइत छलनि । महात्माजी सं विभूति लैत विदा लेलनि । पहर राति बितलापर राजदबार मे उपस्थित भेलाह । जेना महात्माजी कहने छलथिन, बेश आदर-यत्न भेलनि आ दुनू राजाक बीच एक आत्मीय सम्पर्क सन बनि गेलनि । गपक क्रम मे जखन ओ अपन कथा-व्यथा कहलथिन तखन महात्माजी जेना-जेना कहने छलथिन तेना-तेना पुत्रलाभक उपाय ई हुनका कहलथिन । बेचारे राजाक त जेना खुशीक ठेकान नहि । ओ एके बेर मे हिनक सभ शर्त मानि लेलथिन । ई महात्माजीक देल विभूति हुनका द देलथिन । राति ओहीठाम बिता भोरे अपन राजक यात्रा केलनि ।

ठीक दसमासक पश्चात् राजा कें पुत्ररत्न भेटलनि । वेश धूम-धाम सं उत्सव मनाओल गेल । एमहर ई राजा सेहो दिन गनैत बेचैन छलाह । सूचना हिनको भेटलनि आ ठीक छठिहारक परात ओतय उपस्थित भेला । ओहू राजा कें अपन वचन मने छलनि आ नवजात शिशु के अना हिनका कोरा मे ध देलथिन । ई ओकरा कने आदर-दुलार करैत एकान्त मे ल जा कान मे अपन प्रश्न कहलथिन । बच्चा किलकारि मारि हँसैत कहलकनि—अपनेक प्रश्नक उत्तर उएह कल्याणी देतीह—जिनका अहां धोबिनक रूप मे चिन्हैत छी । राजा के बड़ तामस भेलनि । जखन ओ धोबिन सभ बात जनिते अछि तखन हमरा एतेक

फिरीसान किएक केलक ? ई सालभरिक प्रतीक्षे किएक । ओ कोनहुना अपन मन के शान्त करैत बच्चा के पिताक हाथ मे द तुरत्ते आपस भ गेलाह आ राजमहल नहि जा धोबिक घर पहुँचलाह । धोबिन राजा के देखि बिहुँसि देलक । राजाक तामस आर बढ़ि गेलनि । कने जोर सं पुछलथिन—जखन तोरा सभ बात बुझले छलौ तखन हमरा एना तंग किएक केलैं ?

धोबिन वेश शान्त भावें बाजलि—महाराज, बुझल त हमरा ठीके छल परंच कहबाक समय नहि आयल छलैक आ ने हमरा तकर आदेशे भेटल छल । ओनहुना जे काज अपनेक हाथें सम्पन्न भेल से पहिने कहि देने कोना संभव होइत । जे से । त आब सुनल जाओ—

एगो ब्राह्मण छलाह । ओ बड़ गरीब रहथि । भीख-दुख मांगि कोनहुना गुजर करथि । परिवार छोटै छलनि । पत्नी, बेटा आ पुतोहु । एक बेर बड़का अकाल पड़लैक जेना अइबेर आनठाम पड़ल छैक । अन्न-पानिक अभाव मे जानि ने कतेक लोक मुइल होएत । एहना स्थिति मे भीखो के ककरा दित ! मुदा तैयो ब्रह्मण दुआरिए-दुआरि बौआएल फिरथि । पांच वा छ दिनक बाद केओ दाता कने चाउर देलकनि । ब्रह्मणी खिच्चरि रन्हलनि । स्नान-पूजा सं निवृत भए ब्राह्मण जखन भोजन पर बैसला तैखन कोनटा लग एगो भीखारि उपस्थित । ब्राह्मण पीढ़ी पर सं उठि गेलाह । भीखारिक अवस्था सं बुझाइत छल जे ओ मासोदिन सं अन्न देखने ने हो । ब्राह्मण अपन थारी पर ओकरा बैसा देलथिन। भीखारि सभ खेलाक पश्चातो बैसले रहल जेना किछु खेनहि नहि हो । ब्राह्मण के किछु फुराइते ने छलनि । ता ब्राह्मणी अपन हिस्सा खिच्चरि आनि भीखरि के परसि देलनि । भीखारि ओहो खा गेल मुदा उठल नहि । ता बेटा अपन थारी उठओने आयल आ भीखारि लग राखि देल । भीखारि ओहो खेलाक बाद ढेकरैत उठि हाथ धोलनि । ओमहर ब्राह्मणक पुतोहु भीखारिक ई स्थिति देखि कहीं ओकरो हिस्सा ने ई खा लेथि सोचि कोठीक दोग मे जा हबर-हबर अपन हिस्सा खा लेलनि । असल मे ओ भीखारि आन केओ नहि स्वयं भगवान छलाह जे ब्राह्मणक परीक्षा लेबय पहुँचल छलाह । ब्राह्मणक धर्माचरण आ दानशीलता सं भगवान ततेक प्रसन्न भेलाह जे अगिला जन्म मे राजा होएबाक आशीष मनहि मन देलथिन । महाराज, ओ दानी ब्राह्मण आन केओ नहि अपने थिकहुँ । पूर्वजन्मक पुण्यफलक संगहि एहू जन्मक सतकर्म अपनेक राज के सभ बाधा-विपत्ति सं मुक्त रखने अछि ।

—आ ओ ब्राह्मणी ? राजा पुछलथिन ।

—आश्चर्य जे अपने हुनका देखियो कें चिन्हि नहि पाओल—धोबिन बाजलि । अपने के ओतेक सम्मान देनिहारि, आदर-यत्न सं भोजन करओनिहारि परी दोसर केओ नहि, पूर्वजन्म मे अपनेक पत्नी छली । हुनको एहि जन्मक सुखभोग पूर्वजन्मक कर्महिक फल छनि । आ अपनेक धर्मानुरागी पितृभक्त पुत्र एहि जन्मक सिद्ध पुरुष महात्माजी । अगिला जन्म मे हुनका राजयोग छलनि तें धर्मात्मा राजाक ओहिठाम जन्म । अहांक प्रति

श्रद्धा-भक्ति ततेक छनि जे एकरो माध्यम ओ अपनहिं के बनबए चाहैत छलाह । जे विभूति अपने ल गेल छलौं से वास्तव मे अहांक पुत्र—ओहि महात्माजीक आत्मा छल ।

धोबिन कहैत जाइत छलि आ राजा विभोर भेल जाइत छला । हुनक आनन्द आ अचरजक ठेकान नहि । धोबिन के थम्हिते ओ पुछलथिन—आ हमर पुतोहु, कल्याणी !

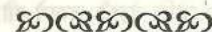
धोबिन बाजलि—महाराज, सभ के अपन कर्मक फल भोगय पड़ैत छैक । अहांक पुतोहु परीक्षा मे फेल क गेली । हुनका अपने खेनाइ पैघ बुझेलनि । हुनक आत्मा साफ नहि रहनि । तें एहि जन्म मे सगर नगरक मैल धोने फिरै छथि.........

राजा भावविभोर भ कहलथिन—कल्याणी अहां !

धोबिन बाजलि—हँ महाराज, अपनेक अभागलि पुतोहु हमही छी ।

राजा कहलथिन—नहि कल्याणी, आब आर नहि । अहां अपन कर्मक फल भोगि लेलहुँ । प्रायश्चित भ गेल । आब अहांक परिवारक भरण-पोषण राजदरबार करत । अहां लोकनि हमर आत्मीय छी ।

किछु दिनक पश्चात् राजा फेर ओहि बालक के देखै लेल गेलाह आ ई क्रम चलैत रहल । दुनू राजा मे तेहन सम्बन्ध भेल—जेना दुनू अभिन्न हो ।



चिन्ता-रोग



कोनो एक गाम मे एगो बुढ़िया रहै छल । ओ मोसमात छल । ओकरा एगो बेटा छलै। जथा-जाल किछु छलै नञि । बेचारी कुटान-पिसान क क अपन बेटा के पोसने छल । ओकरा कहियो कोनो चीजक अभाव नञि होमय दै छलै । बेटा सरो खेलाइ छल आ भरि दिन टंडैली करैत छल ।

बुढ़ियाक बेटा जखन नमहर भेलै त नीक सरोइया भ गेलै । कुस्ती मे ओ केहनो-केहनो के अलगटे चित्त क दिए । चारू दिस ओकर नाम भ गेलै । लोक कहै—खलीफा। आब बुढ़िया सेहो खलीफाक माय कहाबए लागल ।

बुढ़ियाक घर गामक एकोर मे बाटक काते मे छलै । एक दिन खलीफा अपन घरक दावा पर बैसल रहए । तैखन ओही बाटे जमींदारक हाथी जाइत रहै ।महाओत ओकरा पर मारिते रास पीपरक डारि-पात लदने छल । ई हाथीक खोरिस रहै । ओ नित्तहु एहिना एही बाटे जाइत-अबैत छल । ओइ दिन खलीफा के की फुरलै की ने ओ एके छड़पान मे दावापर सं कुदि हाथीक नाडरि पकड़ि लेलक । हाथी कतबो जोर लगाबए किन्तु टस-स-मस भेल नञि पार लगलै । जखन खलीफा छोड़ि देलकै तखने ओ आगा जा सकल ।

खलीफा के जेना एगो नव खेल भेटलै । ओइ दिन स ओ रोजे एना करए लागल । पहिने हाथी ठाढ़ भेलै । फेर ओ ओकरा पाछू मुहे घीचय लागल । एक बीत, एक हाथ सं एक लग्गा धरि ओ हाथी के पाछू घीचि लिए । महाओत चुपचाप हाथी आ खलीफाक ई खेल देखैत रहल । ओकरा अचरज होइ जे हाथी के घीचि लेबै बला खलीफाक देह मे कतेक ताकति छैक !

ओमहर हाथी दिन-दिन दुबराएल जाय । एकदिन जमींदार के कतौ जेबाक रहै । ओ महाओत के बजा हाथी के तैयार करै लेल कहलक । जखन हाथी आयल त जमींदार

देखलक जे ओ वेश दुबराएल अछि । ओ महाओत सं एकर कारण जानय चाहलक । महाओत की कहितैक । ओ डेराइते बाजल—महराज । हम त एकर खेनाइ-पिनाइ मे कोनो कोताही नञि करै छिऐ । पहिले नाती अखनितो खेनाइ-पिनाइ दैत छिऐ, सेवा-यतन करै छिऐ । रोगो-बलै त कोनो नहिञे बुझि पड़ैए—तखन हम की करब ।

जमींदार अपन एगो चलाक मोसैहेब के बहाल केलक । ओकरा कहलकै जे नुका कए एहि बातक पता लगाबए जे महाओत ओकरा कत'-कत' ल जाइए आ केना कि खुअबै-पिअबै छइ । हाथी के सहजे एना दुबरा जाएब नीक बात नहि । ई जमींदारक प्रतिष्ठाक प्रश्न थिक ।

मोसैहेब हाथीक पछोर धेलक । आने दिन जकां ओहू दिन महाओत डारि-पात लदने घुरल अबैत छल । हाथी बुढ़ियाक घर लग अबिते जेना थकमका गेलै । ओमहर खलीफा जुमल आ ओकर नाडरि पकड़ि एक लग्गा पाछू घीचलक । फेर ओकरा छोड़ि हाथ झारैत दावापर जा कें बैसि गेल । मोसैहेब जा कें ई सभ विरतान्त जमींदार के कहलकै। ओ आर कने तेल-मसाला मिलाइए क कहलकै ।

खलीफाक खिस्सा सुनिते जमींदार तामसे माहुर भ गेल । जाइ खलीफाक माय ओकरा आङन मे कुटान-पिसान करै छइ, जे ओकर अन्न-पानि पर जीबैए तकर ई साहस । ओ बुढ़िया के पकड़ि तुरत्ते हाजिर करए लेल कहलकै ।

मोसैहेब ओकरा शान्त करैत कहलकै—महराज अपने शान्त होइयौ । ई कोनो तेहन पैघ समस्या नहि भेल । एकर सहज उपाय छइ । अपने अपन एहि सेवक पर भरोस कएल जाओ । हम अखने एकर उपाय लेल विदा होइ छी ।

मोसैहेब बुढ़ियो घर लग पहुंचि पहिने चर-चित ल लेलक जे खलीफा घर मे अछि वा नञि । ओ घर मे नञि रहै । बुढ़िया असगरे आङन मे किछु फटकि रहल छल । ओ बुढ़िया लग जा गप आरंभ केलक । ओकरा कहलकै जे बेटा आब समर्थ-सकर्थ भेलौ वियाह-दान करा देबही से नञि । पुतोहु-पोताक मुह देखबाक सेहन्तो ने होइ छौ । बेटे जे भरिदिन मटरगस्ती करैत रहै छौ - सै कोन नीक बात । बेटा त अही लेल ने होइत छइ जे जुआन-जहान हेतै, कमेतै-खटेतै आ माय-बापके आराम देतै । तोंहू त आब पाकल आम भेलैं—कखन तुबि जेबैं से के जनैए ! आ तखन बेटाक की हाल हेतौ से सोचै छैं । तें आस्ते-आस्ते ओकरा काज-उदेम सिखेबही, घर-आसरमक बात सिखेबही से नञि । इहो काज त माइए-बापक ने होइत छइ ।

मोसैहेबक दबाइ काज केलकै । बुढ़िया विचारलक, सत्ते त, ई बात त ओकरा पहिने सोचैक चाही । तखने खलीफा केम्हरो सं घूरि-फिरि के आयल आ माय सं खाइ लेल मङलकै । बुढ़िया खैक परसि देलकै आ खलीफा खेनाइ आरंभ केलक । बुढ़िया ओकर बगल मे बैसि कहए लगलै—बौआ, कते दिन सं नेआरै छी जे तोरा कोनो बात कहबौ से

जरलाहा के पलखतिए ने होइए । तोंहू घर मे रहिते कते काल छैं । से देख बेटा, आब हमर उमेर भेल । हम भेलियौ पाकल आम । आब हमर कोन ठीक । आइ छी कालि नञि रहब । तोंहू जुआन-जहान भेलैं । आब कने घर-आसरमक चिन्ता-फिकिर कर । वियाह-दान कर । पुतोहु-पोताक मुह देखबाक बड़ सेहन्ता होइए । सभक अङना मे बच्चा सभके खेलाइत-धुपाइत देखि हमरो ने सेहन्ता होइए...............।

खलीफा खाा-पीबि क जखन बहराय लागल त माय कहलकै—घर मे नून नञि छइ । घुरिहें त कतौ कोनो दोकान सं पाभरि नेने अबिहें ।

खलीफा खा-पीबि के दाबापर बैसल गुन-धुन करैत छल । तखने महाओत हाथी लेने जुमलै । हाथी आने दिन जकां फेर थकमका गेलै मुदा खलीफा मे ओ जोश कहां ? तैयो ओ आस्ते सं उठल आ हाथीक नाङरि पकड़ि घीचय लागल । हाथी टस स मस नहि भेलै । खलीफा मन मसोसि घुरि क दाबा पर आबि बैसि गेल । एकर बाद ओ कए दिन धरि चेष्टा करैत रहल मुदा हाथी के पाछा घीचल पार नहि लगलै । एक दिन त एना भेलै जे हाथीए ओकरा घीचने चल जाइत रहलै । खलीफा सोचैत रहल आ दुबराइत गेल ।

अपन बेटाक ई अवस्था बुढ़ियाक नजरि सं नुकाएल नञि रहलै । ओ कतबो खलीफा सं एकर कारण पुछै मुदा ओ बजबे ने करै । अन्त मे ओ सोचलक जे हो ने हो एकरा कोनो रोग पकड़ि लेने छइ । ओ एक दिन बैद लग पहुंचल आ हुनका सभ खेरहा कहि बेटाक इलाज लेल कहलकनि । बैदजी सभ सुनि कहलथिन—गय बुढ़िया, तोरा बेटा के चिन्ता-रोग छौक आ तकर कारण त तों अपने छैं । हमरा लग सरिपहुं एहि रोगक कोनो दवाइ नञि छौ ।

बुढ़िया निराश भेल घुरि आयल ।

ꙮꙮꙮ

हम देवी चंडिके

□

एगो बाभन रहथि । किछु जथा-जाल आ किछु जजमनिका सेहो रहनि । आसरम छोट । अपने दुनू बेगती आ एगो बेटा । तें खेबा-पीबाक ओरियान मे कोताही नञि रहनि । मुदा ओ रहथि बड़ कंजूस । अपन खेनाइ सोलहो आना । एकटा बेटा तें ओकरो तकलीफ केना देथिन । मुदा बाभनि के घोर विपत्ति । बेचारी के कहियो पेटभरि दाना नसीब नहि होइ । बाभन अपने हाथे नापि-जोखि क दुनू सांझक चाउर-दालि देल करथिन । खेबाकाल बाप-बेटा संगे बैसि खा लेथि । किछु उबरल त बाभनि के पटि भेलनि ने त पानि-पीबि पड़ि रहथि । बजबे की करती । जखन पति-परमेसरेक ई किरदानी ! अपन भाग के दुसनाइ छोड़ि आर की करितथि ।

किछु दिनक पश्चात् बाभन सोचलनि जे उमेर भेल जा रहल अछि, आगुओ ले त किछु करक चाही । धरम-करम । तीर्थ-बर्थ । मुदा चिन्ता होइन जे घर सं बहरेने बाभनि कहीं सभ अन्न-पानि ने शेष क देथि । तें बेर-बेर सोचथि मुदा घर छोड़ल नञि पार लगनि । अन्त मे विचारलनि जे किएक ने मास दिनक अन्न-पानि बहार क बाभनि कें द देथिन आ कोठी-भरली नीक जकां लेबि-मूनि अपने घर सं बहरा जाथि । ओ तहिना केलनि । जाइत-जाइत बाभनि के चेता देलथिन जे कोनो तरहक फिजूल खर्चा नञि हेबाक चाही । कोठी-भरली मे हाथ नहि लागक चाही । अन्न-पानि निंघटि गेने दू-एक सांझ लोक उपासलो रहि सकैए । मरि नहि जायत । आदि-आदि...........।

एमहर बाभन विदा भेला ओमहर बाभनि भानस चढ़ओलनि । बहुत दिनक बाद आइ ओ भरि पेट अन्न खेलनि । तकर बाद सं रोज ओ दुनू माइ-पूत जोगर रान्हथि आ खाथि । एना मे बाभनक नापि-जोखि क द गेल समान दसे दिन मे निंघटि गेल । फेर ओ कोठी फोरलनि आ धान कुटि-छांटि भानस कएल करथि । तीमन-तरकारी दूध-दही सेहो

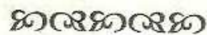
कहियो काल केन क लेथि । नुआ-वस्त्रक अभाव रहनि सेहो धाने बेचि कीनि लेलनि । एहि तरहें कोठीक धान शेष होमय पर आयल । ओमहर बाभनक अबैया से लगचिआयल । बाभनिक छातीक धुकधुकी बढ़ले जाइन । अन्त मे ओहो दिन आबिए गेल जहिया बाभन के घुरबाक छलनि । बाभन जाइ गाड़ी सं अबितथि से बेरिया मे अबैत छलै आ टीशन सं गाम एबा मे सांझ भ जाइत छलै । बाभनि दिन भरि एही चिन्ता मे छली ।

अन्त मे बाभनि कें एगो बुधियारी सुझलनि । गामक आरंभ मे एगो बंसबिट्टी छलै । हरौठी बांस । बेस घनगर आ चारूकात झुकल । कहियो काल त गड़िबान सभ कें वेश मोसकिल भ जाइ । बाभनि सभ सं नजरि चोरा क ओहिठाम पहुंचि गेली । एगो कपड़ा मे तौला-खापरि सं कारी लगा लेने गेल छली जकरा सौंसे देह-हाथ मे लेपि लेलनि आ एगो खापरि माथ पर ओढ़ि लेलनि । झलफल भइए गेल छलै । बाभन जइखन ओइठाम पहुंचला त बाभनि दू गो बांस के बेश जोर सं झकझोड़लनि आ कूदि के बाभनक सामने जा ठाढ़ भ गेली । बाभन त डरे सर्द । माथक घाम पैर दने बहय लगलनि । बाभनि नकिया क बजली—

हम देवी चंडिके
माथा पर हंडिके
तोरा खाउ कि तोरा बेटा के खाउ
कि कोठीक पांचोमन धान खाउ

बाभन त चिन्ता मे पड़ि गेला । अपन जान त अपने भेल, बेटो त एकेटा । के मुह मे ऊक देत, वंशे केना चलत ! एहिना गुनधुन करैत कहलथिन—हे चंडीमाता हमरा दुनू बापते के जी-जान बकसि दिअ । जं अहां नहिञे मानब त बरू धाने खा लिअ ।

बाभनिओ त सएह चाहैत छली । तथास्तु कहि ओ बाट छोड़ि देलथिन । बाभन लंक लागि पड़एला । ओमहर बाभनि गलीकुची होइत हुनका सं पहिने घर पहुंचि मुह-हाथ धो कपड़ा बदलि तैयार । बाभन अबिते पैरो ने धोलनि आ सोझे घर ढुकि कोठी फोरलनि। धानक जगह भुस्सा भरल देखि माथ-कपार पीटय लगला । बाभनि की करितथि । ओहो आबि अपन पतिक संग देलथिन ।



एगो रहए जोलहा

□

कोनो एगो गाम मे एगो जोलहा रहए । ओ बड़ मेहनतिया रहए । दिनभरि अपन घर मे कपड़ा बुनए आ सांझखन तकरा महाजन लग पहुंचा आबए । जे किछु कैंचा भेटै ताइ मे सूत कीनए आ बाकी सं घरक खर्च बेसाहि लिए । आश्रम सेहो छोटे छलै । ल द क दू परानी । तैयो अभाव जेना रहिते छलै । आड-समाड भेने चुलही नेबारने । ओझा-गुनी लगने पैंच उधार । आ फेर से सधेबा मे नाको दम ।

एक बेरक बात छइ। जोलहाक घरबाली दुखित पड़लै । कते दिन बीति गेलै मुदा ओ नीक हेबाक जेना नामे नञि लैक । अपन भरि ओझा-गुनी कम नहि कएलक । महाजनक कर्ज बेस भ गेलै आ एकदिन त ओ सोझे नठि गेलै आर टाका-पाइ देबा सं । उनटे ज्ञान देबए लगलै जे ओकरा सभ मे त सगाइ चलिते छैक । एकटा मरतै त दोसर क लेत । एहि लेल एते चिन्ता-फिकिर त बेकारे ने ।

महाजनक बात सुनि जोलहा के बड़ तामस भेलै । मन त होइ जे ओकर मुह खखोरि लिए, मुदा मन मसोसि कें रहि गेल । खगल रहबे करए । एमहर किछु दिन सं काजो नीक जकां नहि क पबैत छल । दिन-राति घरबालीक चिन्ता । ओकरे ओगरने । बड़ प्रेम छलै दुनू मे । तें गाम छोड़ि कहियो कतौ गेल नहि पार लगलै । लोक कते कहै जे पूब-पच्छिम चल जाह ।भगवान तेहन लूड़ि देने छथुन जे काजक कोनो अभाव नञि हेतह। देखैत नञि छह फलम्मा के..........आदि । मुदा ओ लोकक बात एक कान द सुनए आ दोसर द बहार क दिए । ओ सोचए जे एहनो जिनगी कोनो जिनगी भेलै । अपन माटि-पानि, लोक-वेद छोड़ि परदेस बास ।

किछु दिनक बाद घरबाली नीक भेलै । ओहो दिन-राति मेहनति करए लागल । कर्ज-उधार सधेबाक चिन्ता । मुदा ओ कतबो बेसी कपड़ा बूनि ल जाय, महाजन सभ कर्जे मे काटि लइ । नाम मात्रेक किछु कैंचा हाथ मे दैक । ओमहर घरबालीक शरीर कमजोर। नीक-निकुत खेबाक जरुरति । एक दिन एहिना उदास गुनधुन करैत बेचारा जोलहा महाजन

ओइठाम सं घुरल अबैत रहए । प्रायः सांझ पड़ि गेल छलैक । बाटक काते मे एगो महादेव मंदिर छलै । ओकर नजरि पड़लै आ ओ सोझे मंदिर मे ढुकि गेल । महादेव बाबा लग बैसि कानैत-कलपैत गोहराबए लागल जे महादेव तोंही पार लगाबह । तोरा त लोक अढरन-ढरन कहै छह, एहू गरीब पर कने किरपा करह ।

ओ एहिना कनैत-कलपैत छल ता अकशवानी भेलै । महादेव बाबा कहलथिन जे हम तोहर सभ दुख-तकलीप जनैत छी । तों माङ की मङैत छैं ?

महादेव बाबाक बात सुनि त जेना ओकर खुशीक ठेकान नहि रहलैक । मुदा ओ की माङत से फुराइए ने रहल छलैक । बड़ीकालक बाद बाजल—हे महादेव बाबा, तों हमरा कने समय दैह । हम अपन घरबाली सं पुछने अबैत छी । महादेव बाबा कहलथिन - एवमस्तु । आ ओ बेतहास आङन दिस दौड़ल ।

ओ सोझे अपन घरबाली लग गेल आ ओकरा सभ बिरतान्त कहलकै ।

घरबाली विचारि कें कहलकै—हमरा आर के आर कथुक अभाव त तेहन नहिओ हए, तखनि आङ-समाङ भेने त दिकदारी भइए जाइ हइ । तें भोला बाबा के कहौक जे जं ओ सत्ते किछु देबए चाहै छथि त एकरा आर दू टा हाथ द देथिन । चारि हाथें करघा चलेतै त बेसी कपड़ा हेतै, बेसी पाइ हेतै । आसरमक खर्च सं जे उबार हेतै से जमा केने जायत। आर की ....

जोलहा के घरबालीक बात पसिन्न पड़लै । आ दौड़ल मंदिर गेल आ भोला बाबा लग दू हाथ सं चारि हाथ बना देबाक अर्जी रखलक ।

भोलाबाबा कहलथिन—एवमस्तु । ले तों एखने सं चरिहत्था भ जो ।

आ ओकरा अचरजक ठेकान नहि रहलैक जखन ओ अपन चारू हाथ देखलक । सरिपहुं ओकर खुशीक ठेकान नहि रहलैक । आ उछलैत-कुदैत गाम दिस विदा भेल ।

ओ गामक लग पहुंचबे कएल ता ककरो ओकरा पर नजरि पड़ि गेलैक । झलफल रहबाक कारणे ओकर मुह त नीक जकां चीन्हल नहि भेलै किन्तु चारू हाथ धरि साफ-साफ देखना गेलै । ओ 'राच्छस, भूत' आदि चिचिआइत गाम पड़ाएल । ओकर चिचिएनाइ सुनि लाठी सोंटा लेने लोक दौड़ल । जोलहा के देखि सभके छगुन्ता लगैक । चारि हाथबला मनुक्खक बात खिस्सा-पिहानी मे त सुनने छल मुदा देखने त केओ ने छल । तें सभ सोचलक जे हो ने हो ई निश्चिते कोनो भूत-परेत वा दैत-राच्छस हो । सभ मार-मार क उठल । जकरा जे हाथ लगलै—ढेप-चेंप, लाठी-सोंटा । जोलहा कतबो चिचिआय,लोकक नाम ध कक्का, भैया संबोधन करैत अपन नाम परिचय दैक—केओ सुननिहार नहि । अन्ततः सभ मिलि ओकरा मारिए देलकै । जखन ओ मरि गेलै तखन लोक मे जेना आनन्दक लहड़ि उठि गेलैक । सभ सं बेसी खुशी छल नेना-भुटकाक दल । चारि हाथ बला राच्छस के मारनाइ छोट बात नञि छलै । हल्ला सुनि जोलहाक स्त्री सेहो जुमि गेलै । ओ त देखिते अपन घरबला के चिन्हि गेल आ छाती पीटि बफाइर तोड़ए लागल । आनो लोक सभ चिन्हलकै । आब चिन्हिए क की । चारि हाथक चक्कर मे बेचारा जोलहा अपटी खेत मे मारल गेल ।

चतुर भागिन

□

एगो छौंड़ा रहए । ओ बड़ गरीब रहए । बाप नान्हिएटा मे मरि गेलै । माय कोनहुना कुटान-पिसान क क खर्च चलबै । ओकरा दूटा मामा रहै । ओ सभ कोनो शहर मे नोकरी करैत रहए । ओ सभ जखन नोकरी पर जाय लागल त छौंड़ा कहलकै जे हओ मामा, हमरो नेने ने चलह । कतौ कोनो काज पर लगा दिह । मामा सभ कने काल गुनधुन केलाक बाद कहलकै—रओ भागिन, नोकरी त आइ-कालि बड़ महग छइ, मुदा चल..........।

जाइत-जाइत जखन किछु दूर गेल त भूख लगलै । एगो मामा वेश धूर्त रहए । ओकरा भागिनक हाथ मे मट्ठा पर नजरि पड़लै । ओ बाजल—ओह, भूख त बड़ जोर लागल अछि । की रओ भागिन, तोरा नञि भूख लगलौए ?

भागिन बाजल—मामा हओ, भूख त लगले अछि मुदा संग मे त किछुओ नञि अछि ।

मामा कहलकै—रओ भागिन, तोरा हाथ मे त मट्ठा छौक । किएक ने ओकरे बेचि बटखर्चा चलाबी । नोकरी-चाकरी हेतौ, पाइ कमेबा त फेर मट्ठा भ जेतौ । ओनहुना तों त आब छेटगर भेलैं । आब की मट्ठा पहिरबें ?

भागिन के कान ठाढ़ भेलै । छौंड़ा त अपने चलाक रहए । बाजल—वेश त, दोकान आबए दहक । ता एकटा दोकान नजरि पड़लै । ओ मामा सभके गाछतर बैसय लेल कहलक आ अपने दोकान दिस विदा भेल । दोकान हलुआइक रहैक । ओ हलुआइ लग जा क कहलकै—हओ साहुजी नोकर कीनबह ?

साहुजी पुछलकै—कएटा छ ?

छौंड़ा मामा सभके आवाज देलक—हओ मामा, एकटा की दुनू ?

मामा कहलकै—दुनू ।

छौंड़ा बाजल—दुटा ।

साहुजी पुछलकै—कत्ते मे ?

छौंड़ा कहलकै—पचास टके । एक सए मे दुनू ।

साहुजी सोचलक जे एहन सस्त नोकर कहां भेटतै । दुनू वेश हट्ठा-कट्ठा जुआन छइ । ओ तुरत्ते पाइ बहार क क देलकै । छौंड़ा पाइ लेलक आ चुपचाप ससरि गेल । एमहर साहुजी दुनू मामा के शोर पाड़लक । जखन ओकरा सभके पता चललै त जे किछु संग मे रहै से साहुजी के द क जान छोड़ओलक आ दौड़ल भागिन के पकड़ैक लेल ।

ओमहर छौंड़ा दौड़ैत-दौड़ैत जखन थाकि गेल त बाटक कातक एगो गाछ पर चढ़ि सुस्ताय लागल । तैखन ओकरा एगो घोड़ाबला अबैत देखाइ पड़लै । ओ जखन लग एलै त छौंड़ा किछु रेजकी उपर सं फेकैत गाछक डारि डोलबए लागल आ घोड़ाबला के कहलकै—हओ घोड़ाबला, देखै नहि छह जे हम पाइ झखबै छी । कने हटले रह ।

घोड़ाबला के अचरज लगलै । ओ पुछलकै—रओ बौआ, सत्ते पाइ छइ ?

छौंड़ा कहलकै—देखाइ नहि पड़ै छ ?

घोड़ाबला पुछलकै—हमरो झखब देबह ?

छौंड़ा बाजल—उपरका डारि पर चढ़ल हेतह त जा झखाबह ग । नीचका डारि सभ हमर अछि ।

घोड़ाबला फानि के गाछ पर चढ़ल आ एकदम फुनगीपर पहुंचि गेल । ओ छौंड़ाक नाम पुछलकै त छौंड़ा कहलकै गहिंकी । ओमहर घोड़ाबला फुनगीपर आ छौंड़ा उतरि घोड़ा पर चढ़ि इएह ले उएह ले पार । ओमहर घोड़ाबला अपने इच्छे डारि डोलओने जाय मुदा पाइ कि झहरतै कपार । अन्त मे हारि के ओ नीचा उतरल त देखैए जे घोड़ा सेहो निपत्ता । ओ माथ पकड़ि धुस्स द बैसि गेल । ओही समय अपन भागिन के तकैत दुनू मामा ओइठाम पहुंचल । घोड़ाबला के कनैत देखि ओकर कारण पुछलकै त ओ कहलकै जे घोड़ा के गहिंकी ल क पड़ा गेल ।

दुनू मामा संगहि कहलकै—बेचलह किए जे गहिंकी ल गेलह आ आब नेप चुआबै छह ?

घोड़ाबला कहलकै—हओ बेचितौं तखन ने । ओ त एगो छौंड़ा छल, ओकरे नाम छलै गहिंकी ।

दुनू मामा सोचलक जे हो ने हो ई ओकर भागिनेक काज छैक । फेर तीनू मिलि ओकर खोज मे आगू बढ़ल ।

ओमहर छौंड़ा घोड़ा दौड़ओने एगो नदी कात मे पहुंचल । ओइठाम एगो बुढ़िया मोटा-चोटा लेने बैसल छल । संग मे ओकर बेटी सेहो छलै जे खुब सुन्नर छलै । छौंड़ा पुछलकै—गए बुढ़िया, एतय किए बैसल छैं ?

बुढ़िया बाजलि—नदी केना पार होउ, नाह त देखिते ने छिऐ ।

छौंड़ा कहलकै—हम पार क दिऔ ?

बुढ़िया कहलकै—त, बड़ गुन मानबह । भगवान तोरा नीके रखथुन । नहाइतो ने केश टूटह । तोहर नाम की छियह ?

छौंड़ा कहलकै—हमर नाम भेल जमैया । मुदा बेरा-बेरी पार करबौ । घोड़ा पर एक संग दू आदमी सं बेसी नञि जा सकै छइ ।

बुढ़िया मानि गेलै आ छौंड़ा ओकरा एहीकात छोड़ि ओकरा बेटी के आ मोटरी-चोटरी ल क पार भेल आ पड़ाएल । एमहर बुढ़िया छाती पीटि कानय लागल । ताही समय ओहो तीनू गोटे छौंड़ा के तकैत पहुंचल आ बुढ़िया के कनैत देखि पुछलकै—की भेलौ गे बुढ़िया । एहिठाम त कतौ केओ ने छइ तखन तों एना किए छाती पीटै छैं आ कनै छैं ?

बुढ़िया बाजलि—बाबू सभ हओ बाबू सभ, हओ धीया के जमैया ल क पड़ा गेलै हओ बाबू सभ ।

तीनू बाजल—गए, जं धीया सं एहने सिनेह छलौ त ओकर वियाहे किए करओलही जे जमैया ल क पड़ा गेलौ ?

बुढ़िया बाजलि—धुर जो, जरलाहा के वियाह करबितिऐ तखनि ने । ओ त एगो छौंड़ा छलै घोड़ा पर चढ़ल, ओकरे नाम छलै जमैया ।

माम सभ के बुझै मे देरी नहि लगलै जे इहो काज ओकर भागिनेक छिऐ । चारू कोनहुना धार पार केलक आ चलि पड़ल छौंड़ाक खोज मे । ओमहर छौड़ा के जखन जाइत-जाइत सांझ पड़ि गेलै त गामक कात मे एगो तेलीक घर रहै, ओ ओकरे दरजा खटखटओलक । घरबैया बहरेलै त राति बीच ठहरबाक लेल आग्रह केलकै । साहुजी राति-बीच विलमैक बात मानि लेलकै । नाम पुछलकै त छौंड़ा कहलकै—हम-तों ।

साहुजीक बगले मे एगो गोआरक घर छल । छौंड़ा ओतय पहुंचल ।पुरुष-पात त बथाने पर रहै, गोआरिन बहरेलै । छौंड़ा साहुजीक ओतय ठहरबाक बात कहि ओकरा सं दू सेर दही उधार ल अनलक । नाम पुछलकै त कहलकै—मुत्तू ।

निसभेर राति मे सभ जखन सूतल छल, छौंड़ा के नदी लगलै । ओ कोल्हुए पर नदी फीरि देलक आ अन्हरोखे छौंड़ी के आ अपन मोटरी-चोटरी ल घोड़ा चढ़ि विदा भ गेल । भोरे जखन साहुजी उठल आ कोल्हुक हालत देखलक त तामसे माहुर भ गेल । ओ चिकरैत अपन घरबाली के बजओलक आ पुछलकै जे ई ककर किरदानी छी ? घरबाली कहलकै—आर के, हम-तों ।

साहुजी त ई बात सुनिते तामसे थर-थर कापय लागल । ओ कसि के अपन घरबालीक गालपर एक थापर देलक । साहस ने देखू एकर, कहैए—हम-तों ।

साहुआनि गाल हंसोतैत कानय लागलि आ तैखन गोआरिन पहुंचल । ओ पुछलकै—हओ साहुजी, तोरा घर मे मुतू ? साहुजी त आर बमछि उठल । कहलकै—अपन बाड़ी-

झाड़ी नञि छौ जे हमरा घर............। दुनू मे वेश कहा-सुनी होमय लगलै ता ओहो चारू गोटे ओइठाम पहुंचल । झगड़ाक कारण सुनिते माम सभ बुझि गेल जे ओकर भागिन छोड़ि दोसरक ई काज भइए ने सकैत अछि । आब ओ छ गोटे भ गेल । सभ के ओइ छौंड़ाक जरुरति छलै । छबो आदमी ओकरा ताकै लेल एके संग विदा भेल ।

ओमहर छौंड़ा अपन गाम पहुंचल । ओ मोटरी-चोटरी, टाका-पैसा के सम्हारि कें रखलकें आ छौंड़ी के एगो घर मे बन्न क देलकै । फेर अपने बहरा एगो बिलाड़ि मारि अनलक आ ओकरा एगो बांस पर टाङि देलक । सांझ पड़ैत-पड़ैत ओहो छबो गोटे जुमि गेलै । छौंड़ा दौड़ि कें सभक स्वागत कएलक आ कहलकै जे ओ हुनका लोकनिक संग ठट्ठा केने छल - तें बिसरि जाथि । ओ राति बीच रहबाक आग्रह केलक । सभक पैर-हाथ धोआ एगो घर मे बैसओलक । अपने भनसाघर मे चुल्हापर तबा चढ़ा उपर मे एक डाबा पानि भरि टाङि देलक । डाबाक पेन मे कने भूर क देलकै जाइ सं पानि ठोपे-ठोपे खसैत रहै । धीपल तबा पर पानि खसने छन-छन होइ । ओमहर छबो सोचय जे ओकरे लोकनि लेल नीक-निकुत बनि रहल छइ । ता ककरो नजरि बांस पर टाङल बिलाड़ि पर पड़लै । छौंड़ा आयल त मामा पुछलकै—भागिन ई की ?

छौंड़ा बाजल—की पुछै छी मामा । एइ देशक राजाक आदेश भेलैए जे जकरा राति-बिराति पेट झड़तै, कपड़ा-लत्ता मे नदी-लगही हेतै, तकरा मारि कें एहिना लटका देल जेतै । एतबा सुनिते त जेना सभ के पाद-उकासी बन्न । सभ सोचलक नीक-निकुत खेनाइ के मुह मारी । के जानय जे पेट खराप भ जाय । बाटक गरमी अहिए । सभ रातुक भोजन बन्न करबा देलक ।

सभ जखन निन्नभेर छल, ओ छौंड़ा खरि घोरि सभक कपड़ा मे लगा देलक । निन्न टुटिते सभक जखन नजरि पड़लै त लंक लागि पड़ाएल ।छौंड़ा ओइ छौंड़ीक संग वियाह केलक आ चैन सं रहए लागल ।

ꕥꕥꕥ

चिल्हो - सियारो

बहुत दिन पहिनेक बात । नर्मदा नदीक तीरपर एगो विशाल पीपरक गाछ छलै । ओइ गाछ पर अपन खोंता बना चिल्हो रहैत छलि । गाछक नीचा धोधरि मे सियारो रहैत छलि । एक संग रहबाक कारणे दुनू मे बहिना लागल छलै । जितिया दिन लगक गामक महिला लोकनि ओहीठाम आबि पूजा करथि आ कथा सुनथि । देखा-देखी एक खेप चिल्हो आ सियारो जितियाक उपास रखलनि । दिन भरि त बड़ दीब खेपलनि लोकक संग कथा सुनलनि मुदा राति होइते सियारोक मन छटपट करय लगलनि । ओमहर समय सेहो विकराल भ गेलै । बेरिये सं बिहाड़ि-बसातक संग पानि आरंभ भेलै ।

ओही दिन नगरक शेठक एकमात्र बेटा मरि गेलै । संस्कार लेल नदी तीर पर आनल गेलै । लग-पासक कोनो गाम मे केओ मरैत छलै तकर अंतिम संस्कार नर्मदे तीर पर होइत छलै । मुदा समय तेहन विकराल भ गेलै जे संस्कार मे आयल लोक सभ के बीचहि मे छोड़ि पड़ा जाय पड़लै ।

ओमहर गाछक धोधरि सं सियारो सभ टोहि लैत छलि । ओकरा भूख बर्दास्त नहि भ रहल छलै आ ताइपर अधजरुआ मुर्दा देखि ओ अपना के रोकि नहि पाबि रहल छलि । ओ मने मन सोचलक जे किए ने कने हार-माउस नोचि आनय । के देखतै । तैखन चिल्होक बात मोन पड़लै । ओ जागल अछि ने सूति रहल से जनबाक लेल ओ आवाज देलक—हे बहिना, जागल छह ने सूति रहल ? दू-तीन बेर आवाज देलाक बादो चिल्हो कोनो जवाब नञि देलकै, जखन कि ओ जागले छलि । असल मे ओ सियारोक सोभाव सं नीक जकां परिचित छलि आ तें ओकरा मना केने छलै जे जितियाक उपास बड़ भारी होइ छइ ओकरा सं पार नञि लगतै । मुदा सियारो के तकरे आनि लागि गेलै आ ओ उपास राखि लेलक ।

सियारो बिचारलक जे चिल्हो सूति रहल । ओ पयर दबने धोधरि सं बहरा नदी-तीर पर पहुंचल आ अधजरुआ मुर्दाक एक हाथ नोचि ल अनलक । धोधरि मे बैसि जखन खाइत रहए त हाड़ कड़कड़ेबाक आवाज ओहिना चिल्हो के सुनाइ पड़ै । ओ ओतै सं पुछलकै—हे बहिना, किछु खाइ छ ? ई आवाज कथिक होइ छइ ?

सियारो बाजलि—छी - छी ! हे बहिना एहन बात तों सोचबे केना केलह । ई त जारे हमर हाड़ कपैए, दांत खटखटाइए—तकरे आवाज सुनाइ पड़ै छ ।

बेचारी चिल्हो करबे की करैत । चुप भ गेलि ।

भिनसरे ओ उठल आ नहेबा लेल नदी क विदा भेल त सियारो के सेहो आवाज देलकै । ओ त मनुक्खक माउस खा निसभेर सूतल छलि । कते चिकरलाक बाद सुनलकै। चिल्हो अगुआ गेलि । नदी तीर बैसि चिल्हो दतमनि करैत छलि तैखन धरफरैल सियारो जुमलै । एकरा मुह मे शोणित देखि चिल्हो पुछलकै—हे बहिना, ई की ? तोरा मुह मे शोणितक दाग ?

सियारो कहलकै—दतमनि करैत काल दांत मे चोट लागि गेल आ शोणित बहय लागल ।

चिल्हो के संदेह त छलैके मुदा की बाजत । दुनू नहा क आपस आयल । स्त्रीगण द्वारा छिड़ियाओल अक्षत अंकुड़ी ल पारन केलक । ओही साल कुंभक मेला लगलै आ चिल्हो जेबाक नेयार केलनि । सियारो जखन सुनलक त ओहो जेबा लेल तैयार भेल । दुनू बहिना कुंभ पहुंचलि । संयोग सं ओहीठाम दुनूक मृत्यु भ गेलै । कुंभ मे मृत्यु हेबाक कारणे एक ब्राह्मण बेटीक रूप मे दुनूक जन्म भेलै । ब्राह्मण बड़का पंडित आ धर्मनिष्ठ रहथि । जौंआ बेटी पाबि ओ वेश प्रसन्न भेलाह आ आदर पूर्वक दुनूक नामकरण कएलनि । चिल्हो जे जेठ छलथिन हुनकर नाम शिलावती ओ सिआरोक नाम कर्पूरावती राखल गेल । आस्ते-आस्ते दुनू नमहर भेली । देखबा-सुनबा मे त दुनू उपरा-उपरी मुदा सोभाव एक दोसराक विपरीते । शिलावती गुरूजनक सेवा-सत्कार, धर्म-कर्म मे मन देथि मुदा कर्पूरावतीक लेल धन-सन । ओ झगड़ाउ आ दुष्ट स्वभावक रहथि । फेर दुनूक वियाह भेल । शिलावतीक वियाह महामत्तक नामक रूप-गुण सम्पन्न व्यक्तिक संग आ कर्पूरावतीक मलयकेतु राजाक संग भेल ।

समय बीतैत गेल आ दुनू बहिनी के सात सातटा बालक भेलनि । शिलावतीक सातो बालक रहबे केलनि मुदा कर्पूरावतीक एकोगो सन्तान नहि बचलनि । ६ मास बर्खदिनक भीतरे सभ मरैत गेल । अपन सन्तानक मृत्यु सं ओ जते दुखी छली ताइ सं बेसी जेठ बहिनक संतान के जीवित देखि । अन्त मे ओ ओकरा लोकनि के मरबेवाक चालि चलली।

ओ अपन सुतबाक घर मे भीतर सं बिलैया लगा पड़ि रहली । केओ कतबो केबार पीटय ओ कोनो जवाब नञि देथि । अन्त मे महराज अपने जुमला । कते आवाज देलाक बाद भीतर सं रानी कहलथिन—जं अहां सत्त करी त हम केबार खोलब ।

बहुत उचिती-मिनती सं जखन काज नञि भेल त राजा कहलथिन—एक सत्त, दोसर सत्त, तेसर सत्त । अहांक कहल जे नञि करय से असीकुंड नर्क मे पड़ए । आबो त खोलू ।

रानी केबार खोललनि आ राजा के कहलथिन जे हमरा महामत्तकक सातो बेटाक माथ चाही आ सेहो आइए । ओ लोकनि घोड़ा पर चढ़ि एही बाटे नग्र सं बाहर गेलए—जाइ सं जीवित घर नञि घुरि पाबए ।

महाराज त ई बात सुनिते माथ पकड़ि बैसि रहला । कने स्थिर भेलाक बाद कहलथिन—छी-छी-छी महारानी । ई केहन अहांक बुद्धि । ओ सभ अहांक जेठ बहिनीक सन्तान थिक । अहां ओकर मौसी छिऐक आ मौसी त माइए सन होइत छैक । ओहो सभ अहां के कतेक स्नेह-सम्मान दैत अछि........। जानि ने पछिला जन्मक अहांक कोन पापक फल थिक जे सात बेटा भइयो कें निःसन्तान भेल छी !

रानी बजली—अहां सत्त केने छी । आब तकर पालन करी वा नहि से अहां जानी मुदा हमरा ज्ञान देबाक प्रयोजन नञि । एतबा कहि ओ फेर मुह झांपि पड़ि रहली ।

राजा के त सांप-छुछुन्नरि वला हाल भ गेलनि । ओ मन मसोसि के चंडाल के बजओलनि आ सातो भांइक माथ आनि रानीक सामने देबाक आदेश द बहरा गेला ।

चंडाल सभ आदेशक पालन केलक । रानी कर्पूरावती सातो माथ कें सात डाला मे सजा लाल कपड़ा सं झांपि बहिनक ओइठाम पठा देलथिन्ह । संगे इहो समाद जे सातो पुतोहु अपन सासुक संग जितिया उपास केने हेती । ई हुनके लोकनिक पारन लेल पठाओल गेल अछि ।

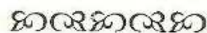
शिलावती ठीके अपन सातो पुतोहुक संग उपास केने छली । ई तकरे चमत्कार छल जे ओ सातो माथ नारिकेर मे बदलि गेल । संयोग सं पारन सेहो नारिकेरे सं होएबाक छलै । एमहर सातगो डाला पहुंचल आ पछेलागल सातो भांइ घोड़ा चढ़ल जुमलाह । मौसीक डाला पठेबाक बात सुनि हुनको लोकनिक आनन्दक सीमा नञि रहल । ओमहर रानी कान पतने छली जे कखन बहिनीक अङना सं कन्ना-रोहटिक आवाज आओत । मुदा आएल घोड़ा उड़बैत सातो भांइ मौसीक आशीर्वाद लेबा लेल । रानी त आर तामसे माहुर भ गेली । बहिनपुत सभ के गेलाक बाद ओ राजा के बजा पुछलथिन जे ओ माथ ककर छल । ई सातो भांइ त जीविते अछि ।

राजा कहलथिन—माथ ककर छलै से त अहां अपने आंखिए देखने रही । अहांक बहिन खरजितिया केने छथि तें हुनकर सन्तान के कुशक कलेपो ने लागि सकैत छनि । नीक हएत जे आबो अहां अपन सोभाव बदलू ।

अगिला साल कर्पूरावती सेहो जितियाक उपास रखलनि । ओ एगो खबासिन दिआ बहिन के समाद पठओलनि जे एके संग पूजा करती आ कथा सुनती । शिलावती के हंसी लगलनि । ओ कहलथिन जे कर्पूरावती रानी छथि । ई उपास हुनका बुते पार नञि लगतनि। लौल नञि करथि सएह नीक ।

खबासिन ई बात जखन कर्पूरावती के कहलथिन त ओ आर तमसा गेली । ओ जिद्द ठानि उपास केलनि आ पूजाक संगहि पारनोक जावन्तो समान लेने शिलावतीक ओइठाम पहुंचली । शिलावती बहिनक यथाजोग सम्मान करैत एबाक कारण पुछलथिन । कर्पूरावती ओहिना रुक्ख भाषा मे कहलथिन जे हमहूं जितिया उपास केने छी आ अहींक संग पूजा-पारन करबाक निश्चय सेहो ।

शिलावती ओहिना शान्त भावें बुझबैत कहलथिन—अहां रानी छी, तें हम कहल जे अहां सं ई पार नहि लागत । ओनहुना पूजा-उपास करै सं पहिने मन के पवित्र राखब आवश्यक । तें हमर विनती जे अहां पहिने अपन अहंकार आ दुष्टताक त्याग करू, मन के उदार करू । ओना जखन अहां निश्चय कइए क आयल छी तखन अबस्से हम अहांक संग पूजा-पारन करब । मुदा मन राखू अहांक पछिला जन्मक पाप अहू जन्म संग नहि छोड़लक। इएह उपास तोड़लाक फल थिक जे सात-सात टा सन्तान के जन्म देलाक उपरान्तो अहां निःसन्तान छी । आ फेर शिलावती हुनका पछिला जन्मक खिस्सा सांगोपांग कहि सुनौलथिन। कर्पूरावती कनैत अपन बहिनीक पएर पर खसली आ फेर उठि नहि सकली । तें कहल जाइ छइ जे जेहन चिल्हो के भेलनि तेहन सभके होइ, जेहन सियारो के भेलै तेहन ककरो जुनि होइ ।



शीत-बसंत



बहुत दिन पहिने चन्द्रकेतु नामक एगो राजा रहथि । ओ बड़ एकबाली रहथि। परोपट्टा मे हुनक नाम-जस पसरल छल । हुनक रानी सेहो जेहने सुन्नर तेहने शील-सोभाव । नाम रहनि चन्द्रप्रभा । हुनका लोकनि के दू गो बेटा छलनि—शीत आ बसंत । दुनू भाइ देखै सुनै मे उपरा-उपरी । अपन माइए-बाप सन रूप गुन । बच्चे सं ओकरो लोकनिक चर्च चारूदिस होमए लगलै ।

एक दिन बेरियाखन रानी चन्द्रप्रभा अपन फुलबारी मे बैसल छली । लगे मे एगो छोटसन मंडपछलै जकर एक कोन मे एगो बगड़ा-बगड़ीक खोंता छलै । बगड़ी दूगो अंडा देने छल से ओकरा सेबने आ बगड़ा एमहर-ओमहर फुदकैत । कने कालक बाद बगड़ी बगड़ा सं कहलकै—अए सुनै छी ?

बगड़ा कहलकै—की बात ? अहां कतौ जाएब की ?

बगड़ी बाजल—नञि से बात नञि । हमर एगो कहल करब ?

बगड़ा कहलकै—अहांक कोन कहल हम नञि करै छी । कहू ने की चाही ?

बगड़ी कहलकै—हम जं कदाचित मारल जाइ त अहां दोसर बियाह जुनि करी । सुनै छिऐ जे सतमाय धीया-पुता के बड़ उछन्नड़ दै छइ ।

रानी चन्द्रप्रभा सभ गप सुनैत छली । किछु दिनक बाद अंडा सं बच्चा भेलै आ फेर एक दिन ठीके बगड़ी लटुआ क खोंता सं खसि पड़ल आ मरि गेल । बच्चा दुनू चुन-चुन करिते रहलै । तकर दुइए दिनक बाद ओ बगड़ा कतौ सं एगो बगड़ी के बझा अनलक । रानीक उद्वेग जेना दिन-दिन बढ़ले जाइन । आब ओ नित्तहु फुलबारी मे आबए लगली । ओ लक्ष केलनि जे ई बगड़ी बच्चा सभके दाना खुएबाक बदला हरदम चोंच मारैत रहैत छइ। आ एकदिन ओ दुनू बच्चा के मारि निच्चा खसा देलकै । दुनू सोणिते-सोनितान भेल।

रानी सिहरि गेली । ओ एगो कनखा सं ओकरा झांपि महल घुरि एली आ जा क पलंग पर पड़ि रहली । एहि-रहि क ओ दृश्य जेना हिनका नजरिक सोझा नाचि जाए आ ई सिहरि उठथि । बगड़ीक बात जेना हिनका कान मे सदिखन गुंजैत रहनि । ई तहिया सं कोनो बाचीत नञि करथि । घरो सं बहरेनाइ छोड़ि देलनि । ओमहर महल मे हल्ला भ गेल जे रानी चन्द्रप्रभा दुखित छथि । ओझा-गुनी-वैदक लेन लागि गेल, मुदा रोगक केओ निस्तुकी कइए ने पबैत छल ।

एकदिनक बात छइ । राजा रानीक सिरमा मे उदास बैसल रहथि । ओ रानी कें कहलथिन—महारानी, एक सं एक ओझा-गुनी के हम बजाओल, मुदा केओ रोगक निस्तुकी नञि क पओलनि । अहां किछु बजिते ने छी । बच्चा सभ सेहो उदास पड़ल रहइए । ओकरो सभक बात सोचि त किछु बाजू ।

रानी करौट फेरलनि आ निसास छोड़ैत बजली—जं अहां सरिपहुं जानए चाहै छी त पहिने सत्त करु तखने हम किछु बाजब ।

राजा के त जेना जान मे जान एलनि । ओ तुरत्ते बजला—एक सत्त, दोसर सत्त, तेसर सत्त, अहांक बात जे ने मानए से असीकुंड नर्क मे पड़य । बाजू, बाजू की चाही अहां के ।

रानी आस्ते सं उठली आ राजा के नेंने फुलबारी गेली । ओइठाम कनखा सं झांपल बगड़ीक दुनू मुइल गेल्ह के देखबैत कहलथिन—देखै छी ?

राजा कहलथिन—हं, मुदा एकर मतलब ?

रानी कहलथिन—ई सतमाइक किरदानी छइ । आ फेर ओ पूरा खिस्सा राजा के सुना कहलथिन—तें हमर प्रार्थना जे हमरा जं किछु भ जाय, मरि-हरि जाइ, त अहां दोसर बियाह नञि करी ।

राजा बजला—एइ छोट-छीन बात ले अहां एतेदिन सं ओछैन धेने छलौं ! आ अहां मरबे किए करब—मरओ अहांक मुद्दै ।

रानी बजली—जिनगीक कोन ठीक । के जानए ककरा कखन की होएतैक ।

आ भेवो कएल सएह । राजा सं सत्त करेलाक बादो जेना रानीक मनक शान्ति नञि फिरलनि । ओ दुखित पड़ि गेली आ किछु दिनक बाद मरि गेली । रानीक मुइलाक बाद राजा सेहो उदास रहए लगला । राज-काज मे जेना मने ने लगनि । दरबारो गेनाइ छोड़ि देलनि । ओमहर राजाक अवस्था देखि मंत्री लोकनि से चिन्तित रहए लगला । अन्त मे ओ लोकनि बिचारलनि जे राजा के दोसर बियाह करा देल जाइन, मन दोसर रंग हेतनि ।

राजा लग जखन ई प्रस्ताव राखग गेल त ओ सोझे नटि गेला । हुनका रानी चन्द्रप्रभाक बात मन पड़ि गेलनि । ओमहर मंत्री सभ सेहो दिन-राति एही प्रयास मे लागल रहल आ शेष मे राजा के राजी होमए पड़लनि । पड़ोसी राजाक बेटी चन्द्रमणि सं हुनक

बियाह भेल आ महल मे नव रानी आबि गेली । ओना बियाह सं पहिने ओ शीत-बसंतक हेतु फराक व्यवस्था सेहो क लेने रहथि आ हुनको लोकनि के अपना परोक्ष मे महल मे नहि जेबाक बात कहलथिन । शीत-बसंत पिताक आज्ञा अनुसारे काज करैत रहल ।

रानी चन्द्रमणि नहिरे मे शीत-बसंतक मादे सुनने छली । ओ मने-मन बसंत सं बियाहक सपना देखैत छली तें एइ बियाह सं खुसी नञि छली । महल मे दिन-राति जेना हुनक आंखि बसंते के तकैत हो । एक दिन ओ नहाइ छली तखने एगो गेन हुनका सामने मे खसल । ओ गेन शीत-बसंतक छल । ओ सभ अपन संगी-साथीक संग बाहर खेलाइ छल तखने गेन उड़ि क ओइकात चल गेलइ । महलवाली बात - तें सभ संगी जोर केलक जे शीते जा क गेन आनओ । बापक मनाहीक बात ओकरा मने छलै, मुदा संगी सभक जिद, मन-मसोसि क जाए पड़लै । ओमहर रानी त तामसे लाल भेल । जखन शीतक परिचय भेटलनि त ओ बसंत के पठेबाक बात कहलथिन जे गेन ओ केवल बसंते के द सकैत छथिन । शीत घुरि कें ई बात सभके कहलकै । हारि क बसंत के जाइए पड़लै ।

बसंत महल जा रानीकें कहलकनि—मा, गेन दिय ने, हम सभ खेलाएब । रानी जेना किछु सुनबे ने केलनि । ओ त एकटक बसंत के निहारैत छली । ओकर रूप सं मोहित भ गेल छली आ अपन सपना मे डूबि गेल छली । ओ बसंत के नेने अपन सुतबाक घर मे गेली आ खेलेबाक छले पलंग पर बैसै लेल कहलथिन ।

बसंत कहलकनि—अहां हमर मा छी—धर्मक मा । हम अहांक पलंग पर केना उठि सकैत छी । ई बात अहूं के शोभा नहि दैए । आ ओ घर सं बहरा गेला ।

अपन इच्छाक पूर्ति नञि भेने रानी त चोटाएल सांप जकां फोफकार क उठली । ओ तुरत्ते नौड़ी के बजओलनि आ ओकरा कुम्हारक ओइठाम सं थोड़े कान-खापट आनै लेल कहलथिन । नौड़ी कनिञे काल मे आनि देलकनि । ओ पलंग पर ओछेनाक तर मे ओकरा पसारि ओइ पर पड़ि रहली आ नौड़ी के कहलथिन जे राजा के समाद दहुन जे रानी के बड़ जोर मन खराप छनि, एखने बजबै छथि । समाद पबिते राजा दौड़ला । ओ रानी के पुछलथिन जे की होइत छनि । रानी एहि कर सं ओहिकर होथि आ कान-खापट कर-कर करए । ओ अपनो आहि-उहि करैत । राजा वैदराज के बजेबाक बात कहलथिन त ओ मना क देलथिन । कहलथिन जे हमर रोगक दवाइ कोनो वैद नञि क सकैत छथि । एकर एकेटा दवाइ छैक से अहां ज सत्त करी त कही । राजा बेचारे रानीक मनक बात की जानए गेला । हुनका त रानीक अवस्था देखि चिन्ता छलनि । बजला अहां हमर स्त्री छी । हमरा अहां मे कोन सत्त । तैयो जं अहां नञि मानब त लिअ—एक सत्त, दोसर सत्त, तेसर सत्त, अहांक कहल जे नञि करए से असीकुंड नर्क मे पड़ए ।

रानी कहलथिन—हमरा शीत आ बसंतक कोंढ़-करेज चाही । हमर रोगक उएह दवाइ छी ।

एतबा सुनिते त राजा माथ पकड़ि ठामहि बैसि गेला । हुनका रानी चन्द्रप्रभाक बात मोन पड़लनि मुदा बात त हारि चुकल छलाह । ओ चंडाल के बजा आदेश द घर सं बहरा गेला ।

चंडाल सभ शीत-बसंत के ल क विदा भेल । बाट मे अपना मे बतिआए—एहनो कोनो रोग भेलैए जे बच्चाक कोंढ़-करेज स छुटतै ! ई रानी नहि कसैनी छी । रानी छली बड़की रानी । जेहने रूप तेहने सोभाव । बचन सं जेना अमरित खसैतरहनि । सुआइत राजा साहेब बियाह ले राजी नञि होइ छला । लोक ध-बान्हि क हुनका बियाह करा देलकनि । बड़की रानी त चलिए गेली, आब एइ सोन सन नेनाक बिना उएह केना रहता।

एहिना बतिआइत ओ सभ सघन जंगल मे पहुंचि गेल । शीत-बसंतक मुह दिस देखि ककरो साधंस नहि होइक जे मारतै । मुदा डरो होइ जे छोड़ि देने कालि कहीं भेद खुजि गेलै त बाले-बच्चे भाकसी झोका देतै ओ रानी ।

शीत-बसंत सेहो चंडाल सभक बात सुनैत छल । ओकरा माइक देल लाल मन पड़लै । ओ कहलकै—हे चंडाल लोकनि, हमर पिता कोन अवस्था मे अहां लोकनि के आदेश देलनिहें से त सभ गोटे जनिते छी । हम इहो बुझैत छी जे अहां लोकनि के हमर वध करैक इच्छा नहि अछि । तें हमर निवेदन जे हमरा दुनू भाइक जान बकसि दिअ । बदला मे हम दू गोट लाल दैत छी । ई लाल हमरा माइ देने छल जे बेर-बिपत्ति मे काज आओत। हमरा बदला मे अहां लोकनि कोनो नढ़ेया-खिखिरक कोंढ़-करेज ल जा नवकी रानी के द देबनि । ई बात ककरो कानो-कान ने पता चलतै कारण हम दुनू भांइ ई देश छोड़ि कतौ आनठाम चलि जाएब ।

ओइ मे जे सभ सं बुढ़ चंडाल छल से सभके बुझाओलक—ठीके त कहै छथुन राजकुमार आ दुगो लाल मे त हमरा सभक जिनगीए बनि जाएत ।

बुढ़बाक बात सभ मानि गेलै । दू गो नढ़या मारि तकर कोंढ़-करेज ल ओ सभ रानी लग हाजिर भेल । रानी फुरफुरा कें उठली । ओमहर शीत-बसंत के जंगल मे चलैत-चलैत राति भ गेलै मुदा जंगल शेष नञि भेल । थाकल-ठेहिआएल दुनू भाइ एगो गाछतर सूति रहल ।

पहर राति बितलै तखन कोनो सांप आबि बसंत के डसि लेलकै । परात भेने जखन शीतक निन्न टुटलै त ओ बसंत के बेहोश देखि सोचलक जे ओ मरि गेल । शीत अपन माथ-कपार पीटि कानय लागल । फेर सोचलक जे जखन विपत्तिए पड़ल छइ तखन उपाय की । भाइक अंतिम संस्कार त करै पड़तै । ओ कनैत तकरे जोगार मे विदा भेल ।

ओहि समय विध-विधाता उड़ल जाइत रहथि । विध के बसंत पर नजरि पड़लनि। ओ विधाता के कहलथिन—हे विधाता, ई सोन-सन बच्चा एहि सघन जंगल मे मुइल पड़ल अछि । ई केहन विधान अहांक ! एकर कोनो द्वारा नञि छइ की ?

विधाता कहलथिन—हे विध, जीवन-मरण लोकक जन्म सं पहिने लिखा जाइ छइ । ताइ मे फेर-बदल करब हमरो शक मे नहि अछि ।

विध बजली—हम त से नञि मानब । अहां पुरुख छी । अहांक छाती कठोर अछि मुदा हमरा ई देखल नञि जाएत । पता ने एकर माय-बाप के-कतय छइ । तें पहिने एकरा जिआ दिऔ तखने हम आगू बढ़ब ।

विधाता बजला—एकरे कहै छइ तिरिया लटाढ़म । हे, ई बच्चा कोनो साधारण बच्चा नहि थिक । ई राजा चन्द्रकेतु आ महारानी चन्द्रप्रभाक बेटा बसंत थिक । अपन सतमाइक कुचक्रक कारणे आइ एकर ई हाल छइ । ओना एकरा राजजोग लिखल छइ तें ई मरि नञि सकैए । कोनो छोट-छीन सांप-कीड़ा काटि लेलकै आ ई बेहोश भ गेल अछि। घड़ी-पलघड़ी मे अपने उठि जाएत ।

विधाता एतबा बजिते छथि ता बसंत करोट फेरलक । विध के विश्वास भ गेलनि जे बच्चा जिविते छइ आ ओ लोकनि आगू बढ़ि गेला ।

बसंत उठला त भाइ के नञि देखि चिन्ता भेलनि । ओ कतबो आवाज देथिन मुदा कोनो उत्तर नञि भेटनि । हारि कें ओ मन मारने विदा भेला । चंडाल सभ के देश छोड़बाक देल बचन मन पड़लनि ।

बसंत जाइत-जाइत एक दोसर राज मे पहुंचि गेला । ओइठाम एगो मेला सन लागल देखलनि । सहटि कें ओइठाम जुमलाह । ओ राजकुमारी नीलमनिक स्वयंबर सभा छलै । देश-देशक राजकुमार सभ आएल छलै । एगो मकुना हाथी सुंढ़ मे बड़का माला लेने घुमि रहल छलै । बसंत एक कात बैसि देखए लगला । ओमहर ओ हाथी चारूभर चक्कर लगा हिनका लग आबि ठाढ़ भेल आ हिनके गरदनि मे माला पहिरा देलकनि । ओमहर लोकसभ हल्ला केलक—हाथी बौराएल - हाथी बौराएल । असल मे बसंतक बगै-बानियों त तेहने भ गेल छलनि । लोक हिनका कोनो भिखारि बुझि लेलक । दोसर बेर फेर हाथी के माला देल गेलै । हाथी फेर घुमैत-फिरैत आबि बसंत के माला पहिरा देलक । फेर हल्ला भेल आ फेर हाथी के नव माला देल गेलै । हाथी तेसरो बेर एहिना केलक । फेर हल्ला भेल । तखन राजकुमारी स्वयं ठाढ़ भेली आ सभकें शान्त होएबाक आदेश दैत बजली—तीन सत्ते सत्त होइ छइ । हाथी बताह नञि अछि आ ने ओ बौराएल अछि । तीनू बेर ओ एके व्यक्तिक गरदनि मे माला पहिरओलक । हम नहि जनैत छी जे ई व्यक्ति के छथि आ कतए सं आएल छथि, किन्तु एतेधरि सत्य जे हमर बियाह हिनके संग लिखल अछि । एहि मे किनको आपत्ति नहि हेबाक चाही ।

वेश धुमधाम सं बियाह भेल । राजकुमारी बसंत के चिन्हैत त नहि रहथिन मुदा हुनकर मनकामना छलनि जे बसंते सं बियाह होनि । ओ नित्तहु महादेवक पूजा क इएह वर मडैत छली से हुनक मनकामना पूरा भेलनि । बाद मे बसंतो कनिञा के अपन परिचय

देलथिन मुदा ई बात ओ कतौ बाजथि नहि सेहो कहलथिन । राजकुमारी के जखन बसंतक परिचय भेटलनि त आनन्दक सीमे नहि ।

राजकुमारीक माय बच्चे मे मरि गेल छलथिन आ बियाहक किछुए दिन बाद बाप सेहो विदा लेलथिन । दोसर कोनो भाइ-बहिन रहथिन नहि । एमहर कनिञे दिन मे बसंतक शील-सोभावक सभठाम चर्चा होमए लागल छल । तें मंत्री-अमला सभक विचार सं बसंत के राजा घोषित कएल गेल ।

ओमहर शीत जखन भाइक अंतिम संस्कारक जोगार क घुरला त भाइ के नहि देखि कानए लगला आ कनैत-कनैत भाइक खोज मे विदा भेला । जाइत-जाइत ओ एगो नदीकात मे पहुंचला । ओइठाम देखलनि जे एगो बड़कीटा जहाज लागल छैक ओ ओइ मे बहुत रास लोक छैक । जहाज बेपार लेल जाइत रहै । शीत ओकर मुखिया लग जा नोकरीक सिफारिस केलनि । मुखिया मानि गेल आ ई ओकर सभक संग विदा भ गेला ।

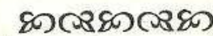
जहाज दू बर्खक बाद घुरल । ओ जहाज बसंतक छल जे आब राजा छला । जहाज पहुंचबाक सूचना पाबि ओ अपने तीर पर उपस्थित छला । जहाज पर सं शीतक नजरि बसंत पर पड़लनि । ओ अपन भाइ के चिन्हि गेलाह । हुनका बसंतक राजा होएबाक अथवा जहाजक मालिक होएबाक बात बुझल नञि छलनि । बसंत फेर ने हेरा जाथि सोचि ओ नदी मे कूदि गेला । ओमहर बसंत देखलनि जे केओ नदी मे खसि रहलए । ओ फानि के ओकरा पकड़लनि । दुनू भांइ नदी मे उबड़ब करैत एक दोसरा के चिन्हलनि । नदी सं बहार भए महल जाइत गेला । शीत के भेटबाक खुशी मे राजा बसंत उत्सव केलनि आ फेर दुनू गोटे चैन सं रहए लगला ।

किछु दिनक बाद पड़ोसी राजक राजकुमारी लालमनिक स्वयंवर छलै । बसंत शीत के ओहिठाम पठओलनि । राजकुमारी हिनके गरा मे वरमाला देलथिन । असल मे ओहो रोज गौरी पूजा करैत छली आ वरक रूप मे शीतक कामना करैत छली । थोड़े दिनक बाद राजा मरि गेला आ शीत ओइ देशक राजा बनि गेला । एहि प्रकारें दुनू भाइ दू पड़ोसी राज्यक राजा बनि गेला आ आराम सं रहए लगला ।

शीत आ बसंत, दुनूक राज्य मे खुशहाली छल । हिनका लोकनिक वेश नाम-यश छलनि । ओमहर हिनका लोकनिक परोक्ष होइतहि राजा चन्द्रकेतु जेना आधा बताह भ गेला । पुत्रशोक मे दिन-दिन हुनक अवस्था बिगड़ैत गेल । राजवैद के जखन हिनक अवस्था ओ तकर कारणक पता चललनि त ओ हिनका छोटकी रानी सं साबधान रहै लेल कहलथिन । ओ कहलथिन जे एहन कोनो रोग अछिए नञि जे बच्चाक कोंढ़-करेज खेने छुटि जाए । मुदा ताबत बड़ देरी भ गेल छल । राजा ओछाएन ध लेने छला आ राजकाज रानी चलबए लागल छली । प्रजा मे सेहो असन्तोष बढ़ि रहल छलै । कात-करोटक रजबाड़ा सभ चन्द्रकेतुक अवस्था सं उत्साहित भ हिनका राज पर चढ़ाइ क देलक ।

शीत-बसंत के जखन पता चललनि त ओ लोकनि अपन-अपन सेनाक संग जुमला । घमसान लड़ाइ भेल आ अंत मे दुनू भांइक जीत । थोड़-बहुत रजबाड़ा सभ त पड़ा गेल, थोड़ेक बन्दी बनाओल गेल । रानी के सेहो महल मे बन्दी बना राखल गेल । फेर ओ लोकनि मंत्री-अमलाक संगहि प्रजा सभ के सेहो सभा मे बजओलनि । एहि लेल नग्र मे डिगडिगिया पिटाओल गेल छल । शीत आ बसंत प्रजा के सभ खिस्सा कहैत रानीक संग केहन वेबहार हेबाक चाही से विचार पुछलथिन । सभ एके बेर रानी के मृत्युदंड देबाक घोषणा कएलनि । शेष मे दुनू भांइ अपन पिता सं विचार पुछलनि । ओहो सएह कहलथिन। ओ बजला जे ई रानी नञि राक्षसी छथि, चंडालिनी छथि तें हिनका ओहने दंड देल जाए जाइ सं फेर कोनो सतमाय अपन सतौत संग एहन व्यवहार करैक साहस नञि करए ।

अन्त मे चंडाल के रानीक बधक आदेश देल गेलैक । शीत-बसंत अपन-अपन राजक संगहि पिताक राज-काज सेहो सम्हारए लगला ।



हंसराज-वंशराज

□

बहुत दिन पहिनेक बात छइ । कोनो एक गाम मे दू भाइ रहैत छल । दुनू मे बड़ मिलान । जतए-कतौ जाइत, दुनू संगे जाइत । जे किछु खाइत-पीबैत दुनू संगे खाइत-पीबैत । नाम रहै हंसराज आ वंशराज ।

एक बेर दुनू भाइ नेआरलक जे किए ने देश-विदेस घुमल जाए । दुनू के घोड़ा रहै। दुनू घोड़ा पर चढ़ल आ विदा भ गेल । जेम्हरे घोड़ा दौड़लै - दौड़ाबैत गेल ।

जाइत-जाइत जखन बड़ी दूर गेल त दुनू थाकि सन गेल । सोचलक जे किए ने कने आराम क लेल जाए । इएह सोचि दुनू घोड़ा सं उतरि गेल आ लगैक एगो पीपरक गाछतर पड़ि रहल । घोड़ा दुनू के चरै ले छोड़ि देलकै । थाकल रहबे करय आ ताइ पर सं ठंढा बसात दुनू के आंखि लागि गेलै । बेर जखन खसलै त वंशराजक निन्न टुटलै । ओ हंसराज के उठेबाक चेष्टा कएलक मुदा लाख चेष्टा केलाक बादो ओ नञि उठलै । असल मे ओइ पीपरक धोधि मे एक जोड़ी सांप रहै छलै जाइ मे सं कोनो सांप ओकरा डसि लेने छलै । वंशराज अपन भाइ के नञि उठलापर बुझलक जे ओ मरि गेल । ओ बफारि काटए लागल । कनैत-कनैत अपसियांत भ गेल । ओमहर दिन सेहो लगचिएल जाइ छलै । ओ सोचलक जे भाइक अंतिम संस्कार त हेबाक चाही । सएह सोचि तकर ओरियान मे ओ विदा भेल । कनिञे दूर पर एगो गाम छलै । ओ ओतै पहुंचल आ बाटक काते मे एगो पैघ मकान देखि ओकर मालिक लग सहायता लेल अरजी रखलक । ओ अपन सभ दुखनामा कहैत अपन घोड़ाक बदला किछु पाइ मङलकै जाइ सं ओ अपन भाइक किरिया-करम क सकए । मुदा ओ घरबैया छल महाचंठ आ धूर्त्त । ओ एकरा असहाय नेना बुझि पकड़ि लेलकै आ घोड़ा सेहो बान्हि लेलकै । ओ वंशराज सं भरिदिन बेगार खटबए आ लोक के कहै जे ओ एकरा कीनलकए । ओ एकरा पाछा लोक लगा दैत रहए जाइ सं ई पड़ा नञि पाबए ।

ओमहर हंसराज जाइठाम मुइल पड़ल छल ओही बाटे विध-विधाता उड़ल जाइत छला । विध के जखन एहि सुन्नर युवक पर नजरि पड़लनि आ पता चललनि जे ओ मुइल अछि त बड़ कचोट भेलनि । ओ विधाता के कहलथिन जे हे विधाता, ई अहांक कोन विधान ! एहन सुन्नर ई युवक एहि निर्जन वन मे मुइल पड़ल अछि । पता ने एकर माय-बाप के कतए छइ । ओकरा सभ के त पतो नञि चलतै ।

विधाता बजला—सुआइत कहै छइ मौगीक जाति । अरे ई मर्तभुवन छइ । एतए जे आयलए सभ एक ने एक दिन मरबे करत । केओ पहिने, केओ पाछां............

विध बजली—से अहां जे कही मुदा एकर उमेरे की भेलैए । देखियौ त, लगै छइ जेना सूतल हो आ अखने उठि बैसत । अहां पुरुष छी । अहांक छाती कठोर अइ । मुदा हम ! हम एकरा अइ हालत मे छोड़ि किन्नहुं नञि जा सकै छी । तें हमर मिनती अइ जे एकरा जिया दिऔ ।

विधाता विध के बड़ बुझओलथिन मुदा ओ नञि मानलथिन । अंत मे हारि कें ओ अपन कनगुरिया चीड़ि एक बुन्न अमरित खसा देलथिन जे हंसराजक मुह मे पड़लैक आ ओ राम-राम करैत उठि बैसल । फेर ओ अपन भाइ के खोजए लागल । एमहर-ओमहर चारूदिस खोजलो पर जखन ओ कतौ नञि भेटलै त सोचलक जे हो ने हो ओ एकरा सुतले छोड़ि केम्हरो सहटि गेल । हारि कें इहो अपन घोड़ा पर चढ़ि विदा भ गेल ।

हंसराज घोड़ा दौड़ाबए आ ओकर आंखि चारुभर चकुआइत रहैक मुदा ओकरा वंशराजक कोनो पता नञि चललै । एमहर राति सेहो भ गेल छलै आ ओहो थाकि गेल छल । बाटक काते मे एगो घर देखि ओ ओम्हरे अगुआएल । घर लग जाइते अछि ता आङन सं एगो बुढ़िया बहरेलै आ अपना दुआरि पर एते सुन्नर युवक के ठाढ़ देखि छगुन्ता मे पड़ि गेल । हंसराज जखन ओकरा राति बीच रहए देवाक बात कहलकै त बुढ़िया जेना खुशी सं नाचि उठल । ओ एकरा अरियाति आङन ल गेल, पएर-हाथ धोआ पटिया ओछा ओइपर बैसओलक आ फेर कानए लागल । बुढ़िया के एना कनैत देखि हंसराज के अचरज भेलै जे एखने त ओ कते खुशी छल, हंसै छल आ छने मे की एहन बात भेलै जे ओ कानए लागल । ओ बुढ़िया सं कनबाक कारण पुछलकै । पहिने त बुढ़िया आना-कानी केलकै मुदा हंसराजक जिद देखि ओकरा कहए पड़लै ।

बुढ़िया कहलकै जे ल द क ओकरा एगो बेटा छइ । आइए ओकर गओना छिऐ । जे घड़ी ने बेटा-पुतोहु जुमलै । जाहि दिनक लेल ओ कहिया स ने सपना देखै छल से दिन आबि गेल छइ आ ताहि शुभ घड़ी मे बिनु बजाओल हंसराज सन पाहुन सेहो—तें ओ हंसै छल । मुदा ई खुशी जे छनिक छइ - सएह सोचि कोंढ़-करेज कापि जाइ छइ आ ओ अपन नोर नुका नञि पबैए ।

हंसराज के बुढ़ियाक गप बुझै मे नञि एलै । ओ पुछलकै—गे मौसी, बेटा गओना

करा क अबै छौ, आङन मे पुतोहु रहतौ, फेर पोता-पोती हेतौ, आ तों तकरा छनिक कहै छही ।

बुढ़िया निसास छोड़ैत बाजल—बौआ, कहबी छइ ने जे दशमी बांचब तब मे शुकराती नाचब ।

हंसराज बाजल—गे मौसी साफ-साफ कह ने, हमरा त तोहर बातक कोनो अर्थ ने लगैए ।

बुढ़िया कहए लगलै—बाउ, एइ देशक राजा के एगो बेटी छइ । भगवाने जानथि ओ मनुक्ख छइ आकि राक्षसनी छइ । राजा के दोसर कोनो सखा-पात छइ नञि तें बेटी के बड़ मान-दान करै छइ । से कहै छी ओकर बियाह भेलै । राति मे जेना कनियां-बर घर मे सुतै छइ—ओहो दुनू सूतल । मुदा भोरे लोक देखलक जे बर मुइल पड़ल छइ । सगरो हल्ला भ गेलै । किछ दिनक बाद राजा ओकरा दोसरो बियाह करा देलकै । ओकरो उएह हाल । एहिना क जखन पांचटा राजकुमार के ओ राक्षसनी खा गेलै तखन कोनो राजकुमार ओकरा सं बियाह करए ले तैयारे ने होइ । राजा नगर मे ढिढोरा पिटबा देलकै जे जे केओ युवक राजकुमारी सं बियाह करए चाहैए तकरा एक राति राजकुमारीक कोठरी मे रहए पड़तै । जं ओ जीवि गेल त प्रात भेने राजकुमारीक संग बियाह करा देल जेतै । पहिने त दू-चारिटा युवक राजी भेल । राजकुमारीक संग राजाक उत्तराधिकारी बनबाक सेहन्ता । मुदा प्रात भेने ककरो जीबैत नञि पाओल गेल । फेर त केओ तैयारे नञि होइ । अन्त मे राजा पार लगा देलकै । सभ आङन सं एक-एक युवक एक-एक राति राजकुमारीक घर मे रहत। आइधरि त केओ ने बंचलै आ आइ हमरे बेटाक पार छइ । आब तोंही कह जे हम हंसी कि कानी ? बेटा गओना करा क अबैए आ ओकरा कोबर घरक बदला ओइ राक्षसनीक मुह मे जाए पड़तै.............।

सभ बात सुनि हंसराज कहलकै—मौसी, हम जखन तोरा मौसी कहलियौए तकर माने हम तोहर बहिनपुत भेलियौ । आ बहिनपुत त बेटाक समाने होइत छइ । तें तो निश्चिन्त रहै, आइ तोहर इएह बेटा राजकुमारीक पहरा करत । आ देखि लिहें जे कालि भोरे हम फेर हाजिर हेबौ ।

एते बात सुनिते जेना बुढ़ियाक अतमा खहरि गेलै । ओ बाजल—नञि रओ बाउ, से कोना हेतै ! अपन बेटाक बदला हम तोरा कालक मुह मे नञि पठेबौ । तोंहू त ककरो बेटे छही । ई पाप हमरा सं नञि पार लागत ।

हंसराज ओकरा बहुत बुझौलकै तखन जा कें बुढ़िया मानलक । ओ भगवान के गोहरओलक—हे भगवान, हमर धरमक रच्छा तोरे हाथ मे अइ । हमर बहिनपुत के जाइ सं कुशक कलेपो ने लागए...............।

हंसराज सोझे राजमहलक गेट पर पहुंचि सिपाही के कहलकै जे आइ उएह

राजकुमारीक पहरा करत । एकरा देखि सिपाही सभ के सेहो अचरज भेलै कारण आन-आन युवक जकां ई उदास आ मुह लटकओने नहि छल । ई त बेश प्रसन्न छल, हंसैत छल। राजमहल मे खबरि भेलै । हंसराज के नीक-निकुत भोजन करा सुतबाक कोठली मे पठा देल गेल । घर मे एकटा पलंग रहै, वेश पैघ । ओहीपर राजकुमारीक संग सुतबाक छलै । राजकुमारी सेहो एलै आ चुपचाप पड़ि रहलै । जखन ओ निन्न पड़ि गेलै त हंसराज ओसरो सं उठि, उतरि गेल आ अपना जगह पर एगो केराक थम्ह राखि देलक आ ओकरा चादरि सं झांपि देलक जाइ सं केओ बुझि नञि पाबए । केराक थम्ह आ तरुआरि ओ ओरिया क अपना संगे अनने छल । फेर ओ कने फराक जा बैसि गेल आ चारुभर नजरि खिरबैत रहल ।

जखन दोसर पहर राति बितलै त हंसराज देखलक जे राजकुमारीक नाक सं एगो सांप बहार भेलै आ बगल मे राखल केराक थम्ह, जे एन-मेन मनुक्खे सन लागि रहल छलै, के दू हबक मारलक । फेर घुरि ओ जखने नाक मे सन्हिएबा लेल बढ़ल कि हंसराज छड़पि अपन तरुआरि सं ओकरा दू खंड क देलक । फेर ओइ सांप आ केराक थम्ह के उठा पलंगक तर मे नुका रखलक आ अपने पलंग पर राजकुमारीक बगल मे सूति रहल ।

पओ फटिते सिपाही सभ खाट लेने पहुंचल जेना रोज पहुंचैत छल, लाश उठाबए लेल । मुदा आइ केबार भीतर सं बन्न देखि ओकरा पीटए लागल । जखन बड़ पीटलक तखन हंसराज उठि केबार खोललनि आ कहलथिन—एहि राज मे कि चैन सं सुतनाइयो पर पाबन्दी छइ ।

हंसराज के जीवित देखि सिपाही सभ के त जेना ठकमुड़ी लागि गेलै । ओमहर राजकुमारी सेहो उठि कें बैसली । ई बात राजा-रानीक कानधरि गेलै आ ओहोलोकनि दौड़ल जुमला । सभ गप सुनबाक बाद हुनका लोकनिक त जेना खुशीक ठेकाने नहि ।

हंसराज के जीवित रहबाक खबरि सौंसे नग्र पसरि गेलै । ओमहर राजा सेहो अपन प्रतिज्ञाक अनुसार हंसराजक संग राजकुमारीक बियाह होएबाक डिगडिगिया पिटबा देलनि। खबरि बुढ़ियाक कान मे सेहो गेलै । ओ हहाएल-फुफुआएल अपन छनिकक बहिनपुत के देखबा लेल दौड़ल । सिपाही सभ त ओकरा गेटे पर रोकि लेलकै मुदा हंसराजक नजरि पड़िते ओ दौड़ला आ बुढ़िया के गोड़ लागि कहलथिन—'मौसी, तोरे आशीर्वादे बांचि गेलियौ देख । कालि एक बेटाक गओना भेलौ आ आइ दोसर बेटाक बियाह । जो बरियातीक इन्तजाम-पात कर ग ।' सत्ते, बुढ़ियाक त जेना आनन्दक सीमे नहि रहल ।

बड़ धूम-धाम सं हंसराजक बियाह भेल जाइ मे नगरक सभ लोक भाग लेलक । थोड़ेक लोक बरियाती त थोड़ेक लोक सरियाती । बियाहक बाद सं राजा अपन काज मे जखन-तखन हंसराजक विचार लेल करथि । कनिञे दिन मे ओ हंसराजक बुद्धि सं तते ने प्रभावित भेला जे राज-काजक सभ भार हुनके पर सोंपि देलनि ।

हंसराज एगो नियम बनओलनि । ओ रोजे मंत्री-अमला लोकनि के संग ल कोनो ने कोनो गाम जाथि आ प्रजाक खोज-खबरि लेल करथि । एहिना एक दिन ओ ओहू गाम पहुंचला जतय वंशराज बन्धुआ मजदूर बनल जीवन काटि रहल छल । हंसराजक नाम-यश सगरो पसरल छलै तें ओ जतै जाथि लोकक करमान लागि जाइत छल । गरीब-गुरबा सभ अपन-अपन दुखनामा कहितनि आ ई ओकर निदान करैत छलथिन । वंशराज के सेहो भनकी लगलै आ ओहो अपन दुखनामा सुनबै लेल विदा भेल । ओकर मालिक के जखन पता लगलै त ओहो अपन किछु लठैतक संग ओकर पकड़ै लेल विदा भेल मुदा वंशराज लोकक भीड़ मे सन्हिया कोनहुना अमला सभक लग चल गेल । ओमहर लठैत सभ सेहो जुमि गेलै आ ओकरा घिसिआबए लगलै । वंशराज चिचिआएल त किछु लोकक ध्यान ओमहर गेलै । ओ सभ लठैत सभ के बरजैत वंशराज के अमलाक लग ल गेल । वंशराज अपन दुर्गतिक खेरहा विस्तार सं कहलकै । ताबत हंसराज सेहो ओतए जुमि गेलाह आ अपन भाइ के अलगटे चीन्हि गेला । ओ अमला सभ के हुकुम देलथिन जे वंशराजक मालिक के पकड़ि आनल जाए आ ओकरा जहल मे बन्न क देल जाय । अमला सभ आदेशक पालन केलक । फेर हंसराज आ वंशराज दुनू भाइ आराम सं रहए लगला ।

एहिना कतेको दिन बीति गेल । हंसराज के दुगो बेटा सेहो भेलनि । एक दिन ओ दुनू भाइ बैसल रहथि त गपक क्रमम मे अपन गामक चर्च केलनि । फेर दुनू विचारलनि जे कते दिन भ गेल किए ने एक बेर गामो गेल जाए । राति मे हंसराज अपन कनियां के कहलथिन त ओहो संग जेबाक अपन इच्छा जाहिर केलनि । ओ आरो कहलथिन जे 'हे, जाइकाल माय-बाबूजी सं अनुमति त लेबे करब, संगहि अन्दर हबेलीक सरोवर मे राखल नाओ आ पोसल रहु माछ सेहो मांङि लेब । अहां के ओ नञि त नहिञे कहता आ फेर हमरा लोकनि घुरब त ओहो संगे नेने एबनि । हमहुं माय सं लछमिनियां सूप आ चालनि माङि लेब।'

हंसराज के राजकुमारीक बातक माने नञि लगलनि । ओ बकर-बकर हुनकर मुह दिस ताकय लगला । ई देखि राजकुमारी कहलथिन—लछमिनियां सूप-चालनि सं जे कोनो अन्न फटकल-चालल जा छइ से निंघटै नञि छइ । ओकर ई गुण हमरा बूझल अइ। तहिना नाओ आ रहु माछोक छइ जे अहां के बाद मे अपने पता चलत ।

हंसराज के जहिना-जहिना कनियां सिखओने छलथिन तहिना-तहिना राजा लग अपन बात रखलनि । राजा सेहो हिनकर सभ माङ मानि लेलथिन । ओ आर बहुत रास धन-सम्पत्ति द अपन बेटी-जमाय के विदा केलनि ।

धन-सम्पत्ति सं भरल नाओक संग ई लोकनि विदा भेला । रहु माछ नदी होइत समुद्रधरि नाओक रक्षा करैत जाए लागल । जाइत-जाइत जखन ओइ राजक सीमा सं बहरेला त हठात् डकैत सभ हमला क देलकनि । दुनू भाइ बड़ बहादुरी सं ओकरा सभक संग लड़ला मुदा ओ सभ बेसी लोक छल आ हथियारो छलै । वंशराज मारल गेला । हंसराज के नदी मे फेकि डकूबा सभ धन-बित आ राजकुमारी के ल पड़ा गेल ।

डकूबा सभ जखन हंसराज के नदी मे फेकलक से रहु माछ देखि लेलक आ मुहबाबि हुनका गिड़ि लेलक । ओमहर नाओ पर दुनू बालक अनाथ सन कनैत छल । रहुमाछ अपन कनखुर सं ठेलि नाओ के किनार धरि ल गेल । ता किछु मलाह सभ सेहो माछ पकड़ै लेल ओतए पहुंचल । नाओक अवस्था आ ओइ पर दुनू बच्चा के कनैत देखि ओसभ बुझि गेल जे हो ने हो ई डकूबा सभक किरदानी थिक । ओकरा सभ के दया लगलै आ दुनू बच्चा के उठा-पुठा क घर ल गेल । एगो मलहा के कोनो धीया-पुता नञि रहै । ओकर घरबाली बच्चा पाबि जेना खुशी सं नाचए लागल । ओ बड़ यत्न सं ओकरा पोसए लागल ।

ओमहर रहुमाछ समय पाबि धारक किनार मे हंसराज के उगलि अपने पानि मे चल गेल । हंसराज के जखन होश भेलनि त सभ किछु अनभोआर लगनि । बड़ी काल धरि गुन-धुन करैत मन पाड़ैत रहला । फेर त सभ बीतल घटना मन पड़ए लगलनि । ओ अपन स्त्री आ बच्चा सभक खोज मे विदा भ गेला ।

दोसर दिस डकूबा सभ राजकुमारी के दूर देशक एक राजाक हाथें बेचि देलक । ओहि देशक महिला सभ खूब सुन्नर नञि होइ छलै तें राजा हिनकर सुन्दरता पर मोहित भ गेल आ बियाह करए चाहलक ।

राजकुमारी पतिबरता छली । ओ जेहने सुन्नर तेहने बुधियारि सेहो छली । ओ एहि संकट सं बहरेबाक लेल चिन्तित छली । अन्त मे हुनका एगो उपाय सुझलनि । ओ राजा के कहलथिन जे ओ एगो व्रत क रहल छथि आ तकर शेष भेलाक बादे ओ बियाह करती । व्रतक विधानक अनुसार ताबत ओ कोनो महल वा मकान मे नञि रहि कपड़ाक घर मे रहती । पुरुषक स्पर्श सं दूर रहती आ रोज दू गोट कें अभ्यागत के भोजन करेलाक बाद फलहार करती । राजा हिनक बात मानि गेल आ सभ ओरियान धरा देलकनि । मुदा ई कहीं पड़ा नञि जाथि तें दू गोट बयसाहु लोक के पहरा पर लगा देल गेल । संयोग सं ई पहरुआ उएह मलहा छल जकरा घर मे राजकुमारीक दुनू बेटा पलि रहल छलनि ।

किछु दिनक बाद दुनू नेना छेटगर भेल । मलाह-मलाहिन संग ओ दुनू तेना रितिया गेल छल जेना अपने माय-बाप होइ । एक दिन मलहा जखन घर सं विदा भेल त ओहो दुनू भाइ संग ध लेलकै । मलहा लाख मना केलकै मुदा नञि मानलकै । हारि कें ओकरा संग ल जाए पड़लै । तकर बाद स त ओ दुनू रोज मलहाक पछोर धरए । मलहा राजकुमारीक घरक पहरा करए आ ई दुनू भाइ धूरा-माटि खेलाए । कने दिन मे राजकुमारीयो लग जाए लागल । बच्चा के देखि हुनको खुशीए होनि मुदा ओ तते झुरझमान रहैत छली जे एकरा सभ दिस ध्यान सं देखि नहि पबै छली । इहो सभ विष्टी पहिरने धूरा-माटि मे लोटाएल रहैत छल । मुदा जाबत ई दुनू राजकुमारी लग रहैत छल हुनका एक अपूर्व शान्ति भेटैत छलनि आ जखने चल जाइत छल त खाली-खाली लगैत छलनि, जेना किछु हेरा गेल होनि ।

आस्ते-आस्ते बच्चा सभ सेहो राजकुमारी मे रितिया गेल । एक दिन नञि एतै ओकरो दुनू के चैन नञि होइ । राजकुमारीक सेहो तेहने हाल । रोजे दुनू बच्चा लेल नीक-निकुत ओरिया क राखल करथि । एक दिन गपे-गप मे मलहा सभ सं सूनल अपन खिस्सा सेहो राजकुमारी के सुना देलक । आब त राजकुमारी कें अपन बेटा के चीन्हए मे कोनो भाङठ नञि रहलनि मुदा ओ एकरा गुप्ते रखलनि । बच्चा दुनू के छाती सं लगा बड़ी काल धरि दुलार-मलार क फेर मलहा लग पठा देलथिन । राजकुमारी सोचलनि जे जहिना आइ बेटाक पता लगलनि, ओ दिन दूर नञि जे हुनक पतियो भेटि जाथिन आ ओ आर व्याकुल भ उठली ।

राजकुमारी दू गोट क बाभन भोजन करबिते छली आब ओकरा संग ओ कुमारि-बटुक के सेहो खुआबए लगली । भोजन करेलाक बाद मोटा बान्हि अन्न सेहो देबए लगली। लछमिनियां सूप-चालनिक प्रभावें कतबो दान-पुन करथि—कोनो चीज घटनि नञि । ओमहर हिनक धर्म-कर्म, दान-पुनक सोरहा चारूभर भ गेल । नित्तहु नव-नव लोक आबए लागल आ ई सभक सत्कार करैत रहली । ओमहर हंसराज जे अपन स्त्री आ बेटाक खोज मे गामे-गाम बौआइ छला हुनको एइ बातक पता लगलनि । एक दिन ओहो जुमिए गेला । नियमानुसार खबासिन हुनका हाथ-पएर धोआ भोजन पर बैसओलक । जखन ओ भोजन करै छलाह त राजकुमारी कोनटा सं देखलनि । अपन स्वामी के चिन्हबा मे हुनका कोनो भाङठ नहि रहलनि । मन त भेलनि जे दौड़ि के हुनका छाती मे साटि लेथि मुदा अपना के सम्हारलनि । एही बीच हंसराजक नजरि सेहो राजकुमारी पर पड़लनि आ ओ चौंकि उठला । फेर राजकुमारीए हुनका इशारा सं शान्त रहबाक लेल कहि खबसिनियां कें किछु आनैक लाथे बाहर पठा देलथिन । फेर दुनू बेगती कन्फुसकी केलनि । दोसर उपाये की। पड़ेबाक योजना बनओलनि ।

एक दिन राजकुमारी अपन योजनाक अनुसार राजा के कहबा पठओलनि जे आब हुनक व्रत समाप्त होमएबला छनि मुदा ई पहरुआ सभक कारणे पूजा-पाठ मे विघ्न होइ छनि । कहै ले त ई सभ बुढ़ अइ मुदा सदतिकाल घरे दिस तकैत रहैए । दोसर, ओकरा संग दू गो टेल्ह सेहो आबि जाइ छइ जे हिनका नंगो-चंगो करैत रहै छनि ।

राजा त राजकुमारीक रूप पर तेना ने मोहित भेल छल जे तुरत्ते ओइ पहरुआ के छुट्टी क देलक आ नव पहरुआ रखलक । परात भेने आने दिन जकां दू गोट बाभन आएल त खबासिन हुनका लोकनिक संचार लगओलक । राजकुमारी ओइदिन किछु बेसिए ओरिआन-पात केने छली । बाभन सभ जखन भोजन पर बैसल त ओ खबासिन के फूल आनैक लाथे तते दूर पठा देलनि जे घुरै मे घंटो लागि जेतै । एमहर अपने झटपट क पुरुषक कपड़ा-लत्ता पहीरि चानन-ठोप क बहरा गेली । नव पहरुआ बुझलक जे बाभन भोजन क जा रहल छथि । योजना अनुसार हंसराज बाटपर ठाढ़े छला । दुनू ओतए सं इएह ले उएह ले पार भ

गेला । जाइत-जाइत जखन नदी किनार पर पहुंचला त देखै छथि जे अपन नाओ लागल छनि । हिनका लोकनि के अचरजो लगलनि आ खुशीक त ठेकाने नहि । फेर देखलनि जे रहु माछ सेहो कूद-फान करैए । हंसराज सोचलनि जे आब भरिसक दिन घुरलनि । दुनू नाओ पर चढ़ि अपन गाम दिस विदा भेला । रहि-रहि कें अपन दुनू बेटा अबस्से मोन पड़नि । सोचलनि जे पहिने गाम जा व्यवस्थित होइ तखन बच्चो के ल जाएब । पता त रहबे करनि।

हंसराज गाम पहुंचला त गामो मे जेना खुशीक लहरि उठि गेल । ओमहर राजकुमारीक माय-बाबू के सेहो अपन बेटी-जमायक घर घुरबाक समाचार भेटलनि त ओहो लोकनि भेंट करए एलथिन । सभ घटना सुनि संतोष भेलनि जे अपन देल सूप-चालनि आ नाओ-माछेक पातापे आइ ओ ई दिन देखि पओलनि । देवाकाल कने कचोट त अबस्से भेल छलनि । फेर सभ केओ मिलि दुनू बच्चा के अनबाक योजना बनओलनि ।

किछु दिनक बाद हंसराज अपन गामक लोक आ राजाक सिपाही सभक संग ओइ राजा पर चढ़ाइ क देलनि जकरा राज मे राजकुमारी बन्दी छली आ हुनक दुनू बच्चा मलहाक ओइठाम रहै छलै । कए दिनधरि लड़ाइ भेल आ अन्त मे हंसराज विजयी भेला । राजा बन्दी बनाओल गेल । फेर ओ मलहा के बजओलनि । मलहा त डरे थर-थर कपैत कल जोड़ने आयल । राजकुमारी के देखिते ओ चीन्हि गेल आ धराम सं हुनका पएर पर खसल । हंसराज ओकरा भरोस दैत कहलथिन जे ओकरा घर मे जे दुनू बच्चा छइ से हुनकर छनि तें ओ आपस क देथि । बदला मे ओकरा ओ मुह माङल धन-बीत देथिन । मलहा त तुरत्ते राजी भ गेल । किछु सिपाही ओकरा संग लगा देल गेलै जे ओ कहीं पड़ा ने जाए ।

मलहा त राजी छल मुदा मलाहिन के जखन पता लगलै त ओ माथ-कपार पीटि कानए लागल । दुनू बच्चा के ओ बड़ ममता आ सिनेह सं पोसने छल आ अपने बेटा बुझै छल । शेष मे सिपाही सभ ओकरा संगे बच्चो दुनू के नेने हाजिर भेल । राजकुमारी के देखिते बच्चा सभ दौड़ल आ छड़पि क हुनका कोरा मे उठि गेल । फेर हंसराज मलाहिन के बुझओलनि, बोल-भरोस देलथिन । ओ कहलथिन जे जहिया कहियो ओकरा देखैक इच्छा होइ, ओ सोझे चलि आबए । कोनो रोक-टोक नञि हेतै । अन्त मे बेचारी के मानै पड़लै । फेर हंसराज मलहा सभ कें अपना आ अपन ससुरक राज मे जतए मोन होइ, माछ मारबाक छूट सेहो देलथिन ।

मलहा सभ खुशी-खुशी आपस गेल आ हंसराज अपन कनियां आ बच्चा सभक संग चैन सं रहए लगला ।

झोड़ाक परताप



एगो रहथि बाभन । ओ बड़ गरीब रहथि । भरि दिन गामें-गाम भीख-दुख माङि लाबथि त कोनो तरहे गुजर करथि । आसरम त ओना छोटे छलनि—अपने दुनू बेकती आ एगो बेटा, मुदा भीखो देनिहार कि सभ थोड़बे होइ छइ ! एके दुआरिपर सभ दिन जेबे केना क़रितथि । तें कहियो पूब जाथि त क़हियो पश्चिम । कहियो उत्तर त कहियो दक्षिन ।

किछु दिनक बाद बाभनक बेटा छेटगर भेल । दुनू बेकती के ओकर उपनयनक चांकि लगलनि । मुदा उपाय त कोनो ने । माङि-चाङि जे अनैत छला ताइ मे त नीक जकां तीनू परानीक पेटो ने भरै छलनि आ उपनयनक खर्च । नञि बेसी त अठबभनोक जोगार त चाही । से बाभन सं बेसी जेना एकर चिंता हुनक घरेबालीके रहनि । रोजे जखन भीख माङए ले बाभन विदा होइतथि कि ओ हिनका बेटाक उपनयनक बात मोन पाड़िए दितथिन।

एहिना चिन्ता मे पड़ल गुन-धुन करैत एक दिन बाभन सोचलनि जे किए ने कतौ आने देसकोस जा कें भीख माङल जाय । आर दोसर द्वारा त रहबो ने करनि । आ अपन कनियां सं विचारि एक दिन ओ विदा भ गेला ।

बाभन जेहने गरीब तेहने सोझमतिया । अपन लग-पासक किछु गाम छोड़ि आनठाम कहियो गेलो नञि छला । से जाइत-जाइत जखन मुनहारि सांझ भगेलै त ओ बाटक कातक एगो गाछतर गमछा ओछा पड़ि रहला । विचारलनि जे परात भेने फेर आगांक जतरा करता । बाटक थाकल रहबे करथि से पड़िते आंखि लागि गेलनि ।

संयोग सं विध-विधाता ओही बाटे जाइत रहथि । विध के कने सुस्तेबाक इच्छा भेलनि आ दुनू गोटे ओही गाछपर आबि बैसि गेला । दुनू गोटे अपना मे नीक बेजाय गप करैत रहथि ता विध क ध्यान गाछ तर सूतल बाभन पर पड़लनि । बाभनक अवस्था देखि हुनका दया लगलनि । ओ विधाता के उपराग दैत कहलथिन—हे विधाता, ई केहन अहांक

विधान अइ ? नीच मे सूतल ओइ बाभन के देखियौ । बेचारा दिनभरि गामे-गाम बौआइए तैयो पेट नञि भरै छइ । बेटाक उपनयन करत तकर कोनो उपाय नञि । दयो नञि लगैए ?

विधाता कहलथिन—हे विध सभ के अपन कर्मक फल भोगय पड़ैत छैक । दुख-सुख त लोक के लगले रहै छइ । मुदा अहां जकां जं हमरो दया लगैत रहल तखन त दुनियां मे ककरो कोनो दुखे नञि रहतैक ।

विध कहलथिन—से जे होउ, मुदा एहि बाभनक त कोनो उपाय अहां के करहि पड़त । से नहि केने हम एहिठाम सं आगू नहि बढ़ब ।

विधाता बजला—एकरे कहै छइ तिरिया लटाढ़म । वेश, हे लिअ, ई झोड़ा ओकरा सिरमा मे राखि दिऔ । एहि मे मधुर छैक आ एहि सं ओकर सभ दुख दूर भ जेतैक ।

विध ओ झोड़ा बाभनक सिरमा मे राखि देलनि आ फेर दुनू गोटे उड़ि विदा भ गेला । परात भेने बाभनक जखन निन्न टुटलनि त सिरमा मे झोड़ा देखि अचरज भेलनि । ओ खोलि कें देखलनि त ओइ मे रंग-विरंगक मधुर देखि खुशीक जेना ठेकाने ने रहलनि । भुखाएल त छलाहे । रातियो अन्न-जल नहिञे भेटल छलनि । लगे मे एक नदी देखि पर-पैखाना सं मुक्त भ एक डूब देलनि आ बैसि गेला झोड़ा ल मधुर खाइ ले । मुदा ओ कतबो मधुर खाथि, झोड़ा संमधुर झहड़ैत रहल, जेना भरल के भरले हो । ओ सोचलनि जे जं एहि झोड़ा सं एहिना मधुर झहड़ैत रहल त चिन्ते कथिक । बेकारे किए ओ परदेस जेता । आ इएह सोचि ओ घरमुहा विदा भेला ।

चलैत-चलैत जखन सांझ पड़ि गेलै त ओ एगो हलुआइक दोकान मे राति-बीच ठहरैक लेल पहुंचला । हलुआइ हिनका नीक जकां चिन्हैत छल । ई जखन-तखन भीख माङै लेल ओकरा ओइठाम जाइत छला । मुदा ओइ दिन ई भीख नञि माङि केबल राति-बीच ठहरए देबाक बात कहलथिन त हलुआइ सेहो छगुन्ता मे पड़ि गेल । ओकरा बुझै मे ने आबै जे बाभन आइ एते खुशी किएक छथि आ किछु मङबो किए ने करै छथि । ओकर नजरि हिनका झोड़ा पर पड़लै । बाभन जखन निन्नभेर भ गेला त ओ कले-कुशल हिनक झोड़ा झीकि घर ल गेल आ ओकरा उझिलि ओइ मे की सभ छैक देखय लागल । झोड़ा सं जखन मधुर झहड़ए लागल आ झहरैते रहल त ओकरा जेना चकविदोर लागि गेलै । ओ अपन घरबाली के बजा घर मे जते जे बरतन-बासन रहै से आनय कहलकै आ सभ मे मधुर भरि-भरि रखने गेल । जखन राखक आर कोनो द्वारा नञि रहलैक त फेर चुपचाप झोड़ा बाभनक सिरमा मे राखि जा क सूति रहल । भोर भेने बाभन उठला आ अपन झोड़ा-झपटा उठा विदा भ गेला ।

बाभन जखन आङन पहुंचला त हिनक कनियां के अचरज लगलनि जे कतए ई परदेस जाइ छला आ दुइए दिन मे घुरियो एला। ओ पुछि बैसलथिन—आबि गेलौं परदेस कमा क ? मन बड़ हुलास देखै छी ! जेना कोनो अलखक राज भेटि गेल हो !

बाभन कहलथिन—अरे सभटा ने कहै छी, पहिने कने लग त आउ । नहा-सोना त लेनहि हएब । हे, एकटा थारी सेहो लेने आउ ।

बेचारी बाभनि कें त किछु बुझाइए ने पड़ै छलनि, तैयो ओ एगो थारी आनि पतिक बगल मे बैसली । बाभन झोड़ा उझिललनि । भरि थारी नाना तरहक मधुर पसरि गेल । बाभनि त छगुन्ता मे । एमहर बाभन अपने हाथे एक मधुर उठा हुनका मुह मे दैत बजला—खाउ, जते मन मानए । आइ सं हमरा लोकनिक सभ दुख दूर भ गेल । ई भगवानक परसाद थिक । आ फेर ओ सभ खिस्सा हुनका कहि सुनओलथिन । फेर बेटा के बजा भरि पोख खुऔलनि । जाहि घर मे भरि पेट नूनोरोटी ने जुमनिहार ताइठाम ई मोरसंपेक मधुर ।

बाभनक दिन घुरलनि त बात-विचार सेहो बदललनि । आब ओ भरिदिन अपन एकचारी मे पड़ल रहै छला। टोल-पड़ोस मे एकर धुसुर-फुसुर होमए लागल आ किछु दिन मे लोक के सभ बात पता लागि गेलै । लोके किए राजाक कान मे सेहो बाभनक झोड़ाक परतापक बात पहुंचल आ ओ हिनका बजा पठओलक । राजा महा धूर्त आ लोभी छल । बाभन तेहने सोझमतिया आ डेरबूह । ओ सोचलनि जे हो ने हो राजा के झोड़ाक खबरि लागि गेल होइ आ ताही दुआरे बजओने हो । तें ओ झोड़ा के कांखतर दबने दरबार मे उपस्थित भेला । राजा हिनका पोल्हा क झोड़ाक मादे सभ बात जानि लेलक आ बाजल—बाभन देवता, अहांक घरो टूटल-भाङल अछि आ झोड़ाक परतापक बात त झांपल नहिञे रहत । तखन त चोर-बदमासक डर । घर मे अहांक कनियां आ बेटा छथि । अपटी खेत मे झोड़ो चल जाएत आ अहूं लोकनि मारल जाएब । तें हमर सलाह मानू, झोड़ा हमरा द दिअ, बदला मे हम अहां कें पांच हजार टाका दैत छी ।

बाभन बेचारा की करितथि । ओ विचारलनि जे एखन त ई अपने मुहे पांच हजार देबाक बात कहैए, जं सेहो नञि देत आ बलजोरी छीनि लेत त ओ की करता । राजाबाली बात । बेचारे मन मसोसि झोड़ा द देलथिन आ पांच हजार टाका ल घर घुरि एला । ओइ टाका मे सं बेटाक उपनयन केलनि आ जे बचलनि ओकरा गामेक एक बनियां ओतए राखि एला जे ओ आसरमक चीज-वस्तु उठओना दैत रहनि ।

किछु दिनक पश्चात जखन ओ टाका निघटिगेलनि त बनियां उठओना बन्न क देलक । बाभन के फेर उएह रामा उएह खटोला । फेरगामे-गाम भीख माङब आरंभ केलनि। सुखक बाद दुख काटब त ओहुना कठिनाह होइते छइ । अन्त मे एक दिन बाभनि कहलथिन जे एकबेर ओ फेर ओही बाट द जाथु जाइ बाट मे मधुरक झोड़ा भेटल छलनि । बाभनो के मन मानि गेलनि आ ओ विदा भेला । जाइत-जाइत फेर ओही गाछ तर राति मे गमछा ओछा पड़ि रहला । संयोग एहन जे ओहू दिन विध-विधाता ओही द उड़ल जाइत रहथि आ सुस्तै लेल ओही गाछ पर विलमला । नीचा मे सूतल बाभन पर विधक नजरि पड़िते ओ विधाता के उलहन दैत कहलथिन—अहां त कहने रही जे हिनकर सभ दुख दूर भ जेतनि, मुदा

भेलनि की ? अहांक देल झोड़ा कसैया राजा ल लेलकै आ ई भिखारिक भिखारिए रहि गेल । कोनो द्वारा त धरा दिऔ ।

विधाता कहलथिन—हं धरबै पड़त । ओइ लोभी राजा के सेहो सबक सिखेनाइ अछि । आ एतबा कहि ओ आर एक झोड़ा बाभनक सिरमा मे राखि देलथिन आ पओ फटिते उड़ि जतए जेबाक छलनि ततए चल गेलाह । एमहर बाभन के जखन निन्न टुटलनि त फेर सिरमा मे ओहने झोड़ा देखि हुलसि के ओकरा खोलि उझिललनि । मुदा उझिलते ओइ मे सं थोड़े हाथ-पएर बहार भेल आ बाभन के मुकिआबए लतिआबए लागल । बेचारे ओहिना कमजोर, बफारि काटए लगला आ ओंघरा के खसि पड़ला । हुनका खसबाक संगे झोड़ाक मुह उपर दिस भ गेलै आ हाथ-पएर सभ अपने मने ओइ मे सन्हिया गेल । हिनका त जान मे जान एलनि । चट द झोड़ाक मुह बन्हलनि आ ओकरा लेने गामक बाट धेलनि ।

अबैत-अबैत बाभन फेर ओइ हलुआइक दोकान पर जुमला । सांझ भइए गेल छलै । हलुआइ त हिनका अलगटे चीन्हि गेल आ हाथ मे झोड़ा देखि उएह मधुरक झोड़ा बुझि बेस आव-भगत केलकनि । ओइदिन ओ अपन आङनबाली के कहि सौंसे टोलक बरतन-बासन मङबा लेलक । बाभन जखन सूति रहला त फेर चुप्पे झोड़ा आनि दुनू बेगती घर बन्न क क झोड़ा खोलि ओकरा झाड़ए लगला । झाड़ैत देरी ओइ मे सं हाथ-पएर बहार भेल आ एकरा दुनू परानीके मुकिआबए-लतिआबए लागल । दुनूक बफारि सुनि सौंसे टोलक लोक जमा भ गेल । बाभनक निन्न सेहो टूटि गेलनि । लोक सभ के कोनो भांजे ने लगै । बाभन विचारलनि जे इएह गंए-गं । ओ कहलथिन जे हुनका संग मे एक हजार टाका छलनि जे ई दुनू बेकती चोरा लेलकनि, से जाबत ओ टाका नञि आपस करतनि ताबत एहिना मुक्का-लात खाइत रहत । टाका देने ई अपन मंत्रक बलें एकरा बन्न क सकै छथि।

हलुआइ दुनू बेकतीक जान अवग्रहे मे छलै, लगले हजार टाका डांड़ सं बहार क बाभनक पएर पर राखि खेखनियां करए लागल । बाभन टाका लेलनि आ फेर झोड़ा के उपर मुहे उठओलनि । हाथ-पएर सभ ओइ मे समा गेल आ बाभन ओकरा कसि कें बान्हि ओइठाम सं विदा भ गेला ।

घर घुरि बाभन फेर खुशी-खुशी रहए लगला । ओही हजार टाकाके बेसाहि क खाथि। ओना अपन कनियां के सभ बात बुझा देने रहथिन जाइ सं कहीं ओ ने झोड़ा खोलि लेथि आ बेरथेक देह धुनाबथि । ओमहर लोक सभ हिनका झोड़ा लेने अबैत देखने रहनि आ नित्तहु नीक-निकुत बेसाहैत देखि सोचलक जे हो ने हो बाभनके एहि बेर टाकाक झोड़ा परि लगलनिहें । राजा के सेहो एकर भनकी लगलै आ ओ फेर बाभन के बजा पठाओलक। एहि बेर ओ कने बेसिए भगति केलकनि आ फेर चारिटा गामक बदला मे ओ झोड़ा द देबाक बात कहलकनि । बाभन त ई चाहिते छला, चट द स्वीकार क लेलनि । दानपत्र तैयार भेल आ राजा अपने बाभनक हाथ मे देलथिन । बाभन सेहो अपन झोड़ा हुनका थम्हा घर घुरि एला ।

ओमहर राजा के त भरोसे ने होइ जे कखन झोड़ा खोलत आ टाका झहड़ाओत । बाभन के विदा होइते ओ अपन अन्दर महल जा झोड़ा खोलि झाड़लक । झड़लै अगबे हाथ-पएर जे राजा के मुकिऔनाइ-लतिऔनाइ शुरू क देलक । कने काल त ओ एमहर-ओमहर दौड़ि बंचबाक चेष्टा कएलक मुदा लात-मुक्का पछोड़ छोड़बे ने करै । अन्त मे ओ चिचिआइत सिपाही सभ के बजओलक । लात-मुक्का ओकरो सभ के ओद-बाद क देलकै ।कोनो उपाय नञि देखि ओइ बाभन के बजा पठओलक । बाभन त जनिते छल जे ई बात हेबे करत । ओ तैयारे छला, तुरत्ते जुमि गेला । ओ राजाक प्रति फुसियाही संवेदना देखबैत कहलथिन जे ओ राजा के एहि गंजन सं उबारि सकै छथि जं हुनका अपन मधुरक झोड़ा आपस भेटि जानि । राजाक त प्रान अवग्रह मे छलै । ओ तुरत्ते झोड़ा अना हिनका थम्हा देलकनि । बाभन झोड़ाक मुह उपर केलनि । हाथ-पएरे ओइ मे समा गेल । फेर ई ओकर मुह कसि कें बन्हलनि आ दुनू झोड़ा सम्हारि आपस भेला । राजा के फेर कहियो साहस नञि भेलै हिनका पाछां लगबाक । इहो झोड़ाक परतापे आराम सं रहए लगला ।

ೞ൦ೞೞ൦ೞ

मोहन बरही

□

एगो पंडीजी रहथि । ओ काशी मे रहि पूजा-पाठ करथि आ ओही सं जे थोड़-बहुत आमदनी होइन ताइ सं गामपर परिवारक खर्च चलनि । धीया-पुता रहबे ने करनि । गामोपर आउनवाली टा रहथिन । एकदिन ओ पतरा उनटबैत रहथि त ध्यान गेलनि जे एखन शुभ लग्न चलि रहल छैक । एहि लग्न मे जे यात्रा करत तकर मनक मनोरथ पूर होएतैक । बेचारे के संतानक बड़ मनोरथ रहनि, से तखने गामक यात्रा कएलनि ।

पंडीजी गाम आबि किछु दिन रहला । फेर जखन घुरि काशी जाए लगला त एगो खबास सेहो संग लगा लेलनि । जाइत-जाइत जखन बड़ी दूर गेला आ लगभग पहर राति बीतल रहै त बाटक कातेक एगो गाछी मे एगो चिता धधकैत देखलनि । ओदेखलनि जे बेराबेरी तीन गोटे ओइ चिता मे कुदि अपन जान द देलक । पंडीजी के जे से, मुदा खबास केंई कांड देखि बड़ छगुन्ता लगलै । ओ पंडीजी सं एकर कारण पुछि देलकनि ।

पंडीजी पहिने त बात के टारबाक चेष्टा कएलनि मुदा खबासक हठ देखि सोचैत बजला जे एहि चिताक बड़ विचित्र रहस्य छैक । ज कहए लगबौ त राति बीति जाएत । मुदा खबास तैयो मानैबला नहि । ओ कहलकनि जे बिना सुननेओ आगू डेग नञि उठाओत।

पंडीजी कहए लगलथिन जे कोनो गाम मे एगो बरही रहए । नाम रहै मोहन । लोक मोहना बरही कहै । ओ बड़ सुधंग रहए । कोनो लूड़ि-ढंग नञि जखन कि ओकर आन समाङ सभ वेश बुधियार-होशियार रहै । लोक सभ एकर मजाक उड़बै, दुरदुरबै, मुदा एकरा लेखे धनसन । मुदा एक दिन घरक लोक ओकरा बड़ फइझति केलकै आ कहलकै जे जात ओ कोनो लूड़ि-ढंग नञि सीखत, काज उदेम नञि करत ओकरा ने खेनाइ भेटतै आने घर मे रहए देल जेतै । बेचारा के बड़ आनि लगलै आ ओ घर सं बहरा गेल ।

ओ बहुत दिन धरि एमहर-ओमहर बौआइत-ढहनाइत रहल । केओ किछु द दै त

खा लिए ने त भुखले रहि जाए मुदा बिना कोनो लूड़ि-ढंग सिखने घर नञि घुरबाक निश्चय क लेने रहए ।

मोहनाक गप सुनि लोक हंसि क उड़ा दइ मुदा एकगोटा के एकरा पर दया लगलै। ओ एकरा एक एहन ओस्ताद बरहीक नाम कहलकै जकरा लग रहि ई नामी ओस्ताद बनि सकैंए । मोहना नेहोरा-मिनती क ओही लोकक संग ओस्ताद लग पहुंचल ।

मोहनाक रूप-रंग देखि पहिने त ओस्ताद नाकपर माछिए ने बैसए देलकै मुदा इहो जिद ठानि लेने रहए । ई तुरत्ते ओस्तादक पएर पकड़ि लेलक जे जाबत अहां हमरा अपन चेला वनाएब नञि गछब ताबत अहांक पएर हम नञि छोड़ब । हारि क ओस्ताद मानि गेलै। मोहना दिन-राति ओस्तादक संग रहि ओकर सेवा-टहल करए आ काजो देखए । एकर सेवा-टहल आ काजक प्रति सिनेह देखि ओस्ताद बड़ खुशी भेल आ ओकरा मन सं सिखाबए लागल । कनिञे दिन मे ई ओस्तादक सभ लूड़ि-ढंग सीखि गेल आ ओस्तादो पीठ ठोकि कहलकै जे जो, लोक के देखा दही जे तों केहन ओस्ताद छैं । मोहना अपन ओस्ताद के गोड़ लागि गाम घुरि आयल ।

मोहन अपन गाम आबि समाङ सभ कें अपन लूड़िक बात कहलकै त केओ माननिहारे नहि । सभ कहै जे एते पैघ ओस्ताद भ गेलें त पाइयो त तहिना अहगर सं कमैल हेबें । से कहां छौ ? ई कतबो कहै जे हम एते दिन खाली काज सीखै छलौं, पाइ नञि कमाइत रही, मुदा एकर बातक केओ कोनो मोजरे ने दैक । अन्त मे ई हारि कें फेर गाम सं विदा भ गेल।

जाइत-जाइत ओकरा बाटक काते मे एगो खुब पैघ लकड़ीक दोकान भेटलैक । ओ नोकरी ले दोकानक मालिक के कहलकै । दोकानक मालिक असगरुआ छल । काज करत की गहिकीं देखत । ओकरा लोकक खगतो छलै से एकरा राखि लेलक ।

ओइ दोकानक मालिक जे बरही छल ओकर एगो बेटी छलै जे बेसी काल दोकान पर आबि कारीगर सभक काज देखल करै । छौंड़ी जेहने देखै-सुनै मे तेहने बुधियारि सेहो रहै। मोहन के की ने की फुरलै एक दिन ओ हाथी दांतक थोड़ेक चाउर बना ओकरा भूजि देबा लेल कहलकै । छौंड़ी त चाउर देखिते बुझि गेल जे हो ने हो मोहन ओकर परीच्छा लेबा लेल ई देलकैए । ओ चुपेचाप घर गेल आ घरक थोड़े मेहीधानक चाउर भूजि पठा देलकै । मोहन छौंड़ीक बुधियारी देखि दंग रहि गेल । ओमहर ओ छौंड़ी सेहो मोहन पर मोहित छल । ओ अपन सखी-बहिनपा लग जखन-तखन ओकरे गुणगान करैत रहैत छल । काना-फुसकी ओकर बापके सेहो एहि बातक भनक लगलै । ओ विचारलक जे ओकरो त एकेटा बेटी छइ आ एते पैघ कारबार । मोहन सन मेहनतिया आ गुनी जमाए भेटब त बड़ भागक बात हेतै । मुदा ओकरा ई नञि पता छलै जे मोहन कोन जातिक थिक । एकरे पता करै लेल ओ किछु दिनक लेल परदेस जेबाक सोचलक । जाइत काल मोहन के सुना क अपन घरबाली के कहलकै जे हम कने जरुरी काज सं आनठाम जा रहल छी । मोहन के

कहबै जे गिरहत-गहिकी सम्हारि लेत । ओ सोचलक जे गिरहत सम्हारनाइ, हर-पालो बनेनाइ त बरही बुते पार लगतै । से ओकरा गेलाक पराते एगो गिरहथ जुआ बनबाबै ले णुगल । बरहीक घरबाली ओकरा मोहन लग पठा देलकै ।

मोहनअसमंजस मे पड़ि गेल । एहि सं पहिने ओ जुआ नञि बनओने छल । जं ओ कहै छइ जे हमरा ई काज नञि अबैए त लोक हंसारथ होएतै । ओ एही गुन-धुन मे छल ता ओ छौंड़ी पड़ोसियाक कोनो बच्चा के कोरा मे नेने ओकरा चुप करेबाक लाथे फकड़ा पढ़ए लागल—

चुप रह रे बौआ
आठ बीतक जुआ
पहिने चौरस
तखन भेल गोल
चुप रह रे बौआ
सुन कने बोल

मोहन के बुझबा मे भाङठ नञि रहलै जे ई फकड़ा ओकरे लेल पढ़ल जा रहल छइ। ओ तुरत्ते काठ नापि बसिला उठओलक आ झटपट जुआ तैयार क लेलक ।गिरहथ एहनसुन्नर जुआ पाबि खुशी-खुशी घर गेला । बरही जखन घुरल आ अपन घरबाली सं सभ खेरहा सुनलक त ओकरो खुशीक ठेकान नहि रहलै ।मोहन बरही जातिक छी जानि वेश धूमधाम सं अपन बेटीक बियाह ओकरा संग करा देलक । वर-कनियां त ई चाहिते छल, पहिने सं एक दोसरा पर मोहित छल, तखन ओकरा सभक बाते की !

मोहन किछु दिन त सासुर मे रहल मुदा सभ दिन घरजमैया बनि रहनाइ ओकरा उचित नञि बुझि पड़लै । ओ अपन कनियां आ फेरसासु-ससुर सं गप क फराक घर बना रहए लागल । कने दिन बाद ओ अपन दोकानसेहो खोललक ।मुदा दोकान मे त समान चाही आ समान बनेबा लेल चाही लकड़ी । से ओ लकड़ीक खोज मे सरहदक जंगल गेल जाइठाम भांति-भांतिक लकड़ी होइ छलै । जंगल जा ओ एक-एकटा गाछ लग जा पुछए लगलै जे हमरा लकड़ीक समान बनेबाक अछि से अहां काटए देब । मुदा कोनो गाछ राजी नञि भेलै । ओ थाकि-हारि उदास भेल घूरल अबै छल ता एगो सीसोक बूट पर नजरि पड़लै । ओ ओकरो पुछलकै जे हमरा किछु लकड़ीक समान बनेबाक अछि से हम अहां के उखाड़ि लिअ । बूट कहलकै जे रे भाइ हम त ओहिना निरसल पड़ल छी, जं तोहर काज होउ त उखाड़िले । मोहन खुशी-खुशी ओबूट उखाड़ि गाड़ी पर लादि ल अनलक । एमहर जे देखै से एकर मजाक उड़बै जे लोक सरहद सं सखुआ, सीसो,गम्हारिक गाछ काटि अनैए आ ई की अनलक त एगो निरसल बूट । मोहन मुदा कान-बात नहि देलक आ ओकरा चीड़ि एगो पलंग बनाबए लागल । एगो पलंग बनेबा मे ओकरा बर्ख दिन लागि गेलै

। ओ ओकर दाम रखलक लाख टाका । जखन कनियां के बजार जा बेचि आनै कहलकै त ओ कहलकै जे अपने जाउ। एक लाख टाका मे पलंग! लोक हमरा बताहि नञि कहत ! अंत मे मोहन अपने पलंग ल बजार विदा भेल ।

बजारो मे लाख टाकाक पलंग देखनिहारक त करमान लागल मुदा किननिहार केओं ने । लोक अपना मे बतिआय जे हो ने हो ई बरही बताह अछि ने त की छइ एहि पलंग मे जे एकर दाम एक लाख टाका हेतै । ओना एकर सोरहा धरि सभ ठाम भ गेलै । जाइत-जाइत राजाक कान धरि सेहो ई बात पहुंचल । राजा बुधियार लोक ओ तुरत्ते सिपाही पठा मोहन के पलंगक संग बजओलनि । ओ मोहन के एक लाख टाका दैंत कहलथिन जे जं एहि पलंगक कोनो विशेष गुन नहि पाओल जाएत त मोहन के ओ एहन दंड देथिन जाइ सं फेर केओ एहन क़ाज नहि करत । हं,जं सरिपहुं ई लाखटाका मोलक अछि त मोहन के इनाम देल जेतै । मोहन सुशी-खुशी राजी भेल आ टाका ल आपस भ गेल ।

राजा ओइ पलंग के हवेली मे पठा देलनि । राति ओहीपर सुतला । आंखि लगले छलनि त बुझि पड़लनि जेना पलंगक तर मे किछु लोक बतिया रहल हो । ओ कान ठाढ़ कएलनि आ ध्यान सं सूनय लगला। पलंगक कोनो एक पौआ कहि रहल छलै जे भाइ सभ, हम कने पूब दिस घूमि चर-चित लेने अबैत छी । तों सभ कने सतर्क रहिहें जाइसं पलंग डोलए नहि आ राजा के कोनो असुबिधा नञि होइ । पहर भरि मे हम घुरि आएब । राजा कें अचरज लगलनि । ओ आगूक बात सुनबाक लेल गबदी मारि पड़ल रहला । पहर राति बीतैत-बीतैत ओ पौआ जहिना कहि गेल छल घुरि आएल आ पलंग मे सटि गेल । बांकी तीनू पौआ पुछलकै जे की चर-चित अनलें ? ओ कहलकै जे भाइ सभ आइ भोर होइत-होइत एहिराज मे पैघ दुर्घटना घटतैक । दुर्घटनाक बात सूनि सभ साकांक्ष भेलआ पुछलकै जे केहन दुर्घटना । ओकहलकै जे राजाक पनही मे दूटा सांप घुसिऐल छइ से राजा जखने उठतै आ पनही पहिरतै, दुनू सांप काटि लेतै आ राजा मरि जाएत । तीनू पौआ पुछलकै जे राजाक बंचबाक की कोनो उपाय नञि छइ ? ओ कहलकै जे उपाय छइ । राजा उठि पहिने पनही कें छड़ी सं उनटा देथि जाइ सं सांप पड़ा जाय आ तखन पनही पहिरथि त बचि सकै छथि ।

ई गप सूनि राजा के डरो भेलनि आ ओ आर बेसी साकांक्ष भ गेला । निन्न त जेना उचटिए गेल होइन । ता दोसरपौआ बाजल जे भाइ सभ आब कने हमरो बुलबा-टहलबाक मन होइए । तों सभ नीक जकां पलंगक भार सम्हारने रहिहें । हम कने उत्तर दिस सं बुलने अबै छी। एतबा कहि ओहो बहरा गेल । पहर बीतैत-बीतैत आपस आबि फेर पलंग मे सटि गेल । बांकी तीनू पौआ पुछलकै जे तों की सभ देखलें ? ओ कहलकै जे कालि एहि राजक देवानक जमाय पर विपतिक पहाड़ टूटयबला छइ । असल मे दिवानक बेटी एगो सन्यासी सं फंसल छइ । आइ राति ओकरा सन्यासी लग जेबा मे देरी भ गेलै से सन्यासी तमसा गेलै

आ दुनू मे बेस कहा-सुनी भ गेलै । अन्त मे सन्यासी खिसिया क देवानक बेटीक नाक-कान आ झोंट काटि बैला देलकै । लाजक पच्छे ई सत्तबात त देवानक बेटी बाजत नहि । ओ एकर दोष अपन स्वामी पर मढ़ि देत । आ जखन एकर फैसला हेतै त देवानक बेटीक बात सत्त मानि बेचारा जमाय कें फांसी चढ़ा देल जेतैक ।

पौआ सभ बाजल जे ई त सरासर अन्याय थिक । बेचारा निर्दोष के फांसी आ दोषी सुरखुरू । एकर त कोनो उपाय हेबाक चाही ।

ओ बाजल जे उपाय त छइ । ई मामिला जखन राजा लग अबनि त ओ सभसं पहिने पुरना सरोबरक उतरबरिया मोहार परक बड़क गाछक धोधरि मे नुकाएल सन्यासी के पकड़बा आनथि । ओही धोधरि मे कटलाहा नाक-कान आ झोंटा तथा जाइ चुट्टा सं काटल गेलै से सोनिताएल चुट्टा सेहो अना लेथि । चोर माल सहित पकड़ल गेंने देवानक बेटी के सत्त स्वीकार करए पड़तै । राजा तखन न्याय करथि आ ओइ सन्यासी आ देवानक बेटी के तरहरा खुनबा जीविते गड़बा देथि । देवानक जमायके दोसर बियाहक अनुमति देल जाइक ।

रातिक तेसर पहर पलंगक तेसरो पौआ अपन भार संगी सभ पर सोपि पश्चिम दिस विदा भेल आ पहर बीतैत-बीतैत घुरि आएल । ओ अपन देखल-सुनल संगी सभ के कहए लागल जे एहिठाम सं सए योजन पश्चिम फुलकुम्मरि नामक एक राजकुमारी छइ । जेहने नाम, तेहने गुन । ओकर देहक ओजन एक फूलक समाने छइ । जे ओकरा संग वियाह करत तकर भाग्य खुलि जेतै । मुदा ओ सात धरहराक उपर मे रहै छइ जे चारूकात कांट-कुस सं घेरल छइ । चौदह सए पहरुआ ओइ फुलबाड़ीक पहरा करै छइ तें सहजे राजकुमारी लग पहुंचनाइ संभवो नञि छइ ।

एते सुनि ओकर संगी सभ पुछलकै जे कोनो ने कोनो उपाय त हेतै, सेहो कह ने । एही राजा के जं ओकरा संग बियाह भ जानि त नीके ने ।

ओ पौआ बाजल जे जे केओ उड़ैबला घोड़ा पर चढ़ि धरहरा पर पहुंचि ओइ राजकुमारी के उड़ा आनत तकरे सं ओकर बियाह हेतै । मुदा एहन घोड़ा त ककरो लग छइ नञि आ मोहन बरही छोड़ि आन केओ एहन घोड़ा बनाइयो ने सकैए ।

चारिम पहर मे चारिम पौआ दच्छिन दिस गेल आ आबि क अपन बात संगी सभ के कहए लागल । ओ बाजल जे हम जे काज केलौहें तेहन त केओ ने केलक । हम जखने नगर सं बहरेलौं त देखै छी जे सएक-सए दैत्य अन्हर बिहाड़ि सन आसमर्द करैत एम्हरे आबि रहलए । पहिने त हम थकमका गेलौं मुदा तुरत्ते एक विशाल सघन-बन बनि ओकरा सभक सामने ठाढ़ भ गेलौं । दैत्य सभ छिड़िया गेल आ भोतिया गेल । कांट-कुसक कारणे सभ सोनिते-सोनितान भ गेल । तखन हम ओकर सरदार के कहलिऐ जे एहिठाम एगो खूब पैघ सरोबर खूनि ओकर मोहार पर सुन्दर राजमहल आ एगो मंदिर बना दे आ फेर घुरि क

एमहर नञि ताकै त जी-जान बकसि देबौ । ने त एहिठाम कांट-कुस मे ओझरा क मरि जेबें । ओहुना भोर होइत-होइत राजाक सेना चारूभर सं घेरि भुजबी-भुजबी काटि देतौ । ओ हमर बात मानि गेल । ओ सभ काज मे मातल रहल आ हम ओकरा सभक एकटा क कान काटि दच्छिनबरिया मोंहार पर ढेरिया देलौं । आब राजा के ओहि महल मे डेरा ल जेबाक चाहियनि ।

राजा राति भरि पलंग पर पड़ल सभटा सुनैत रहला । भोर होइते उठि सिरमा मे राखल छड़ी सं दुनू पनही के उनटओलनि त देखै छथि जे ठीके दू गो सांप बहरा ससरि गेल। पौआ सभक बात पर हिनकाविश्वास भ गेलनि । नहा-खा क जखन दरबार मे गेला त देखै छथि देबानजी पहिने सं मुहलटकओने बैसल छथि । राजा के देखिते ओ बजला— सरकार जुलुम भ गेल। स्वामी-स्त्री मे ककरा ने बात-विचार होइ छइ मुदा तकर ई गति । हमर जमाय खिसिया कें हमर बेटीक नाक-कान-झोंट काटि लेलनि - से होइ । अपनहि न्याय कएल जाओ ।

राजा कें त सभ बात बुझले छलनि तैयो ओ देवानक बेटी-जमाय के बजा ओकरा लोकनिक बात सुनलनि । फेर टोल-पड़ोसक लोक के सेहो पुछलथिन जाइ मे एक गोटा बाजल जे ओ देवानक बेटी के अधिक काल उतरबरिया सरोबर मे नहेबा लेल जाइत देखैए । राजा लगले अपन सिपाही के हुकुम देलनि जे उतरबरिया सरोबरक मोहार पर जे कोनो धोधरिबला गाछ होइ तकरा धोधरि मे नीक जकां ताकल जाए आ जे किछु हो तकरा तुरन्त हाजिर कएलजाए । सिपाही सभ आदेशक पालन केलक आ नाक-कान-झोंटक संग ओइ सन्यासी के आनल गेल । ओकरा सं जखन पुछल गेलै त पहिने त अंट-संट बाजल मुदा राजा कें धमकेलाक बाद सभ उगिलि देलक । देवानक बेटी सेहो कोनो उपाय नहि देखि सत्त के स्वीकार केलनि । राजाक आदेश सं तरहरा खुना दुनू के गड़बा देल गेल आ देवानक जमाय के प्रचुर धनक संग दोसर बियाह करैक अनुमति द देल गेलै ।

जखन देवानक बेटीक सुनबाहि भ रहल छलै तखने किछु चर सभ आबि राजा कें खबरि देलकनि जे राज्यक दछिनबरिया सीमा सं एम्हरे राता-राती एक विशाल सरोबर खुना गेलए जकरा उतरबरिया मोहार पर एक सुन्नर राजमहल आ पछबरिया मोहार पर एगो मंदिर सेहो बनि गेलए । दछिनबरिया मोहार पर मारितेरास कटल कान सेहो ढेरिआएल छइ । ई जे केना भेल तकर कोनो पता नञि चलि सकलए ।

राजा कें त सभ बातक पता छलनिहें । ओ किछु सिपाही कें ओइ राजमहलक पहरा पर लगा देलनि ।

पलंगक तीन पौआक बात मिलि गेलाक बाद राजा मोहन बरही के बजओलनि । ओ मोहन के इनाम मे सवा लाख टाका आ एगो नीक बंगला देलथिन आ कहलथिन जे ओ एक ओहन घोड़ा बना दौन जाइपर चढ़ि ई फुलकुम्मरि लग पहुंचि सकथि ।

छ मास मे मोहन ओ घोड़ा बना राजा के पहुंचा देलकनि आ ओहो नीक दिन देखि घोड़ा चढ़ि विदा भेला आ थोड़बे काल मे ओइ फुलबाड़ी लग पहुंचि गेला । घोड़ा के एगो गाछ तर ठाढ़ क अपने लगाम लेने फुलबाड़ी मे पैसला । ओइ घोड़ाक जान लगामे मे छलै तें जातकाल लगाम हिनका हाथ मे रहतनि घोड़ा आन केओ नञि ल जा सकत । फुलबाड़ीक शीतल बसात मे राजा कें औंघी लागि गेलनि आ एक गाछक छाहरि मे ओ पड़ि रहला ।

संयोग एहन जे फुलबाड़ी मे राजाक ढुकिते ओकर सभ फूल एकाएक फुला गेलै जे कहियो फुलाइत नञि छलै । ई देखि मालिन के बड़ छगुन्ता लगलै । ओ सोचलक जे हो ने हो आइ कोनो मुनि-महात्मा ओइ फुलबाड़ी मे आएल हो आ ओ तकरा ताकए लागल । ओ जखन राजा लग पहुंचल ता हिनको निन्न टूटि गेलनि आ ई ओकरा गोड़ लागि अपन परिचय ओकर बहिनपुत कहि देलथिन । ई कहलथिन जे जहिया ओकर दुरागमन रहै तहिए हिनकर जन्म भेलनि - तें ओ नञि चीन्है छनि । मलिनियांक मन मानि गेलैआ ओ बड़ सिनेहसं हिनका अपना आङन लेने गेल ।

मालिनक बहिनपुत बनि राजा ओकरे ओइठाम रहए लगला । मालिन रोज नीक-नीक फूलक माला गांथि राजकुमारी ले ल जाइत छल । इहो एइ काज मे ओकर मदति करए लगला आ राजकुमारीक विषय मे सेहो जखन-तखन किछु-किछु पुछए लगला । एहि तरहें हिनका सभ बात बूझल भ गेलनि । ओमहर राजकुमारी ओते सुन्नर-सुन्नर माला देखि सोचलनि जे पहिने त मालिन एते सुन्नर माला नञि आनै छल । आब की बात छइ । आ एक दिन ओ मालिन स पुछिए देलथिन । मालिन सेहो सत्त-सत्त कहि देलकनि । राजकुमारी सिनेह सं माला उनटा-पुनटा कें देखए लगली तैखन हुनक ध्यान गेलनि जे फूलक पत्ती पर किछु लिखल छैक । ओ ध्यान सं ओकरा पढ़लनि आ पढ़िते आनन्द विभोर भ गेली । असल मे ओ प्रेम-पत्र छल जाइ मे राजा अपन परिचय सेहो लिखि देने छलथिन। राजकुमारी मालिनक मुहे राजाक रूप-गुनक प्रशंसा सुनने छलीहे, ताइपर सं ओकर परिचयो भेटि गेलनि । ओहो एगो फूलक पत्तीपर जवाब लिखि मालिनक हाथें पठा देलथिन। राजा अपन इच्छित उत्तर पाबि घोड़ा पर चढ़ि राजकुमारी लग पहुंचि गेला। दुनू गोटे एक दोसर के देखि मुग्ध भेला । राति-बीच रहि पओ फटबा सं पहिने राजा अपन घोड़ा कसलनि आ मालिनक आङन पहुंचि गेला ।

एकर बाद सं रोजे राति क राजा राजकुमारी लग चल जाथि आ परात भेने घुरि आबथि । आस्ते-आस्ते नोकर-चाकर के एकर भनकी लागि गेलै आ बात राजकुमारीक पिताक कानधरि पहुंचि गेल । ओ तुरत्ते ओइ व्यक्ति के पकड़ि राजदरबार मे हाजिर करैक आदेश देलनि ।

राजा नित्तहु राजकुमारी लग सं घुरैत काल बाटक एक सरोबर मे नहा लैत छला । ओहू दिन जखन ओ सरोबर मे नहाइ छला एमहर सिपाही सभ घोड़ाक पएर मे लस्सा लगा

साटि देलक आ हिनका चारूकात सं घेरि लेलक। तैयो राजा कोनो तरहें घोड़ा लग पहुंचि ओइपर चढ़ि उड़बाक चेष्टा केलथि मुदा लस्सा लागल रहबाक कारणे ओ उड़ि नञि सकल । सिपाही सभ हिनका पकड़ि राजकुमारीक पिताक दरबार मे ल गेल ।

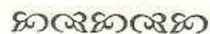
राजकुमारीक पिता कें जखन सभ बातक सांगोपांग पता चललनि त मनेमन विचारलनि जे एहन रूप-गुण सम्पन्न वर आर कतए भेटत ? किएक ने राजकुमारीक बियाह हिनके संग करा देल जाए । राजा त तैयारे छला । तुरत्ते जोतखी के बजा दिन ताकल गेल आ वेश धूमधाम सं हिनका लोकनिक बियाह भेल । किछु दिन सासुरमे रहि ई अपन कनियां आ वर-विदाइक संग अपन राज घुरि एला ।

राजा अपन राज घुरि त एला मुदा रहि-रहि के हुनका अपन उड़नमा घोड़ा मन पड़नि । जाइ घोड़ाक कारणे हुनका फुलकुम्मरि सन रानी भेटलनि तकरा ओ केना बिसरि पबितथि ! अन्त मे ओ फेर एक दिन मोहन बरही के बजओलनि आ एगो आर उड़नमा घोड़ा बना देबाक आग्रह केलथिन । मोहन बरही उदास होइत बाजल जे सरकार हम त जे कोनो चीज बनबै छी से एके बेर बनबै छी । दोहरा क बनेबा सं हम डेराइ छी तें एहन आग्रह नञि करी सएह नीक । मुदा राजाओ माननिहार नञि । हारि क ओ गछि लेलक आ किछु दिन मे बना क राजा कें पहुंचा देलक । राजावेश खुशी भेला आ ओकरा अपने इच्छे धन-सम्पति देलथिन । मुदा से देनहि की । बेचारा के जकरे डर छलै सएह भेलै । ओ दरबार सं घुरै छल तखने कोनो सांप काटि लेलकै आ केहनो ओझा-गुनी एलै, कतबो झाड़-फूक भेलै ओ बांचि नञि सकल । अरोसिया-पड़ोसिया मिलि ओकर दाह-संस्कार क देलकै ।

मोहनक पत्नी बड़ पतिबरता छल से ओ पतिक विछोह बरदास नहि क सकल आ ओकरे धधकैत चिता मे कूदि जान द देलक । जखन ई बात राजा के पता लगलनि त ओ सोचलनि जे मोहन सन ओस्ताद हुनके दुआरे मरि गेल । हुनक बेकलता एते बढ़ि गेल जे ओ चुपचाप महल सं बहरा मोहनक चिता मे कूदि पड़ला । ओमहर महारानी फुलकुम्मरि कें जखन सभ घटनाक पता लगलनि त ओ बताहि जकां करए लगली । पतिक बिनु जीवन व्यर्थ सोचि ओहो आबि मोहनक चिता मे कूदि अपन जान द देलनि ।

पंडीजी अपन खबास कें कहलथिन जे ओ चिता जे धधकि रहलए ने ओ मोहन बरहीक चिता थिक आ जे तीनू गोटे बेरा-बेरी ओइ मे कूदल ताइ मे पहिल मोहनक पतिबरता स्त्री, दोसर राजा आ तेसर महारानी फुलकुम्मरि छली ।

एतबा कहि पंडीजी दम धेलनि । भोर भइए गेल छलै, इहो लोकनि आगू मुहे विदा भेला ।



पड़ोसियाक दुनू



एगो रहए कुजरा । ओ बड़ गरीब रहए । लोकक खेत मे साग-पात उपजाबए । कुजरनी माथ पर ल गामे-गाम घूमि बेचै छलै । ओही सं कोनहुना दुनू परानी गुजर करै छल । गुजर की करत, दिन खेपैत छल । आङ-समाङ भेने तकलीफक ठेकान नहि । पैंचो-उधार त लोक ओकरे दैत छइ जकरा जथा-जाल रहै छइ ।

से कुजरनी अपन तंगी सं सदिखन दुखी रहै छल । ओ जखन-तखन कुजरा के कहितै—एते लोक देश-विदेश कमाइए, ओकरा सभक बहु-बेटा केना आराम सं रहै छइ। एकरा देखाउसो ने लगै छइ । इहो जिनगी कोनोजिनगी हइ ?

अपन घरबालीक उलहन-उपराग सुनैत-सुनैत कुजरो आजिज भ गेल छल मुदा बाहर जेबाक जेना साधंसे ने होइ । एक दिन खेत मे काज करै छल । टहाटही रौद आ भुखल पेट—मन मेछन्त भ गेलै । कनियें दूर पर एगो पीपरक गाछ रहै, ओ ओकरे छाहरि मे गमछा ओछा पड़ि रहल । ओइ गाछक जड़ि मे मारिते रास पाथर राखल रहै जाइपर नहा क घुरैत महिला सभ पानि ढारैत छल । केओ अक्षत-फूल आ सेनुर सेहो चढ़बैत छल । ओकरा सभक लेल ओ भेल महादेव ।

कुजरा के ई गप बुझल छलै । ओ सुतले-सुतल सोचलक जे एते लोक जे एइठाम पूजा करैए, पानि ढारैए, तकर कोनो ने कोनो सत्त त अबस्से हेतै । ओ मने-मन महादेव बाबा के गोहराबए लागल—हे महादेव बाबा, तों एत्ते लोकक मनकामना पूरा करै छहो, एक बेर एहू गरीब पर किरपा करहो ! बड़ गुन मानब' हे महादेव बाबा ।

एहिना गोहरबैत कुजरा के आंखि लागि गेलै । ओ सपना मे देखलक जे महादेव बाबा साक्षाते ओकरा सामने ठाढ़ छथिन आ कहै छथिन जे माङ तोरा जे माङबाक छौ । ओ झट द महादेव बाबा सं चारि बिघा खेत माङि लेलक ।

महादेव बाबा कहलथिन—ठीक छइ, तोरा चारि बिघा खेत भेटतौ, मुदा हमर एगो शर्त्त अइ ।

कुजरा बाजल—से की हओ बाबा ! तोरो शर्त्त ?

महादेव बाबा कहलथिन—हं, हमर शर्त्त अइ जे तों जे किछु मङबें आ हम तोरा देबौ तकर दोबर तोहर पड़ोसिया के भ जेतै ।

कुजरा कने काल गुन-धुन करैत रहल । दोसर उपाय नञि देखि ओ बाजल—हमरा मंजूर हए ।

महादेव बाबा कहलथिन जे जो तोरा घरे लग चारि बिघा जमीन तोहर भ गेलौ ।

कुजरा नचैत-गबैत आङन गेल आ अपन घरबाली के सभ खेरहा कहलकै । दोसरे दिन सं ओ आर जी-जान सं अपन खेत मे तरी-तरकारी उपजाबए लागन । कनियें दिन मे ओकर अवस्था नीक भ गेलै । मुदा ओकर पड़ोसियाक अवस्था ओकरो सं नीक भेल जाइ आ से बात एकरा बरदास्त नहि होइ । ओकर घर पक्का रहै आ एकर खर-पात सं छाड़ल ।

एक दिन ई फेर पीपरक गाछ तर जा ओहिना गमछा ओछा सूति रहल आ महादेव बाबा के गोहराबए लागल जे हे महादेव बाब हमरा पक्का मकान बना दहो । महादेव बाबा कहलथिन जे जो भ' गेलौ । कुजरा घर जा क देखलक जे सत्ते एकर मकान पक्का भ गेल छइ, मुदा पड़ोसियाक मकान दिस नजरि पड़िते झमान भ क खसल । पड़ोसियाक मकान एकर दोबर आ तेहने सुन्नर । ई बात ओकरा बरदास्त नञि भेलै । सोचए जे महादेव बाबा के गोहरबैए ओ आ पड़ोसिया ओकर मुफ्ते मे सभ हासिल केने जाइ छइ ।

कुजरा अपन काज-धंधा छोड़ि कतेको दिन एही सोच मे डूबल रहए जे पड़ोसिया के केना दबाओल जाए । अन्त मे ओकरा एगो उपाय सुझलै आ ओ दौड़ल पीपरक गाछ तर । फेर ओ महादेव बाबा के गोहरओलक । महादेव बाबा हाजिर भेलथिन आ पुछलथिन जे आर की चाहियौ ?

कुजरा कल जोड़ि मिनती केलक—हे महादेव बाबा, हमर एगो आंखि फोड़ि दहू ।

महादेव बाबा त अवाक । आइधरि एहन वरदान त केओ ने मङने छलनि । ओ ध्यान केलनि त कुजराक डाहक कारण पता लगलनि । ओ ओकरा बड़ बुझेलथिन जे एहनो वर केओ मङैए ! ओकर सोचि-विचारि के माङै ले कहलथिन, मुदा कुजरा जिद्द रोपि देलक जे ओकरा आर किछु नञि चाहिऐ—बस ओकर एगो आंखि फोड़ि देथुन महादेव बाबा । हारि कें महादेव बाबा ओकरा एक आंखि फोड़ि कनाह क देलथिन । कुजरा खुशी सं उछलैत-कुदैत घर गेल आ पड़ोसियाक दलान दिस तकलक । दलान पर एगो कुर्सी पर ओकर पड़ोसिया बैसल छलै । ओकर दुनू आंखि निपट्ट देखि एकरा मन के शान्ति भेटलै।

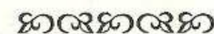
दू-चारि दिन बितल । कुजरा जखन-तखान देखए जे ओकर पड़ोसिया आराम सं कुर्सी पर बैसल छइ । ई सोचए जे अन्हरा के त भने आराम भ गेलै, कोनो काजो-उदेम

नञि करए पड़ैत छइ । फेर ओकरा जेना झुरपिट्टी उठि गेलै । ओ फेर महादेव बाबा लग दौड़ल । महादेव बाबा पुछलथिन—आर की चाहियौ तोरा ?

कुजरा बाजल—महादेव बाबा, हमरा दू गो पोखरी चाही - घरक दुनू बगल दू गो पोखरी ।

महादेव बाबा त बात हारल छला, कहलथिन—जो देलियौ ।

कुजरा दौड़ल घर आएल । ओ अपन पोखरि की देखत, पड़ोसियाक घरक चारूकात चारिटा पोखरि देखलक । पहिल बेर ओकरा पड़ोसियाक पोखरि देखि खुशी भेलै । ओही दिन अहल भोरे मे टोल मे हल्ला भेलै जे कुजराक पड़ोसी अन्हरा पोखरि मे ओंघरा क खसि पड़लै आ डूबि कें मरि गेलै । ओकरा आङन मे कन्ना रोहटि होमए लगलै आ एमहर कनहा कुजरा अपने ताले नचैत रहल ।



चरबाहा राजा

□

एगो गरीब बाभन रहथि । ओ भीख-दुख माङि आनथि त कोनहुना तीन परानीक गुजर चलनि । अपने, आङनबली आ एगो बेटी । बाभन पढ़ल-लीखल थोड़ मुदा चलाक वेश रहथि । मुदा रहथि कोढ़ियाठ । तें भीखो-दुख मङए ले बेसी दूर गेनाइ पसिन्न नहि । एमहर बेटी समर्थ भ गेलथिन तकरो बियाह-दानक चिन्ता नञि ।

ओमहर बाभनि हिनकर छिच्छा देखि झुर-झमान होइत रहै छली । हुनका अपन एकमात्र बेटीक चिन्ता खेने जाइ छलनि । एकदिन बाभन जखन भीख माङए लेल विदा भेला त ओ खौंझा क कहलथिन—हं जाउ । सेर आधसेर भीख भेटिए जाएत—आ कोनहुना आइयो खेपिए लेब । अए अहां केहन पुरुष छी ! बेटी समर्थ भेल तकरो कोनो चिन्ता फिकिर नञि । एकर बतारी सभ के बियाह-दान भेलै, धीयो-पुता भेलै आ अहां लेखे ओ नेने अछि ? कहियो पल उठा क देखबो केलिअइए ओकरा दिस ?

आङनबालीक बात पर पहिने त बाभन पिनकला मुदा फेर विचारलनि त सभ बात उचिते बूझि पड़लनि । ओ ओइ दिन वेश टोप-टहंकार क घर सं बहरा गेला । ओ लगक शहरक एक धन्ना-सेठक ओइठाम पहुंचला आ वेश जोर सं सस्वर-मंत्र पढ़ि ओकर उन्नतिक आशीर्वाद देलथिन । बेचारा सेठ के मंत्रक माने कि कपार लगतै, मुदा ओ हिनक टोप-टहंकार सं वेश प्रभावित भेल आ नीक आदर-सत्कार केलकनि । भोजनक बाद सुपारी कतरैत बाभन देवता सेठ लग अपन बेटीक बियाहक बात उठओलनि आ ओकरा सं पांच सए टाका कर्ज देबाक याचना कएलथिन । बाभन कहलथिन जे कन्यादानक पश्चात यथाशिघ्र ओ सूदि समेत पाइ आपस क देथिन ।

एगो अपरिचित के पांच सए टाका देबक बात पर बेचारा सेठ गुम पड़ि गेल, मुदा बाभन देवता कहीं खिसिया कें सराप नहि द देथि सोचि टाका आनि देलकनि । ओ अपना

मन के बुझओलक जे कनियें दिनक बात छइ, फेर त सूद समेत दैए देता । फूसि त ई नहिञे ने कहता ।

ओइदिन बाभन वेश प्रसन्न छला आ सबेर-सकाल घर पहुंचि गेला । आङनबाली देखिते कहलथिन—आइ बड़ खुशी देखै छी, की बात छइ ?

बाभन बजला—बात की रहतै ! अहां कहै छलौं ने जें हमरा अपन बेटीक बियाहक कोनो चिन्ता नञि अछि । अहां देखैत रहू जे एही शुद्ध मे हम केहन धूम-धाम सं अपन बेटीक बियाह करैत छी ।

बाभनि सोचलनि जे ई एहिना गप हंकै छथि । मुदा बाभन पराते सं उपयुक्त वरक खोज करए लगला आ ठीके ओही शुद्ध मे अपन बेटीक बियाह आ दुरागमन दुनू क देलनि ।

कन्यादानक बाद बाभन निश्चिन्त भ गेला आ फेर पुराने ढाढ़ी पकड़लनि । ओ इहो बिसरि गेला जे बेटीक बियाह लेल ओ सेठ सं पांचसए कर्ज लेने छथि आ से सधेबाक छनि । एहिना मास-बर्ख बितैत गेल आ फेर त कएक बर्ख बीति गेल । ओमहर सेठ के अपन पाइ आपस नञि हेबाक कारणे निन्ने ने होइ । ओ बाभनक नाम-गाम जनैत छल तें एक दिन पहुंचिए गेल । मुदा संयोग एहन जे ओही दिन बाभन मरि गेल छल । सेठ के जखन ई बातक पता चललै त ओहो समसान दौड़ल । ओतए जा ओ कठिआरी लोकनि सं सभ खेरहा कहलक । ओ लोकनि कहलथिन जे यौ सेठ जी, जं थोड़ेक कालक लेल मानियो लेल जाइ जे बाभन अहां सं ठीके कर्ज लेने छला तैयो लाभ की । कर्ज लेनिहार मरिए गेला, संपति कोनो छनि नञि जे तकरा बेचि-विकनि कर्ज सधाओल जाए । जं बेटो रहितनि त कमा-खटा सधा दितथि । बापक कर्ज त बेटा सधबिते अछि । तें नीक जे अहां आपस जाइ । हमरो लोकनि शेष संस्कार क आपस जाएब ।

सेठ बाजल—यौ बाबू-भौया लोकनि, पांचसए टाका कम नञि होइ छइ । हमर बड़ मेहनतिक कमाइ अइ । तें हम अपन पाइ बिनु नेने नञि घुरब । जं हिनक कोनो संपति नञि छनि, बेटो नञि छनि त ई अपने सोध करता । अपने लोकनि सं हमर विनती जे राति भरिक मोहलति देल जाए । हम हिनका सं एकान्त मे बात करए चाहै छी । प्रात भेने अपने लोकनि आबि हिनक अंतिम संस्कार क देबनि ।

कठिआरी सभा सोचलक जे सेठ बताहे बुझाइए । मुरदा सं बात करत आ अपन कर्ज असूलत ! मुदा ओकर जिद आ अनुनय-विनय देखि सभ घुरि गेल । सेठ अंचिया ओगरने बैसल रहल । एकान्त पबि ओ बाजल—हे बाभन देबता, हम अहां पर बिसबास क क पांचसए कर्ज देने रही आ अहूं सूदि समेत आपस क देबाक बचन देने रही । मुदा अहां अपन बचनक पालन बिनु केने आइ अंचिया पर पड़ल छी । आबो त हमर टाका द दिअ ।

एते सुनिते बाभनक लाश उठि बैसल आ बाजल—हे सेठ, हम अहां सं कर्ज त ठीके लेने रही, मुदा आब त हम मुइल छी। मुइल लोक केना आ कतए सं कर्ज सधाओत । तें अहां ओकरा बिसरि आपस घर जाउ । आ एते कहि ओ फेर पड़ि रहल ।

सेठ कने काल चुपचाप सोच मे पड़ल रहल । फेर बाजल—हे बाभन देवता, अहां बिसरि रहल छी जे हम अहां के केहन मौका पर मदति केने रही । हमरे पाइक बलें अहां अपन बेटीक बोझ माथा पर सं उतारने रही । तें हमर विनती जे जेना हो हमर पाइ आपस करैक बेवस्था करू । हम बिनु पाइ नेने आपस नञि हएब ।

लाश फेर उठि बैसल आ बाजल—हे सेठ हम स्वीकार करै छी जे अहां सं कर्ज लेने रही । जं हम नठि जाइ ? की अहां एहन कोनो गबाही आनि सकब जे हमरा पाइ लैत देखने हो । अहां जे हमर अंतिम संस्कार मे बाधा देल से की उचित । तें पहिने कोनो गबाहक इन्तजाम करू जकरा सामने हम अहांक कर्ज चुकता करब । एतबा कहि लाश फेर पड़ि रहल ।

सेठ के अपन पाइ भेटबाक कने उमेद त भेलै मुदा एते राति मे ओकरा के भेटतै आ ओकरा बातक बिसवास करतै से एक समस्या । एहिना गुन-धुन करैत ओ उठि विदा भेल । किछु दूर पर इजोत देखना गेलै आ ओ ओम्हरे बढ़ल । इजोत नदी कात सं अबैत रहै जे लगे मे छलै । ओ ओइठाम पहुंचल । ओइठाम साहुकारक दल नदी मे अपन-अपन नाओ लगेने तीर पर डेरा देने छल आ भानस-भात करैत छल । सेठ दलक मुखिया लग पहुंचल जे नवतुरे छल आ ओकरा सभ खिस्सा विस्तार सं कहलकै । ओकरो उत्सुकता भेलै आ ओ सेठक संग जेबा लेल तैयार भेल । फेर दुनू लाश्क लग आयल । सेठ लाश के कहलकै—हे बाभन देवता, अहां जेना कहने रही, हम गबाह ल आनल । आब त हमर पाइ दिअ ।

लाश बाजल—गबाह त अहां ल आनल । आब कोनो एहन लोकक बेवस्था करू जे सूदि समेत अहांक पाइ आपस क देत आ हमरा कर्जा सं मुक्त करत । बदला मे हम ओकरा एहन उपाए कहबै जाइ सं ओकरा एक एहन पुत्र-रत्न जन्म लेतै जकरा मुह सं अगबे हीरा-मोती झरतै आ किछुए दिन मे ओ पैघ सम्पतिक मालिक भ जाएत ।

बाभनक गप सुनि सेठ सोचलक जे ई बात टारि रहल अछि, मुदा युवक साहुकारक उत्सुकता आर बढ़ि गेलै । बेचारा के बाल-बच्चा रहबे ने करै । जहिए दुरागमन करा कें कनियां के घर अनलक तहिए दूर देशक व्यापार करै लेल घर छोड़ै पड़ल रहै । कनियों के नीक जकां कहां देखि-बुझि पओने छल । हुलसैत बाजल—हे बाभन, हम अहांक कर्ज पाइ-पाइ क सधा देब । अहां पुत्र-प्राप्तिक उपाय कहू ।

लाश कहलक—पहिने अहां सेठ के पाइ द दिऔ आ एकरा एहिठाम सं जाए दिऔ, ने त इहो ओ बात सुनि लेत ।

साहुकार पाइ चुका देलकै तखन लाश बाजल—हे युवक, एखन एहन लग्न छइ जे जे केओ एइ लग्न मे अपन स्त्रीक संग सहवास करत ओकरा एक एहन पुत्र-रत्न प्राप्त हेतैक जे हंसतै त ओकरा मुंह सं हीरा आ कनतै त मोती झरतै । तें अहां तुरत अपन स्त्री लग चल जाउ ।

साहुकर कहलकै—हे बाभन, हमर घर एहिठाम सं ततेक दूर अछि जे केनो हालत मे आइ पहुंचब संभव नहि ।

लाश कहलकै—वेश हम तकरो उपाय करैत छी । अहां जखन हमर विश्वास क हमरा कर्ज मुक्त कएल तखन हम अहां के निराश नहि करब । हम अपन शक्ति सं अहां के अपन स्त्री लग पहुंचा दैत छी । सहवासक बाद हमर स्मरणा करब—फेर अहां तुरत्ते आपस अपन दल लग घुरि आएब । मुदा मन राखू, ई बात लोक सं गुप्त राखी ।

बाभन अपन शक्ति सं साहुकर के घर पहुंचा देलथिन । ओकर स्त्री पलंग पर सुतल छल । ओ जखन अपना बगल मे एक पुरुख के देखलक त डेरा गेल आ चिचिआय लागल। साहुकार ओकरा मुंह दाबि देलकै आ कहलकै जे ओ आन पुरुष नञि, ओकर स्वामी छइ। ओ अपन स्त्री के सभ खिस्सा कहि विश्वास दियओलक आ फेर ओकरा संगे सहवास केलाक बाद घुरि गेल । घुरबा सं पहिने ओ अपन स्त्री के सेहो ई बात गुप्त राखै ले कहलकै।

साहुकार फेर अपन दल मे आबि गेल आ पराते दलक संग दोसर देशक यात्रा पर विदा भ गेल । एक देश सं दोसर देशक यत्रा करैत ओ अपन गाम-घर बिसरि गेल । व्यवसाय मे जहिना लाभ होइ, मन चसकल जाइ ।

ओमहर जइ राति ई अपन स्त्रीक संग सहवास क घुरल छल तकर पराते आङनक स्त्रीगण सभ एकर कनियांक स्थिति देखि ओकरा पर संदेह करए लगलै । जं जं दिन बीतै ई संदेह आर पकिया भेल जाइ । कनियांक कल्याणक जोगता रहै से त नुकेबा वाली बात रहलै नहि । कनियां कतबो सफाइ दै मुदा केओ ओकर विसबास नञि करै आ एक दिन त मारि-पीटि ओकरा घरो सं बहार क देलकै । बेचारी कनैत जाइत रहए त गामक कात मे धोबिनक घर रहै, ओ देखलकै त ओकरा दया लगलै आ एकरा अपना घर मे राखि लेलकै। ओ धोबिन सेहो गढ़ुआर रहए आ संयोग एहन जे एके दिन दुनू के बेटा जन्म लेलकै । एकर बच्चा जखने कनलै त ओकरा मुंह सं मोती बहरेलै । ई देखिते जेना बेचारी के अपन स्वामीक बात मोन पड़लै आ आधा दुख दूर भ गेलै ।

ओमहर बच्चाक मुह सं हीरा-मोती खसबाक बात धोबिया-धोबिनियां के सेहो पता लगलै । ओ सभ सोचलक जे आइ ने कालि ई मौगी त अपन बच्चा के ल पड़ाइए जाएत ताइ सं हमहीं सभ किए ने एकरा उड़ा दी । एहि बच्चाक परतापे त कतौ - कोनो देश मे आराम सं जिनगी काटि लेब । इएह सोचि एक राति जखन साहुकारक स्त्री निन्नभेर सुतल छल, ई सभ ओकर बच्चा के ल क दोसर देश पड़ा गेल । ओमहर जखन साहुकारक स्त्रीक निन्न टुटलै त ओ अपन बच्चा के तकलक । बच्चाक संगहि धोबिय-धोबिनियां के सेहो नञि देखि सोचलक जे हो ने हो धोबिया-धोबिनियां ओकर बच्चा के ल क पड़ा गेलए । ओ बताहि जकां कानय लागल आ कनैत-खिजैत ओकरा लेकनिक खोज मे बहरा गेल । बौआइत-बौआइत इहो ओहीठाम पहुंचल जतए धोबिया-धोबिनियां रहैत छल । थाकल-ठेहिआएल एक दिन ओ एकटा गाछ तर बैसल छल तखने ओ धोबिया के मोटा लेने जाइत

देखलकै । ओ त ओकरा अलगटे चीन्हि गेल आ नुका क ओकर पछोर धेलक । जखन धोबि अपन आङन गेलै त इहो भीखक लाथे पहुंचल । बगए-बानि सं त ई भिखमङनी लगिते छल तें केओ चिन्हबो ने केलकै । कनियें कालक बाद दू गो टेल्ह घर सं बहरेलै आ एकरा अपन बेटा के चीन्हबा मे कोनो धरी-धोख नञि भेलै । ई भरि मन अपन पूत के निहारलक आ ओतए सं बहरा सोझे राजमहल पहुंचि गेल ।

साहुकारक स्त्री महलक एक खबासिन कें खुसामद क क ओकरा संग कोनहुना महारानी लग पहुंचल आ कानि-कलपि क हुनका सभ खेरहा कहलकनि । महारानी के एकरा पर दया लगलनि आ ओ महाराज के कहि पठओलथिन । महाराज अपन सिपाही के पठओलनि जे ओइ धोबिया-धोबिनियां के पकड़ि आनए । सिपाही आदेशक पालन केलक। धोबिया-धोबिनियां के एलाक बाद महाराज पहिने साहुकारक स्त्री सं सभ बात सुनलनि आ फेर ओकरा दुनू के पुछलथिन । धोबिनियां त भाभट पसारि देलक आ कानि-कानि क कह लागल जे दुनू ओकरे बेटा छइ । जौंआ छइ । ई मौगी निश्चय कोनो डाइन-जोगिन अइ जे ओकरा बेटा के ल जाक मारि-काटि देबय चाहैए । धोबिनियांक नाटक देखि महाराजा के विश्वास भ गेलनि जे हो ने हो ई सत्ते बजैए । साहुकारक स्त्रीक बगै-बानियो तेहने रहै, ओकरा बताहि बुझि दरबार सं बैला देल गेलै । बेचारी छाती-कपार पीटैत बहरा गेल ।

साहुकारक स्त्री मुदा ओ नगर नञि छोड़लक । ओकरा विसबास रहै जे एक ने एक दिन ओकर बेटा अबस्से ओकरा भेटतै ।

एहिना किछु दिन बितलाक बाद ओकरा पता लगलै जे राजाक एगो चरबाहा बड़ दीब न्याय करै छइ । केहनो झगड़ा-फसादक तफसिया ओ बड़ सहजे क दै छइ आ तें लोक ओकरा चरबाहा राजा कहै छइ । से ओहो एक दिन तकैत-तकैत ओतै पहुंचल । ओ चरबाहा राजा के सभ खेरहा कहैत अपन बेटा आपस दिआ देबाक मिनती केलक । चरबाहा राजा अपन किछु संगी के धोबिया के बजा आनै ले पठओलक । पहिने त ओ आना-कानी केलकै जे महाराज स्वंये तफसिया क चुकल छथि त आब चरबाहाक कोन काज । मुदा चरबाहा सभक डेरओला-धमकओलाक बाद ओ एकरा सभक संग जाइ लेल राजी भेल । चरबाहा राजा जखन सत्त-सत्त बाजै ले कहलकै त धोबिया फेर अपन भाभट पसारलक। राजा बिचारलक जे ई मामला सोझ नञि छइ तें एकर निदान बुधियारी सं करए पड़तै । ओ धोबि के कहलकै हम एगो ढोल तोरा गर मे बान्हि दै छिअह जे बजबैत तोरा साँसे नगर घुरबाक छह । मुदा मन राखह जे ढोल के कतौ गर सं बहार नञि करिह आ नीचा मे नञि रखिह । आन कोनो उपाय नञि देखि धोबि राजी भेल आ गर मे ढोल लटका बजबैत विदा भेल ।

ढोल अतत्तह भारी रहै, मुदा चरबाहा राजाक आदेश रहै जे ओकरा नीचा मे नहि राखल जाए । घुरैत-घुरैत धोबिया जखन अपन घर लग गेल त आङन सं ओकर घरबाली बहरेलै । अपन स्वामीक ई हालत देखि ओकरा बड़ कचोट भेलै । ओ लग जा अपन

स्वामीक कान मे कहलकै—ओइ बच्चाक परसादे हमरा लोकनि के तत्ते हीरा-मोती जमा भ गेल अइ जे नीके-ना दिन चलि जाएत । आब ओकरा बरु घुराइयो दिऔ । अहांक ई दुर्गति हमरा नञि देखल जाइए ।

धोबि कहलकै—एकरे कहै छइ मौगी जाति । ई कने-मने कष्टक डरें हम ओइ हीरा-मोतीक खाइन के केना छोड़ि देब । ई चुपचाप घर जाओ । एतबा कहि ओ ढोल बजबैत फेर चरबाहा राजा लग जुमि गेल ।

फेर चरबाहा ओ ढोल साहुकारक स्त्रीक गर मे लटका ओकरो ओहिना करए ले कहलकै । ओहो बेचारी विदा भेल । सक नञि लगै मुदा सन्तानक ममता बलें चलल जाए। लगपास मे कोनो लोक नहि रहै त बड़बड़ाए—हे भगवान, अइ स त मौगतिए द दितौं सएह नीक । दुरागमन होइते घरबला परदेश चलि गेल, नीक जकां चिन्हियो नञि पओलिऐ । फेर एक राति एबो कएल त चुपचाप चोरा क आ लोक हमरा कुल्टा बुझि लेलक, घर सं बहार क देलक । धोबिक आश्रय लेलौं त ओ हमर बेटे के चोरा क पड़ा गेल आ ऱम रने-बने बौआइत छी । हीरा-मोती बरु ल लीत, मुदा हमर कोखिक जनमल त द दीत । राजा ओइठाम गोहारि लगओलौं त ओतौ न्याय नञि भेटल उनटे महल सं गंजन क क बैला देलक । आ आइ ई ढोल गरा मे बान्हि बाटे-घाटे बौआ रहल छी ।

एहिना ओहो फेर चरबाहा राजा लग पहुंचल । चरबाहा राजा फेर एकरा दुनू स सत्त बात बाजै ले कहलकै मुदा धोबि त टस्स स मस्स भेनिहार नञि । तखन सभक सोझे मे ढोल के खोलल गेल आ ओइ मे सं एगो पांच छओ बर्खक बच्चा बहार भेल । ओ बच्चा धोबिया-धोबिनियांक बात आ फेर साहुकरक स्त्रीक बात सभ के सुनओलक । सभ धोबिया के मार-मार क दौड़ल मुदा चरबाहा राजा मना केलकै । ओ किछु लोक के धोबियाक संग पठा ओइ बच्चा के आनए लेल कहलकै । चरबाहाक न्याय सं साहुकारक स्त्रीक खुशीक ठेकान नहि । कनिञे काल मे सभ ओकर बेटा के नेने एलै आ ओ भरि पांज क अपन बेटा के पकड़ि छाती मे साटि लेलक ।

चरबाहा राजा अपन किछु संगी के संग क साहुकारक स्त्री के ओकर गाम पठा देलकै । आङन जाइते सभ ओकरा मार-मार क उठलै, मुदा चरबाह सभक बत सुनि ओ सभ शान्त भेल । संयोग एहन जे ओही घड़ी साहुकार सेहो घर घुरल आ अपन स्त्रीक बातक समर्थन कएलक । परिवार मे त जेना आनन्दक लहड़ि उठि गेल होइ । चरबाहा सभ अपन देश घुरि आएल ।

ओमहर चरबाहा राजाक न्यायक ई सोरहा परोपट्टा मे भ गेलै । राजाक कान मे सेहो ई बात गेलनि । हुनका चरबाहक बुद्धि देखि छगुन्ता लगलनि । एमहर अपन बेटाक बुद्धि-संस्कार देखि ओहिना दुखी रहैत छला । हुनका बाद राजक की हेतै ताइ चिन्ता सं फिरीसान रहैत छला । राति मे निन्न नञि होइ छलनि । एहिना एक दिन पलंग पर पड़ल

छला त महारानी हिनक अवस्था देखि ओकर कारण पुछलथिन । राजा सं सभ बात सुनलाक बाद ओ बजली—जं जी-जान बकसि दी त हम किछु बाजी ।

राजा कहलथिन—अहां ई की कहै छी ! अहां हमर स्त्री छी, एइ राजक महारानी ....।

महारानी कहलथिन—सेत छी, मुदा हमरो सं त कोनो भूल भइए सकैए ।

राजा बजला—हं, भ सकैए । मुदा ताइ लेल हम अहां के दंड नञि द सकै छी । अहांक सभ गलती हमरा लग माफ अइ, तें जे कहबाक हो, निधोख कहू ।

एकर बाद महारानी विस्तार सं सभ खेरहा कहलथिन जे केना ओ अपन बच्चा के कुरुप आ चमैनिक बच्चा के सुन्नर देखि दगरिनक सहायता सं ओकरा बदलि लेने छली । असल मे ओ चरबाहे हिनका लोकनिक अपन बेटा छनि आ जकरा ओ अपन बेटा बुझै छथि से वास्तव मे चमैनिक बेटा थिक ।

महारानीक मुहे ई खिस्सा सुनिते राजा के त जेना खुशीक ठेकान नहि रहल । मुदा धर्मसंकट रहनि जे केना कें ओकरा आनल जाए आ लोक के बुझाओल जाए ।

प्रात भेने ओ अपन समस्त मंत्रीक संग एहि मादे गप्प केलनि । सभक विचारे ओइ चरबाह आ चमरा-चमैनियां कें बजौलनि । जे दगरिन बच्चा बदलने छल तकरो बजाओल गेल ।

राजा चमरा-चमैनियां के सभ बात बुझा अपन बेटा आपस क देबाक लेल कहलथिन। ओ इहो कहलथिन जे ओकरा लोकनिक बेटा जे एते दिन महल मे रैजकुमार बनि रहै छल तकरा कोनो वस्तुक तकलीफ नञि होइ ताइ लेल प्रचूर धन-बित राज-खजाना सं देल जाएत । चमरा-चमैनियां मानि गेल । चरबाहा राजा अपन महल मे माए-बाप लग आबि गेल आ खुशी सं रहए लागल । ओना लोक सभ आ खास कें संगी-साथी सभ चरबाहा राजा कहि ठट्ठा करबे करै ।



अहदी



एगो रहथि राजा । ओ जेहने दयालु रहथि तेहने प्रजावत्सल सेहो । ओ चाहथि जे हुनका राज मे केओ भूखल आ निवस्त्र नहि रहए । तें ओ भेष बदलि कें घूमल करथि । हुनका बड़ दुख होइन जखन ओ कोनो भिखमंगा के देखथि, मुदा रोजे दू-चारि गोट भिखमंगा हुनका सोझा पड़िए जाइन । एक दिन ओ अपन सभ मंत्री के बजओलनि आ पुछलथिन जे हमर एते प्रयास केलाक बादो लोक दुखी अछि, भीख मङैत अछि, तकर की कारण ? ओकरा लोकनिक लेल कोनो काज-उदेमक व्यवस्था किएक ने कएल जाइछ ?

मंत्री लोकनि एकस्वरें बजला जे महाराज ओ सभ अहदी अछि, कोढ़ियाठ अछि । मेहनति नहि करए चाहैए ।

राजा कें छुबुध लगलनि जे एहनो लोक कोना भ सकैछ जे देह-दशा रहितो मेहनति नहि करए चाहत आ दुआरिए-दुआरिए भीख माङत ! ओ एकर परीक्षा लेमए चाहलनि । दोसर दिन सगरो डिगडिगिया पिटबा देल गेल जे राज मे जते जे अहदी अछि तकरा सभक खेबा-पीबाक व्यवस्था राज दिस सं होएतैक । तें एक सप्ताहक भीतर सभ अपन-अपन नाम लिखा आबए आ फेर जाइठाम रहबाक व्यवस्था हेतै ततए चल जाय ।

दोसरे दिन लोकक धरोहि लागि गेल आ ई क्रम कते दिन धरि चलैत रहल । नगरक बाहर बड़का-बड़का तम्बू लगाओल गेल एकरा सभ कें रहै लेल आ भोजन-भातक सेहो व्यवस्था कएल गेल ।

अहदीक विशाल लिस्ट जखन राजाक सामने पड़ल त हुनक अचरजक ठेकाने नहि । ओ फेर मंत्री लेकनि कें बजा पुछलथिन जे भीखारिक संख्या त थोड़ छल मुदा ई लिस्ट देखि लगैए जेना राजक बेसी भाग लोक अहदीए हो ।

एगो बूढ़ मंत्री कहलथिन जे महाराज, बैसलेठाम जं लोक कें खेनाइ-पीनाइ भेटि

जाइ त मेहनति लोक किए करए चाहत ? ई सभ असली अहदी थोड़बे अछि, देखाउसे अहदी अछि ।

महाराज पुछलथिन जे तखन असली अहदीक पता केना चलत ?

मंत्री लोकनि सलाह देलथिन जे महाराज, एगो पैघ लाहक घर बनबाओल जाए आ सभ अहदी कें ओहि मे राखल जाय । सुयोग देखि ओहि मे आगि लगा देल जाइ । जान सभकें प्रिय होइ छइ । सभ लंक लागि पड़ाएत, मुदा जे असल अहदी होएत से सहजे नहि पड़ाएत ।

राजा कें बात जंचि गेलनि । ओ पराते कारीगर सभ के बजा घर बनेबाक आदेश देलथिन । संगहि सभ के चेता देल गेलै जे एहि बातक भनक ककरो नहि लागक चाही । दुइए दिन मे सुन्नर घर बनि कें तैयार भ गेल आ सभ अहदी के नव घर मे पठा देल गेलै। राति मे नीक-नीकुत भोजन-भात केलाक बाद सभ सूतै लेल गेल त कने कालक बाद ओइ मे आगि लगा देल गेलै । लाह जखने एकाध ठोप घमि कें खसलै कि सभ लंक लागि पड़ाएल । अन्त मे बांचि गेल केवल चारि गोटे ।

ओइ मे सं एक आदमीक देह पर जखन एक ठोप लाह गलि कें खसलै त कर फेरैत बाजल—बुझि पड़ता है घर जरता है ।

दोसर के जेना अनसोहांत लगलै । ओ बाजल—जरता है त जरने दो ।

तेसर के कने आंखि सन भरिसक लागल छलै । ओ तमसाइत बाजल—अरे का कचबचिया कचबच करे ।

चारिम अपन चद्दरि आर सरिया कें ओढ़ैत कहलकै—तान कमरिया पड़े रहो, आठ बजे धरि सोना हए ।

पहरा पर जे सिपाही सभ छल से बुझलक ई चारू असल अहदी अछि । ई सभ जरि क मरि जायत मुदा उठत नहि । फेर ओकरा सभ कें घीचि कें बहार कएल गेल आ रहबाक, खेबा-पीबाक असालतन व्यवस्था राज दिस सं क देल गेलै ।

कुल्टा

एगो साहुकार रहए । देश-विदेश मे ओकर व्यवसाय पसरल रहै । एक बेर एहन भेलै जे ओकर सभ नाओ समुद्री अन्हर मे डूबि गेलै । नोकर-चाकर जे रहै, केओ ने बंचलै । एमहर जाइ महाजन सं ओ पाइ-कौड़ी लेने रहए से एकर घरो-आङन दखल क लेलकै । बेचारा करबे की करैत । सोचलक जे आब एहि नग्र मे रहबे किए करत । किए ने आने देसकोस जा अपन भाग्य के अजमाबए । इएहे सोचि एक दिन ओ अपन घर सं बहरा गेल । संग मे रहै स्त्री आ एगो झांझी कुकूर, जकरा ओ बड़ मानै छल ।

साहुकार अपने त बड़ नीक लोक छल । जेहने शील-स्वभाव तेहने धर्म-कर्म, दान-पुन मे रूचि मुदा स्त्रीक स्वभाव ठीक एकर उनटा छलै । साहुकार अपन स्त्री के बड़ मानै छल तें ओकर गलती देखियो कें अनठा दैत छलै । से जाइत-जाइत जखन ओ सभ बड़ी दूर गेल त थाकि सन गेल । स्त्री कहियो घर सं बहराएल नहि आ ने पएरे चलैक आदति । दुपहरियाक रौद सेहो जनमारा छलै । ओकर घरबाली कहलकै जे आब हमरा बुते आगां गेल नहि पार लागत से पहिने कने सुस्ता लेल जाय । ओ मानि गेल आ ओहिठाम नदी कात मे एगो पीपरक गाछ तर बैसि गेल । स्त्री कहलकै जे हमरा औंघी लागल अइ से अहां कने जांघ खसाउ हम कने आंखि मुनि लैत छी । ओ तहिना केलक । ओकर स्त्री सूति रहलै । बेचारा साहुकार अपन आगांक बात गुनधुन करैत रहल ।

संयोग सं ओही गाछ पर विघ-विधाता सेहो बैसल छला । विधाता विध के कहलथिन जे देखियौ त बेचारा साहुकार के एही बयस मे केहन विपत्ति पड़ि गेलै । धन-सम्पति त गेबे केलै, जाइ स्त्री सं ओ एते सिनेह करैए ओहो त पले घड़ीक पाहुन छइ । आर कने काल मे ओकर हृदयक धड़कन रुकि जेतै आ ओ मरि जाएत ।

विध पुछलथिन जे की एकर कोनो उपाय नञि छैक जाइ सं ओ बांचि सकै ।

विधाता कहलथिन जे उपाय एकेटा छैक । साहुकार जं अपन अरुदा मे सं आधा ओकरा द दइ । तखन जहिया मरत, दुनू संगहि मरत ।

साहुकार सभ बात त गुनधुन मे नहि सूनि पओलक मुदा आधा अरुदा देबाक बात ओकरा सुनाइ पड़लै । जखन बड़ी काल भ गेलै आ ओकर स्त्री नहि उठलै त ई ओकर देह डोला उठाबए लागल । ई जखन कतबो प्रयास केलक आ ओ नहि उठलै, ओकर देह ठंढा बूझि पड़लै त एकरा आंखि सं दहो-बहो नोर बहए लगलै । कनैत-कनैत एकरा आधा अरुदा देबाक बात मन पड़लै । ई बाजल जे विधाता, हम जे बात सुनलौं से जं सत्त त हम अपन आधा अरुदा अपन स्त्री के द रहल छी जइ सं हम दुनू संगे जीवी आ संगे मरी । ओ एतबा कहिते अइ कि ओकर स्त्री धड़फड़ा कें उठलै । साहुकरक त खुशीक ठेकाने नहि ।

स्त्री उठिते कहलकै जे ओकरा बड़ जोड़ भूख लागल छइ । साहुकार ओकरा बुझओलक जे कने रौद कमए दियौ त एहिठाम सं आगू बढ़ब आ फेर किछु खाए-पीबाक ओरियान करब । ता बरु अहं अपन जांघ खसाउ, हमहू कने आराम क ली ।

स्त्री जांध खसलकै आ ओहे पड़ि रहल । बेचारा कें पड़िते आंखि लागि गेलै ।

जइठाम नदी-तीर पर ई सभ सुस्ताइ छल ओइ सं कनिञे हटि क नदी मे कोनो आन साहुकारक नाओ लागल छलै । ओ साहुकार जखन नाओ सं बहरा नदी तीर पर गेल त एकरा सभ पर नजरि पड़लै । ओ सहटि क लग पहुंचल । साहुकारक स्त्री अपूर्व सुन्दरी छलै से ओकरा देखिते जेना एकर मन लुसुर-फुसुर करए लगलै आ ओ एकरा पटियाब लागल जे की एहि भिखमंगा संगे पड़ल छी । एहन रूप ल क गछतर । हमरा संग चलू, हम अहां के रानी बना क राखब । हमर नाओ पर देखबै—देश-विदेश सं आनल रंग-बिरंगक चीज बस्तु................ ।

साहुकारक स्त्री ओकरा बात मे अबि गेल आ अपन घरबलाक माथतर एगो ईंट राखि आस्ते सं उठि ओकरा पाछां लागल विदा भेल । एमहर झांझी कुकूर सेहो चुपचाप ओकरा लोकनिक पछोड़ धेलक जे ओ सभ नहि देखि पओलकै । साहुकार ओकरा नाओ पर अपन घर मे ल जा खाए-पीबै लए देलकै आ फेर दुनू रंग-रभस करए लागल । झांझी कुकूर आबि अपन मालिक लग झांउ-झांउ करए लागल । साहुकारक जखन निन्न टुटलै त अपन स्त्री के नहि देखि अचरज भेलै । ओमहर झांझी ओकर धोती पकरि घीचै लगलै । साहुकार के बुझबा मे एलै जे झांझी कुकूर निश्चित किछु कहि रहल अइ । ओ उठल आ ओकरा पाछा विदा भेल । झांझी ओकरा ओही नाओ पर ल गेलै जाइ पर ओ दुनू रंग-रभस करै छल । ओमहर झांझी कतौ सं एगो तरुअरि आनि ओकरा हाथ मे थम्हा देलकै । साहुकार सोचलक जे बात साधारण नहि लगैए ने त झांझी तरुआरि किए थम्हबैत । ओ सतर्क भेल आ आस्ते सं घरक पर्दा हटओलक । ओइठामक दृश्य देखिते ओ तामसे लाल भ गेल आ फुर्ती सं फानि एके छओ मे ओहि साहुकारक माथ धर सं फराक क देलक आ

बाहर आबि ठाढ़ भेल जे फेर दोसरो केओ ने आबए । अपन स्त्री के जल्दी बहराइ ले कहलकै । फेर दुनू ओइठाम स बहरा आगां बढ़ल, पाछां-पाछां झांझी कुकूर झांउ-झांउ करैत । साहुकार ओकरा बेर-बेर डंटै जे आब किए झांउ-झांउ करै छै आब त संकट कटल आ हम सभ नदी सं बहुत दूर आबि गेल छी, मुदा ओ किए चुप रहत । साहुकार पाछू घुरि तकलक त अपन स्त्रीक नुआ मे शोणित लागल देखि पुछलक जे ई की लागि गेल त स्त्री कहलकै जे अहींक झांझी कुकूर हबकि लेलकए । ओकरा तेहन तामस उठलै जे ओही तरुआरि सं झांझी के सेहो दू खंड क देलक ।

जाइत-जाइत ओ सभ एगो नगर मे पहुंचल । सांझ सेहो पड़ि गेल छलै । रस्ता काते मे एगो राजमहल सन देखाइ पड़लै जाइ ठाम करमान लागल लोक । साहुकार लग जा एक आदमी सं पुछलकै जे एहिठाम कथिक ई भीड़ छैक । ओ कहलकै जे राजदरबार लागल छइ । आइ राजा प्रजाक दुख-सुखक बात सुनै छथिन, झड़-झमेलाक तसफिया करै छथिन । एहिना गप करिते ई पाछू घुरि तकैए त अपन स्त्री के नहि पाबि छगुन्ता मे पड़ि जाइए । ताबते दू गो सिपाही आबि एकरा पकड़ि राजाक सामने ल जाइ छइ । बेचारा के त कोनो भांजे ने लागि रहल छइ एकर । ताबते एकर नजरि अपन स्त्री पर पड़ै छइ आ राजाक सामने राखल साहुकारक माथ जकरा ई काटि देने छल ताइपर जाइत छैक । ताबते राजा प्रश्न केलथिन जे एहि स्त्रीक शिकायत छइ जे अहां एकर स्वामी के मारि देलिऐए । की ई बात सत्य थिक ?

साहुकार त जेना अकास सं खसल । ओ कलजोड़ि राजा सं निवेदन केलक जे सरकार ई हमर स्त्री थिक आ ओ एकरा बलजोड़ी वा ठकि-फुसिया के ल गेल छलै तकरा हम ठीके मारि देल । फेर ओ अपन परिचयक संग सभ खिस्सा विस्तार सं कहलकै मुदा एकर स्त्रीए एकरा झुट्ठा कहए लगलै । तखन ई झांझी कुकूरक मारैक बात कहलकै । सिपाही पठाओल गेल आ झांझीक दुनू टूक आनल गेल मुदा एकर स्त्री गाले ने लागए दैक। राजा सेहो अवग्रह मे पड़ल । ओ कहलथिन जे अहां जे अपन आधा अरुदा अपन स्त्री के देबाक बात कहै छी से लोक केना विश्वास करत । आइ कालि की ई संभव छैक ?

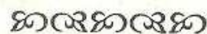
साहुकार बाजल जे महाराज, लोक मानओ वा नहि, मुदा हम झूठ नहि बाजि रहल छी ।

राजा पुछलथिन जे कोनो गबाह अछि ?

साहुकार कहलथिन जे महाराज, गबाह त एगो छल, हमर झांझी कुकूर, मुदा एकरे कहला पर हम तकरो मारि देल । आब त विधाताप्रटा जनैत छथि । ओ फेर कलजोड़ि बाजल—हे विधाता, आब त अहीं मालिक । जं अहांक बात सत्त आ हम फूसि नहि बजैत होइ त हम जे अपन आधा अरुदा अपन स्त्री कें देने छलौं से हुनका सं आपस ल अपन झांझी कुकूर के दैत छी ।

ओ एतबा कहिते अछि कि झांझी कुकूर झांउ-झांउ करैत छड़पैत ओकरा लग जुमि गेलै आ ओमहर ओकर स्त्री ओहिठाम धराम सं खसल । सभ साहुकारक जय-जयकार करए लागल ।

राजा के एकेटा बेटी छलनि । वियाहक योग भ गेल छलनि मुदा जुगलत वरे ने भेटै छलनि । दिन-राति तकरे चिन्ता मे पड़ल रहैत छला । साहुकारक सत्यवादिता आ धर्मनिष्ठा सं ओ तते ने प्रभावित भेला जे ओकरे संग अपन बेटीक वियाहक घोषणा ओही सभा मे कएलनि । बड़ धूम-धाम सं वियाह भेल आ साहुकार अपन नव कनियांक संग खुशी-खुशी सासुरे मे रहए लगला ।



दिलजान साहु



कोनो एक देश मे एगो राजा रहथि । ओ एक राति सपना देखलनि जे दिलजान साहु नामक कोनो लोक के एगो बेटी छैक अपूर्व सुन्दरी, जकरा सं हमर बियाह होइत अछि । प्रात भेने ओ सभ पंडित-जोतखी के दरबार मे बजओलनि आ अपन सपनाक सत्यासत्यक निस्तुकी करै लेल कहलथिन । पंडित-जोतखी लोकनि अपन पोथी-पतरा उनटओलनि, हिसाब-किताब करए लगला । अन्त मे एगो जोतखी कहलथिन जे महाराज अपने रातिक शेष पहर मे सपना देखलए तें ई सत्य होएबेटा करत । हमर गणनाक अनुसार एहिठाम सं सए योजन पश्चिम एगो नगर छैक ओहीठाम दिलजान साहु नामक लोक रहैत अछि । ओकरा ठीके एगो बेटी छैक से जेहने रूपवती तेहने गुणवती सेहो, मुदा ओ अपने बड़ चंठ आ कंजूस अछि । ओहि नगरक चारू कात ठकहारा-लुटिहारा सभक राज छैक आ ओकरे सभ द्वारा आनल सम्पति सं दिलजान साहु महाधनी भेल अछि । ओ विचित्र स्वभावक लोक अछि तें सहजे राजी नहिओ भ सकैछ । ओनहुना यात्रा सेहो कष्टकर होएत ।

राजा कहलथिन जे यात्रा जं कष्टकर नहि हो त ओकर आनन्दे की ? हम असगर जाएब आ एकदम साधारण भेष मे जाएब । आ दोसर दिन भोरे-भोर यात्रा पर विदा भ गेला।

जाइत-जाइत जखन ओ बड़ी दूर गेला त बाट मे एगो लोक भेटलनि । ओ कहलकनि जे यौ राजा बबू, हमरो संग नेने चलब ?

राजा कहलथिन जे ने हम अहां के चिन्हैत छी आ ने अहां हमरा चिन्हैत छी, तखन केना हमरा संग जाएब ?

ओ कहलकनि जे हम अहां के चिन्है नञि छी से बात ठीक, मुदा अहांक चेहरा-मुहरा कहैए जेना कोनो देशक राजा होइ । आ हमर परिचय की ? नाम भेल कमचाली । जं

नञि चली त नहिञे चली आ चली त एके डेग मे योजन नांघि सकै छी । बेर पर अहूंक काज लागिए सकै छी ।

राजा विचारलनि जे लोक त काजक बूझि पड़ैछ । ओ ओकरा संग लगा लेलनि ।

जाइत-जाइत जखन आर किछु दूर गेला त ओहिना फेर एक लोक आबि कहलकनि जे यौ राजा बाबू, हमरो अपना संग लेने चलू ने, बेर छइ, विपत्ति छइ, कोनो काज लागिए सकैत छी । राजा परिचय पुछलथिन त नाम कहलकनि कमसुज्झा । ओ कहलकनि जे ओना त हमरा सुझैए थोड़ मुदा पपनी उठा तकने योजन पारोक चीज-वस्तु देखि सकैत छी । राजा मने-मन सोचलनि जे वेश संयोग अछि, पहिने कमचाली आ फेर कमसुज्झा। कहलथिन जे वेश चल ।

एहिना थोड़ेक दूर गेला त भेटलनि कमखोराकी आ ओकरो संग लगा लेलनि । फेर कने दूर गेला त चारिमो हाजिर । नाम की त कममुतना । राजा सोचलनि जे कमचाली आ कमसुज्झाक त उपयोग भइयो सकैए मुदा ई कमखोराकी आ फेर कममुतनाक कोन उपयोग । मुदा ओ बड़ हठ केलकनि त ओकरो संग लगा लेलनि ।

जाइत-जाइत ओ लोकनि जखन दिलजान साहुक दरबज्जा पर पहुंचला त लगभग सांझ पड़ि गेल छलै । राजा दिलजान साहु के जखन अपन एबाक कारण कहलथिन त ओ गुम्म पड़ि गेल । रहए त वेश घुंइञा । कने काल चुप रहि बाजल जे आब त सांझ पड़िए गेल छइ आ अहूं लोकनि थाकल-ठेहिआयल होएब तें भोजन विश्राम करू, प्रात भेने एहि सम्बन्ध मे बात करब । एतबा कहि ओ अपन एक लोकक संग अपन महल सं फराक एगो मकान मे हिनका लोकनि के रहबाक व्यवस्था क देलकनि । राति मे भोजन-साजन सभ केओ केलनि मुदा कमखोराकी कहलकनि जे ओकरा भूख नञि छैक । राति मे जखन सभ केओ सूतल छला आ पहर राइत बीतल होएतैक त कमसुज्झाक देहपर आगि सन गर्म किछु खसलै । ओ राजा साहेब के उठओलक । राजा उठिते देखलनि जे घर मे चारूकात सं आगि लागल छैक आ लाहक घर होएबाक कारणे ओकर लाह घमि-घमि कें खसै छइ । बेसी आगि ओम्हरे छलैक जेम्हर धुरखुर रहै । ओ कममुतना कें आवाज देलनि जे भाइ तों कहने छलें जे बेर पर काज देबें से बेर आबि गेलौ आब अपन परताप देखा । कममुतना थोड़े काल त वेश बहन्ना केलक जे ओकरा लघी लगले ने छइ, मुदा सभ जखन जोर केलकै त ओ दोसर दिस घूमि ठाढ़े-ठाढ मुतनाइ आरंभ केलक । ओकर मुतनाइ की छल, आगि त मिझेबे केलै पास-पड़ोस मे जेना बाढ़ि आबि गेल होइ । सभ एहि आकस्मिक बाढ़ि देखि चिचिआइत अपन-अपन घर सं बाट पर आबि गेल । ओमहर दिलजान साहु हिनका लोकनिक जरि कें मरबाक प्रतिक्षा मे छल सेहो दौड़ल आ राजा लग कलजोड़ने अपन करनीक लेल माफी माडए लागल । राजा कममुतना के कहलथिन जे रे कममुतना, आबो त अपन भाभट समट, मुदा ओ कहनि जे महराज बड़ जोड़ लागल अछि, कने थम्हू । राजा खिसिया क कहलथिन जे कि हमरा सभ के डुबाइए क तोहर लघी बंद होएतौ तखन जा के

ओ लघी रोकलक । फेर हिनका लोकनिक लेल दोसर घर मे व्यवस्था कएल गेल आ ई लोकनि चैन सं सुतला ।

प्रात भेने राजा फेर दिलजान साहु सं भेंट कएलनि । ओ कहलकनि, जे हेतु लगन आइए शेष छैक तें एकदिन मे संभव केना हएत । आन ओरियान-पात भइयो जाएत मुदा हमर कुलपुरोहित एहिठाम सं अस्सी योजन पश्चिम एक गाम मे रहै छथि आ हुनका समाद द आनब संभव नहि आ बिनु कुलपुरोहितक कन्यादान सन यज्ञ कएले केना जा सकैछ ! राजा कनडेरिए कमचाली दिस तकलनि त ओ अपन स्वीकृति देलकनि । फेर ई दिलजान साहु के कहलथिन जे अहां चिन्ता नहि करी, अहांक कुलपुरोहित समय सं पहिने पहुंचि जेता । ओ सोचलक जे राजा गप हंकै छथि । जे काज असंभव छैक तकरा ई केना संभव करता, इएह सोचि बाजल जे जं ओ आबि जाथि त हमरा दिस सं कोनो आपत्ति नहि ।

राजा कहलथिन जे हुनकर नाम-पता त दिअ तखन ने लेबाक व्यवस्था कएल जेतै। दिलजान साहु फटाफट नाम-पता कहि देलकनि आ ई लोकनि ओइठाम सं अपन डेरा आबि गेला । फेर कमचाली के कहलथिन जे जाह आ हुनका पोथी-पतरा संग पकड़ने आबह ने त फेर तकरो बहन्ना भइए सकैए । कमचाली एके डेग मे पुरहितक दरबज्जा पर पहुंचि गेल आ पोथी-पतराक मोटाक संग पुरहित के कन्हापर लदने हाजिर । दिलजान साहु के खबरि देल गेलै जे अहांक कुलपुरोहित पहुंचि गेल छथि, आब कन्यादानक ओरियान मे लागि जाथि । समाद सुनिते त ओ दौड़ल आ देखलक त सत्ते ओकर कुलपुरोहित बैसल छथिन । आगां मे पोथी-पतरा पसरल । ओ अपन दोसर चालि चललक । राजाकें कहलकनि जे आब आन कोनो त नहि तखन एगो छोट-छीन समस्या रहि गेल अछि । हमरा ओइठाम जे कोनो काज-उदेम होइछ तकर नियम छैक जे कम-स-कम एगारह मन चाउर रान्हल जाए, मुदा अहां लोकनि त केवल पांच गोटे छी, तकर व्यवस्था धराओल जाए । समय छैक नहि जे सरो-कुटुम्ब कें नोत-पत्ता पठाओल जाएत ।

राजा कमखोराकी दिस तकलनि त ओ बिहुंसि देलक । फेर दिलजान साहु के कहलथिन जे कोनो बात नहि । अहां नियमानुसार सभ काज करू, कोनो वस्तु दूरि नहि जाएत से बचन हम दैत छी । दिलजान साहु एगारह के बदला पन्द्रह मन रन्हबा लेलक आ फेर तकर दालि तरकारी । सभ भोजन पर बैसल । राजा कमखोराकी के इशारा केलथिन आ ओ आरंभ केलक । जा दालि अबै ता भात शेष आ जा भात अबै ता दालि शेष । खाइत-खाइत जखन सभ किछु निंघटि गेलै त दिलजान साहु कलजोड़ि ठाढ़ भेल जे आब हमरा माफ क दिअ । ओमहर कमखोराकी कहै जे हमरा त एको कोन नञि भेलए—कनियो किछु त आनू । अन्त मे राजा कहलथिन जे आब भाभट समट । तोहर गुण ई जीवन भरि मन रखथुन । तखन जा कें ओ उठल ।

दिलजान साहु ओरियान मे लागि गेल । सांझखन बर मंडप मे बैसला आ पुरहित सेहो पोथी खोललनि तैखन ओ फेर दौड़ल आएल आ बाजल जे हमरा सं एक बड़का भूल

भ गेल । शुभकाज मे पहिने घर-गोसाउनिक पूजा होएत आ ताइ लेल एक सए आठटा रक्त-कमल चाही । ई हमर वंश परंपरा थिक । ओना हमर विश्वास अछि जे अहां लोकनिक लेल ई काज असंभव नहि । दिलजान साहुक ई अंतिम चालि छलै ।

राजा साहेब कमसुज्झा के लग बजओलनि आ ओकरा अपन शक्ति अजमेबा लेल कहलथिन । ओ अपनी पपनी उठा चारूदिस देखि कान मे कहलकनि जे एहिठाम सं लगभग च्चालीस योजन दक्षिन-पूब कोन मे एगो बड़का सरोबर छइ जाइ मे मोरसंपे रक्तकमल छइ । फेर ओ कमचाली के बजा क कहलनि जे तों कमसुज्झा के ओइ सरोबर पर पहुंचा आ फूलक व्यवस्था कर ने त सभ कएल-धएल गोबर भ जाएत । कमचाली कमसुज्झा के कन्हापर उठा सरोबर कात पहुंचौलक आ फेर फूलक संग आपस अनलक । दिलजान साहु जखन सभ सं हारि गेल त मंडप पर बैसि कन्यादान केलक ।

वियाह भ गेल । राजा दू-चारि दिन सासुर मे बिता अपन देशक यात्रा केलनि । वर-विदाइ मे जे किछु भेटलनि तकरा कममुतना, कमखोराकी, कमचाली आ कमसुज्झा मे बांटि ओकरा सभ के विदा केलनि आ अपने रानी कें संग लए अपन देसकोसक यात्रा केलनि ।

जाइत-जाइत जखन ओ बड़ी दूर गेला त रानी कें भूख आ पियास लगलनि । ओ रानी कें एगो गाछ तर बैसा अपने लगक गाम सं किछु खेनाइ-पीनाइक व्यवस्था मे गेला । एमहर कोनो ठक आबि रानी के ल पड़ाएल । एमहर राजा जखन घुरि क एला त रानी के नहि देखि चिन्तित भेला । ओ एमहर-ओमहर तकलनि, मुदा जखन ओ कतौ नहि भेटलनि त बताह सन 'हाय रे रानी, रानी हम्मर कतए गेली' बड़बड़ाइत विदा भ गेला ।

ओमहर ओ ठक पड़ाइत-पड़ाइत जखन असोथकित भ गेल त एगो पांतर मे एकटा गाछ तर जा बैसल । ओ सोचलक जे आब त हिनकर लोक कोनो हालत मे नहि पहुंचि सकैए । तैयो रानी कहीं पड़ा ने जाथि से सोचि हुनका कहलकनि जे अहां अपन जांघ खसाउ, हम कने आराम करब । बेचारी रानी के दोसर उपाये की छलनि । ओ जांघ खसओलनि आ ठक ओइपर माथ राखि पड़ि रहल । कनिञे काल मे ओ फोंप काटए लागल । रानी सोचलनि इएह मौका थिक । ओ एगो ईंट ओकरा माथ तर ध देलथिन आ अपने लंक लागि पड़ेली । ठक जखन उठल त रानी के नहि देखि अकास सं जेना खसल हो । ओहो बताह सन 'हाय रे बीबी, बीबी मेरी ईंटे की सिरहन्ना देकर भाग गई' बड़बड़ाइत बौआए लागल ।

रानी ओइठाम सं त पड़ेली मुदा जेती त कतए ! घर सं कहियो बहराएल छली नहि आ ओइ अंचल मे नीक लोकक बासो नञि छलै । सभ लुटिहारा-ठकहारा । हुनका असगर दौड़ल जाइत देखि एक दोसर ठक पकड़ि लेलक आ अपना ओइठाम ल गेल । ओ हिनका पर पहरा लगा देलक जाइ सं पड़ाथि नञि आ वियाह करै ले तंग करए लागल । रानी विचारलनि जे एहिठाम बुधियारी सं काज लेमए पड़त । ओ ठकबा के कहलथिन जे हमर ब्रत अछि जे बारह वर्ष सदावर्त्त चलाबी आ तकर उद्यापन केलाक बादे वियाह करी । से

तकर ओरियान ज अहां क दी त हम वियाह ले राजी छी । ठकबा हिनक रूप पर तेना मोहित छल जे हिनकर बात मानि गेल आ सभ व्यवस्था क देलकनि । रानी अपने हाथे सदावर्त्त बांटए लगली आ आस्ते-आस्ते पहरा सेहो कमल ।

एहि तरहें समय बीतैत गेल आ रानीक धुकधुकी सेहो बढ़ैत गेल । ओ विचारने रहथि जे हो ने हो हुनको राजा कहियो आबि सकैत छथि । बारह वर्ष बीतै मे बेसी देरी नञि छल । रानीक खुशीक ठेकान नहि रहल जखन ओ देखलनि जे एकदिन मुनहारि सांझ मे हुनक स्वामी दुआरि पर ठाढ़ छथि । बताह सन बगए-बानि आ 'हाय रे रानी, रानी हम्मर कतए गेली' बड़बड़ाइत अपन पति के चिन्है मे हुनका देरी नञि लगलनि । ओ हुनका आदर सं बैसा सभ बात कहलथिन आ घरे मे नुका रखलनि । रातिक चारिम पहर दुनू बेकती घर सं बहार भए पड़ा गेली ।

जाइत-जाइत राजा अपन देसकोस पहुंचला त मंत्री-अमलाक संग प्रजावर्ग सेहो उत्सव मनओलक । राति मे जखन राजा सूतए गेला त रानी कहलनि जे देखू, बारह वर्ष सदावर्त्त चलेबाक हमर ब्रत एखनो पूरा नञि भेलए, तें अहां हमरा सं हटले रहू । भ सकए त दोसर घर मे अपन सुतबाक व्यवस्था करू । हम कालि सं फेर सदावर्त्त चालू करब, तकर व्यवस्था हेबाक चाही ।

रानीक बात सूनि त राजा अबाक । एतेदिन पर ओ भेटलथिन, कते की कल्पना ओ कएने छला सभ क्षणे मे क्षणाक । ओ उदास भेल अपन कनियां दिस तकलनि त ओ घोघतर सं विहुंसि देलथिन । राजा हुनका भरि पांज क धेलनि आ नेने पड़ि रहला ।

दोसर दिन सं सदावर्त्त धरि ठीके चलल । रानीक आदेश रहनि जे कोनो परदेशी, बताहसन लोक आबए तकरा पकड़ि कें राखल जाए । रानी ओकर परीक्षा लेती । तहिना भेल आ एकदिन 'हाय रे बीबी, बीबी मेरी ईंटे की सिरहन्ना देकर भाग गइ' बड़बड़ाइत पहिल ठकहारा उपस्थित भेल । दोसर दिन दोसरो 'हाय रे बीबी, बीबी मेरी बारह वर्ष सदावर्त्त चलाकर भाग गई' बड़बड़ाइत पहुंचल । दुनू के पकड़ि के राखल गेल । दरबार लागल आ राजा-रानी दुनू अपन आसन पर विराजमान । फैसला रानी केलनि । ओ कहलथिन जे ई हमरा असगर पाबि पकड़ि लेने छल । तें एकरा एहन दंड देल जाय जाइ सं फेर केओ असगर-असहाय नारी दिस आंखि उठा कें नञि देखए । एकरा पचास कोड़ा मारल जाए आ आजन्म जहल मे बन्न क देल जाए । फेर दोसर के आनल गेल । रानी बजली जे ई हमरा संग कोनो अशोभनीय आचरण नञि केलक मुदा अपहरण त केनहि छल । ओना एकरे कारणे हमरा अपन स्वामी सेहो भेटला । तें एकरअपराध छोट छैक । एकरा पांच बेंत मारि छोड़ि देल जाए । सिपाही सभ आदेशक पालन केलक ।

राजा रानीक कान मे कहलथिन जे न्याय त अहां बड़ चिक्कन करै छी, मुदा एहि अपराधीक ?

रानी हुनका ठेलैत कहलथिन—धुर जाउ । लोक सभ तकैए.......... ।

गल हस्तेन धोधरः

□

एगो पंडित जी छलाह । हुनका चारिटा बेटी छलनि । पंडितजी अपने जेहने सज्जन तहिना बेटी सभ सेहो सुशील । पंडित जीक बड़ इच्छा छलनि जे बेटी सभ कें नीक घर-वर होइ जाइ सं ओकरा लोकनि कें कोनो बातक कष्ट नहि होइ । से भेवो केलनि । ई भिन्न बात जे एही पाछां ओ अपन जथा बिलटा लेलनि । सोचलनि जे दू प्राणीक गुजर कोनहुना चलिए जाएत ।

पंडित जी बड़ ताकि कें नोकरिहरा जमाय केलनि । चारूक चारू नोकरिहरा । जेना चारू बहिनी मे मेल-मिलाप छलै तहिना चारू साढ़ू मे सेहो । ई देखि पंडित जी गदगद छलाह ।

छोटकी बेटीक दुरागमन मे सभ बेटी-जमाय जमा भेल छलनि । ओही समय चारू साढ़ू विचारलनि जे आब त ससुर कें कोनो काजो तेहन नहिञे छनि जाइ मे सभ के भेंट-घांट होएत । त किएक ने हम सभ कोनो एहन समय निश्चित करी जखन सभ केओ एहिठाम जुटी । संगहि छुट्टी बिता फेर आपस चल जाएब । अन्त मे फगुआक समय निश्चित भेल आ अगिला फगुआ मे सभ केओ सपरिवार जुटला । पांच-सात दिन रहि ओ लोकनि आपस गेला ।

फेर अगिलो साल एहिना सभ केओ जुटला आ क्रम चलैत रहल । बाद मे त दस-दस, पन्द्रह-पन्द्रह दिन सभ रहए लगला । बेचारे पंडितजी त तबाह । अपन दुनू प्राणीक गुजर त पराभव छलनि आ ताइपर दस-दसटा पाहुन आ सेहो जमाय बाली बात । आन पाहुन कें त भात-दालि दूटा तरकारी सं काज चलि सकैछ मुदा जमाय कें त छ-न तरुआ-भुजुआ चाहबे करी । कने दही केना नहि हैत । राहड़िक दालि चाही आ सेहो बिनु घीक नहि हो । प्रातःकाल चूरा-दही आ बेर मे पूरी-तरकारी जलपान चाहबे करी । बेचारे के नाको दम भ गेलनि । जखन नहि रहल गेलनि त पंडिताइन के चुपचाप कहलथिन जे सुनै छी, आइ भोजनकाल ओझा लोकनि कें घी नहि पड़तनि ।

पंडिताइन कें त एकर अर्थे ने लगनि मुदा पंडितजीक बात नहि मानने ओ बिगड़ि जेता सोचि घी बन्न क देलनि । सांझ मे जखन चारू साढ़ू घुमै-फिरै लेल गेला त जेठजन बजला जे साढ़ू, आब हमरा लोकनि कें डेरा तोड़ैक चाही । अपमान होइत अछि । आइ भोजनकाल घी नहि भेटल से त सभ केओ लक्ष्य केनहि होएब ।

बांकी तीनू साढ़ू बजला जे इहो कोनो बात भेलै । घर मे नहि छल होएतनि । एहि मे अपमानक कोन बात भेलै ! मुदा जेठजन अर्थात रेवती रमण झा उर्फ रवि बाबू से माननिहार नहि । ओ दोसर दिन सबेर-सकाल अपन पत्नी आ बच्चा कें ल विदा भ गेला।

पंडितजी देखलनि जे तीन गोटे त रहिए गेलाह । ओ फेर पंडिताइन के कहलथिन जे आइ चूरा-दहीक जलपान नहि देबनि । घर मे मुरही हो त देबनि—फंकैत जेता ।

पंडिताइन की बजती । पतिक आदेशक पालन केलनि । फेर सांझ मे जखन तीनू साढ़ू टहलै ले गेला त माझिल जन अर्थात केशव कान्त झा उर्फ केशव बाबू कहलनि जे बड़का साढ़ू ठीके कहने छला । देखलौं ने प्रातः जलपान मे चूरा-दहीक बदला मुरही फांकै ले देल गेल । बांकी दुनू साढ़ू बजला जे दही नहि छल होएतै । मुदा केशव बाबू दोसर दिन प्राते अपन पत्नी आ बच्चा कें ल विदा भ गेला ।

पंडितजी केम्हरो सं बुलि-टहलि कें एला त दूटा जमाय के दलान पर बैसल देखलनि। ओ पंडिताइन के कहलनि जे आइ गहुमा धानक चाउरक भात हेबाक चाही । मालभोग वा तुलसीफुल मे हाथ नहि लगैब ।

पंडिताइन मन मारि कें पतिक आज्ञाक पालन करैत रहली । सांझ मे जखन फेर दुनू साढ़ू टहलै-बुलै ले गेला त थोभर पंडित अर्थात साझिलजन बजला जे उएह दुनू साढ़ू नीक केलनि । ई मोटका चाउरक भात त हमरा लोकनि घरो मे ने खाइत छी । जमाय के एहन भात ।

छोटजन अर्थात धोधर पंडित बजला जे अहां लोकनि त व्यर्थे तील कें तार करैत छी । घर-आश्रम छइ । अभाव-अभियोग भइए सकैत छइ । तकर अर्थ त ई कथमपि नहि जे ससुर हमरा लोकनिक अपमान करैत छथि । जानि ने ई गप अपने लोकनि सोचिए केना सकैत छी ।

मुदा थोभर पंडित प्रात होइत देरी अपन पत्नी कें संग क विदा भ गेला । ओमहर पंडितजी बुलि-टहलि कें एला त दलान पर असगर धोधर पंडित कें बैसल देखलनि । तामसे कपैत ओ अपन पत्नी लग गेला त ज्ञात भेलनि जे साझिल जन सेहो जा चुकल छथि । ओ तुरत्ते आपस दलान पर आबि छोटजन कें कहलनि जे कि अपने कें कोनो गत्र मे लाज नहि । आनि-अपगरानि नहि । आब की हमरा गरदनियां देमए पड़त ?

गरदनियांक नाम सूनि ओहो बेचारे विदा भेला । तहिये सं ई फकड़ा बनि गेल—

हविः बिना रविः जाति
बिना पीठेन केशवः
थोभर स्थूल भक्तेन
गलहस्तेन धोधरः

लिखलाहा



एगो ज्योतिषी रहथि । एक दिन ओ कतौ सं अबै छला त कोनो पांतर मे बाटक काते मे एगो मनुक्खक खोपड़ी देखाइ पड़लनि । लग पहुंचला पर ओ देखलनि जे ओकर कपारक रेखा एखनो स्पष्ट छैक आ तकर अर्थ होइ छइ जे किछु भेलनिहें आ किछु बांकी छनि । ज्योतिषीजी नीक जकां विचार कएलनि त पता चललनि जे ई कोनो युवकक खोपड़ी थिक जकर घेंट काटि हत्या कएल गेल छलैक । मुदा बांकीक अर्थ हुनका बुझबा मे नहि आबि रहल छलनि । अन्त मे ओ ओकरा अपन झोड़ा मे उठा घर ल अनलनि आ नुका क रखलनि । दोसर दिन सं हुनक अधिकांश समय ओहि खोपड़ीक निरीक्षण-परीक्षण मे बीतल करनि । ओ बाहर सं आबथि त घर बन्न क खोपड़ी के ल क बैसि जाथि। हुनक पत्नी कें कोनो भांजे ने लागनि । ओ किछु पुछबो करथिन त ज्योतिषी बात टारि देथिन।

एक दिन ज्योतिषी कतौ बाहर गेला । पत्नी एही फिराक मे छली । हिनका जाइते ओ सौंसे घर उधरा-भांड़ केलनि त पोथी-पतराक बीच सं ओ खोपड़ी भेटलनि । ओ सोचलनि जे हो ने हो, ई ज्योतिषीक कोनो पूर्व प्रेमिकाक हो जकरा जोतखिया आइयो नहि बिसरल-ए । ओ खोपड़ी बहार केलनि आ ओकरा लोढ़ा ल सिलौट पर चूड़ि-चाड़ि गर्दा क देलनि आ फेर फेकि एली ।

सांझ मे जखन ज्योतिषी घुरला त हाथ-पएर धो अपन घर मे प्रवेश कए भीतर सं बिलैया लगा खोपड़ी आनय गेला मुदा खोपड़ी कतौ नहि भेटलनि । ओमहर पोथी-पतरा सेहो छीटल-छाटल देखि संदेह भेलनि । ओ घर खोलि पत्नी के शोर केलनि आ पुछलथिन जे अहां एहि पोथी मे सं किछु बहार केलौंहे । पत्नी कहलथिन जे हं केलौंहें ।

ज्योतिषी कहलथिन जे ओ अहां की करब ? [illegible] द दिअ ।

पत्नी कहलथिन जे आब ओ अहां कें भेटएबल। [illegible] छि । सौतिन के केओ घर मे रखैए । तें हम ओकरा सिलौट पर चूड़ि बाहर फेकि देलिऐ ।

ज्योतिषी निसास छोड़लनि आ हुनका हंसी [illegible] लागि गेलनि । पत्नी पुछलनि जे अहां हंसलौं किए ?

ज्योतिषी कहलथिन—लिखलाहा । ओइ खोपड़ीक जे बांकी छलै से अहां पूरा क देल । आ फेर ओ सभ बात हुनका कहलथिन त हुनको संदेह दूर भेलनि । ●